: પ્રાપ્તિસ્થાન :
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ
ગ્રીન લોજ પાસે, રાજકોટ.

*
બીજી આવૃત્તિ : પ્રત ૧૦૦૦
વીર સંવત : ૨૪૮૪
વિક્રમ સંવત : ૨૦૧૪
ઈસ્વી સન્ : ૧૯૫૮
*

મુદ્રક : અને મુદ્રણસ્થાન :
જયંતિલાલ દેવચંદ મહેતા
જય ભારત પ્રેસ,
ગરેડીઆ કુવા રોડ,
શાક મારકીટ પાસે, રાજકોટ.

॥ श्रीः ॥

॥ अथ अन्तकृतदशाङ्गसूत्र की विषयानुक्रमणिका ॥

॥ अन्तकृतदशाङ्गसूत्र की विषयानुक्रमणिका ॥

॥ अन्तकृतदशाङ्गसूत्र की विषयानुक्रमणिका ॥

॥ अन्तकृतदशाङ्गसूत्र की विपयानुक्रमणिका ॥

॥ अन्तकृतदशाङ्गसूत्र की विषयानुक्रमणिका ॥

॥ इति अन्तकृतदशाङ्गसूत्र की विषयानुक्रमणिका सम्पूर्ण ॥





એક અપીલ

આપ ગચ્છાધિપતિ હો........કે સંઘપતિ હો.
સાધુ મહાત્મા હો........કે શ્રાવક હો.

પરંતુ...

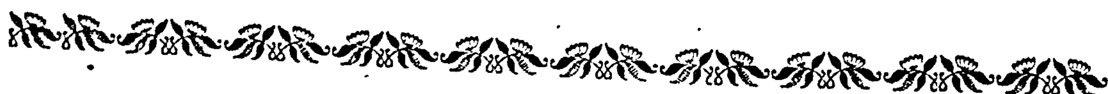
આ શુભકાર્યમાં મદદ કરવાની આપની
દરેકની ચોક્કસ ફરજ છે. કારણ કે આપણી
સમાજના ઉત્થાનના આવા ભગીરથ કાર્યમાં
આપનો જેટલો વધુ સહકાર મળશે તેટલું
કાર્ય વ્હેલું પૂર્ણ થશે.

ઘડી ઘડી આવા સંતોનો ભેટો થવો દુર્લભ છે.

૩૨ સૂત્રો જલ્દીથી તૈયાર કરાવી લેવાય તેની
કાળજી રાખવાની છે, અને તેથી જ આપશ્રીને
અપીલ કરવામાં આવી છે.

સમગ્ર સમાજનું કાર્ય થતું હોય ત્યાં સાંપ્રદાયક-
વાદ કે પ્રાંતવાદ નજ હોવો જોઈએ.





॥ श्रीः ॥

अंतगडसूत्र (अन्तकृतसूत्र) की

प्रस्तावना



इस वर्तमान चतुर्विंशति शासन में ऐसे ऐसे महापुरुष अनेकानेक हुए कि, जिन्होंने जीवनको आदर्श बनाकर अपने आपको विश्व में धन्य बना गए। उन महापुरुषोंने जीवनको धन्य बनाने के लिए उचित से उचित "ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः" को ही पसंद किया। कहा है—

हयं नाणं कियाहीणं हया अण्णाओ किया।
पासंतो पंगुलो दड्ढो धावमाणो य अंधओ ॥ १ ॥

छाया—हतं ज्ञानं क्रियाहीं हता अज्ञानतः क्रिया।
पश्यन् पङ्गुर्दग्धः धावमानश्च अन्धकः ॥ १ ॥

उन्होंने शास्त्रोक्त प्रकारसे ज्ञानक्रियाराधन द्वारा मोक्ष प्राप्त करनेमें चतुर्गतिक दुःखका अन्त देखा, इस प्रकार मुक्तदशा को प्राप्त करने के लिये 'ज्ञानक्रिया' उभय की जीवन सफलताका आधार समझकर स्वलक्ष्य सिद्धि के लिये तप संयममय जीवन जीने को इस क्षणभंगुर अनित्य संसार का त्याग करके वे विशुद्ध संयमी बने। संयमी होने के बाद अपनी आत्मा को कर्म शत्रु के घेराव में से मुक्त करने के हेतु उन महारथियोंने क्षमा तप आदि साज से सज्जित हो कर्मों पर विजय प्राप्त करने के लिये साहसिक बनकर आगे से आगे इतने बढे कि बेचारे कर्म हैरान होकर भाग खडे हुए। कर्मों पर विजय प्राप्त करने में उन वीर पुरुषों की दौड इतनी आगे रही कि जिससे सारा संसार पीछे रह गया और वे अपने इष्ट स्थान मोक्ष क्षेत्र में पहुंचकर अनादिकाल की जन्म जरा मरण की व्याधि का अन्त कर दिया।

उन मोक्ष प्राप्त आप्त पुरुषों का जन्म इस संसार में स्वपर कल्याण को प्रकट करने के लिये हुआ था, उन धीरवीर पुरुषों के विचार दृढ और साहसपूर्ण थे, उनका हृदय और आचरण अति उज्ज्वल था, उनकी भावनायें महान और विशुद्धतर थीं, उनका त्याग अचल और अटल था, उनका वैराग्य उत्तुंग हेमगिरिवत् अकंप और निश्चल था, उनका संयमाराधन निर्दोष शुद्ध स्फटिक के समान अति निर्मल व सर्वशुद्ध था, मल विहीन तप्त सुवर्ण के समान उनका तप अतिदीप्त व कर्मशत्रुओं के नाश करने में अचूक बाणावलि के सदृश था, उनका निर्मल ज्ञान अगाध व अमाप था।

जैन शासन के उन तपस्वी मुनियोंने संसार त्याग के पश्चात् ज्ञान द्वारा यह निश्चय किया कि-आत्मा को कर्म मल से रहित करने के लिये तप और संयम जैसा एक भी उपाय नहीं है तो वे अपने शरीर की जरा भी परवाह (यत्न) रखे विना तपस्या में संलग्न हुए। उन्हें अपनी आत्मा का हित जितना प्रिय था उतना शरीर हित प्रिय नहीं था। वे आत्मशुद्धि के लिये तप संयम के आराधन में सदा उत्साहित रहते थे। उन्हें जैसे भी हो जल्दी मोक्ष पहुंचने की अभिलाषा थी, जिससे उन्होंने अप्रमत्त बनकर संयम तप द्वारा आत्मकल्याण किया।

उन तपोमय जीवन जीनेवालों की जीवनिकाओं का वृत्तान्त ग्यारह अंग के छ अंगों में भिन्न २ रूप से वर्णित है, परन्तु इस अंतगड सूत्र में तो उन्ही भावितात्माओं का वर्णन है कि, जिन्होंने अपने उसी भव में संयम तप द्वारा अन्तिम अवस्था में सब कर्मों का अंत करके केवली बनकर मोक्ष को प्राप्त हुए। इस अंतगड सूत्र में आठ वर्ग और नव्वे अध्ययन हैं।

आठ वर्ग के प्रथम वर्ग में (१) गौतम (२) समुद्र (३) सागर (४) गम्भीर (५) स्तिमित (६) अचल (७) काम्पिल्य (८) अक्षोभ (९) प्रसेनकुमार और (१०) विष्णुकुमार का वर्णन है।

द्वितीय वर्ग में (१) अक्षोभ (२) सागर (३) समुद्र (४) हिमवान् (५) अचल (६) पूरय (७) अभिचन्द आदि कुमारों का संक्षिप्त वर्णन है।

तृतीय वर्ग में (१) अणियसेन (२) अनन्तसेन (३) अजितसेन (४) अनिहतरिपु (५) देवसेन (६) शत्रुसेन (७) सारण (८) गज-सुकुमाल (९) सुमुख (१०) दुर्मुख (११) कूपक (१२) दारुक (१३) अनादृष्टि का वर्णन है।

चतुर्थवर्ग में (१) जालि (२) मयालि (३) उवयालि (४) पुरु-षसेन (५) वारिसेन (६) प्रद्युम्न (७) शाम्ब (८) अनिरुद्ध (९) सत्यनेमि (१०) दृढनेमि का वर्णन है।

पांचवें वर्गमें (१) पद्मावती (२) गौरी (३) गान्धारी (४) लक्ष्मणा (५) सुसीमा (६) जाम्बवती (७) सत्यभामा (८) रुक्मिणी (९) मूलश्री (१०) मूलदत्ता का वर्णन है।

छट्टे वर्ग में (१) मङ्काई (२) किङ्कम (३) मुद्गरपाणि (४) काश्यप (५) क्षेमक (६) धृतिधर (७) कैलास (८) हरिचन्दन (९) वारत्त (१०) सुदर्शन (११) पूर्णभद्र (१२) सुमनभद्र (१३) सुप्रतिष्ठ (१४) मेघ (१५) अतिमुक्त [एवंता] (१६) अलक्ष का वर्णन है।

सातवें वर्गमें (१) नन्दा (२) नन्दमती (३) नन्दोत्तरा (४) नन्दसेना (५) महया (६) सुमरुता, महामरुता (८) मरुदेवी (९) भद्रा (१०) सुभद्रा (११) सुजाता (१२) सुमति (१३) भूतदिन्ना का वर्णन है।

आठवें वर्ग में (१) काली (२) सुकाली (३) महाकाली (४) कृष्णा (५) सुकृष्णा (६) महाकृष्णा (७) वीरकृष्णा (८) रामकृष्णा (९) पितृसेनकृष्णा (१०) महासेनकृष्णा आदि का वर्णन है इस प्रकार इस सूत्र में नव्वे मुक्तात्माओं का वर्णन है।

इन आठ वर्ग के नव्वे अध्ययनों में प्रथम वर्ग का गौतम नामका प्रथम अध्ययन, तीसरे वर्ग का गजसुकुमाल कुंवर का आठवां अध्ययन,

पांचवें वर्ग का पद्मावती रानी का प्रथम अध्ययन, छट्ठ वर्ग का सुदर्शनपाणि [अर्जुनमाली] नाम का तीसरा अध्ययन व अतिमुक्त [एवंता] कुंवर का पन्द्रहवां अध्ययन और आठवें वर्ग के काली सुकाली आदि दसों रानियों के अध्ययन में विस्तृत वर्णन है, शेष पचहत्तर अध्ययनों का वर्णन साधारण और संक्षिप्त है ।

अंतगड सूत्र की वाचना श्री सुधर्मास्वामीने अपने प्रिय ज्येष्ठ शिष्य श्री जम्बूस्वामी को चम्पापुरी में दी थी। उस समय वहां मगधाधीश श्री कूणिक राजा का राज्य था। भूपति कूणिक भगवान महावीर स्वामी का परम भक्त था, 'भगवान कहां विराजते हैं' यह समाचार नित्य प्राप्त करही वह दातून करता था। राजा कूणिकने जैनधर्म के विकास के लिये अपने राज्यमें सर्वत्र सुव्यवस्था अपनी देखरेखमें की थी। उसके राज्यकाल में सभी गांव व नगर में जैन गुरुकुल प्रचुर संख्यामें राज्य व्यवस्था से चलते थे। जैनधर्म पालने वाले साधर्मिकों को कला कौशल सिखाने के लिये उद्योगशालाओं की भी राज्य की तरफ से सर्वत्र व्यवस्था थी। गरीब अनाथ साधर्मियों के भरण पोषण की व्यवस्था स्वयं कूणिक राजा अपने हाथों से करता था। अनेक गांव व नगरों में धर्मध्यान पौषध सामायिक करने के हित राजाने स्थान २ पर पौषधशालाओंका निर्माण कराया था। वह स्वयं अपने हाथों से श्रमण निर्ग्रन्थों को निर्दोष आहार पानी आदि खाद्य पदार्थों का व वस्त्र पात्र आदि उपभोग्य वस्तुओं का भावपूर्वक दान करता था वह अपनी राज्य व्यवस्था के साथ धार्मिक व्यवस्था का भार निभाने में पूर्ण दक्ष था। उन्हों ने अपने राज्य में अमारी घोषणा कराई थी। उसका जीवन धर्म से पूरा ओतप्रोत था। राजा कूणिक की राजधानी चंपानगरी उस समय कला कौशल के कारण चारों ओर प्रसिद्ध थी। उसमें बडे २ धनाढ्य श्रीमन्त धर्ममय जीवन बनाकर आनन्द से अपना व्यवसाय चलाते हुए रहते थे। ऐसे श्री सुधर्मास्वामीने श्री जम्बू स्वामी को अंतगड सूत्र सुनाया।

प्रथम वर्ग—

पहले वर्ग के पहले अध्ययन में द्वारकानगरी का वर्णन है। इस नगरी को श्री कृष्ण महाराजने तेले की तपश्चर्या करके कुबेर देवता द्वारा बसवाई थी। द्वारका का नगरकोट सोनेका बना हुवा था तथा उस पर पांच प्रकार के रत्नों से जडे हुए कंगूरे थे। द्वारका नगर की लम्बाई बारह योजन की, और चौडाई नौ योजन की थी। शहरके अन्दर उत्तुंग भवनों व कतारबंध बाजारों व बाहर बाग बगीचा सरोवर आदि से उसकी अपूर्व शोभा थी। उस शहरमें बडे २ राजा; महाराजा योद्धा, साहसिक व माण्डलिक आदि रहते थे। इसके अतिरिक्त बडे २ धनपति सेठ साहुकार भी वहां रहते थे। उस समय वहां विशाल राज्य वैभव युक्त अन्धक वृष्णि राजा और उनकी धारणी नामकी रानी थी। उनके गौतम नामक कुमार थे, जिनका तरुणवय के प्रवेशमें आठ कन्याओं के साथ विवाह हुआ था। वे तरुणवय के मध्य में भोगयुक्त जीवन विता रहे थे। उसी समय श्री अरिष्टनेमि भगवान पधारे और उनका वैराग्यमय उपदेश सुनकर गौतम कुमार मातापिताकी आज्ञा लेकर दीक्षित हुए। दीक्षा लेने पर गौतम अनगारने सामायिक से ले कर ग्यारह अंगोंका अध्ययन किया, और वे उपवास, बेला, तेला आदि विविध तपश्चर्या द्वारा कर्म निर्जरा करते हुए विचरने लगे। उन गौतम अनगारने 'मासिक भिक्षु प्रतिमा नामक तप' अंगीकार किया, अनन्तर बारह पडिमा तथा गुणरत्न तप करके आत्म विशुद्धि के साथ संयमाराधन करते हुए अन्तिम समय में एक मासका संथारा करके सर्व कर्म से रहित हो केवलज्ञान केवलदर्शनयुक्त मोक्षस्थान को प्राप्त हुए।

इसी प्रकार समुद्रकुमार आदि नव कुमारो ने भी गौतमकुमारके समान ही राज्यवैभव युक्त संसार अवस्थाका त्याग करके दीक्षित बने और उन्हीं के समान संयम तप आराधन करके अन्तिम समय एक मासके संथारेमें केवलज्ञान केवलदर्शनको प्राप्त कर मोक्ष के अधिकारी बने।

द्वतीय वर्ग—

दूसरे वर्ग में द्वारका के अन्धक विष्णु राजा व धारिणी रानी के अक्षोभ सागर आदि आठ कुमारों का वर्णन है। ये आठों कुमार श्री अरिष्टनेमि भगवान के समीप दीक्षा लेकर गौतम कुमार के समान ही संयम तप द्वारा कर्म क्षय करके केवलज्ञान केवल-दर्शन को प्राप्त हो मोक्ष गए।

तृतीय वर्ग—

भद्दिलपुर नगरमें नाग नाम के गाथापति रहेते थे, उनकी पत्नी का नाम सुलसा था। उनके कुमार का नाम अणियसेन था, जो बुद्धिमान व कलाविशारद था। तृतिय वर्ग के प्रथम अध्ययन में इसी कुमारका वर्णन है। तरुणवयके प्रारंभ में कुमारका बत्तीस इभ्य सेठों की कन्याओं के साथ विवाह हुआ और प्रत्येक इभ्य सेठने दहेज में एक एक करोड सोनामोहरें दीं। जब कुमार यौवन वय के मध्य में पूर्ण भोगोपभोगमय जीवन बिता रहे थे तब उन्हें त्यागमय जीवन बनानेका उपदेश देने के लिये वहां श्री अरिष्टनेमि प्रभु पधारे। प्रभु के पधारने के समाचार सुनकर अणियसेन कुमार दर्शन व वन्दन के लिये गये और वहां जाने पर भगवान की संसार निस्तारिणी वाणी सुनकर वे दीक्षित हुए। दीक्षा लेने के बाद सामायिक से प्रारंभ करके चौदह पूर्वका अध्ययन किया। बीस वर्ष तक कठोर संयम पालकर अन्तिम समय एक मासका संथारा करके केवलज्ञान केवलदर्शन पाकर मोक्षको प्राप्त हुए। अनन्तसेन, अजितसेन, अनिहतरिपु, देवसेन और शत्रुसेन आदि पांच कुमार भी अणियसेन कुमार के ही भाई थे। इन सभी भ्राताओंका विवाह भी बत्तीस २ कन्याओं से हुआ और युवावस्था के मध्यमें श्री अरिष्टनेमि भगवान से उपदेश सुनकर दीक्षा धारण की और चौदह २ वर्ष तक चारित्र पालन करके अन्तमें पांचों अनगार एक मास के संथारे के साथ केवलज्ञानको पाकर मोक्ष गए।

छट्ठे अध्ययनमें-वासुदेव राजा व धारिणी रानी के पुत्र सारणकुमारका वर्णन है। उसका विवाह पचास कन्याओं के साथ हुवा। उसने युवावय में श्री अरिष्टनेमि का उपदेश सुनकर दीक्षा ली। चौदह वर्षकी संयमपर्याय में चौदहपूर्वका अध्ययन किया। बीस वर्षका चारित्रपालन कर अन्तमें एक मासके संथारे के साथ केवलज्ञान पाकर मोक्षको प्राप्त हुए।

सातवे अध्ययन में-क्षमाशील गजसुकुमाल मुनिका वर्णन है। श्री अरिष्टनेमि भगवान के अंतेवासी छ अनगार जो एकसा रूप लावण्यवाले थे, वे जबसे दीक्षित हुए तबसे बेले २ की तपश्चर्या का पारणा करने की प्रतिज्ञा ले के भगवान के साथ विचरने लगे। एक समय ये छओं मुनि प्रभुकी आज्ञा लेकर पारणेके लिये द्वारका में दो दो मुनिका तीन संघाडा बनाके भीक्षाचरी के लिये निकले। उनमें से दो मुनि देवकी महारानी के महलमें गोचरी के लिये प्रथम पधारे, वहां देवकी महारानी दोनों मुनियोंको सिंहकेसरी मोदक जो श्री कृष्ण के कलेवेके लिये बनाये हुए थे, वह बहराए। इसी प्रकार क्रमसे दूसरे समय अन्य दोनों मुनियोंको व तीसरे समय अपर दोनों मुनियोंको पूर्णभावसे मोदक बहराए और अन्त में पीछेसे आए हुए दोनों मुनियोंको देवकी महारानीने सविनय पूछा-'हे भदन्त! इस समृद्धशाली द्वारकानगरीमें इतने घर होने पर भी क्या कोई भिक्षा देनेका भाव रखनेवाले नहीं है जिससे आपको एकही कुलमें अनेकवार भिक्षाके लिये प्रवेश करना पडा, इस प्रश्नके पीछें महारानीके हृदयमें यह अंतरवेदना थी कि क्या मेरी प्रजामें मुनियोंके प्रति प्रेमभाव व श्रद्धा नहीं रही, जिससे द्वारकामें मुनियोंके एकही कुलमें वारवार प्रवेश करना पडता है।

यह सुनकर पीछे से आए हुए मुनियोंने उसी समय इस प्रकार उत्तर दिया कि-महारानी! इस महानगरीमें मुनियों को आहार नहीं मिलता, ऐसी बात नहीं है, और हमही तुम्हारे यहां तीनवार आए हैं, यह भी बात नहीं हैं। परन्तु हे देवानुप्रिये! हम छ अनगार सहोदर भाई हैं, हम छओंका देखाव एकसा होने से देखनेवालो को हम जुदे २

मालूम नहीं देते। हमने जबसे दीक्षा ली तभीसे बेले २ पारणे की तपश्चर्या करनेका अभिग्रह अरिष्टनेमि भगवानके पास लिया। आज हमारे छओ जनों के बेलेका पारणा होने से हम छओं मुनि भगवान की आज्ञा लेकर दो दो मुनि पृथक् २ भिक्षा लेने के लिये निकले तुम्हारे यहां पहले दो मुनि आए वे, तथा पीछे से दो मुनि आए वे, और हम दो सब जुदे २ हैं, हम ही बार २ आए, ऐसा आप न समझें। ऐसा कहकर वे दोनों मुनि चले गए। बादमें देवकी महारानी के हृदयमें सन्देह हुआ कि–मुझे बालपनमें अतिमुक्तक मुनिने फरमाया था कि–तुम ऐसे आठ पुत्रोंको जन्म दोगी, जिनके समान पुत्रोंको अन्य कोई भी माता जन्म नहीं दे शकेगी, फिरभी मैं प्रत्यक्ष देख रही हूं कि, वैसे पुत्रोंको जन्म देनेवाली अन्य माता भी है। जाऊं मैं श्री अरिष्टनेमि भगवान से अपने हृदयका संशय निवारण करूं। अपने हृदयमें उत्पन्न संशयका निवारण करना बुद्धिमानका कर्तव्य है, संशय के निवारण किये बिना सत्यासत्यका निर्णय नहीं होता। इन्हीं विचारों को लेकर देवकी महारानी भगवानके समीप गई। महारानी वन्दन करके पूछना चाहती है इससे पहले ही श्री अरिष्टनेमि भगवानने अपने ज्ञान द्वारा महारानी के आनेका कारण जानकर उसी समय फरमाया कि–हे महारानी! तुम्हें यह विचार हुआ था कि मेरे समान अन्य माता मेरे जैसे पुत्रों को जन्म नहीं देगी। फिर भी मैं प्रत्यक्ष देख रही हूं कि वैसे पुत्रोंको अन्य माताने जन्म दिया है, सो अतिमुक्तक कुमारका वचन असत्य हुआ, यह सुनकर देवकी रानी बोली, हां प्रभु! आप सर्वज्ञ हैं आपसे कोई छुपा हुआ नहीं है। इस प्रकार देवकी महारानी के स्वीकार करने पर अणियसेन आदि छओं अनगारोंका पूर्व वृत्तान्त सुनाकर देवकी महारानी के हृदयको संतुष्ट किया। देवकी महारानीने छओं अनगारों को ये मेरे पुत्र हैं ऐसा भगवान के द्वारा जानकर, उन छओ अनगारों के समीप जाकर वन्दना किया, उस समयका मातृप्रेम का वर्णन अद्वितीय है। पश्चात् देवकी माता अपने घर जाकर विचारने लगी कि,–'मैंने आजतक अपने

एक भी पुत्र का लालन पालन का आनन्द व लाडकोड नहीं देखा, इस कारण मैं हतभागिनी हूं। मोह मनुष्यका भान भुला देता है। मोहवशरानी आर्तध्यान में बैठी हुई थी उसी समय श्री कृष्ण माताको वन्दन करने के लिये आये और माताको चिन्तातुर देखकर जो मातृभक्ति दिखाई वह सर्व आबाल जनताको अनुकरणीय है। माताकी इच्छा पूर्ति के लिये श्रीकृष्णने पौषधशालामें तेला करके हरिणैगमेषि देवकी आराधना करके अपने लघुभ्राताकी याचना की, प्रत्युत्तर में देवने कहा कि–तुम्हारे लघुभ्राता होगा परन्तु वह दीक्षित बनेगा यह सुनकर श्री कृष्णने अपनी माताको देववाणी जो सुनाई और तदनुसार गजसुकुमाल कुमारका जन्म हुवा।

एक समय श्री अरिष्टनेमि प्रभुके पधारने पर श्री कृष्ण अपने लघु भ्राताको साथ लेकर वन्दनको जाते हुए रास्तेमें सोमिल ब्राह्मणकी सोमा नामकी कुमारीको देखा, उसकी सुरूपताको कर श्रीकृष्णने अपने लघु भाईके लिये उस कन्याकी याचना कराके भ्रातृप्रेमका आदर्श दिखाया।

उधर आगे जाकर अरिष्टनेमि भगवानका उपदेश सुनकर गजसुकुमाल कुमार अपने मातापिता व ज्येष्ठ बांधव श्रीकृष्ण की आज्ञा लेकर दीक्षित हुए। दीक्षित होते ही उसी रोज भगवानकी आज्ञा ले महाकाल स्मशानमे जाके ध्यानमें खडे हो गए। वहां सूर्यास्त होनेके समय यज्ञार्थ शमी आदि लानेके लिये गये हुए सोमिल ब्राह्मण गजसुकुमाल मुनिको ध्यानस्थ देखकर उस वैरको स्मरण करके तलावकी गीली मिट्टीकी पाल सिर पर बांधकर उसमें चिताके प्रज्वलित अंगारे डालकर वहांसे भाग गया। पश्चात् उन प्रज्वलित अंगारोंकी असह्य वेदना होने पर भी वे क्षमाशील मुनि विशुद्ध भावसे उस महान कष्टको सहन करते हुए सर्वकर्मका क्षय किया और अन्तमें केवलज्ञान पाकर मोक्षको प्राप्त हुए। इस प्रकरणमें हमें धर्मशील पुरुषकी अपने कार्यमें तत्परता व सहनशीलता का बोधपाठ मिलता है।

गजसुकुमाल मुनिका मोक्ष हो जाने पर दूसरे रोज श्रीकृष्ण श्री अरिष्टनेमि भगवानको वन्दन करनेके लिये गये रास्तेमें एक वृद्ध पुरुषको ईंटोंके विशाल ढेरमे से एक ईंट उठाकर धूजते, लथडाते लेजाते हुए देखा, उस पर दयादृष्टि लाकर श्रीकृष्णने हाथी पर बैठे हुए ही उन ईंटोंके ढेरमें से एक ईंट उठाकर उसके मकानमे रखदी जिससे उनके साथमें रहे हुए हजारों मनुष्योंने भी वैसाही अनुकरण कर सारा का सारा ईंटों का ढेर मकानमें पहुंचा दिया। इस प्रकार इस वृत्तान्तमें अपंगो, गरीबों दुखियों के प्रति करुणा भाव प्रगट करनेके लिये हमको बोधपाठ दिया गया है।

इस अध्ययनकी समाप्तिमें श्री कृष्णने जब मोक्ष प्राप्त गजसुकुमाल मुनिको नहीं देखकर श्री अरिष्टनेमि प्रभुसे उनके नहीं दिखाई देने का कारण पूछा तो प्रभुने सारा वृत्तान्त इस प्रकार कह सुनाया कि जिससे श्रीकृष्णको अपने मुंहसे सोमिल का नाम जाननेमें भी नहीं आवे और समय पर श्रीकृष्ण उन्हें जान भी लें। इस प्रकार हर एकको प्रमाणिक सत्य बोलनेका उपदेश इस अध्ययनसे प्राप्त होता है।

इस अध्ययनमें मुनियों की शुद्ध भिक्षाचरी, माताका पुत्रके प्रति और पुत्रका माताके प्रति प्रेम, भ्रातृप्रेम, विशुद्ध क्षान्तिभाव, दुःखियोंके प्रति सहृदयता व भाषासमिति की पालना आदिका वर्णन उचित रूपसे पालन करनेको मिलता है।

इसके आगे नवव अध्ययनमें सुमुखकुमार दसवें अध्ययनमें दुर्मुखकुमार ग्यारहवें में कूपदारककुमार बारवें में दारुककुमार और तेरहवें अध्ययनमें अनादृष्टिकुमारका संक्षिप्तमें वर्णन है।

चौथा वर्ग—

चोथे वर्ग में जालि मयालि आदि दस कुमारों का संक्षिप्त चरित्र वर्णित है, ये आठों कुमार श्री अरिष्टनेमि भगवान प्रभु के समीपे दीक्षा ले विशुद्ध संयम तपद्वारा कर्मक्षय करके मोक्षको प्राप्त हुए।

पांचवां वर्ग—

पांचवें वर्ग के प्रथम अध्ययनमें पद्मावती महारानी का वर्णन है। पद्मावती महारानी श्री कृष्णकी रानियों में मुख्य थी। किसी एक समय श्री अरिष्टनेमि भगवानके पधारने पर श्री कृष्ण व पद्मावती महारानी वंदनको गए, उपदेश सुने। उपदेश सुनकर श्री कृष्णने द्वारकाका नाश व स्वयंका भविष्य पूछा, जिसके जवाबमें द्वारकाका विनाश क्षुब्ध द्वैपायन ऋषिके द्वारा होनेका बताया, व श्री कृष्णको भविष्यके उत्सर्पिणी समयमें इसी भरतमें पुण्ड्र देशके अन्दर शतद्वार नगरमें अमम नामके बारहवें तीर्थंकर रूपमें जन्म लेनेका भविष्य सुनाया। यह सुनकर श्री कृष्ण महाराजको बडी खुशी हुई। इसके बाद श्री कृष्ण अपने महल जाकर अनुचरोंसे सारे शहरमें द्वारकाका भविष्य कहलाकर संसारसे विरक्त होने वालोंको अपनी तरफसे आज्ञा होनेका व उनके पीछे रहे हुए कुटुम्बी जनों का पालन पोषण अपने जिम्मे होनेका कथन जाहिर प्रजामें कह आनेका हुक्म दिया और तदनुसार अनुचर जन सारे शहरमें स्थान २ पर जाहिर कर आए।

इधर पद्मावती महारानीने भगवानका उपदेश सुनकर दीक्षा लेनेका निश्चय भगवानके सामने प्रकट किया और अपने महल आकर अपने पतिदेव श्री कृष्णसे दीक्षा लेनेकी आज्ञा मांगी। श्रीकृष्ण अपनी की हुई जाहिरातके अनुसार उसी समय आज्ञा देकर दीक्षा महोत्सवके लिये भव्य तैयारियां कराईं। स्वयं अपने हाथ महारानीको स्नान आदि क्रियासे निवृत्त करके एक हजार मनुष्य उठावे वैसी शिबिकामें बैठाकर जाहिर मार्गों पर घूमते हुए सहस्राम्रवनमें जाकर मुदित मनसे भगवानके समक्ष महारानीको दीक्षा लेनेके लिये उपस्थित किया। उन महारानीने दीक्षा लेनेके बाद एकसे लेकर एक महीने तक की बारबार अनेक तपश्चर्याएं करके शरीर व कर्म को क्षीण कर दिया और अन्तमें मोक्षको प्राप्त हुईं।

पद्मावती महारानीके समानही श्री कृष्ण महाराजकी अन्य गौरी गान्धारी आदि प्रमुख महारानियाँ भी दीक्षा ले संयम तपद्वारा कर्म क्षय करके मोक्ष जा विराजीं। इस पांचवें वर्गसे, धनिक वर्गके मनुष्यों को समझना चाहिये कि–हमे हमारे स्वजन परिजन, महल अटारियां वाग वगीचे आदि कोई भी उपयोगी व हितरूप नहीं है। हमारा हित है त्यागमें। त्याग विना जीवन कोरा और थोथा है, जिसका जीवन त्याग (संयम–तप) पूर्ण है वह आत्मिक लब्धिसे हराभरा है।

छट्ठा वर्ग—

छट्ठे वर्गके पहले और दूसरे अध्ययनमें राजगृहके मंकाई, व किंकम गाथापतिका वर्णन है। तीसरे अध्ययनमें राजगृह निवासी अर्जुनमालीका वृत्तान्त है। अर्जुनमाली के घरकी फूलवाडी थी और उस फूलवाडीके पास ही मुद्गरपाणि यक्षका स्थान था, जो प्रत्यक्ष एक हजार पलका भारी मुद्गर उठाके खडा रहता था। उस अर्जुन-माली की जीविका का पोषण इसी फूलवाडीके आधार पर होनेसे वह नित्य सवेरे वाडीमें जाकर उत्तमोत्तम फूल चुनकर यक्षको चढा देता। एक समय कोई विशेष राजकीय उत्सव होने से वह अपनी बन्धुमती पत्नीको अपने कार्यकी मददमें साथ ही वाडी ले गया और दोनों फूल चुनकर यक्षस्थान पर गए उस समय वहां छ पुरुष–जिनको कोई भी कार्यकरने में किसीकी तरफसे रुकावट नहीं हो सकती थी वे–बन्धुमती सहित अर्जुनमालीको आते देख मन्दिरमें छिप गये और जव वे दोनों फूलोंका ढेर कर नमस्कार करके घुटने नवांए, तो उसी समय उन छओं मित्रोंने अर्जुनमालीको रस्सीसे वांधकर वहीं गुडका दिया और वे वहीं बन्धुमतीके साथ वलात्कार में प्रवृत्त हुए। इस प्रकार अपनी आंखोंके समक्ष विपरीत दृश्य उपस्थित होनेसे अर्जुनमालीको यक्षके प्रति अश्रद्धा हुई। मुद्गरपाणि यक्षने अपने प्रति अर्जुनमाली को अश्रद्धावान होते देख वह उसी समय अर्जुनमालीके शरीरमें प्रवेश कर उसे वन्धनमुक्त किया और साथ ही उन छओ पुरुषोंको व वन्धुमतीको मुद्गरसे

मृत्युमुखमें धकेल दिया। बादमें यक्षाधीन उस अर्जुनमालीने पांच मास और तेरह दिन तक नित्य छ पुरुष एक स्त्री की हत्या करते हुए ११४१ स्त्री पुरुषोंका निकन्दन किया। इन्हीं दिनों एक समय श्री महावीरप्रभु राजगृहके बाहर गुणशिलक बागमें पधारे, ये समाचार जब जेष्ठिपुत्र श्रमणोपासक सुदर्शन श्रावकको मालूम हुआ तो वे अपने मातापिताकी आज्ञा लेकर बाहर उपसर्ग होते हुए भी निडर हो कर वन्दनको निकले। जब यक्षाधीन अर्जुनमाली उन्हें आते देखा तो वह उनके समक्ष दौड आया और उधर श्रावक उसे आते देख कर चारों आहारका त्याग करके ध्यानमें बैठ गये। ध्यानधारी श्रावक पर जब यक्षका जोर नहीं चला तो वह अर्जुनमाली को त्याग कर चला गया। यक्षके चले जाने पर अर्जुनमाली मूर्छित हो गिर गया, उस समय श्रावक सुदर्शन अपनेको निरुपद्रवित देख कर सागारिक संथारा पालकर उठे और अर्जुनमाली भी अन्तुर्मुहूर्त मूर्छा रहित होकर सचेष्ट हुआ फिर सुदर्शन सेठ अर्जुनमालीको अपने साथ लेकर भगवानके पास गये, वहां भगवानके उपदेशसे अर्जुनमाली दीक्षित हो गए। और उसी समय से बेले २ पारणा करनेकी प्रतिज्ञा लेकर उसी राजगृहमें पारणेके दिन भिक्षाके लिये जब जा रहे थे, तब राजगृहके लोग उन्हें अपने इष्टजनोंका घातक समझकर पत्थर लकडी आदिसे मारते थे और अवहेलना करते थे परन्तु वे अपूर्व सहनशील महात्यागी पुरुष मध्यस्थ भावसे उन उपसर्गोंको सह लेते थे भिक्षा में जो भी मिलता उसी पर निर्वाह करते थे। जितने भयंकर कर्म बांधे थे वे सब क्रमसे उत्कृष्ट संयम तपद्वारा क्षय करके छ महीनेमें मोक्ष जा विराजे। इस अध्ययनसे (१) सरागी देवको छोडकर वीतरागकी आराधनाही मोक्ष प्राप्तिका कारण है ऐसा समझना चाहिये।

(२) कितना भी भयंकर उपसर्ग क्यों न आवे परन्तु धैर्य धारण कर धर्मकार्यमें उन्नति प्राप्त करनेसे आपत्तियां नष्ट होती हैं।

(३) दुष्टके प्रति सज्जनता दिखाकर उसे उचित मार्गारूढ करनेमें हमें अपनी सज्जनता माननी चाहिये।

(४) तथा हमें दुष्ट व शत्रु समझकर जो भी कष्ट पहुंचावें तों कष्ट पहुंचाने वालोंके प्रति सहृदयता प्रगट कर मध्यस्थभावसे आपत्तियोंको सहन करनेमें मोक्ष प्राप्ति है। इस प्रकार चार बातोंकी शिक्षा इस तीसरे अध्ययनमें है।

आखे-काश्यप गाथापति के चौथे अध्ययनसे मेघगाथापति का चौदहवां अध्ययन तक संक्षिप्त वर्णन है। पन्द्रहवे अध्ययनमें पोलासपुर नगरके विजयराजा के पुत्र एवन्ता (अतिमुक्त) कुमारका वर्णन है। ये कुमार एक समय बालक्रीडा स्थानमें खेल रहेथे, उस समय उधरसे गौतमस्वामीको भिक्षाके लिये जाते देखकर कुमार दौडकर गौतमस्वामीको पूछा, आप कहां पधारते हैं! जब गौतम-स्वामीने-भिक्षाके लिये जाते हैं, ऐसा कहा तो कुमार गौतमस्वामीके हाथकी अंगुली पकड कर अपने महल ले गये। अपने हाथसे गौतम स्वामीको पकड कर लाते हुए एवंता कुमार को देख कर श्रीदेवी महारानी बहुत खुश हुईं, और उन्होंने गौतमस्वामी को भावयुक्त वंदन कर आहार पानी वहराया। एवंता कुमार गौतम-स्वामीके साथ श्री महावीरप्रभुके पास जाकर वाणी श्रवण की। वाणी श्रवणसे वैराग्ययुक्त हो मातापितासे दीक्षाके लिये आज्ञा मांगी। तब मातापिताने कहा कि तूं अभी बालक है, चारित्रमें तूं क्या समझ सकेगा! इसके प्रत्युत्तरमें कुमारने जो उचित उत्तर देकर अपनी योग्यता दिखाई वह बालदीक्षा विरोधियोंके लक्षमें लेने योग्य है। एवंता कुमार भी संयम तप अनुष्ठानके बलसे कर्म क्षय कर मोक्ष प्राप्त हुए।

सोलहवें अध्ययनमें वाराणसी के अलक्ष राजाका वृत्तान्त है, इन्होंने भगवान महावीरका उपदेश सुनकर संसार त्याग किया, और ये संयम तप आदिके बलसे कर्मक्षय करके मोक्षमें गए।

सातवां वर्ग—

सातवें वर्गमें श्रेणिक महाराजकी नन्दा नन्दवती आदि तेरह महारानियों का संक्षिप्त कथन है। ये तेरह महारानियाँ संयम तपद्वारा कर्म क्षय करके मोक्ष पहुंचीं।

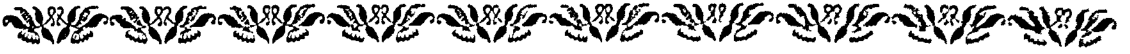
आठवां वर्ग—

अन्तिम आठवें वर्गमें श्री श्रेणिक महाराजकी दस रानियोंका वर्णन है। ये दसो रानियां भगवान महावीरका उपदेश सुन दीक्षित हुईं और दीक्षा लेनेके बाद काली आर्याजीने रत्नावलि तप, सुकाली अर्याजीने कनकावली तप, महाकाली आर्याजीने लघुसिंह निष्क्रीडित तप, कृष्णा आर्याजीने महासिंह निष्क्रीडित तप, सुकृष्णा आर्याजीने सातवीं आठवीं नवमीं दशवीं भिक्षु पडिमा तप, महाकृष्णा आर्याजीने लघु सर्वतोभद्र तप, वीरकृष्णा आर्याजीने महासर्वतोभद्र तप, रामकृष्णा आर्याजीने भद्रोत्तर तप, पितृसेन कृष्णा आर्याजीने मुक्तावली तप, और महासेनकृष्णा आर्याजीने आयम्बिल वर्धमान तप किया। सुकुमार शरीर होते हुए भी इतनी महान तपश्चर्या विना आत्मकल्याण नहीं, ऐसा समझकर उन महारानियोंने प्रत्येक भव्य जीवोंको तपद्वारा कर्म क्षय करनेंका अपनी जीवनचर्यासे बोध कराया है।

इस अन्तगड सूत्रमें मोक्ष प्राप्त प्रत्येक महान् आत्माका तपसंयम युक्त जीवनका वर्णन है। मोक्ष प्राप्त करानेमें तप संयम प्रत्येक भव्य प्राणिके लिये महान साधन है—ऐसा हमें अन्तगड सूत्रके पठन व श्रवणसे भलाभांति मालूम होगा। इन महापुरुषोंका जीवनवर्णनरूप यह अन्तगडसूत्र पर्युषणके आठ दिनोंमें पढनेका विधान है, तदनुसार पर्युषणोंमें भव्य जीव पूर्ण भक्तियुक्त मनसे इसका श्रवण करते हैं। इस कारण जैनाचार्य पूज्य श्री घासीलालजी म. सा. ने सर्वको सुबोध हो व सरलतासे सभी अबाल वृद्ध पठन पाठन कर सकें, इस ध्येयसे इस अन्तगड सूत्रकी सरल संस्कृत टीका बनाई। वह हिन्दी गुजराती भाषा टीकासे युक्त है। वह प्रत्येकके लिये उपयोगी है। आशा है—भव्यवृन्द इस सूत्रको पढकर उत्तरोत्तर ज्ञानदर्शन चारित्रकी वृद्धिको प्राप्त होंगे।

निवेदक—

 समीर मुनि



બીજી આવૃત્તિની પ્રસ્તાવના



આ ઉપયોગી શાસ્ત્રની પ્રથમ આવૃત્તિની ૫૦૦) કોપી ખલાસ થવાથી આ બીજી આવૃત્તિ ૧૦૦૦) કોપી પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવેલ છે.

અમોને આશા છે કે જૈન સમાજ તેનો પૂરતો લાભ લઈ આત્મકલ્યાણ કાર્યમાં આગળ વધશે.

આ સમિતિ પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ દ્વારા તૈયાર કરેલાં શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ કરી બનતી સેવા કરે છે તેમાં આપના પૂરા સહકારની આશા રાખવી તે અસ્થાને તો નથી ને?

રાજકોટ,
તા. ૧-૯-૧૯૫૮.

સેવકો,
માનદ મંત્રીઓ.





રૂા. ૧૦,૦૦૦ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી.

સમિતિના પ્રમુખ; દાનવીર શેઠશ્રી



શેઠ શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ

અમદાવાદ.

શ્રી-વર્ધમાન-શ્રમણ-સંઘના આચાર્યશ્રી

પૂજ્ય આત્મારામજી મહારાજશ્રીએ

આ પે લ

સ મ્મ તિ પ ત્ર



ઉ પ રાં ત

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ-રચિત

બીજા સૂત્રોની ટીકા માટે તેઓશ્રીના મંતવ્યો



તે મ જ

અન્ય મહાત્માઓ, મહાસતીજીઓ, અદ્યતન-પદ્ધતિવાળા કોલેજના પ્રોફેસરો

તે મ જ

શાસ્ત્રજ્ઞ શ્રાવકોના અભિપ્રાયો.

ઠે. ગ્રીન લોજ પાસે
ગરેડીયા કુવારોડ,
રાજકોટ : સૌરાષ્ટ્ર

અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન-
શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ.

(श्री दशवैकालिकसूत्रका सम्मतिपत्र.)

॥ श्रीवीरगौतमाय नमः ॥

सम्मति-पत्रम्.

मए पंडियमुणि-हेमचंदेण य पंडिय-मूलचन्दवासवारापत्ता पंडिय-रयण-मुणि-घासीलालेण विरइया सक्कय-हिंदी-भासाहिं जुत्ता सिरि-दसवेयालिय-नाम सुत्तस्स आयारमणिमंजूसा वित्ती अवलोइया, इमा मणोहरा अत्थि, एत्थ सद्दाणं अइसयजुत्तो अत्थो वण्णिओ विउजणाणं पाययजणाण य परमोवयारिया इमा वित्ती दीसइ ! आयारविसए वित्तीकत्तारेण अइसयपुव्वं उल्लेहो कडो, तहा अहिंसाए सरूवं जे जहा-तहा न जाणंति तेसिं इमाए वित्तीए परमलाहो भविस्सइ, कत्तुणा पत्तेयविसयाणं फुडरूवेण वण्णणं कडं, तहा मुणिणो अरहत्ता इमाए वित्तीए अवलोयणाओ अइसयजुत्ता सिज्झइ ! सक्कयछाया सुत्तययाणं पयच्छेओ य सुबोहदायगो अत्थि, पत्तेयजिण्णासुणो इमा वित्ती दट्ठव्वा। अम्हाणं समाजे एरिसविज्ज-मुणिरयणाणं सब्भावो समाजस्स अहोभग्गं अत्थि, किं ? उत्तविज्जमुणिरयणाणं कारणाओ जो अम्हाणं समाजो सुत्तप्पाओ, अम्हकेरं साहिच्चं च लुत्तप्पायं अत्थि तेसिं पुणोवि उदओ भविस्सइ जस्स कारणाओ भवियप्पा मोक्खस्स जोग्गो भवित्ता पुणो निव्वाणं पाविहिइ अओहं आयारमणि-मंजूसाए कत्तुणो पुणो पुणो धन्नवायं देमि- ॥

वि. सं. १९९० फाल्गुन-
शुक्लत्रयोदशी मङ्गले
(अलवर स्टेट)

इइ-
उवज्झाय-जइण-मुणी, आयारामो
(पचनईओ)

जैनागमवेत्ता जैनधर्मदिवाकर उपाध्याय श्री १००८ आत्मारामजी महाराज तथा न्याय व्याकरण के ज्ञाता परम पण्डित मुनिश्री १००७ श्री हेमचंद्रश्री महाराज, इन दोनों महात्माओंका दिया हुआ श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रका प्रमाण पत्र निम्न प्रकार है—

सम्मइवत्तं

सिरि-वीरनिव्वाण-संवच्छर २४५८ आसोई
(पुण्णमासी) १५ सुक्कवारो लुहियाणाओ।

मए मुणिहेमचंदेण य पंडियरयणमुणिसिरि-घासीलालविणिम्मिया सिरिउवासगसुत्तस्स अगारधम्मसंजीवणीनामिया वित्ती पंडियमूलचन्दवासाओ अज्जोवंतं सुया, समीईणं, इयं वित्ती जहाणामं तहा गुणेवि धारेइ, सच्चं, अगाराणं तु इमा जीवण (संजमजीवण) दाई एव अत्थि। वित्तीकत्तुणा मूलसुत्तस्स भावो उज्जुसेलीओ फुडीकओ, अहय उवासयस्स सामण्णविसेसधम्मो, णयसियवायवाओ, कम्मपुरिसट्टवाओ, समणोवासयस्स धम्मदढत्ता य, इच्चाइविसया अस्सिं फुडरीईओ वण्णिया, जेव कत्तुणो पडिहाए सुट्टुप्पयारेण परिचओ होइ, तह इइहासदिट्ठिओवि सिरिसमणस्स भगवओ महावीरस्स समए वट्टमाण—भरहवासस्स य कत्तुणा विसयप्पयारेण चित्तं चित्तिं, पुणो सक्कयपाढीणं, वट्टमाणकाले हिन्दीणामियाए भासाए भासीणं य परमोवयारो कडो, इमेण कत्तुणी अरहित्ता दीसइ, कत्तुणो एयं कज्जं परमप्पसंसणिज्जमत्थि। पत्तेयजणस्स मज्झत्थभावाओ अस्स सुत्तस्स अवलोयणमईव लाहप्पयं, अविउ सावयस्स तु (उ) इमं सत्थं सव्वस्समेव अत्थि, अओ कत्तुणो अणेगकोडीसो धन्नवाओ अत्थि, जेहिं, अच्चंतपरिस्समेण जइणजणतोवरि असीमोवयारो कडो, अहय सावयस्स वास्स नियमा उ पत्तेयजणस्स पढणिज्जा अत्थि, जेसिं पहावओ वा गहणाओ आया निव्वाणाहिगारी भवइ, तहा भवियव्वयावाओ पुरिसक्कारपरक्कमवाओ य अवस्समेव दंसणिज्जो, किंवहुणा इमीसे वित्तीए पत्तेयविसयस्स फुडसद्देहिं वण्णणं कयं, जइ अन्नोवि एवं अम्हाणं पसुत्तप्पाए समाजे विज्जं भवेज्जा तया नाणस्स चरित्तस्स तहा संघस्स य खिप्पं उदओ भविस्सइ, एवं हं मन्ने॥

भवईओ—

उवज्झाय—जइणमुणि—आयाराम,—पंचनईओ,

सम्मतिपत्र

(भाषान्तर)

श्री वीर निर्वाण सं० २४५८ आसोज
शुक्ला (पूर्णिमा) १५ शुक्रवार लुधियाना

मैंने और पंडितमुनि हेमचन्दजीने पंडितरत्नमुनिश्री घासीलालजीकी रची हुई उपासकदशांग सूत्रकी गृहस्थधर्मसंजीवनी नामक टीका पंडित मूलचंद्रजी व्याससे आद्योपान्त सुनी है। यह वृत्ति यथानाम तथागुणवाली-अच्छी बनी-है। सच यह गृहस्थोंके तो जीवनदात्री-संयमरूप जीवनको देनेवाली-ही है। टीकाकारने मूलसूत्र के भावको सरल रीतिसे वर्णन किया है, तथा श्रावकका सामान्य धर्म क्या है? और विशेष धर्म क्या हैं? इसका खुलासा इस टीकामें अच्छे ढंगसे बतलाया है। स्याद्वादका स्वरूप कर्म-पुरुषार्थ-वाद और श्रावकको धर्मके अन्दर दृढ़ता किस प्रकार रखना, इत्यादि विषयोंका निरूपण इसमें भलीभाँति किया है। इससे टीकाकारकी प्रतिभा खूब झलकती है। ऐतिहासिक दृष्टिसे श्रमण भगवान् महावीरके समय जैनधर्म किस जाहोजलाली पर था? और वर्तमान समय जैन धर्म किस स्थितिमें पहुंचा है? इस विषयका तो ठीक चित्र ही चित्रत कर दिया है! फिर संस्कृत जाननेवालोंको तथा हिन्दीभाषाके जाननेवालोंको भी पुरा लाभ होगा, क्योंकि टीका संस्कृत है उसकी सरल हिन्दी करदी गई है। इसके पढनेसे कर्ताकी योग्यताका पता लगता है कि वृत्तिकारने समझानेका कैसा अच्छा प्रयत्न किया है। टीकाकारका यह कार्य परम प्रशंसनीय है। इस सूत्रको मध्यस्थ भावसे पढने वालोंको परम लाभकी प्राप्ति होगी। क्या कहें श्रावकों (गृहस्थों)का तो यह सूत्र सर्वस्व ही है, अतः टीकाकारको कोटिशः धन्यवाद दिया जाता है, जिन्होंने अत्यन्त परिश्रमसे जैन जनताके ऊपर असीम उपकार किया है। इसमें श्रावकके बारह नियम प्रत्येक पुरुषके पढने योग्य हैं, जिनके प्रभावसे अथवा यथायोग्य ग्रहण करनेसे आत्मा मोक्षका अधिकारी होता है! तथा भवितव्यतावाद और पुरुषकार-

पराक्रमवाद हरएकको अवश्य देखना चाहिये। कहांतक कहें इस टीकामें प्रत्येक विषय सम्यक् प्रकारसे बताये गये हैं। हमारी सुसप्राय (सोई हुईसी) समाजमें अगर आप जैसे योग्य विद्वान् फिर भी कोई होंगे तो ज्ञान चारित्र तथा श्रीसंघका शीघ्र उदय होगा, ऐसा मैं मानता हूँ-

आपका

उपाध्याय जैनमुनि आत्माराम पंजाबी.



इसी प्रकार लाहोरमें विराजते हुए पंण्डितवर्य विद्वान् मुनिश्री १००८ श्री भागचन्दजी महाराज तथा पं. मुनिश्री त्रिलोकचन्दजी महाराजके दिये हुए, श्री उपाशकदशाङ्ग सूत्रके प्रमाणपत्रका हिन्दी सारांश निम्न प्रकार है-

श्री श्री स्वामी घासीलालजी महाराज कृत श्री उपासकदशाङ्ग सूत्रकी संस्कृत टीका व भाषाका अवलोकन किया, यह टीका अतिरमणीय व मनोरञ्जक है, इसे आपने बड़े परिश्रम व पुरुषार्थसे तैयार किया है सो आप धन्यवादके पात्र हैं। आप जैसे व्यक्ति-योंकी समाजमें पूर्ण आवश्यकता है। आपकी इस लेखनीसे समाजके विद्वान् साधुवर्ग पढकर पूर्ण लाभ उठावेंगे, टीकाके पढनेसे हमको अत्यानन्द हुवा, और मनमें ऐसे विचार उत्पन्न हुए कि हमारी समाजमें भी ऐसे २ सुयोग्य रत्न उत्पन्न होने लगे-यह एक हमारे लिये बड़े गौरवकी बात है।

वि. सं. १९८९ मा. आश्विन
कृष्णा १३ वार भौम लाहोर.

श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र की 'अनगार धर्माऽमृतवर्षिणी' टीका पर
जैनदिवाकर साहित्यरत्न जैनागमरत्नाकर परमपूज्य श्रद्धेय
जैनाचार्य श्री आत्मरामजी महाराजका

सम्मतिपत्र

लुधियाना, ता. ४-८-६१.

मैंने आचार्यश्री घासीलालजी म. द्वारा निर्मित 'अनगार-धर्माऽ-मृत-वर्षिणी' टीका वाले श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रका मुनि श्री रत्न-चन्द्रजीसे आद्योपान्त श्रवण किया।

यह निःसन्देह कहना पड़ता है कि यह टीका आचार्य श्री घासीलालजी म. ने बड़े परिश्रम से लिखी है। इसमें प्रत्येक शब्दका प्रामाणिक अर्थ और कठिन स्थलों पर सार-पूर्ण विवेचन आदि कई एक विशेषतायें हैं। मूल स्थलोंको सरल बनानेमें काफी प्रयत्न किया गया हैं, इससे साधारण तथा असाधारण सभी संस्कृतज्ञ पाठकों को लाभ होगा ऐसा मेरा विचार है।

मैं स्वाध्यायप्रेमी सज्जनों से यह आशा करूँगा कि वे वृत्तिकारके परिश्रम को सफल बनाकर शास्त्रमें दी गई अनमोल शिक्षायों से अपने जीवनको शिक्षित करते हुए परमसाध्य मोक्षको प्राप्त करेंगे।

श्रीमान्‌जी जयवीर

आपकी सेवामें पोष्ट द्वारा पुस्तक भेज रहे हैं और इसपर आचार्यश्रीजी की जो सम्मति है वह इस पत्रके साथ भेज रहे हैं पहुचने पर समाचार देवें।

श्री आचार्यश्री आत्मारामजी म. ठाने ९ सुख शान्तिसे विराजते हैं। पूज्य घासीलालजी म. सा. ठाने ४ को हमारी ओरसे वन्दना अर्जकर सुखशाता पूछें।

पूज्य श्री घासीलालजी म. जी का लिखा हुआ (विपाकसूत्र) महाराजश्रीजी देखना चाहते हैं इसलिये १ कॉपी आप भेजने की कृपा करें; फिर आपको वापिस भेज देवेंगे। आपके पास नहीं हो तो जहां से मिले वहांसे १ कॉपी जरूर भिजवाने का कष्ट करें, उत्तर जल्द देनेकी कृपा करें। योग्य सेवा लिखते रहें।

लुधियाना ता. ४-८-६१

निवेदक
प्यारेलाल जैन

जैनागमवारिधि – जैनधर्मदिवाकर – उपाध्याय – पण्डित – मुनि श्रीआत्मारामजी महाराज (पंजाब) का आचाराङ्गसूत्र की आचारचिन्तामणि टीका पर

सम्मति–पत्र ।

मैंने पूज्य आचार्यवर्य श्रीघासीलालजी (महाराज)की बनाई हुई श्रीमद् आचाराङ्गसूत्र के प्रथम अध्ययन की आचारचिन्तामणि टीका सम्पूर्ण उपयोगपूर्वक सुनी।

यह टीका–न्याय सिद्धान्त से युक्त, व्याकरण के नियम से निबद्ध है। तथा इसमें प्रसङ्ग २ पर क्रम से अन्य सिद्धान्त का संग्रह भी उचित रूप से मालूम होता है।

टीकाकारने अन्य सभी विषय सम्यक् प्रकार से स्पष्ट किये हैं, तथा प्रौढ विषयों का विशेषरूप से संस्कृत भाषा में स्पष्टतापूर्वक प्रतिपादन अधिक मनोरंजक है, एतदर्थ आचार्य महोदय धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि–जिज्ञासु महोदय इसका भलीभाँति पठन द्वारा जैनागम–सिद्धान्तरूप अमृत पी–पी कर मन को हर्षित करेंगे, और इसके मनन से दक्ष जन चार अनुयोगों का स्वरूपज्ञान पावेंगे। तथा अचार्यवर्य इसी प्रकार दूसरे भी जैनागमों के विशद विवेचन द्वारा श्वेताम्बर–स्थानकवासी समाज पर महान उपकार कर यशस्वी बनेंगे।

वि. सं. २००२
मृगसर सुदि १

जैनमुनि–उपाध्याय आत्माराम
लुधियाना (पंजाव)

–: ❀ :– शुभमस्तु ॥

बीकानेरवाला समाजभूषण शास्त्रज्ञ भेरुदानजी शेठिआनो अभिप्राय



आप जो शास्त्रका कार्य कर रहे हैं यह बडा उपकारका कार्य है। इससे जैनजनता को काफी लाभ पहुँचेगा.

(ता. २८–३–५६ ना पत्रमांथी)

॥ श्रीः ॥

जैनागमवारिधि-जैनधर्मदिवाकर-जैनाचार्य-पूज्य-श्री आत्मारामजी-
महाराजनां पञ्चनद-(पंजाव)स्थानामनुत्तरोपपातिकसूत्राणा-
मर्थबोधिनीनामकटीकायामिदम्-

सम्मतिपत्रम्.

आचार्यवर्यैः श्री घासीलालमुनिभिः सङ्कलिता अनुत्तरोपपातिकसूत्राणामर्थ-वोधिनीनाम्नी संस्कृतवृत्तिरुपयोगपूर्वकं सकलाऽपि स्वशिष्यमुखेनाऽश्रावि मया, इयं हि वृत्तिर्मुनिवरस्य वैदुष्यं प्रकटयति। श्रीमद्भिर्मुनिभिः सूत्राणामर्थान् स्पष्टयितुं यः प्रयत्नो व्यधायि तदर्थमनेकसो धन्यवादानर्हन्ति ते। यथा चेयं वृत्तिः सरला सुवोधिनी च तथा सारवत्यपि। अस्याः स्वाध्यायेन निर्वाणपदमभीप्सुभिर्निर्वाणपदमनुसरद्भिर्ज्ञान--दर्शन-चारित्रेषु प्रयतमानैर्मुनिभिः श्रावकैश्च ज्ञान-दर्शन-चारित्राणि सम्यक् सम्प्राप्याऽन्येऽप्यात्मानस्तत्र प्रवर्तयिष्यन्ते।

आशासे श्रीमदाशुकविर्मुनिवरो गीर्वाणवाणीजुषां विदुषां मनस्तोषाय जैनागमसूत्राणां सारावबोधाय च अन्येषामपि जैनागमानामित्थं सरलाः सुस्पष्टाश्च वृत्तीर्विधाय तांस्तान् सूत्रग्रन्थान् देवगिरा सुस्पष्टयिष्यति।

अन्ते च "मुनिवरस्य परिश्रमं सफलयितुं सरलां सुवोधिनीं चेमां सूत्रवृत्तिं स्वाध्यायेन सनाथयिष्यन्त्यवश्यं सुयोग्या हंसनिभाः पाठकाः।" इत्याशास्ते—

विक्रमाब्द २००२ श्रावणकृष्णा प्रतिपदा लुधियाना.	उपाध्याय आत्मारामो जैनमुनिः।

एसेही :—

मध्यभारत सैलाना-निवासी श्रीमान् रतनलालजी डोसी श्रमणोपासक जैन लिखते हैं कि:—

श्रीमान की की हुई टीकावाला उपासकदशांग सेवक के दृष्टि-गत हुवा, सेवक अभी उसका मनन कर रहा है य ग्रन्थ सर्वांग-सुन्दर एवम् उच्चकोटि का उपकारक है।

निरयावलिकासूत्रका सम्मतिपत्र.

आगमवारिधि-सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-जैनाचार्य-पूज्यश्री

आत्मारामजी महाराजकी तरफ का आया हुवा

सम्मतिपत्र

लुधियाना. ता. ११ नवम्बर ४८

श्रीयुत गुलाबचन्दजी पानाचंदजी। सादर जयजिनेन्द्र ॥

पत्र आपका मिला ! निरयावलिका विषय पूज्यश्रीजीका स्वास्थ्य ठीक न होने से उनके शिष्य पं. श्री हेमचन्द्रजी महाराजने सम्मति पत्र लिख दिया है आपको भेज रहे हैं! कृपया एक कोपी निरयावलिका की और भेज दीजिये और कोई योग्य सेवा कार्य लिखते रहें ? !

भवदीय.

गुजरमल-बलवंतराय जैन

॥ सम्मतिः ॥

(लेखक जैनमुनि पं. श्री हेमचन्द्रजी महाराज)

सुन्दरबोधिनीटीकया समलङ्कृतं हिन्दी–गुर्जरभाषानुवादसहितं च श्रीनिरयावलिकासूत्रं मेधाविनामल्पमेधसां चोपकारकं भविष्यतीति सुदृढं मेऽभिमतम्, संस्कृतटीकेयं सरला सुबोधा सुललिता चात एव अन्वर्थनाम्नी चाप्यस्ति। सुविशदत्वात् सुगमत्वात् प्रत्येकदुर्बोधपद–व्याख्यायुतत्वाच्च टीकैषा संस्कृतसाधारणज्ञानवतामप्युपयोगिनी भाविनीत्यभिप्रैमि। हिन्दी–गुर्जरभाषानुवादावपि एतद्भाषाविज्ञानां महीयसे लाभाय भवेतामिति सम्यक् संभावयामि।

जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री घासीलालजी महाराजानां परिश्रमोऽयं प्रशंसनीयो धन्यवादार्हाश्च ते मुनिसत्तमाः। एवमेव श्री समीरमल्लजी श्री कन्हैयालालजी मुनिवरेण्ययोर्नियोजनकार्यमपि श्लाध्यं, तावपि च मुनिवरौ धन्यवादार्हौ स्तः।

सुन्दरप्रस्तावनाविषयानुक्रमादिना समलङ्कृते सूत्ररत्नेऽस्मिन् यदि शब्दकोषोऽपि दत्तः स्यात्तर्हि वरतरं स्यात्। यतोऽस्यावश्यकतां सवऽप्यवेष-कविद्वांसोऽनुभवन्ति।

पाठकाः सूत्रस्यास्याध्ययनाध्यापनेन लेखकनियोजकमहोदयानां परिश्रमं सफलयिष्यन्तीत्याशास्महे। इति।

श्री उपासकदशाङ्ग सूत्र परत्वे जैन समाजना अग्रगण्य जैनधर्मभूपण महान विद्वान संतोए तेमज विद्वान श्रावकोए सम्मतिओ समर्पी छे तेमना नामो नीचे प्रमाणे छे.

(१) लुधियाना-सम्वत् १९८९, आश्विन पूर्णिमा का पत्र, श्रुतज्ञान के भंडार आगमरत्नाकर जैनधर्मदिवाकर श्री १००८ श्री उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज, तथा न्यायव्याकरणवेत्ता श्री १००७ तच्छिष्य श्री मुनि हेमचन्दजी महारज.

(२) लाहौर-वि० सं० १९८९ आश्विन वदि १३ का पत्र, पण्डित रत्न श्री १००८ श्री भागचन्दजी महाराज तथा तच्छिष्य पण्डित रत्न श्री १००७ श्री त्रिलोकचंदजी महाराज.

(३) खिचन से ता. ९-११-३६ का पत्र, क्रियापात्र स्थविर श्री १००८ श्री भारतरत्न श्री समरथमलजी महाराज.

(४) वालाचोर-ता. १४-११-३६ का पत्र, परम प्रसिद्ध भारतरत्न श्री १००८ श्री शतावधानीजी श्री रतनचन्दजी महाराज.

(५) बम्बई-ता. १६-११-३६ का पत्र, प्रसिद्ध कवीन्द्र श्री १००८ श्री कवि नानचन्द्रजी महाराज.

(६) आगरा-ता. १८-११-३६, जगत् वल्लभ श्री १००८ श्री जैन दिवाकर श्री चौथमलजी महाराज, गुणवन्त गणीजी श्री १००७ श्री साहित्यप्रेमी श्री प्यारचन्दजी महाराज.

(७) हैद्राबाद (दक्षिण) ता. २५-११-३६ का पत्र, स्थिवरपदभूषित भाग्यवान पुरुष श्री ताराचन्दजी महाराज तथा प्रसिद्ध वक्ता श्री १००७ श्री सोभामलजी महाराज.

(८) जयपुर-ता. २६-११-३६ का पत्र, संप्रदाय के गौरवर्धक शांतस्वभावी श्री १००८ श्री पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज.

(९) अम्बाला-ता. २९-११-३६ का पत्र, परम प्रतापी पंजाब केशरी श्री १००८ श्री पूज्य श्री रामजी महाराज.

(१०) सेलाना-ता. २९-११-३६ का पत्र, शास्त्रों के ज्ञाता श्रीमान् रतनलालजी डोसी.

(११) खीचन-ता ९-११-३६ का पत्र, पंडितरत्न न्यायतीर्थ सुश्रावक श्रीयुत् माधवलालजी.

••••••o••••••

ता. २५-११-३६

सादर जय जिनेन्द्र

आपका भेजा हुवा उपासक दशांग सूत्र तथा पत्र मिला यहां विराजित प्रवर्तक वयोवृद्ध श्री १००८ श्री ताराचंदजी महाराज पण्डित श्री किशनलालजी महाराज आदि ठाणा १४ सुख शांती में बिराजमान हैं आपके वहां विराजित जैनशास्त्राचार्य पूज्यपाद श्री १००८ श्री घासीलालजी महाराज आदि ठाणा नव से हमारी वन्दना अर्ज कर सुख शांति पूछे आपने उपासकदशांग सूत्र के विषय में यहां विराजित मुनिवरों की सम्मती मंगाई उसके विषय में वक्ता श्री सोभागमलजी महाराज ने फरमाया है कि वर्तमान में स्थानकवासी समाज में अनेकानेक विद्वान मुनि महाराज मौजूद हैं मगर जैनशास्त्र की वृत्ति रचने का साहस जैसा घासीलालजी महाराज ने किया है वैसा अन्य ने किया हो ऐसा नजर नहीं आता दूसरा यह शास्त्र अत्यन्त उपयोगी तो यों हैं संस्कृत प्राकृत हिन्दी और गुजराती भाषा होने से चारों भाषा वाले एक ही पुस्तक से लाभ उठा सकते हैं जैन समाज में ऐसे विद्वानों का गौरव बढे यही शुभ कामना है आशा है कि स्थानकवासी संघ विद्वानों की कदर करना सीखेगा। योग्य लिखें शेष शुभ भवदीय

जमनालाल रामलाल कीमती

*

आगरा से :—

श्री जैनदिवाकर प्रसिद्धवक्ता जगद्वल्लभ मुनि श्री चोथमलजी महाराज व पंडितरत्न सुव्याख्यानी गणीजी श्री प्यारचन्दजी महाराज ने इस पुस्तक को अतीव पसन्द की है।

श्रीमान् न्यायतीर्थ पण्डित

माधवलालजी खीचन से लिखते हैं कि:—

उन पंडितरत्न महाभाग्यवंत पुरुषों के सामने उनकी अगाध-तत्त्वगवेषणा के विषय में मैं नगण्य क्या सम्मति दे सकता हूं।

परन्तु :—

मेरे दो मित्रों ने जिन्होंने इसको कुछ पढा हैं बहुत सराहना की है वास्तव में ऐसे उत्तम व सबके समझाने योग्य ग्रन्थों की बहुत आवश्यकता है और इस समाज का तो ऐसा ग्रन्थ ही गौरव बढा सकते हैं-ये दोनों ग्रन्थ वास्तव में अनुपम है ऐसे ग्रन्थरत्नों के सुप्रकाश से यह समाज अमावास्या के घोर अन्धकार में दीपावली का अनुभव करती हूई महावीर के अमूल्य वचनों का पान करती हुई अपनी उन्नति में अग्रसर होती रहेगी।



ता. २९-११-३६
अम्बाला (पंजाब)

पत्र आपका मिला श्री श्री १००८ पंजाब केशरी पूज्य श्री काशी रामजी महाराज की सेवा में पढ कर सुना दिया। आपकी भेजी हुई उपासकदशाङ्ग सूत्र तथा गृहिधर्मकल्पतरु की एक प्रति भी प्राप्त हुई। दोनों पुस्तकें अति उपयोगी तथा अत्यधिक परिश्रम से लिखी हुई हैं, ऐसे ग्रन्थरत्नों के प्रकाशित करवाये की बडी आवश्यकता है। इन पुस्तकों से जैन तथा अजैन सबका उपकार हो सकता है। आपका यह पुरुषार्थ सराहनीय है।

आपका
शशिभूषण शास्त्री
ध्यापक जैन हाई स्कूल
अम्बाला शहर.

शान्त स्वभावी वैराग्य मूर्ति तत्व वारिधि, धैर्यवान श्री जैनाचार्य पूज्यवर श्री श्री १००८ श्री खूबचन्दजी महाराज साहेवने सूत्र श्री उपासक दशाङ्गजी को देखा। आपने फरमाया कि पण्डित मुनि घासीलालजी महाराज ने उपासक दशाङ्ग सूत्रकी टीका लिखने में वडा ही परिश्रम किया है। इस समय इस प्रकार प्रत्येक सूत्रोंकी संशोधक पूर्वक सरल टीका और शुद्ध हिन्दी अनुवाद होने से भगवान निग्रन्थों के प्रवचनों के अपूर्व रस का लाभ मिल शकता है.



वालाचोर से भारतरत्न शतावधानी पंडित मुनि श्री १००८ श्री रतनचन्दजी महाराज फरमाते हैं कि :-

उत्तरोत्तर जोतां मूल सूत्रनी संस्कृतटीकाओ रचवामां टीकाकारे स्तुत्य प्रयास कर्यो छे, जे स्थानकवासी समाज माटे मगरुरी लेवा जेवुं छे, वली करांचीना श्री संघे सारा कागलमां अने सारा टाइपमां पुस्तक छपावी प्रगट कर्यूं छे जे एक प्रकारनी साहित्य सेवा बजावी छे.



बम्बई शहेर में विराजमान कवि मुनि श्री नानचन्दजी महाराजने फरमाया है कि पुस्तक सुन्दर है प्रयास अच्छा है।



खीचन से स्थविर क्रिया पात्र मुनि श्री रतनचन्दजी महाराज और पंडितरत्न मुनि समर्थमलजी महाराज श्री फरमाते हैं कि- विद्वान महात्मा पुरुषोंका प्रयत्न सराहनीय है क्या जैनागम श्रीमद् उपासक दशाङ्ग सूत्र की टीका, एवं उसकी सरल सुबोधनी शुद्ध हिन्दी भाषा बडी ही सुन्दरता से लिखी है।



श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री श्री श्री १००८ जैनधर्म दिवाकर जैनागमरत्नाकर श्रीमज्जैनाचार्य श्री पूज्य घासीलालजी महाराज चरणवन्दन स्वीकार हो।

अपरञ्च समाचार यह है कि आपके भेजे हुए ९ शास्त्र मास्टर सोभालालजी के द्वारा प्राप्त हुए, एतदर्थ धन्यवाद ! आपश्रीजीने तो ऐसा कार्य किया है जो कि हजारों वर्षों से किसी भी स्थानकवासी जैनाचार्य ने नहीं किया।

आपने स्थानकवासीजैनसमाज के ऊपर जो उपकार किया है वह कदापि भुलाया नहीं जा सकता और नहीं भुलाया जा सकेगा।

हम तीनों मुनि भगवान महावीर से अथवा शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि आपकी इस वज्रमयी लेखनी को उत्तरोत्तर शक्ति प्रदान करें ता कि आप जैन समाज के ऊपर और भी उपकार करते रहें और आप चिरञ्जीव हों।

हम आपके मुनि तीन

उदेपुर. मुनि सत्येन्द्रदेव–मुनि लखपतराय–मुनि पद्मसेन



इतवारी बाजार

नागपुर ता. ११-१२-५६

प्रखर विद्वान जैनाचार्य मुनिराज श्री घासीलालजी महाराजद्वारा जो आगमोद्धार हुआ और हो रहा है सचमुच महाराजश्री का यह स्तुत्य कार्य है। हमने प्रचारकजी के द्वारा नौ सूत्रों का सेट देखा और कइ मार्मिक स्थलोंको पढा, पढ़ कर विद्वान मुनिराजश्री की शुद्ध श्रद्धा तथा लेखनीके प्रति हार्दिक प्रसन्नता फूट पडी।

वास्तव में मुनिराज श्री जैन समाज पर ही नहीं इतर समाज पर भी महा उपकार कर रहे हैं। ज्ञान किसी एक समाज का नहीं होता वह सभी समाज की अनमोल निधि है जिसे कठिन परिश्रम से तैयार कर जनता के सम्मुख रक्खा जा रहा है जिसका एक एक सेट हर शहर गाव और घर घर में होना आवश्यक है।

साहित्यरत्न

मोहनमुनि सोहनमुनि जैन.

શ્રી દશવૈકાલિક સૂત્રનું સમ્મતિ પત્ર.

શ્રમણ સંઘના મહાન આચાર્ય આગમ વારિધિ સર્વતન્ત્ર સ્વતંત્ર સ્વતંત્ર જૈનાચાર્ય પૂજ્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજે આપેલા સમ્મતિ પત્રનો ગુજરાતી અનુવાદ.



મેં તથા પંડિત મુનિ હેમચંદ્રજીએ પંડિત મૂલચંદ વ્યાસ (नागौर मारवाड वाला) દ્વારા મળેલી પંડિત રત્ન શ્રી. ઘાસીલાલજી મુનિ વિરચિત સંસ્કૃત અને હિન્દી ભાષા સહિત શ્રી દશવૈકાલિક સૂત્રની આચાર મણિમંજૂષા ટીકાનું અવલોકન કર્યું. આ ટીકા સુંદર બની છે. તેમાં પ્રત્યેક શબ્દનો અર્થ સારી રીતે વિશેષ ભાવ લઈને સમજાવવામાં આવેલ છે.

તેથી વિદ્વાનો અને સાધારણ બુદ્ધિવાળાઓ માટે પરમ ઉપકાર કરવાવાળી છે. ટીકાકારે મુનિના આચાર વિષયનો સારો ઉલ્લેખ કરેલ છે. જે આધુનિક મતાવલંબી અહિંસાના સ્વરૂપને નથી જાણતા, દયામાં પાપ સમજે છે તેમને માટે 'અહિંસા શું વસ્તુ છે' તેનું સારી રીતે પ્રતિપાદન કરેલ છે. વૃત્તિકારે સૂત્રના પ્રત્યેક વિષયને સારી રીતે સમજાવેલ છે. આ વૃત્તિના અવલોકનથી વૃત્તિકારની અતિશય યોગ્યતા સિદ્ધ થાય છે.

આ વૃત્તિમાં એક બીજી વિશેષતા એ છે કે મૂલ સૂત્રની સંસ્કૃત છાયા હોવાથી સૂત્ર, સૂત્રનાં પદ અને પદચ્છેદ સુબોધ દાયક બનેલ છે.

પ્રત્યેક જીજ્ઞાસુએ આ ટીકાનું અવલોકન અવશ્ય કરવું જોઇએ. વધારે શું કહેવું. અમારી સમાજમાં આવા પ્રકારના વિદ્વાન મુનિ રત્નનું હોવું એ સમાજનું અહોભાગ્ય છે. આવા વિદ્વાન મુનિ રત્નોના કારણે સુપ્તપ્રાય સુતેલો સમાજ અને લુપ્તપ્રાય એટલે લોપ પામેલું સાહિત્ય એ બન્નેનો ફરીથી ઉદય થશે. જેનાથી ભાવિતાત્મા મોક્ષ યોગ્ય બનશે અને નિર્વાણ પદને પામશે આ માટે અમો વૃત્તિકારને વારંવાર ધન્યવાદ આપીએ છીએ.

વિક્રમ સંવત ૧૯૯૦ ફાલ્ગુન શુકલ. તેરસ મંગળવાર (અલવર સ્ટેટ)

ઇઇ
ઉવજ્ઝાય જઇણુ
મુણી આયારામો
પંચનઇઓ

શ્રમણ સંઘના પ્રચાર મંત્રી પંજાબ કેશરી મહારાજ **શ્રી પ્રેમચંદજી મહારાજ** જેઓશ્રી રાજકોટમાં પધારેલા હતા ત્યારે તેઓના તરફથી શાસ્ત્રોને માટે મળેલો અભિપ્રાય.

*

શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ તરફથી પૂજ્યપાદ શાસ્ત્ર વારિધિ પંડિતરાજ સ્વામીશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજદ્વારા શાસ્ત્રોદ્ધારનું જે કાર્ય થઇ રહ્યું છે :તે કાર્ય જૈન સમાજ તેમાં ખાસ કરીને સ્થાનકવાસી જૈન સમાજને માટે મૂળભૂત મૌલિક સંસ્કૃતિની જડને મજબુત કરવાવાળું છે.

એટલા ખાતર આ કાર્ય અતિ પ્રશંસનીય છે માટે દરેક વ્યકિતએ તેમાં યથાશકિત ભોગ દેવાની ખાસ આવશ્યકતા છે અને તેથી એ ભગીરથ કાર્ય જલ્દીથી જલ્દી સંપૂર્ણપણે પાર પાડી શકાય અને જનતા શ્રુતજ્ઞાનનો લાભ મેળવી શકે.

*

દરીયાપુરી સંપ્રદાયના પૂજ્ય આચાર્યશ્રી ઇશ્વરલાલજી મહારાજ સાહેબના

સૂત્રો સંબંધે વિચારો

નમામિ વીરં ગિરી સાર ધીરં

પૂજ્ય પાદ જ્ઞાન પ્રવરશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ તથા પંડિતશ્રી કનૈયાલાલજી મહારાજ આદિ થાણા છની સેવામાં–

અમદાવાદ શાહપુર ઉપાશ્રયથી મુનિ દયાનંદજીના ૧૦૮ પ્રણિપાત.

આપ સર્વે થાણાઓ સુખ સમાધિમાં હશો નિરંતર ધર્મધ્યાન ધર્મારાધનમાં લીન હશો.

સૂત્ર પ્રકાશન કાર્ય ત્વરીત થાય એવી ભાવના છે દશવૈકાલિક તથા આચારાંગ એક એક ભાગ અહીં છે ટીકા ખૂબ સુંદર, સરળ અને પંડિતજનોને સુપ્રિય થઇ પડે તેવી છે. સાથે સાથે ટીકા વીનાના મૂળ અને અર્થ સાથે પ્રકાશન થાય તો શ્રાવકગણુ તેનો વિશેષ લાભ લઇ શકે અત્રે પૂજ્ય આચાર્ય ગુરુદેવને આંખે મોતીયો ઉતરાવ્યો છે અને સારૂં છે એજ.

આસો શુદ ૧૦, મંગળવાર તા. ૨૫–૧૦–૫૫

પુનઃ પુનઃ શાતા ઇચ્છતો,
દયા મુનિના પ્રણિપાત.

*

રૂા. ૬,૦૦૦ આપનાર આદ્ય સુરક્ષીશ્રી.



(સ્વ.) શેઠ હરખચંદ કાલીદાસ વારીયા

ભાણવડ.

દરીયાપુરી સંપ્રદાયના પંડિત રત્ન ભાઇચંદજી મહારાજનો અભિપ્રાય

શ્રી

રાણપુર તા. ૧૯-૧૨-૧૯૫૫

પૂજ્યપાદ જ્ઞાનપ્રવર પંડિતરત્ન પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આદિમુનિવરોની સેવામાં આપ સર્વ સુખ સમાધીમાં હશો.

સૂત્ર પ્રકાશનનું કામ સુંદર થઇ રહ્યું છે તે જાણી અત્યંત આનંદ. આપના પ્રકાશીત થયેલાં કેટલાક સૂત્રો જોયાં. સુંદર અને સરલ સિદ્ધાંતના ન્યાયને પુષ્ટિ કરતી ટીકા પંડિતરત્નોને સુપ્રિય થઇ પડે તેવી છે. સૂત્ર પ્રકાશનનું કામ ત્વરિત પૂર્ણ થાય અને ભાવિ આત્માઓને આત્મકલ્યાણ કરવામાં સાધનભૂત થાય એજ અભ્યર્થના.

લી. પંડિતરત્ન બાળબ્રહ્મચારી
પૂ. શ્રી ભાઇચંદ મહારાજની
આજ્ઞાનુસાર શાન્તિમુનિના
પાયવંદન સ્વીકારશો.

*

તા. ૧૧-૫-૫૬
વીરમગામ

ગચ્છાધિપતિ પૂજ્ય મહારાજ શ્રી જ્ઞાનચંદ્રજી મહારાજના સંપ્રદાયના આત્માર્થી, ક્રિયાપાત્ર, પંડિતરત્ન, મુનિશ્રી સમરથમલજી મહારાજનો અભિપ્રાય.

ખીચનથી આવેલ તા. ૧૧-૨-૫૬ના પત્રથી ઉધ્રિત.

પૂજ્ય આચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજના હસ્તક જે સૂત્રોનું લખાણ સુંદર અને સરળ ભાષામાં થાય છે. તે સાહિત્ય; પંડિત મુનિશ્રી સમરથમલજી મહારાજ, સમય ઓછો મળવાને કારણે સંપૂર્ણ જોઇ શકયા નથી. છતાં જેટલું સાહિત્ય જોયું છે, તે બહુ જ સારૂં અને મનન સાથે લખાયેલું છે. તે લખાણ શાસ્ત્ર આજ્ઞાને અનુરૂપ લાગે છે આ સાહિત્ય દરેક શ્રદ્ધાળુ જીવોને વાંચવા યોગ્ય છે. આમાં સ્થાનકવાસી સમાજની શ્રદ્ધા, પ્રરુપણા અને ફરસણાની દઢતા શાસ્ત્રાનુકુળ છે. આચાર્ય શ્રી અપૂર્વ પરિશ્રમ લઈ સમાજ ઉપર મહાન ઉપકાર કરે છે.

લી. કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ માલુ
મુ. ખીચન.

*

લીંબડી સંપ્રદાયના સદાનંદી મુનિશ્રી છોટાલાલજી મહારાજનો અભિપ્રાય.

શ્રી વીતરાગદેવે-જ્ઞાનપ્રચારને તીર્થંકર નામ ગોત્ર બાંધવાનું નિમિત્ત કહેલ છે. જ્ઞાન પ્રચાર કરનાર, કરવામાં સહાય કરનાર; અને તેને અનુમોદન આપનાર જ્ઞાનાવર્ણિય કર્મને ક્ષય કરી-કેવળ જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરી પરમપદનાં અધિકારી બને છે. શાસ્ત્રજ્ઞ-પરમ શાન્ત, અને અપ્રમાદિ પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પોતે અવિશ્રાન્તપણે જ્ઞાનની ઉપાશના અને તેની પ્રભાવના અનેક વિકટ પ્રસંગોમાં પણ કરી રહ્યા છે. તે માટે તેઓશ્રી અનેકશઃ ધન્યવાદના અધિકારી છે. વંદનિય છે- તેમની જ્ઞાન પ્રભાવનાની ધગશ ઘણા પ્રમાદિઓને અનુકરણીય છે. જેમ પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પોતે જ્ઞાનપ્રચાર માટે અવિશ્રાન્ત પ્રયત્ન કરે છે. તેમજ- શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના કાર્યવાહકો પણ એમાં સહાય કરીને જે પવિત્ર સેવા કરી રહેલ છે. તે પણ ખરેખર ધન્યવાદના પૂર્ણ અધિકારી છે.

એ સમિતિના કાર્યકરોને મારી એક સૂચના છે કે :-

શાસ્ત્રોદ્ધારક પ્રવર પંડિત અપ્રમાદિ સંત ઘાસીલાલજી મહારાજ જે શાસ્ત્રોદ્ધારનું કામ કરી રહેલ છે. તેમાં સહાય કરવા માટે-પંડિતો વિગેરેના માટે જે ખર્ચો થઇ રહેલ છે. તેને પહોંચી વળવા માટે સારૂં સરખું ફંડ જોઇએ. એના માટે મારી એ સૂચના છે કે :- શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના મુખ્ય કાર્યવાહકો,-જો બની શકે તો પ્રમુખ પોતે અને બીજા બે ત્રણ જણાઓ ગુજરાત, સૌરાષ્ટ્ર અને કચ્છમાં પ્રવાસ કરી મેમ્બરો બનાવે અને આર્થિક સહાય મેળવે.

જો કે અત્યારની પરિસ્થિતિ વિષમ છે વ્યાપારીઓ, ધંધાદારીઓને પોતાના વ્યવહાર સાચવવા પણ મુશ્કેલ બન્યા છે. છતાં જો સંભાવિત ગૃહસ્થો પ્રવાસે નીકળે તો જરૂર કાર્ય સફળ કરે એવી મને શ્રદ્ધા છે.

આર્થિક અનુકુળતા થવાથી શાસ્ત્રોદ્ધારનું કામ પણ વધુ સરલતાથી થઇ શકે. પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જ્યાં સુધી આ તરફ વિચરે છે ત્યાં સુધીમાં એમની જ્ઞાન શક્તિનો જેટલો લાભ લેવાય તેટલો લઇ લેવો. કદાચ સૌરાષ્ટ્રમાં વધુ વખત રહેવાથી તેમને હવે બહાર વિહરવાની ઇચ્છા થતી હોય તો શાન્તિભાઇ શેઠ જેવાએ વિનંતી કરી અમદાવાદ પધરાવવા. અને ત્યાં-અનુકુળતા મુજબ બે-ત્રણ વર્ષની સ્થિરતા કરાવીને તેમની પાસે શાસ્ત્રોદ્ધારનું કામ પૂર્ણ કરાવી લેવું જોઇએ.

થોડા વખતમાં જામજોધપુરમાં શાસ્ત્રોદ્ધાર કમીટી મળવાની છે. તે વખતે ઉપરની સૂચના વિચારાય તો ઠીક.

ફરી શાસ્ત્રોદ્ધારક પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજને એમની આ સેવા અને પરમ કલ્યાણકારક પ્રવૃત્તિને માટે વારંવાર અભિનંદન છે. શાસનનાયક દેવ તેમના શરિરાદીને સશકત અને દીર્ઘાયુ રાખી સમાજ ધર્મની વધુ ને વધુ સેવા કરી શકે. ૐ અસ્તુ.

ચાતુર્માસ સ્થળ. લીંબડી
સાં. ૨૦૧૦ શ્રાવણ વદ ૧૩. ગુરૂ.

લિ.
સદાનંદી જૈનમુનિ છોટાલાલજી

*

શ્રી વર્ધમાન સંપ્રદાયના પૂજ્ય શ્રી પુનમચંદ્રજી મહારાજનો અભિપ્રાય.

શાસ્ત્ર વિશારદ પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજશ્રીએ જૈન આગમો ઉપર જે સંસ્કૃત ટીકા વગેરે રચેલ છે. તે માટે તેઓશ્રી ધન્યવાદને પાત્ર છે. તેમણે આગમો ઉપરની સ્વતંત્ર ટીકા રચીને સ્થાનકવાસી જૈન સમાજનું ગૌરવ વધાર્યું છે. આગમો ઉપરની તેમની સંસ્કૃત ટીકા ભાષા અને ભાવની દૃષ્ટિએ ઘણીજ સુંદર છે. સંસ્કૃત રચના માધુર્ય તેમજ અલંકાર વગેરે ગુણોથી યુકત છે. વિદ્વાનોએ તેમજ જૈન સમાજના આચાર્યો, ઉપાધ્યાયો વગેરેએ શાસ્ત્રો ઉપર રચેલી આ સંસ્કૃત રચનાની કદર કરવી જોઇએ અને દરેક પ્રકારનો સહકાર આપવો જોઇએ.

આવા મહાન કાર્યમાં પંડિતરત્ન પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જે પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે તે અલૌકિક છે. તેમનું આગમ ઉપરની સંસ્કૃત ટીકા વગેરે રચવાનું ભગીરથ કાર્ય શીઘ્ર સફળ થાય એજ શુભેચ્છા સાથે.

અમદાવાદ
તા. ૨૨-૪-૫૬ રવિવાર
મહાવીર જયંતિ

મુનિ પૂર્ણચંદ્રજી

*

ખંભાત સંપ્રદાયના મહાસતી શારદાબાઇ સ્વામીનો અભિપ્રાય.

લખતર તા. ૨૫-૪-૫૬

શ્રીમાન શેઠ શાંતીલાલભાઇ મંગળદાસભાઇ
પ્રમુખ સાહેબ અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ
મુ. અમદાવાદ.

અમો અત્રે દેવગુરુની કૃપાએ સુખરૂપ છીએ. વિ.માં આપની સમિતિ દ્વારા પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબ જે સૂત્રોનું કાર્ય કરે છે તે પૈકીનાં સૂત્રોમાંથી ઉપાસક દશાંગ સૂત્ર. આચારાંગ સૂત્ર, અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર,

દશવૈકાલિક સૂત્ર વિગેરે સૂત્રો જોયાં તે સૂત્રો સંસ્કૃત હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાઓમાં હોવાને કારણે વિદ્વાન અને સામાન્ય જનોને ઘણુંજ લાભદાયિક છે. તે વાંચન ઘણુંજ સુંદર અને મનોરંજન છે. આ કાર્યમાં પૂજ્ય આચાર્યશ્રી જે અઘાત પુરુષાર્થે કાર્ય કરે છે તે માટે વારંવાર ધન્યવાદને પાત્ર છે. આ સૂત્રોથી સમાજને ઘણું લાભનું કારણ છે.

હંસ સમાન બુદ્ધીવાળા આત્માઓ સ્વપરના ભેદથી નિખાલસ ભાવનાએ અવલોકન કરશે તો આ સાહિત્ય સ્થાનકવાસી સમાજ માટે અપૂર્વ અને ગૌરવ લેવા જેવું છે. માટે દરેક ભવ્ય આત્માઓને સુચન કરૂં છું કે આ સૂત્રો પોતપોતાના ઘરમાં વસાવાની સુંદર તકને ચૂકશો નહિ. કારણ આવા શુદ્ધ પવિત્ર અને સ્વપરંપરાને પુષ્ટીરૂપ સૂત્રો મળવાં બહુ મુશ્કેલ છે. આ કાર્યને આપશ્રી તથા સમિતિના અન્ય કાર્યકરો જે શ્રમ લઈ રહ્યા છો તેમાં મહાન નિર્જરાનું કારણ જોવામાં આવે છે તે બદલ ધન્યવાદ. એજ

લી. **શારદાબાઇ સ્વામી**

ખંભાત સંપ્રદાય.

*

બરવાળા સંપ્રદાયના વિદુષી મહાસતીજી મોંઘીબાઇ સ્વામીનો અભિપ્રાય.

ધંધુકા તા. ૨૭-૧-૫૬

શ્રીમાન શેઠ શાન્તીલાલ મંગળદાસભાઇ

પ્રમુખ અ૦ ભા૦ શ્વે૦ સ્થા૦ જૈનશાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ

મુ. રાજકોટ.

અત્રે બિરાજતા ગુ૦ ગુણના ભંડાર મહાસતીજી વિદુષી મોંઘીબાઇ સ્વામી તથા હીરાબાઈ સ્વામી આદિ ઠાણા બન્ને સુખશાતામાં બિરાજે છે. આપને સૂચન છે કે અસમત અવસ્થામાં રહી નિવૃત્તિ ભાવને મેળવી ધર્મધ્યાન કરશોજી એજ આશા છે.

વિશેષમાં અમને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજના રચેલાં સૂત્રો ભાઇ પોપટ ધનજીભાઇ તરફથી ભેટ તરીકે મળેલાં તે સૂત્રો તમામ આદ્યોઉપાન વાંચ્યાં મનન કર્યા. અને વિચાર્યા છે તે સૂત્રો સ્થાનકવાસી સમાજને અને વીતરાગ માર્ગની ખૂબજ ઉન્નત્ત બનાવનાર છે. તેમાં આપણી શ્રદ્ધા એટલી ન્યાય રૂપથી ભરેલી છે તે આપણા સમાજ માટે ગૌરવ લેવા જેવું છે. હંસ સમાન

આત્માઓ જ્ઞાન ઝરણાઓથી આત્મરૂપ વાડીને વિકસીત કરશે. ધન્ય છે આપને અને સમિતિના કાર્યકરોને જે સમાજ ઉત્થાન માટે કોઇની પણ પરવા કર્યા વગર જ્ઞાનનું દાન ભવ્ય આત્માઓને આપવા નિમિત્તરૂપ થઇ રહ્યા છો. આવા સમર્થ વિદ્વાન પાસેથી સંપૂર્ણ કાર્ય પુરૂં કરાવશો તેવી આશા છે.

એજ લિ. બરવાળા સંપ્રદાયના વિદુષી
મહાસતીજી **મોંઘીબાઇ સ્વામી**
ના ફરમાનથી લી. ખોડીદાસ ગણેશભાઇ-ધંધુકા
સ્થાનકવાસી જૈન સંઘના પ્રમુખ.

*

અદ્યતન પદ્ધતિને અપનાવનાર વડોદરા કોલેજના એક વિદ્વાન પ્રોફેસરનો અભિપ્રાય.

સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ જૈનશાસ્ત્રોના સંસ્કૃત ટીકાબદ્ધ, ગુજરાતીમાં અને હિન્દીમાં ભાષાંતરો કરવાના ઘણા વિકટ કાર્યમાં વ્યાપ્ત થયેલા છે. શાસ્ત્રો પૈકી જે શાસ્ત્રો પ્રસિદ્ધ થયાં છે તે હું જોઇ શકયો છું, મુનિશ્રી પોતે સંસ્કૃત, અર્ધમાગધી હિન્દી ભાષાઓના નિષ્ણાત છે, એ એમનો ટુંકો પરિચય કરતાં સહજ જણાઇ આવે છે. શાસ્ત્રોનું સંપાદન કરવામાં તેમને પોતાના, શિષ્ય-વર્ગનો અને વિશેષમાં ત્રણ પંડિતોનો સહકાર મળ્યો છે, તે જોઇ મને આનંદ થયો. સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના અગ્રેસરોએ પંડિતોનો સહકાર મેળવી આપી મુનિશ્રીના કાર્યને સરળ અને શિષ્ટ બનાવ્યું છે. સ્થાનકવાસી સમાજમાં વિદ્વતા ઘણી ઓછી છે. તે દિગંબર મૂર્તિપૂજક શ્વેતાંબર વગેરે જૈનદર્શનના પ્રતિનિધિઓના ઘણા સમયથી પરિચયમાં આવતાં હું વિરોધના ભય વગર, કહી શકું. પૂ. મહારાજને આ પ્રયાસ સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયમાં પ્રથમ છે એવી મારી માન્યતા છે. સંસ્કૃત સ્પષ્ટીકરણો સારાં આપવામાં આવ્યાં છે ભાષા શુદ્ધ છે એમ હું ચોક્કસ કહી શકું છું. ગુજરાતી ભાષાંતરો પણ શુદ્ધ અને સરળ થયેલાં છે. મને વિશ્વાસ છે કે મહારાજ-શ્રીના આ સ્તુત્ય પ્રયાસને જૈનસમાજ ઉત્તેજન આપશે અને શાસ્ત્રોના ભાષાંતરોને વાચનાલયમાં અને કુટુંબોમાં વસાવી શકાય તે પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરશે.

કામદાર કેશવલાલ હિંમતરામ,
એમ. એ.

પ્રતાપગંજ, **વડોદરા**
તા. ૨૭-૨-૧૯૫૬

*

મુંબઇની બે કોલેજોના પ્રોફેસરોનો અભિપ્રાય.

મુંબઇ તા. ૩૧-૩-૫૬

શ્રીમાન શેઠ શાંતીલાલ મંગળદાસ
પ્રમુખ : શ્રી અખિલ ભારત શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
રાજકોટ.

પૂજ્યાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે તૈયાર કરેલા આચારાંગ, દશવૈકાલિક આવશ્યક, ઉપાસકદશાંગ વગેરે સૂત્રો અમે જોયા. આ સૂત્રો ઉપર સંસ્કૃતમાં ટીકા આપવામાં આવી છે. અને સાથે સાથે હિન્દી અને ગુજરાતી ભાષાંતરો પણ આપવામાં આવ્યાં છે, સંસ્કૃત ટીકા અને ગુજરાતી તથા હિન્દી ભાષાંતરો જોતાં આચાર્યશ્રીના આ ત્રણે ભાષા પરના એકસરખા અસાધારણ પ્રભુત્વની સચોટ અને સુરેખ છાપ પડે છે. આ સૂત્ર ગ્રંથોમાં પાને પાને પ્રગટ થતી આચાર્યશ્રીની અપ્રતિમ વિદ્વતા મુગ્ધ કરી દે તેવી છે. ગુજરાતી તથા હિન્દીમાં થયેલા ભાષાંતરમાં ભાષાની શુદ્ધિ અને સરળતા નોંધપાત્ર છે. એથી વિદ્વદજન અને સાધારણ માણસ ઉભયને સંતોષ આપે એવી એમની લેખિનીની પ્રતીતિ થાય છે. ૩૨ સૂત્રોમાંથી હજુ ૧૩ સૂત્રો પ્રગટ થયાં છે. બીજાં ૭ સૂત્રો લખાઇને તૈયાર થઇ ગયાં છે. આ બધાં જ સૂત્રો જ્યારે એમને હાથે તૈયાર થઈને પ્રગટ થશે ત્યારે જૈન સૂત્ર-સાહિત્યમાં અમૂલ્ય સંપત્તિરૂપ ગણાશે એમાં સંશય નથી. આચાર્યશ્રી આ મહાન કાર્યને જૈન સમાજનો-વિશેષતઃ સ્થાનકવાસી સમાજનો સંપૂર્ણ સહકાર સાંપડી રહેશે એવી અમે આશા રાખીએ છીએ.

પ્રો. **રમણલાલ ચીમનલાલ શાહ**
સેંટ ઝેવિયર્સ કોલેજ, **મુંબઇ.**

પ્રો. **તારા રમણલાલ શાહ.**
સોફીયા કોલેજ. **મુંબઈ.**

*

રાજકોટની ધર્મેન્દ્રસિંહજી કોલેજના પ્રોફેસર સાહેબનો અભિપ્રાય.

જયમહાલ
જાગનાથ પ્લોટ
રાજકોટ, તા. ૧૮-૪-૫૬

પૂજ્યાચાર્ય પં. મુનિ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આજે જૈન સમાજ માટે એક એવા કાર્યમાં વ્યાપ્ત થએલા છે કે જે સમાજ માટે બહુ ઉપયોગી થઇ પડશે. મુનિશ્રીએ તૈયાર કરેલાં આચારાંગ, દશવૈકાલિક, શ્રી વિપાકશ્રુત વિ. મેં જોયાં.

આ સૂત્રો જોતાં પહેલીજ નજરે મહારાજશ્રીનો સંસ્કૃત, અર્ધમાગધી, હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષાઓ ઉપરનો અસાધારણ કાબુ જણાઇ આવે છે. એક પણ ભાષા મહારાજશ્રીથી અજાણી નથી. આપણે જાણીએ છીએ કે એ સૂત્રો ઉચ્ચ અને પ્રથમ કોટિના છે. તેની વસ્તુ ગંભીર; વ્યાપક અને જીવનને તલસ્પર્શી છે. આટલા ગહન અને સર્વગ્રાહ્ય સૂત્રોનું ભાષાંતર પૂ. ઘાસીલાલજી મહારાજ જેવા ઉચ્ચ કોટિના મુનિરાજને હાથે થાય છે તે આપણા અહોભાગ્ય છે. યંત્રવાદ અને ભૌતિકવાદના આ જમાનામાં જ્યારે ધર્મભાવના ઓસરતી જાય છે, એવે વખતે આવા તત્ત્વજ્ઞાન આધ્યાત્મિકતાથી ભરેલાં સૂત્રોનું સરળ ભાષામાં ભાષાંતર દરેક જીજ્ઞાસુ, મુમુક્ષુ અને સાધકને માર્ગદર્શક થઇ પડે તેમ છે. જૈન અને જૈનેતર, વિદ્વાન અને સાધારણ માણસ, સાધુ અને શ્રાવક દરેકને સમજણ પડે તેવી સ્પષ્ટ, સરળ અને શુદ્ધ ભાષામાં સૂત્રો લખવામાં આવ્યા છે. મહારાજશ્રીને જ્યારે જોઇએ ત્યારે તેમના આ કાર્યમાં સંકળાયેલા જોઇએ છીએ. એ ઉપરથી મુનિશ્રીના પરિશ્રમ અને ધગશની કલ્પના કરી શકાય છે. તેમનું જીવન સૂત્રોમાં વણાઈ ગયું છે.

મુનિશ્રીના આ અસાધારણ કાર્યમાં પોતાના શિષ્યોનો તથા પંડિતોનો સહકાર મળ્યો છે. મને આશા છે કે જો દરેક મુમુક્ષુ આ પુસ્તકોને પોતાના ઘરમાં વસાવશે અને પોતાના જીવનને સાચા સુખને માર્ગે વાળશે તો મહારાજશ્રીએ ઉઠાવેલો શ્રમ સંપૂર્ણપણે સફળ થશે.

પ્રો. રસિકલાલ કસ્તુરચંદ ગાંધી
એમ. એ. એલ. એલ. બી.
ધર્મેન્દ્રસિંહજી કોલેજ
રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર)

*

મુંબઈ અને ઘાટકોપરમાં મળેલી સભાએ ભિનાસર કોન્ફરન્સ તથા સાધુ સંમેલનમાં મોકલાવેલ ઠરાવ.

હાલ જે વખતે શ્રી શ્વેતાંબર સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ માટે આગમ-સંશોધન અને સ્વતંત્ર ટીકાવાળા શાસ્ત્રોદ્ધારની અતિ આવશ્યકતા છે અને જે મહાનુભાવોએ આ વાત દીર્ઘ દ્રષ્ટિથી પહેલી પોતાના મગજમાં લઇ તે પાર પાડવા મહેનત લઇ રહ્યા છે તેવા મુનિ મહારાજ પંડિતરત્ન શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કે જેઓને સાદડી અધિવેશનમાં સર્વાનુમતે સાહિત્ય મંત્રી નીમ્યા છે તેઓશ્રીની દેખરેખ નીચે અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ જે એક મોટી વગવાળી કમિટી છે તેની મારફતે કામ થઇ રહ્યું છે જેને પ્રધાનાચાર્યશ્રી તથા પ્રચાર મંત્રીશ્રી

તથા અનેક અનુભવી મહાનુભાવોએ પોતાની પસંદગીની મહોર છાપ આપી છે અને છેલ્લામાં છેલ્લા વડોદરા યુનિવર્સીટીના પ્રોફેસર કેશવલાલ કામદાર એમ એ. એ પોતાનું સવિસ્તર પ્રમાણપત્ર આપ્યું છે તે શાસ્ત્રોદ્ધાર કમિટીના કામને આ સંમેલન તથા કોન્ફરન્સ હાર્દિક અભિનંદન આપે છે. અને તેમના કામને જ્યાં જ્યાં અને જે જે જરૂર પડે-પંડિતની અને નાણાંની-પોતાની પાસેના ફંડમાંથી અને જાહેર જનતા પાસેથી મદદ મળે તેવી ઇચ્છા ધરાવે છે.

આ શાસ્ત્રો અને ટીકાઓને જ્યારે આટલી બધી પ્રશંસાપૂર્વક પસંદગી મળી છે ત્યારે તે કામને મદદ કરવાની આ કોન્ફરન્સ પોતાની ફરજ માને છે અને જે કાંઇ ત્રુટી હોય તે પં. ર. શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજની સાનિધ્યમાં જઇ. બતાવીને સુધારવા પ્રયત્ન કરવો. આ કામને ટલ્લે ચઢાવવા જેવું કોઇપણ કામ સત્તા ઉપરના અધિકારીઓના વાણી કે વર્તનથી ન થાય તે જોવા પ્રમુખ સાહેબને ભલામણ કરે છે.

(સ્થા. જૈન પત્ર તા. ૪-૫-૫૬)

*

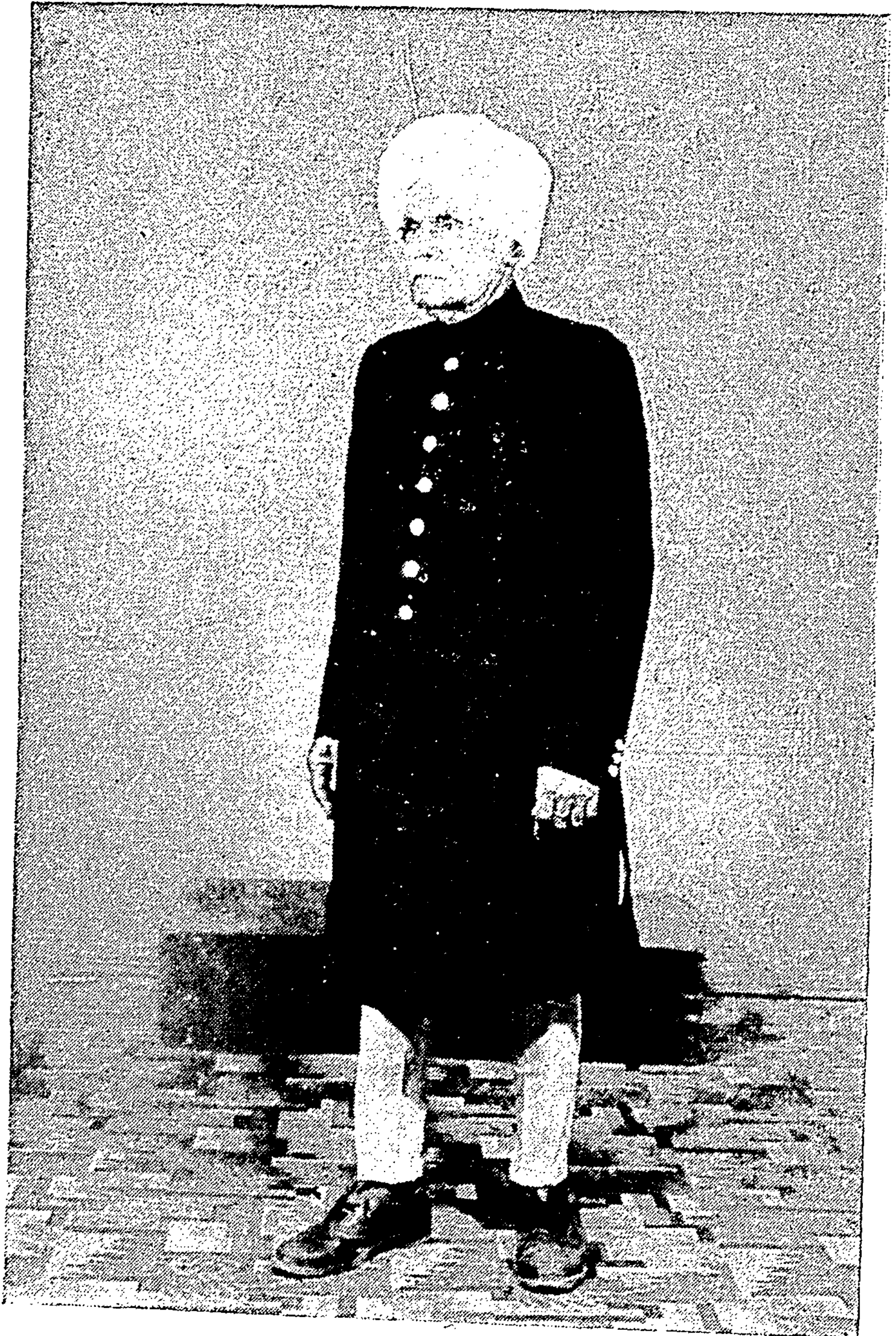
સ્વતંત્ર વિચારક અને નિડર લેખક 'જૈન સિદ્ધાંત'ના તંત્રીશ્રી શેઠ નગીનદાસ ગીરધરલાલનો અભિપ્રાય.

શ્રી સ્થાનકવાસી શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ સ્થાપીને પૂ. શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજને સૌરાષ્ટ્રમાં બોલાવી તેમની પાસે બત્રીસે સૂત્રો તૈયાર કરવાની હિલચાલ ચાલતી હતી ત્યારે તે હિલચાલ કરનાર શાસ્ત્રજ્ઞ શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઇ સાથે મારે પત્રવ્યવહાર ચાલેલો ત્યારે શેઠશ્રી દામોદરદાસભાઇએ તેમનાં એક પત્રમાં મને લખેલું કે—

> "આપણા સૂત્રોના મૂળ પાઠ તપાસી શુદ્ધ કરી સંસ્કૃત સાથે તૈયાર કરી શકે તેવા સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયમાં મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મ. સિવાય મને કોઇ વિશેષ વિદ્વાન મુનિ જોવામાં આવતા નથી. લાંબી તપાસને અંતે મેં મુનિ શ્રી ઘાસીલાલજીને પસંદ કરેલા છે."

શેઠ શ્રી દામોદરદાસભાઇ પોતે વિદ્વાન હતા. શાસ્ત્રજ્ઞ હતા તેમ વિચારક પણ હતા. શ્રાવકો તેમજ મુનિઓ પણ તેમની પાસેથી શીક્ષા વાંચન લેતા, તેમ જ્ઞાન ચર્ચા પણ કરતા. એવા વિદ્વાન શેઠશ્રીની પસંદગી યથાર્થ જ હોય એમાં

રૂા. ૫,૨૫૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી,



કોઠારી હરગોવીંદભાઇ જેચંદ

રાજકોટ.

નવાઇ નથી. અને પૂ. શ્રી ઘાસીલાલજીના બનાવેલાં સૂત્રો જોતાં સૌ કોઇને ખાત્રી થાય તેમ છે કે દામોદરદાસભાઇએ તેમજ સ્થાનકવાસી સમાજે જેવી આશા શ્રી ઘાસીલાલજી મ. પાસેથી રાખેલી તે બરાબર ફળીભૂત થયેલ છે.

શ્રી વર્ધમાન શ્રમણસંઘના આચાર્ય શ્રી આત્મારામજી મહારાજે શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજના સૂત્રો માટે ખાસ પ્રશંસા કરી અનુમતિ આપેલ છે તે ઉપરથી જ શ્રી ઘાસીલાલજી મ.ના સૂત્રોની ઉપયોગિતાની ખાત્રી થશે.

આ સૂત્રો વિદ્યાર્થીને, અભ્યાસીને તેમજ સામાન્ય વાંચકને સર્વને એક સરખી રીતે ઉપયોગી થઇ પડે છે વિદ્યાર્થીને તેમજ અભ્યાસીને મૂળ તથા સંસ્કૃત ટીકા વિશેષ કરીને ઉપયોગી થાય તેમ છે ત્યારે સામાન્ય હિન્દી વાંચકને હિન્દી અનુવાદ અને ગુજરાતી વાંચકને ગુજરાતી અનુવાદથી આખું સૂત્ર સરળતાથી સમજાય જાય છે.

કેટલાકોને એવો ભ્રમ છે કે સૂત્રો વાંચવાનું આપણું કામ નહિ, સૂત્રો આપણને સમજાય નહિ. આ ભ્રમ તદ્દન ખોટો છે. બીજા કોઇપણ શાસ્ત્રીય પુસ્તક કરતાં સૂત્રો સામાન્ય વાંચકને પણ ઘણી સરળતાથી સમજાય જાય છે. સામાન્ય માણસ પણ સમજી શકે તેટલા માટે જ ભ. મહાવીરે તે વખતથી લોક ભાષામાં (અર્ધ માગધી ભાષામાં) સૂત્રો બનાવેલાં છે. એટલે સૂત્રો વાંચવાં તેમજ સમજવામાં ઘણાં સરળ છે.

માટે કોઈ પણ વાંચકને એનો ભ્રમ હોય તો તે કાઢી નાંખવો. અને ધર્મનું તેમજ ધર્મના સિદ્ધાંતોનું સાચું જ્ઞાન મેળવવા માટે સૂત્રો વાંચવાને ચૂકવું નહિ એટલું જ નહિ પણ જરૂરથી પહેલાં સૂત્રોજ વાંચવા.

સ્થાનકવાસીઓમા આ શ્રી સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિએ જે કામ કર્યું. છે અને કરી રહી તે તેવું કોઇ પણ સંસ્થાએ આજ સુધી કર્યું નથી. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના છેલ્લા રિપોર્ટ પ્રમાણે બીજાં છ સુત્રો લખાયેલ પડયાં છે, બે સૂત્રો–અનુયોગદ્વારા અને ઠાણુંાંગ સૂત્રો–લખાય છે તે પણ થોડા વખતમાં તૈયાર થઇ જશે. તે પછી બાકીના સૂત્રો હાથ ધરવામાં આવશે.

તૈયાર સૂત્રો જલ્દી છપાઇ જાય એમ ઇચ્છીએ છીએ અને સ્થા. બંધુઓ સમિતિને ઉત્તેજન અને સહાયતા આપીને તેમનાં સૂત્રો ઘરમાં વસાવે એમ ઇચ્છીએ છીએ.

'જૈન સિદ્ધાન્ત' પત્ર – મે ૧૯૫૫

*

શ્રુત ભક્તિ

(પૂ. આચાર્ય શ્રી ઇશ્વરલાલજી મ. સા. ની આજ્ઞા અનુસાર લખનાર)

દ. સં. ના જૈન મુનિ શ્રી દયાનંદજી મહારાજ

તા. ૨૩-૯-૫૬ શાહપુર, અમદાવાદ.

આજે લગભગ ૨૦ વર્ષથી શ્રદ્ધેય પરમપૂજ્ય, જ્ઞાન દિવાકર પં. મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મ. ચરમ તીર્થંકર ભગવાન મહાવીરના અનુત્તર અનુપમ ન્યાય યુક્ત, પૂર્વાપર અવિરોધ, સ્વપર કલ્યાણકારક, ચરમ શીતળ વાણીના દ્યોતક એવા શ્રી જિનાગમ પર પ્રકાશ પાડે છે. તેઓશ્રી પ્રાચીન, પાર્વાત્ય સંસ્કૃતાદિ અનેક ભાષાના પ્રખર પંડિત છે અને જિન વાણીનો પ્રકાશ સંસ્કૃત, ગુજરાતી અને હિન્દીમાં મૂળ શબ્દાર્થ, ટીકા, વિસ્તૃત વિવરણ સાથે પ્રકાશમાં લાવે છે એ જૈન સમાજ માટે અતિ ગૌરવ અને આનંદનો વિષય છે.

ભ૦ મહાવીર અત્યારે આપણી પાસે વિદ્યમાન નથી. પરંતુ તેમની વાણી રૂપે અક્ષરદેહ ગણધર મહારાજોએ શ્રુત પરંપરાએ સાચવી રાખ્યો. શ્રુત પરંપરાથી સચવાતું જ્ઞાન જ્યારે વિસ્મૃત થવાનો સમય ઉપસ્થિત થવા લાગ્યો ત્યારે શ્રી દેવર્દ્ધિગણિ ક્ષમાશ્રમણે વલ્ભીપુર-વળામાં તે આગમોને પુસ્તકો રૂપે આરૂઢ કર્યો. આજે આ સિદ્ધાંતો આપણી પાસે છે. તે અર્ધ માગધી પાલી ભાષામાં છે. અત્યારે આ ભાષા ભગવાનની, દેવોની તથા જનગણની ધર્મ ભાષા છે. તેને આપણા શ્રમણો અને શ્રમણીઓ તથા મુમુક્ષુ શ્રાવક શ્રાવિકાઓ મુખપાઠ કરે છે; પરન્તું તેનો અર્થ અને ભાવ ઘણા થોડાઓ સમજે છે.

જિનાગમ એ આપણાં શ્રદ્ધેય પવિત્ર ધર્મસૂત્રો છે. એ આપણી આંખો છે. તેનો અભ્યાસ કરવો એ આપણી સૌની-જૈન માત્રની ફરજ છે. તેને સત્ય સ્વરૂપે સમજાવવા માટે આપણાં સદ્ભાગ્યે જ્ઞાન દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે સત્સંકલ્પ કર્યો છે. અને તે લિખિત સૂત્રોને પ્રગટાવી શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ દ્વારા જ્ઞાન પરબ વહેતી કરી છે. આવા અનુપમ કાર્યમાં સકળ જૈનોનો સહકાર અવશ્ય હોવો ઘટે અને તેનો વધારેમાં વધારે પ્રચાર થાય તે માટે પ્રયત્નો કરવા ઘટે.

ભ. મહાવીરને ગણધર ગૌતમ પૂછે છે કે હે ભગવાન; સૂત્રની આરાધના કરવાથી શું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે? ભગવાન તેનો પ્રતિ ઉત્તર આપે છે કે શ્રુતની આરાધનાથી જીવોના અજ્ઞાનનો નાશ થાય છે. અને તેઓ સંસારના કલેશોથી નિવૃત્તિ મેળવે છે. અને સંસાર કલેશોથી નિવૃત્તિ અને અજ્ઞાનનો નાશ થતાં મોક્ષ ફળની પ્રાપ્તિ થાય છે.

આવા જ્ઞાન કાર્યમાં મૂર્તિપૂજક જૈનો, દિગંબરો અને અન્ય ધર્મીઓ હજારો અને લાખો રૂપીયા ખર્ચે છે. હિન્દુ ધર્મમાં પવિત્ર મનાતા ગ્રંથ ગીતાના સેંકડો નહિ પણ હજારો ટીકા ગ્રંથો દુનિયાની લગભગ સર્વ ભાષાઓમાં પ્રગટ થયા છે. ઇસાઇ ધર્મના પ્રચારકો તેમના પવિત્ર ધર્મગ્રન્થ બાઇબલના પ્રચારાર્થે તેનું જગતની સર્વ ભાષાઓમાં ભાષાંતર કરી, તેને પડતર કરતાં પણ ઘણી ઓછી કિંમતે વેચી ધર્મ-

સૂત્રોનો પ્રચાર કરે છે. મુસ્લીમ લોકો પણ તેમના પવિત્ર મનાતા ગ્રન્થ કુરાનનું પણ અનેક ભાષાઓમાં ભાષાંતર કરી સમાજમાં પ્રચાર કરે છે. આપણે પૈસા પરનો મોહ ઉતારી ભગવાનના સિદ્ધાંતોનો પ્રચાર કરવા માટે તન, મન, ધન સમર્પણ કરવાં જોઈએ. અને સૂત્ર પ્રકાશનના કાર્યને વધુ ને વધુ વેગ મળે તે માટે સક્રિય પ્રયત્નો કરવા જોઈએ આવા પવિત્ર કાર્યમાં સાંપ્રદાયિક મતભેદો સૌએ ભૂલી જવા જોઈએ અને શુદ્ધ આશયથી થતા શુદ્ધ કાર્યને અપનાવી લેવું જોઈએ. સમિતિના નિયમાનુસાર રૂા. ૨૫૧) ભરી સમિતિના સભ્ય બનવું જોઈએ. ધાર્મિક અનેક ખાતાંઓ મુકાબલે સૂત્ર પ્રકાશનનું-જ્ઞાન પ્રચારનું આ ખાતું સર્વશ્રેષ્ઠ ગણાવું જોઈએ.

આ કાર્યને વેગ આપવાની સાથે સાથે એ આગમો-ભગવાનની એ મહાવાણીનું પાન કરવા પણ આપણે હરહંમેશ તત્પર રહેવું જોઈએ જેથી પરમ શાન્તિ અને જીવન સિદ્ધિ મેળવી શકાય. (સ્થા. જૈન. તા. ૫-૭-૫૬)

શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિનાં પ્રમુખશ્રી વગેરે.

રાણપુર.

પરમ પવિત્ર સૌરાષ્ટ્રની પુણ્ય ભૂમિ પર જ્યારથી શાન્ત-શાસ્ત્રવિશારદ અપ્રમાદિ પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજનાં પુનિત પગલાં થયા છે ત્યારથી ઘણા લાંબા કાળથી લાગુ પડેલ જ્ઞાનાવરણિય કર્મનાં પડળ ઉતારવાનો શુભ પ્રયાસ થઈ રહ્યો છે. અને જે પ્રવચનની પ્રભાવના તેઓશ્રી કરી રહ્યા છે તે અનંત ઉપકારક કાર્યમાં તમે જે અપૂર્વ સહાય આપી રહ્યાં છો તે માટે તમો સર્વને ધન્ય છે અને એ શુભ પ્રવૃત્તિના શુભ પરિણામોનો જનતા લાભ લ્યે છે મને તો સમજાય છે કે સાધુજી છઠે ગુણસ્થાનકે હોય છે. પણ પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ તો બહુધા સાતમે અપ્રમત ગુણસ્થાનકે જ રહે છે. એવા અપ્રમત માત્ર પાંચ-સાત સાધુઓ. જો સ્થાનકવાસી જૈન સમાજમાં હોય તો સમાજનું શ્રેય થતાં જરાએ વાર ન લાગે. સમાજાકાશમાં સ્થા. જૈન સંપ્રદાયનો દિવ્ય પ્રભાકર જળહળી નીકળે. પ....ણ વો દિન.......

શ્રી શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને મ્હારી એક નમ્ર સૂચના છે કે-પૂજ્યશ્રીની વૃદ્ધાવસ્થા છે; અને કાર્યપ્રણાલિકા યુવાનોને શરમાવે તેવી છે. તેમને ગામોગામ વિહાર કરવા અને શાસ્ત્રોદ્ધારનું કાર્ય કરવું તેમાં ઘણી શારીરિક-માનસિક અને વ્યવહારિક મુશ્કેલી વેઠવી પડે છે. તો કોઈ યોગ્ય સ્થળ કે જ્યાંના શ્રાવકો ભકિતવાળા હોય. વાડાના રાગના વિષથી અલીપ્ત હોય એવા કોઇ સ્થળે શાસ્ત્રોદ્ધારનું કાર્ય પૂર્ણ થાય ત્યાં સુધી સ્થીરતા કરી શકે એના માટે પ્રબંધ કરવો જોઇએ. બીજા કોઇ એવા સ્થળની અનુકુળતા ન મળે તો છેવટ અમદાવાદમાં યોગ્ય સ્થળે રહેવાની સગવડતા કરી અપાય તો વધુ સારૂં. મ્હારી આ સૂચના પર ધ્યાન આપવા ફરી યાદ આપું છું. ફરીવાર પૂજ્ય આચાર્યશ્રીને અને તેમના સત્કાર્યના સહાયકોને મારા અભિનંદન પાઠવું છું તે સ્વીકારશોજી.

લિ. સદાનંદી જૈનમુનિ છોટાલાલજી.

"જૈન સિદ્ધાંતના" તંત્રીશ્રીનો અભિપ્રાય.

સ્થાનકવાસીઓમાં પ્રમાણભૂત સૂત્રો બહાર પાડનારી આ એકની એક સંસ્થા છે. અને એના આ છેલ્લા રિપોર્ટ ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ઘણી સારી પ્રગતિ કરી છે તે જોઇ આનંદ થાય છે.

મૂળ પાઠ, ટીકા, હિન્દી તથા ગુજરાતી અનુવાદ સહિત સૂત્રો બહાર પાડવાં એ કાંઇ સહેલું કામ નથી. એ એક મહાભારત કામ છે. અને તે કામ આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ ઘણી સફળતાથી પાર પાડી રહી છે તે સ્થાનકવાસી સમાજ માટે ઘણા ગૌરવનો વિષય છે અને સમિતિ ધન્યવાદને પાત્ર છે.

સમિતિ તરફથી નવ સૂત્રો બહાર પડી ચૂકયાં છે, હાલમાં ત્રણ સૂત્રો છપાય છે. નવ સૂત્રો લખાઇ ગયાં છે અને જંબુદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ તથા નંદીસૂત્ર તૈયાર થઇ રહ્યાં છે.

હાલમાં મંત્રી શ્રી સાકરચંદ ભાઇચંદ સમિતિના કામમાં જ તેમનો આખો વખત ગાળે છે અને સમિતિના કામકાજને ઘણો વેગ આપી રહ્યા છે. તેમની ખંત માટે ધન્યવાદ.

અને આ મહાભારત કામના મુખ્ય કાર્યકર્તા તો છે વયોવૃદ્ધ પંડિત મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ. મૂળ પાઠનું સંશોધન તથા સંસ્કૃત ટીકા તેઓશ્રી જ તૈયાર કરે છે. મુનિશ્રીનો આ ઉપકાર આખાય સ્થા. જૈન સમાજ ઉપર ઘણો મહાન છે. એ ઉપકારનો બદલો તો વાળી શકાય તેમજ નથી.

પરંતુ આ સમિતિના મેમ્બર બની, તેના બહાર પડેલાં સૂત્રો ઘરમાં વસાવી તેનું અધ્યયન કરવામાં આવે તો જ મહારાજશ્રીનું થોડું ઋણ અદા કર્યું ગણાય.

ભગવાને કહ્યું છે કે **पढमं णाणं तओ दया** પહેલું જ્ઞાન પછી દયા, દયા ધર્મને યથાર્થ સમજવો હોય તો ભગવાનની વાણીરૂપ આપણા સૂત્રો વાંચવા જ જોઇએ તેનું અધ્યયન કરવું જોઇએ અને તેનો ભાવાર્થ યથાર્થ સમજવો જોઇએ.

એટલા માટે આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના સર્વ સૂત્રો દરેક સ્થા. જૈને પોતાના ઘરમાં વસાવવાંજ જોઇએ સર્વ ધર્મજ્ઞાન આપણા સૂત્રોમાંજ સમાયેલું છે અને સૂત્રો સહેલાઇથી વાંચીને સમજી શકાય છે, માટે દરેક સ્થા. જૈન આ સૂત્રો વાંચે એ ખાસ જરૂરનું છે.

"જૈન સિદ્ધાંત" ડીસેમ્બર– ૫૬

*

શ્રી ઉપાશક દશાંગ સૂત્રને માટે અભિપ્રાય.

મૂળ સૂત્ર તથા પૂ. મુનિશ્રી ઘાસીલાલજીએ બનાવેલ સંસ્કૃત છાયા તથા ટીકા અને હિંદી તથા ગુજરાતી-અનુવાદ સહિત.

પ્રકાશક-અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ, ગરેડીઆ કુવા રોડ, ગ્રીન લૉજ પાસે, રાજકોટ. (સૌરાષ્ટ્ર) પૃષ્ઠ ૬૧૬ બીજી આવૃત્તિ બેવડું (મોટું) કદ. પાકું પુઠું. જેકેટ સાથે સને ૧૯૫૬ કિંમત ૮-૮-૦

આપણા મૂળ બાર અંગ સૂત્રોમાંનું ઉપાશકદશાંગ એ સાતમું અંગ સૂત્ર છે; એમાં ભગવાન મહાવીરના દશ ઉપાસકો શ્રાવકોનાં જીવનચરિત્રો આપેલાં છે તેમાં પહેલું ચરિત્ર આનંદ શ્રાવકનું આવે છે.

આનંદ શ્રાવકે જૈન ધર્મ અંગીકાર કર્યો અને બારવ્રત ભગવાન મહાવીર પાસે અંગીકાર કરી પ્રતિજ્ઞા (પ્રત્યાખ્યાન) લીધાં તેનું સવિસ્તર વર્ણન આવે છે. તેની અંતર્ગત અનેક વિષયો જેવા કે, અભિગમ, લોકાલોકસ્વરૂપ, નવતત્ત્વ, નરક દેવલોક વગેરેનું વર્ણન પણ આવે છે.

આનંદ શ્રાવકે બાર વ્રત લીધાં તે બારે વ્રતની વિગત અતિચારની વિગત વગેરે બધું આપેલું છે. તે જ પ્રમાણે બીજા નવ શ્રાવકોની પણ વિગત આપેલ છે

આનંદ શ્રાવકની પ્રતિજ્ઞામાં अरिहंत चेइयाई શબ્દ આવે છે. મૂર્તિપૂજકો મૂર્તિપૂજા સિદ્ધ કરવા માટે તેનો અર્થ અરિહંતનું ચૈત્ય (પ્રતિમા) એવો કરે છે. પણ તે અર્થ તદ્દન ખોટો છે. અને તે જગ્યાએ આગળ પાછળના સંબંધ પ્રમાણે તેનો એ ખોટો અર્થ બંધ બેસતો જ નથી તે મુનિશ્રી ઘાસીલાલજીએ તેમની ટીકામાં અનેક રીતે પ્રમાણો આપી સાબિત કરેલ છે અને अरिहंत चेइयाई નો અર્થ સાધુ થાય છે તે બતાવી આપેલ છે.

આ પ્રમાણે આ સૂત્રમાંથી શ્રાવકના શુદ્ધ ધર્મની માહિતી મળે છે તે ઉપરાંત તે શ્રાવકોની ઋદ્ધિ, રહેઠાણ, નગરી વગેરેના વર્ણનો ઉપરથી તે વખતની સામાજિક સ્થિતિ, રીતરિવાજ રાજવ્યવસ્થા વગેરે બાબતોની માહિતી મળે છે.

એટલે આ સૂત્ર દરેક શ્રાવકે અવશ્ય વાંચવું જોઈએ એટલું જ નહિ પણ વારંવાર અધ્યયન કરવા માટે ઘરમાં વસાવવું જોઈએ.

પુસ્તકની શરૂઆતમાં વર્દ્ધમાન શ્રમણ સંઘના આચાર્યશ્રી આત્મારામજી મહારાજનું સંમતિ પત્ર તથા બીજા સાધુઓ તેમજ શ્રાવકોના સંમતિ પત્રો આપેલા છે, તે સૂત્રની પ્રમાણભૂતતાની ખાત્રી આપે છે.

"જૈન સિદ્ધાંત" જાન્યુઆરી, ૫૭

❋

સેંકડો સર્ટીફીકેટો ઉપરાંત હાલમાં મળેલા
કેટલાક તાજા અભિપ્રાયો.

શાસ્ત્રોદ્ધારના કાર્યને વેગ આપો.

તંત્રીસ્થાનેથી (જૈનજ્યોતિ) તા. ૧૫-૯-૫૭

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ ઠાણા ૪ હાલમાં અમદાવાદ મુકામે સરસપુરના સ્થા. જૈન ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન છે. તેઓશ્રી શાસ્ત્રોદ્ધારનું કાર્ય ખૂબ જ ખંત અને ઉત્સાહથી વૃદ્ધવયે પણ કરી રહ્યા છે. તેઓશ્રી વૃદ્ધ છે છતાં પણ આખો દિવસ શાસ્ત્રની ટીકાઓ લખી રહ્યા છે. આજ સુધીમાં તેમણે લગભગ ૨૦ જેટલાં શાસ્ત્રોની ટીકાઓ લખી નાખી છે અને બાકીનાં સૂત્રોની ટીકા જેમ બને તેમ જલદી પૂર્ણ કરવી તેવા મનોરથ સેવી રહેલ છે. સ્થા. જૈન સમાજમાં શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા લખવાનો આ પ્રથમ જ પ્રયાસ છે અને તે પ્રયાસ સંપૂર્ણ બને એવી અમે શાસનદેવ પ્રત્યે પ્રાર્થના કરીએ છીએ. આજ સુધી ઘણા મુનિવરોએ શાસ્ત્રોનું કામ શરૂ કરેલ છે પણ કોઇએ પૂર્ણ કરેલ નથી. પૂજ્યશ્રી અમુલખઋષીજી મહારાજે બત્રીસે શાસ્ત્રો ઉપર હિન્દી અનુવાદ કરેલ અને સંપૂર્ણ બનેલ. ત્યારબાદ આચાર્ય શ્રી આત્મારામજી મહારાજશ્રીએ હિન્દી ટીકા કેટલાક શાસ્ત્રો ઉપર લખેલ પણ ઘણાં શાસ્ત્રો બાકી રહી ગયાં પૂજ્ય હસ્તિમલજી મહારાજે એક બે શાસ્ત્રો ઉપરની ટીકાઓના અનુવાદો કરેલ. પૂજ્ય શ્રી જવાહિરલાલ મહારાજશ્રીએ સૂયગડાંગ સૂત્ર ટીકા સહિત હિન્દી અનુવાદ સાથે કરેલ. શ્રી સૌભાગ્યમલજી મહારાજે આચારાંગની હિન્દી ટીકા લખેલ. પણ સંપૂર્ણ શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા હજી સુધી સ્થા. જૈન સાધુઓ તરફથી થયેલ નથી. જ્યારે પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજશ્રીએ ૨૦ શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા તેનો હિન્દી ગુજરાતી અનુવાદ કરાવેલ છે આથી હવે આશા બંધાય છે કે તેઓશ્રી બત્રીસે બત્રીસ શાસ્ત્રો ઉપર સંસ્કૃત ટીકા લખવામાં સફળ થશે અને શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિએ આજ સુધી ૧૦ થી ૧૨ શાસ્ત્રો છપાવી પણ દીધાં છે અને હજી પણ તે શાસ્ત્રો વિશેષ જલદી છપાય તે માટે શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ સંપૂર્ણ પ્રયત્ન કરી રહેલ છે તે ધન્યવાદને પાત્ર છે.

જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના રૂા. ૨૫૧) ભરીને લાઇફ મેમ્બર થનારને શાસ્ત્રો તમામ, શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ તરફથી ભેટ મળે છે. આ રીતે એક પંથ અને દો કાજ. બન્ને રીતે લાભ થાય તેમ છે. રૂા. ૨૫૧ માં ૫૦૦ રૂપિયાની કિંમતના શાસ્ત્રો મળે એ પણ મોટો લાભ છે અને પ્રવચનની પ્રભાવના કરવાનો ધર્મલાભ પણ મળે છે

આ સાલે પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજના સુશિષ્ય પં. મુનિશ્રી કન્હૈયાલાલજી મહારાજ મલાડ મુકામે ચાતુર્માસ બિરાજે છે અને તેઓશ્રી શાસ્ત્રોના મેમ્બરો કરવા માટે અથાગ પ્રયત્ન કરીને પ્રવચનની સેવા બજાવી રહ્યા છે. અને અત્યાર સુધીમાં મુંબઇ તેમજ પરાઓના લગભગ ૪૦ જેટલા ગૃહસ્થો લાઇફ મેમ્બર બની ગયા છે અને મુંબઈમાં લગભગ ૩૦૦ જેટલા મેમ્બરો થાય તે ઇચ્છવા યોગ્ય છે. શ્રીમંત ગૃહસ્થો હજારો રૂપિયા પોતાના ઘર ખર્ચમાં તેમજ મોજશોખના કામોમાં તેમજ વ્યવહારિક કામોમાં વાપરી રહ્યા છે તો આવા શાસ્ત્રોદ્ધાર જેવા પવિત્ર કાર્યમાં રૂપિયા વાપરશે તો ધર્મની સેવા કરી ગણાશે. અને બદલામાં ઉત્તમ આગમસાહિત્યની એક લાયબ્રેરી બની જશે. જેનું વાંચન કરવાથી આત્માને શાંતિ મળશે અને શાસ્ત્રઆજ્ઞા પ્રમાણે વર્તવાથી જીવન સફળ થશે.



શતાવધાની મુનિશ્રી જયંતિલાલજી મહારાજશ્રીનો અમદાવાદનો પત્ર "સ્થાનકવાસી જૈન" તા. ૫-૯-૫૭ના અંકમાં છપાએલ છે જે નીચે મુજબ છે.

સૂત્રોના મૂળ પાઠોમાં ફેરફાર હોઇ શકે ખરો ?

તા. ૭-૮-૫૭ના રોજ અત્રે બિરાજતા શાસ્ત્રોદ્ધારક આચાર્ય મહારાજશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ પાસે, મારા ઉપર આવેલ એક પત્ર લઇને હું ગયો હતો, તે સમયે મારે પૂ. મ. સા. સાથે જે વાતચીત થઈ તે સમાજને જાણ કરવા સારૂ લખું છું.

'શાસ્ત્રોનું કામ એક ગહન વસ્તુ છે. અપ્રમાદી થઇ તેમાં અવિરત પ્રયત્નો કરવા જોઇએ. સંપૂર્ણ શાસ્ત્રોનું જ્ઞાન તેમજ દરેક પ્રકારની ખાસ ભાષાઓનું જ્ઞાન હોય તોજ આગમોદ્ધારકનું કાર્ય સફળતાથી થાય છે. આ પ્રકારનો પ્રયત્ન હાલ અમદાવાદ ખાતે સરસપુર જૈન સ્થાનકમાં બિરાજતા પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કરી રહ્યા છે. શાસ્ત્ર લેખનનું આ કાર્ય થઇ રહ્યું છે, તેમાં અનેક વ્યકિતઓને અનેક પ્રકારની શંકાઓ થાય છે તેમાં શાસ્ત્રોના મૂળ પાઠમાં ફેરફાર થાય છે ? કરવામાં આવે છે ? એવો પ્રશ્ન પણ કેટલાકને થાય છે અને તેવો પ્રશ્ન થાય તે સ્વભાવિક છે; કેમકે અમુક મુનિરાજો તરફથી પ્રગટ થયેલ સૂત્રોના મૂળ પાઠમાં ફેરફાર થયેલા છે. જેથી આ કાર્યમાં પણ સમાજને શંકા થાય.

પણ ખરી રીતે જોતાં, અત્યારે જે શાસ્ત્રોદ્ધારનું કામ ચાલી રહ્યું છે તે વિષે સમાજને ખાત્રી આપવામાં આવે છે કે, શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ તરફથી અત્યાર સુધીમાં પ્રગટ થયેલાં આગમોના મૂળ પાઠમાં જરાપણ ફેરફાર કરવામાં આવેલ નથી અને ભવિષ્યમાં જે સૂત્રો પ્રગટ થશે તેમાં ફેરફાર થશે નહિ તેની સમાજ નોંધ લ્યે.

લી.

શતાવધાની શ્રી જયંત મુનિ-અમદાવાદ

*

રૂા. ૫,૨૫૧ આપનાર આદ્ય સુરબ્બીશ્રી,



છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર

અમદાવાદ.

"શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિનો ટૂંક પરિચય"

સ્થાનકવાસી સમાજની આ એકની એક સંસ્થા છે કે જેણે અત્યાર સુધીમાં તેર સૂત્રો છપાવી બહાર પાડી દીધાં છે. સાત સૂત્રો છપાય છે અને બીજાં કેટલાક છાપવા માટે તૈયાર થઇ ચૂકયા છે.

આ પ્રમાણે આ સંસ્થાએ મહાન્ પ્રગતિ સાધી છે તેનો ટૂંક પરિચય આ પત્રિકામાં આપેલ છે તે વાંચી જઇ સર્વ સ્થા. જૈન ભાઇબહેનોએ આ સંસ્થાને યથાશકિત મદદ કરી તેના કાર્યને હજુ વિશેષ વેગવાન બનાવવાની જરૂર છે.

ખાલી ઘડો વાગે ઘણો એમ સ્થા. કોન્ફરન્સ જેમ ખોટાં બણગાં ફુંકનારી સંસ્થાની કોઈ કિંમત નથી, ત્યારે નક્કર કામ કરનારી આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને દરેક પ્રકારે ઉત્તેજન આપવાની દરેક સ્થાનકવાસી જૈનની અનિવાર્ય ફરજ છે.

અને આ સર્વ સૂત્રો તૈયાર કરનાર પૂજ્ય મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજનો સ્થાનકવાસી સમાજ ઉપર ઘણો મહાન ઉપકાર છે. વયોવૃદ્ધ હોવા છતાં તેઓશ્રી જે મહેનત લઇ સૂત્રો તૈયાર કરાવે છે. તેવું કામ હજુ સુધી બીજા કોઇએ કર્યું નથી અને બીજું કોઇ કરી શકશે કે નહિ તે પણ શંકાભર્યું છે. પૂજ્ય મુનિશ્રીના આ મહાન્ ઉપકારનો કિંચિત બદલો સમાજે આ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને બની શકતી સહાય કરીને વાળવાનો છે. સ્થાકવાસી સમાજ જ્ઞાનની કદર કરવામાં પાછો હઠે તેમ નથી એવી અમો આશા રાખીએ છીએ.

"જૈનસિદ્ધાંત" પત્ર ઓકટોમ્બર ૧૯૫૭

*

શ્રી દશવૈકાલિક તથા ઉપાસક દશાંગ સૂત્રો.

ગુજરાતી ભાષામાં અનુવાદ થયેલાં પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ વિરચિત શ્રી ઉપરોકત બે સૂત્રો જૈન ધર્મ પાળતા દરેક ઘરમાં હોવા જ જોઇએ. તે વાંચવાથી શ્રાવક ધર્મ અને શ્રમણ ધર્મના આચારનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત થઇ શકે છે અને શ્રાવકો પોતાની નિરવદ્ય અને એષણિય સેવા શ્રમણ પ્રત્યે બજાવી શકે છે. વર્તમાનકાળે શ્રાવકોમાં તે જ્ઞાન નહિ હોવાને લીધે અંધશ્રદ્ધાએ શ્રમણ વર્ગની વૈયાવચ્ચ તો કરી રહેલ છે. પરંતુ 'કલ્પ શું અને અકલ્પ શું' એનું જ્ઞાન નહિ હોવાને લીધે પોતે સાવદ્ય સેવા અર્પી પોતાના સ્વાર્થને ખાતર શ્રમણ વર્ગને પોતાને સહાયક થવામાં ઘસડી રહ્યા છે અને શ્રમણ વર્ગની પ્રાયઃ કુસેવા કરી રહ્યા છે. તેમાંથી બચી લાભનું કારણ થાય અને શ્રમણને યથાતથ્ય સેવા અર્પી તેમને પણ જ્ઞાનદર્શન ચારિત્રની આરાધના કરવામાં સહાયક થઇ પોતાના જ્ઞાનદર્શન ચારિત્રની આરાધના કરી સુગતિ મેળવી શકે. શ્રમણની યથાતથ્ય સેવા કરવી તે અવશ્ય ગૃહસ્થની ફરજ છે.

પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મ. શાસ્ત્રોદ્ધારનું અનુવાદન ત્રણ ભાષામાં રૂડી રીતે કરી રહ્યા છે અને રૂપીયા ૨૫૧) ભરી મેમ્બર થનારને રૂા. ૪૦૦–૫૦૦ લગભગની કીંમતના બત્રીસે આગમો ફ્રી મળી શકે છે તો તે રૂા. ૨૫૧) ભરી મેમ્બર થઇ બત્રીસે આગમો દરેક શ્રાવકઘરે મેળવવા જોઇએ. બત્રીસે શાસ્ત્રોના લગભગ ૪૮ પુસ્તકો મળશે. તો તે લાભ પોતાની નિર્જરા માટે પુણ્યાનુંબંધી પુણ્ય માટે જરૂર મેળવે. ઉપરોકત બંને સૂત્રોની કીંમત સમિતિ કંઇક ઓછી રાખે તો હરકોઇ ગામમાં શ્રીમંત હોય તે સૂત્રો લાવી અરધી કીંમતે, મફત અથવા પૂરી કીંમતે લેનારની સ્થિતિ જોઇ દરેક ઘરમાં વસાવી શકે.

—એક ગૃહસ્થ

નોંધ–ઉપરની સૂચનાને અમે આવકારીએ છીએ. આવાં સૂત્રો દરેક ઘરમાં વસાવવા યોગ્ય તેમજ દરેક શ્રાવકે વાંચવા યોગ્ય છે. તંત્રી–

"રત્નજયોત" પત્ર

તા. ૧–૧૦–૫૭

શ્રી સ્થા. જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિની કાર્યવાહક કમીટીનો અહેવાલ.

*

મે મહીનાની શરૂઆતમાં શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિની મીટીંગ અમદાવાદમાં મળી હતી તેનો હેવાલ અમને મળેલો છે તેમાં સમિતિએ સરસ કામ કર્યું છે.

આ ઉપરથી સમજી શકાય છે કે સ્થાનકવાસી સમાજમાં આજ સુધી કોઇ પણ નથી કરી શકયું એવું મહાભારત કામ પૂ. શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ તથા શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ ઘણી સફળતાથી કરી રહી છે. અને તેઓ થોડા વખતમાં માથે લીધેલું સર્વ કામ સંપૂર્ણ રીતે પાર ઉતારશે એવી અમને ખાત્રી છે.

આવા ઉત્તમ કાર્ય માટે સમસ્ત સ્થાનકવાસી જૈનોએ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિને પોતાથી બની શકે તે રીતે સંપૂર્ણ ટેકો આપવો જોઇએ, તે તેમની પહેલી ફરજ બની રહે છે. જૈનો માટે સૂત્રો એ પહેલી જરૂરીઆતની વસ્તુ છે. સૂત્રના આધારે જ ધર્મ-જ્ઞાન મળે છે. આજ સુધી જે આપણને અપ્રાપ્ય હતા તે આપણા જૈન સૂત્રો પૂ શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજે તથા શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિએ સુલભ કરી આપ્યા છે.

તો હવે સ્થાનકવાસી જૈનોએ શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના સભાસદ બની સમિતિનું કામ બનતી ઉતાવળે પૂરૂં થાય તેમ કરવાની ખાસ જરૂર છે. વાંચકોમાંથી જેઓથી બની શકે તેમણે પહેલા વર્ગના શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના સભ્ય બની જવું જોઇએ. તેથી સમિતિના કામને ઉત્તેજન મળવા ઉપરાંત સભ્યને સૂત્રોનો આખો સેટ મફત મેળવવાનો લાભ મળશે અને સૂત્રો વાંચીને ધર્મારાધન કરવાનો જે લાભ મળશે તે તો અમૂલ્ય જ છે. માટે સમિતિના સભ્ય થઇ જવાની અમારી દરેક સ્થા. જૈનને ખાસ ભલામણ છે.

"જૈન સિદ્ધાંત" જુલાઈ-૧૯૫૮.

શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિના આગમો અંગે અભિપ્રાય.

*

દક્ષિણ, ઉત્તર પ્રદેશ, રાજસ્થાન, દિલ્હી, પંજાબ અને હાલમાં ગુજરાત સૌરાષ્ટ્રમાં વિચરી રહેલા ઉગ્ર વિહારી પૂ. મહાસતીજી શ્રી રંભાકુંવરજી તથા પ્રસિદ્ધ વ્યાખ્યાની વિવિધ ભાષા વિશારદા પૂ. મહાસતીજી શ્રી સુમતિકુંવરજીનો, પૂજ્ય શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી ઘાસીલાલજી મ. સા. નિર્મિત જૈનાગમોની સંસ્કૃત ટીકા તથા હિન્દી-ગુજરાતી ભાષાંતર પર અભિપ્રાય :-

ૐ નમો સિદ્ધાણં

શાસ્ત્ર વિશારદ શ્રદ્ધેય પંડિત રત્ન પૂજ્ય આચાર્ય મુનિશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ સાહેબ જૈનાગમોના એક વિદ્વાન, વૃદ્ધવિચારક અને ઉત્તમ લેખક છે.

સાહિત્ય સર્જન એ તેમનાં જીવનનો એક ઉત્તમ સંકલ્પ છે. સામાજિક પ્રપંચોથી દૂર રહી, અથાગ પરિશ્રમ દ્વારા વિરચિત, સંપાદિત અને અનુવાદિત અનેક ગ્રંથો તેમના દ્વારા પ્રકાશિત થયા છે, જે તમામ જૈનોને માટે ચિંતન,, મનન અને અધ્યયન-અધ્યાપન માટે એક અપૂર્વ સાધન રૂપ છે. આવું ઉત્તમ સાહિત્ય તૈયાર કરીને તેઓશ્રીએ સાહિત્ય સેવીના મહાન પદને દીપાવ્યું છે.

આગમના રહસ્યોથી અનભિજ્ઞ (અજાણ) આજની પ્રજામાં શ્રદ્ધેય શ્રી મહારાજ સાહેબનું સાહિત્ય અત્યંત ઉપયોગી છે, તેમ હું માનું છું.

અમદાવાદ તા. ૧-૫-૫૮

આર્યા-સુમતિકુંવર.

રૂા. ૫,૦૦૧ આપનાર આદ્ય મુરબ્બીશ્રી,



(સ્વ.) શેઠ ધારસીભાઈ જીવણભાઈ
સોલાપુર.

શ્રી શ્રમણ સંઘના ઉપાધ્યાય કવિ મુનિશ્રી અમરચંદજી મહારાજનો

કલ્પસૂત્ર માટે અલવરનો આવેલ પત્ર

શ્રીયુત ભોગીલાલજી – અમદાવાદ.

જયવીર

આપને ત્યાં બીરાજમાન પરમ શ્રદ્ધેય શ્રી શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી પૂજ્યપાદશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ આદિ બધા સંતોની સેવામાં વંદન સુખશાન્તિ નિવેદન છે.

આપે શ્રદ્ધેય કવિજીને મોકલેલ "કલ્પસૂત્ર" મેળવીને પ્રસન્નતા પ્રગટ કરી છે. અને સાદર યથાયોગ્ય અભિનંદન પૂર્વક લખાવ્યું છે કે "કલ્પસૂત્ર"નું પ્રકાશન બહુજ ઉત્કૃષ્ટ કોટિનું છે. તેની ટીકા સુંદર-વિસ્તારપૂર્વક સારી રીતે લખેલ છે. ટાઇમ મળતાં અધ્યયન કરવા માટે પ્રયત્ન કરવામાં આવશે. છાપવામાં આવેલ આવૃત્તિ માટે કોટિ કોટિ ધન્યવાદ આપવામાં આવે છે.

કવિશ્રીજીનું સ્વાસ્થ્ય સારી રીતે ચાલે છે. પહેલાની અપેક્ષાએ કંઇક સારૂં છે. આ પત્ર વીલમ્બથી લખવામાં આવેલ છે તો ક્ષમા કરજો.

અલવર (રાજસ્થાન)
તા. ૯-૮-૧૯૫૮.

ભવદીય : રતનલાલ સચેતી
(હિન્દીનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ)

श्रीवीतरागाय नमः



जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालजीमहाराजविरचित-
मुनिकुमुदचन्द्रिकाटीकासमलंकृतम्

अन्तकृतदशाङ्गसूत्रम्.

(अष्टममङ्गम्)



मङ्गलाचरणम्—

शुद्धं विशुद्धं शिवदं जिनेन्द्रं,
देवेन्द्रवृन्दस्तुतपादपद्मम् ।
अनन्तज्ञानादिधरं मुनीशं,
श्रीमोक्षमार्गप्रदमाप्रणम्य ॥ १ ॥

अन्तकृतदशाङ्ग सूत्रकी मुनिकुमुदचन्द्रिका-नामक टीकाका हिन्दीभाषानुवाद

मैं घासीलाल मुनि, कल्याण को देने वाले, देवेन्द्रवृन्द से वंदित, अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्तवीर्य के धारक, शुद्धस्वरूप, शिवपदके दाता, विशुद्धात्मा मुनियों के स्वामी जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करके ॥ १ ॥ तथा वायुकायादि

અન્તકૃતદશાંગ સૂત્રની મુનિકુમુદચન્દ્રિકા નામક ટીકાનો ગુજરાતીભાષાનુવાદ

હું ઘાસીલાલ મુનિ, કલ્યાણને આપવાવાળા, દેવેન્દ્રવૃન્દથી વંદિત, અનન્ત જ્ઞાન, અનન્ત દર્શન, અનન્તસુખ અને અનન્તવીર્યના ધારક, શુદ્ધસ્વરૂપ, શિવપદના આપનાર, વિશુદ્ધાત્મા મુનિઓના સ્વામી જિનેન્દ્રભગવાનને નમસ્કાર કરીને, (૧)

वायुकायादिरक्षार्थं, सदोरा मुखवस्त्रिका ।
बद्धा निजमुखे येन, तं गुरुं प्रणिपत्य च ॥ २ ॥

साम्प्रतमन्तकृतेऽस्मिन्, सूत्रे बालोपकारिणी टीका ।
मुनिकुमुदचन्द्रिकेयं, वितन्यते घासिलालेन ॥ ३ ॥

अथ अन्तकृतदशाख्यमष्टममङ्गं प्रारभ्यते, तत्र पूर्वेण सहाऽयमभिसम्बन्धः— पूर्वमुपासकदशाख्ये सप्तमेऽङ्गे ये सकलविरतिसमाराधनाऽक्षमा भवाटवीभ्रमणवेलाकलितसन्तापकलापव्याकुलितात्मानो भव्यास्तेषामुपकाराय भगवता ऽनेकश्रम-

---

जीवों की रक्षा के लिए मुख पर दोरासहित मुखवस्त्रिका धारण करने वाले त्यागी गुरु को वन्दना करके ॥ २ ॥ अल्पबुद्धिवाले भव्यों का उपकार करने वाली अन्तकृतसूत्र की 'मुनिकुमुदचन्द्रिका' नामक टीका की यथाबुद्धि रचना करता हूँ ॥ ३ ॥

अब अन्तकृतदशा नामक आठवें अङ्ग का प्रारम्भ करते हुए इसका पूर्व अंग के साथ किस तरह का सम्बन्ध है, वह बताते हैं—

पहिले उपासकदशा नामक सातवें अंग में, संसाररूपी अटवी (अरण्य) में भटकती हुई, जिनकी आत्मा अत्यन्त क्षुब्ध (सन्तप्त) हो गयी है, ऐसे सर्वविरतिधर्म–समाराधन में असमर्थ भव्यों के उपकार के लिए भगवान ने अनेक श्रमणोपासक के चरित्र चित्रण (वर्णन) करके अगार धर्मको प्रतिबोधित किया।

તથા વાયુકાયાદિ જીવોની રક્ષા માટે મુખપર દોરાસહિત મુખવસ્ત્રિકા ધારણ કરવાવાળા ત્યાગી ગુરુને વન્દના કરીને, (૨)

અલ્પ બુદ્ધિવાળા ભવ્યોને ઉપકાર કરવાવાળી अन्तकृतसूत्रनी मुनिकुमुद-चंद्रिका નામવાળી ટીકાની યથાબુદ્ધિ રચના કરૂં છું (૩)

અહીં अन्तकृतदशा નામના આઠમા અંગનો પ્રારંભ કરતાં તેના પૂર્વ અંગની સાથે કેવી તરેહનો સબંધ છે તે બતાવીએ છીએ.

પહેલાં ઉપાસકદશા નામના સાતમા અંગમાં, સંસાર રૂપી અટવી [અરણ્ય]માં ભટકતા જેઓનો આત્મા અત્યન્ત ક્ષુબ્ધ (સંતપ્ત) થઇ ગયો છે, એવા સર્વવિરતિધર્મ–સમારાધનમાં અસમર્થ ભવ્યોના ઉપકાર માટે ભગવાને અનેક શ્રમણોપાસકોનાં ચરિત્ર વર્ણન કરીને અગારધર્મનો પ્રતિબોધ કર્યો.

णोपासकचरित्रचित्रणपुरस्सरमगारधर्मः प्रतिबोधितः, इह चानगारधर्ममुररीकृत्य ये तद्भवमोक्षगामिन आयुषोऽवसानसमये केवलं प्राप्य धर्मदेशनामदत्त्वैव मोक्षं गतवन्तस्तेषां चरित्रप्ररूपणपूर्वकमन्तकृतदशाख्यमष्टममङ्गं प्ररूप्यते ।

अत्रान्तकृतकेवलिनां नगराणि, उद्यानानि, यक्षायतनानि वनषण्डानि, समवसरणानि, राजानः, अम्बाः, पितरः, धर्माचार्याः, धर्मकथाः, ऐहलौकिक-पारलौकिका ऋद्धिविशेषाः, भोगपरित्यागाः, प्रव्रज्याः, पर्यायाः, श्रुतपरिग्रहाः, तपउपधानानि, संलेखनाः, भक्तप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि, अन्तक्रियाश्च-इत्यादीनि वर्ण्यन्ते, तत्रेदमादिसूत्रम्—

इस सूत्र में अनगार धर्म को स्वीकार कर जो तद्भव-(उसी भवमें) मोक्षगामी हैं और जिन्होंने आयुष्य के अन्त समय में केवलज्ञान प्राप्तकर धर्मदेशना दिये बिना ही मुक्ति प्राप्त कर ली है; ऐसे महा-पुरुषों का चरित्र वर्णन करने वाला अन्तकृतदशा नामक आठवें अंग का प्ररूपण करते हैं ।

यहाँ अन्तकृत केवलियों के जीवनवृत्तान्त से सम्बन्ध रखने वाले नगर, उद्यान, यक्षायतन, वनषण्ड, समवसरण, राजा, माता, पिता, धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिकपारलौकिक ऋद्धिविशेष, भोगपरित्याग, प्रव्रज्या, पर्याय, श्रुतपरिग्रह, तप उपधान, संलेखना, भक्तप्रत्याख्यान, पादपोपगमन, अन्तक्रिया आदि का वर्णन किया जाता है । उसका यह प्रथम सूत्र है :-

---

આ સૂત્રમાં અનગાર ધર્મને સ્વીકાર કરીને જે તદ્દભવ-(તે જ ભવમાં) મોક્ષ-ગામી છે, તથા જેઓએ આયુષ્યના અન્તસમયે કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી ધર્મદેશના દીધા વિના જ મુકિત પ્રાપ્ત કરી લીધી છે, એવા મહાપુરુષોનાં ચરિત્ર વર્ણન કરવાવાળા अन्तकृतदशा નામના આઠમા અંગનું પ્રરૂપણ કરીએ છીએ.

અહીં અન્તકૃતકેવલિઓનાં જીવનવૃત્તાન્તથી સંબંધ રાખવાવાળા નગર, ઉદ્યાન, યક્ષાયતન, વનષંડ, સમવસરણ, રાજા, માતા, પિતા, ધર્માચાર્ય, ધર્મકથા, ઇહલૌકિક પારલૌકિક ઋદ્ધિવિશેષ, ભોગપરિત્યાગ, પ્રવ્રજ્યા, પર્યાય, શ્રુતપરિગ્રહ, તપઉપધાન, સંલેખના, ભકતપ્રત્યાખ્યાન, પાદપોપગમન, અંતક્રિયા આદિનું વર્ણન કરવામાં આવે છે. તેનું આ પ્રથમ સૂત્ર છે:—

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

॥ मूलम् ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, वण्णओ। तत्थ णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए एत्थ णं पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था। वणसंडे वण्णओ। तीसे णं चंपाए णयरीए कोणिए नामं राया होत्था महयाहिमवंत० वण्णओ० ॥ सू० १ ॥

॥ टीका ॥

'तेणं' इति। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये-काले=अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकलक्षणे, समये=कोणिकराजशासनावसरे चम्पा नाम नगरी 'होत्था' आसीत्।

प्राकारपरिवेष्टितं प्रतिद्वारं विविधशिल्पकलाकलितं विशालगोपुरसुशोभितं सकलजातीयजननिवासस्थानं नगरीत्युच्यते। गोपुरं हि नगरस्य सौन्दर्यार्थं

"तेणं कालेणं तेणं समएणं".........इत्यादि।

अवसर्पिणी के चौथे आरे के अन्दर और राजा कूणिक के शासन समय में चम्पा नामक नगरी थी।

नगरी-जो चारों तरफ कोटों (प्राकारों) से घिरी हुई हो, जिसका प्रत्येक द्वार नाना भाँति की शिल्पकलाओं से युक्त, सुन्दर गोपुर से सुशोभित हो और जहाँ सभी वर्णों के मनुष्य निवास करते हों उसे नगरी कहते हैं।

अथवा—जहाँ किसी भी तरह का कर (टेक्स) न लिया जाता हो उसे भी नगरी (नकरी) कहते हैं।

तेणं कालेणं तेणं समएणं ઇત્યાદિ

અવસર્પિણીના ચોથા આરાની અંદર રાજા કોણિકના શાસનસમયમાં ચમ્પા નામે નગરી હતી. જે ચતુર્દિક કોટ (પ્રાકાર) થી ઘેરાયેલી હોય, જેનું પ્રત્યેક દ્વાર (દરવાજો) જુદી જુદી પ્રકારની શિલ્પકળાઓથી યુકત અને સુંદર ગોપુરથી સુશોભિત હોય તથા જેમાં તમામ વર્ણોનાં મનુષ્ય નિવાસ કરતાં હોય તેને નગરી કહે છે.

અથવા જ્યાં કોઇ પણ જાતનો કર (ટેકસ) ન લેવાતો હોય તેને પણ નગરી (નકરી) કહે છે.

प्रतिद्वाराग्रे निर्मितं विचित्रशोभासम्पन्नं प्रवेशद्वारमिति।

अथवा 'नकरी'-तिच्छाया, तत्र न करो=राजदेयभागो यस्यां सा नकरी=अष्टादशकरवर्जिता पुरी, अकरदायिजनावासस्थानमित्यर्थः ।

अष्टादश करा यथा- (१) गोकरः-गवां करः गोकरः-इयत्परिमित-गोविक्रयणे एका गौर्दातव्येतिरूपः, गोविक्रयलब्धरूप्यकेभ्यो नियतरूप्यकग्रहणं वा, (२) एवं महिषकरः, (३) उष्ट्रकरः, (४) पशुकरः-रासभादिकरः, पक्षिकरो वा, (५) अजाकरः-अजामेषादिक्रयविक्रये रूप्यकयाचनम्, (६) तृणकरः, (७)

गोपुर—नगर की सुन्दरता बढाने के लिये प्रत्येक द्वार पर बनाया हुआ विचित्र शोभायुक्त प्रवेश द्वार को गोपुर कहते हैं।

कर (जकात)—अठारह प्रकार का होता है। वह इस प्रकार हैः-

(१) गोकर-कुछ निश्चित संख्या तक गौ के बिकने पर एक गौ का कररूप में लेना, अथवा गौ के मूल्य से कुछ निश्चित रूपये लेना, इसको गोकर कहते हैं।

(२) महिषकर—भैंस पर लगने वाला कर।

(३) उष्ट्रकर—ऊँट पर लगने वाला कर।

(४) पशुकर—गधे पर लगनेवाला कर, अथवा पक्षिकर—पक्षियों पर लगने वाला कर।

(५) अजाकर—बकरी-भेडों पर लगने वाला कर।

गोपुर નગરીની સુંદરતા વધારવા માટે પ્રત્યેક દરવાજા ઉપર બનાવેલાં વિચિત્ર શોભાયુકત પ્રવેશદ્વારને ગોપુર કહે છે.

कर (जकात) કર અઢાર પ્રકારના થાય છે તે નીચે પ્રમાણે છે.

(૧) गोकर અમુક નિશ્ચિત સંખ્યાસુધી ગાયને વેચવા ઉપર એક ગાયને કરરૂપે લેવી તે, અથવા ગાયની કિંમતમાંથી અમુક નિશ્ચિત રૂપીઆ લેવા તે.

(૨) महिषकर ભેંસ ઉપર લેવામાં આવતો કર,

(૩) उष्ट्रकर ઉંટ ઉપર લેવાતો કર.

(૪) पशुकर ગધેડા પર લેવાતો કર, અથવા पक्षिकर પક્ષીઓ પર લેવાતો કર

(૫) अजाकर બકરાં, ઘેટાં પર લેવાતો કર.

पलालकरः-पलालः-खलमर्दितव्रीह्यादिनिस्सृततृणविशेषस्तस्य करः, (८) बुसकरः-धान्यतुषकरः, (९) काष्ठकरः, (१०) अङ्गारकरः- अङ्गारः 'कोयला' इति भाषाप्रसिद्धस्तस्य करः, (११) लाङ्गलकरः- हलकरः, (१२) देहलीकरः- गृहकर इत्यर्थः, (१३) जङ्घाकरः- मनुष्यकर इत्यर्थः, (१४) बलीवर्दकरः, (१५) घटकरः, (१६) कर्मकरः-कर्माश्रित्य करः- सुवर्णकारादिशिल्पिभ्यो रूप्यकया-

---

(६) तृणकर—घास का कर।
(७) पलालकर—चावल आदि निकाले हुए घासका कर।
(८) बुसकर-भूसे का कर।
(९) काष्ठकर-लकडी का कर।
(१०) अंगारकर-कोयले का कर।
(११) लांगलकर-हल पर लगने वाला कर।
(१२) देहलीकर-घरों पर लगने वाला कर।
(१३) जङ्घाकर-मनुष्यों पर लगने वाला कर।
(१४) बलीवर्दकर-बैलों का कर।
(१५) घटकर-घडों का कर।
(१६) कर्मकर-सुतार आदि शिल्पी जातियों पर लगने वाला कर।

---

(૬) तृणकर ઘાસ નો કર.
(૭) पलालकर જેમાંથી ચોખા કાઢી લીધેલા હોય તેવા ઘાસ ઉપરનો કર.
(૮) बुसकर ભૂસાનો કર.
(૯) काष्ठकर લાકડાનો કર.
(૧૦) अंगारकर કોયલા નો કર.
(૧૧) लांगलकर હળ ઉપરનો કર.
(૧૨) देहलीकर ઘર ઉપરનો કર.
(૧૩) जंघाकर મનુષ્યો ઉપર લેવાતો કર.
(૧૪) वलीवर्दकर બળદનો કર.
(૧૫) घटकर ઘડા ઉપરનો કર.
(૧૬) कर्मकर સોની આદિ શિલ્પી જાતિઓ પાસેથી લેવાતો કર.

चनमित्यर्थः, (१७) बुल्लगकरः- बुल्लगो=जातिभोजनं, तस्य करः, (१८) औत्तिककरः- औत्तिकः = औत्पात्तिकीबुद्धिपरिकल्पितविज्ञानकलाव्यापारस्तस्य करः। 'वण्णओ' वर्णकः, वर्ण्यते=प्रकाश्यतेऽर्थो येन स वर्णः, वर्ण एव वर्णकः=चम्पानगरीवर्णनमित्यर्थः, सर्वोऽत्र वाच्यः, स चौपपातिकसूत्राद-वसेयः, तत्र खलु तस्यां चम्पायां नगर्याम् 'उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए' उत्तर-पौरस्त्ये दिग्भागे=उत्तरपूर्वयोरन्तरालदिग्विभागे-ईशानकोणे इत्यर्थः, 'एत्थ णं' अत्र खलु 'पुण्णभद्दे णामं चेइए' पूर्णभद्रं नाम चैत्यं=यक्षायतनम् आसीत्। तत्र 'वणसंडे' वनषण्डः=अनेकजातीयप्रधानवृक्षसमूहरूपः, एकजातीयप्रधान-

---

(१७) बुल्लगकर-जाति-भाइयों को भोजन देना उसको 'बुल्लग' कहते हैं, उसका कर।

(१८) औत्तिककर-औत्पातिकी बुद्धि से परिकल्पित विज्ञान-कला के व्यापार पर लगनेवाला कर।

ये अठारह प्रकार के कर चम्पानगरी में नहीं लगते थे।

जिसके द्वारा अर्थ प्रकट होता है उसे 'वर्णक' कहते हैं। वर्णक का यहाँ अभिप्राय है-चम्पानगरी का वर्णन।

वह सविस्तर औपपातिकसूत्र से जानना चाहिये। उस चम्पानगरी के ईशान कोण में पूर्णभद्र नामका यक्षायतन था। वहाँ अनेक जाति के वृक्षों का अथवा एक जाति के वृक्षों का सुन्दर

---

(१७) बुल्लगकर જાતિ-બિરાદરિઓને ભોજન દેવું તેને 'बुल्लग' કહે છે, તેનો કર.

(१८) औत्तिककर ઔત્પાતિકી-ઉત્પાત બુદ્ધિથી પરિકલ્પિત વિજ્ઞાનકળાના વ્યાપાર ઉપર લેવાતો કર.

આ અઢાર પ્રકારના કર ચમ્પા નગરીમાં લાગતા નહોતા.

જેનાથી અર્થ પ્રકટ થાય છે તેને 'वर्णक' કહે છે. वर्णकનો અહીં અભિપ્રાય છે-ચમ્પા નગરીનું વર્ણન.

તે સવિસ્તર औपपातिकसूत्रથી જાણવું જોઇએ. આ ચમ્પા નગરીના ઇશાન કોણમાં પૂર્ણભદ્ર નામનું યક્ષાયતન હતું. ત્યાં અનેક જાતિનાં વૃક્ષોનું અથવા એક જાતિના વૃક્ષોનું સુંદર વનષંડ હતું, તેનું પણ વિશેષ વર્ણન औपपातिकसूत्रથી જાણવું.

वृक्षसमुदायो वा, 'वण्णओ' वर्णकः=वनषण्डवर्णनमत्र औपपातिकसूत्राद् विलोकनीयम्। तस्यां चम्पायां नगर्यां कूणिको नाम राजा आसीत्। स कीदृशः इत्याह-'महयाहिमवन्त०' इत्यनेन। महया-हिमवंत-महंतमलय-मंदर-महिंद-सारे' इत्यादि संग्रहः, महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः-महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्राणां पर्वतानां सार इव सारो यस्य स तथोक्तः- लोकमर्यादाकारित्वेन महाहिमवत्सदृशः, प्रसृतयशःकीर्तित्वेन महामलयतुल्यः, दृढप्रतिज्ञत्वेन कर्तव्यदिग्दर्शकत्वेन च मेरुमहेन्द्रसदृश इत्याशयः, इत्यादिरूपो 'वण्णओ' वर्णकः=कोणिकराजवर्णनम्, स चौपपातिक-सूत्रेऽवलोकनीयः ॥ सू० १ ॥

॥ मूलम् ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मे थेरे जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामानुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे, जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइये तेणेव समोसरिए। परिसा निग्गया जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-जइ णं

वनषण्ड था, उसका भी विशेष वर्णन औपपातिकसूत्र से जानना।

उस चम्पानगरी में कूणिक नामके राजा राज्य करते थे। वह लोकमर्यादा करने के कारण महाहिमवान के सदृश थे, फैले हुए यश और कीर्ति के कारण महामलय-तुल्य थे, दृढप्रतिज्ञता और कर्तव्यज्ञान कराने के कारण मेरु और महेन्द्र पर्वत के समान प्रभावशाली थे। कोणिक राजा का वर्णन विस्तृत रूप से औपपातिक सूत्र में देखना चाहिए ॥ सू० १॥

તે ચમ્પાનગરીમાં કૂણિક નામના રાજા રાજ્ય કરતા હતા. તે લોકમર્યાદા કરવાના કારણથી મહાહિમવાન-સદૃશ હતા. યશ અને કીર્તિ ફેલાઈ રહેવાના કારણથી તે મહામલય તુલ્ય હતા. દૃઢપ્રતિજ્ઞતા અને કર્તવ્ય જ્ઞાન વડે મેરુ અને મહેન્દ્ર પર્વતના જેવા પ્રભાવશાલી હતા. કૂણિક રાજાનું વર્ણન વિસ્તારથી ઔપપાતિકસૂત્ર માં જોઇ લેવું (સૂ૦ ૧)

भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगेरणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते! अंगस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव सम्पत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥ सू० २ ॥

॥ टीका ॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'अज्जसुहम्मे थेरे' आर्यसुधर्मा स्थविरः=सु-शोभनो धर्मः=ज्ञानचारित्रलक्षणः स्याद्वादलक्षणः स्वभावलक्षणो वा यस्यासौ सुधर्मा, आर्यश्चासौ सुधर्मा च, आर्यसुधर्मा-अर्यते=भविभिर्गम्यते कल्याणप्राप्तये यः स आर्यः १, अथवा हेयधर्माद्

उस काल उस समय में स्थविर आर्य सुधर्मा स्वामी पाँच सौ अनगारों के साथ तीर्थंकरपरम्परा से विचरते हुए, ग्रामानुग्राम विहार करते हुए, उस चम्पानगरी के पूर्णभद्र नामक उद्यान में पधारे।

यहाँ मूल में 'आर्य सुधर्मा स्थविर' ये तीन पद आये हैं। इनमें-'सुधर्मा' शब्द का ऐसा अर्थ है-सु=शोभन अर्थात् अच्छा धर्म=श्रुतचारित्रलक्षण, स्याद्वादलक्षण और स्वभावलक्षण धर्मवाले सुधर्मा कहलाते हैं।

आर्य शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है-भव्यलोक अपने कल्याणप्राप्ति के लिए जिनकी सेवा करते हैं उनको आर्य कहते हैं। १।

अथवा—हेय-त्याज्य धर्म से जो अलग रहते हैं, वे आर्य कहलाते हैं। २।

તે કાલ તે સમયમાં સ્થવિર આર્ય સુધર્માસ્વામી પાંચસો અનગારોની સાથે તીર્થંકરપરંપરાથી વિચરતા ગામે-ગામ સંયમયાત્રાનિર્વાહપૂર્વક વિહાર કરતા કરતા તે ચમ્પાનગરીના પૂર્ણભદ્ર નામના ઉદ્યાનમાં પધાર્યા.

અહીં મૂળમાં 'आर्य सुधर्मा स्थविर' આ ત્રણ પદો આવેલાં છે. તેમાં આર્ય શબ્દની વ્યુત્પત્તિ આ પ્રકારે છે. ભવ્યલોક પોતાનાં કલ્યાણપ્રાપ્તિને માટે જેની સેવા કરે છે તેને આર્ય કહે છે અથવા-હેય (ત્યાગ કરવા યોગ્ય) ધર્મથી જે

आराद् यायते=दूरेण स्थीयते येन स आर्यः २, कर्मरूपकाष्ठच्छेदकत्वाद्रत्नत्रय-रूपमारम्, तद् याति=प्राप्नोति यः स इति वा आर्यः ३, इत्यार्यशब्दनिर्वचनम्। उक्तं च-"अज्जइ भविहिं आरा, आइज्जइ हेयधम्मओ जो वा। रयणत्तयरूवं वा, आरं जाइत्ति अज्ज इय वुत्तो" ॥ इति ॥ कीदृशः स आर्य-सुधर्मा? इत्याह- स्थविर इति। संयमयोगेषु सीदतः साधून् ऐहलौकिकपारलौकिकाऽपायदर्शनतः संयमादिषु स्थिरीकरोतीति स्थविरः, यावत् पञ्चभिरनगार-

अथवा-रत्नत्रय रूप आरा जिसने प्राप्त कर लिया हो उसे भी आर्य कहते हैं। कर्मरूप काष्ठका छेदन करने के कारण रत्नत्रय आरा-शस्त्रविशेष-कहलाता है। इस अर्थको प्रकाशित करने वाली गाथा इस प्रकार है :—

"अज्जइ भविहिं आरा, जाइज्जइ हेयधम्मओ जो वा
रयणत्तयरूवं वा, आरं जाइत्ति अज्ज इय वुत्तो ॥१॥" इति।३।

'स्थविर' शब्द का अर्थ कहते हैं-तप-संयम में लगे हुए मुनियों को, अगर संयमयोग में परीषह--उपसर्ग--आदि--जनित क्लेशके अनुभव के कारण शिथिलता आजाय तो जो उन्हें ऐहिक-पारलौकिक हानि बतलाकर तपसंयम में स्थिर करते हैं, उन्हें स्थविर कहते हैं।

અલગ રહે તે આર્ય કહેવાય છે. અથવા-રત્નત્રયરૂપ આરા જેણે પ્રાપ્ત કર્યા છે તેને પણ આર્ય કહે છે. કર્મરૂપ કાષ્ઠનું છેદન કરવાના કારણે રત્નત્રય આરા કહેવાય છે. આ અર્થને પ્રકાશ કરવાવાળી ગાથા આ પ્રમાણે છે :—

'अज्जइ भविहिं आरा, जाइज्जइ हेयधम्मओ जो वा'
रयणत्तयरूवं वा, आरं जाइत्ति अज्ज इय वुत्तो ॥ १ ॥ इति।

सु=શોભે એવું અર્થાત્ સારૂં, धर्म = શ્રુતચારિત્રલક્ષણ, સ્યાદ્વાદલક્ષણ તથા સ્વભાવલક્ષણ-ધર્મવાળા सुधर्मा કહેવાય છે.

'स्थविर' શબ્દનો અર્થ કહે છે. તપસંયમમાં લાગેલા મુનિઓને કદાચિત્ સંયમયોગમાં પરિષહ ઉપસર્ગ આદિથી પેદા થતા કલેશાનુભવના કારણે શિથિલતા આવે તો તેઓને ઐહિક પારલૌકિક હાનિ બતાવી તપસંયમમાં જે સ્થિર કરે છે તેને

शतैः सार्द्धं सम्परिवृतः, 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थंकरपरम्परया, 'चरमाणे' चरन्=विहरन्, पुनः 'गामानुगामं दूइज्जमाणे' ग्रामानुग्रामं द्रवन्=एकस्माद् ग्रामादनन्तरग्राममनुल्लङ्घ्य विचरन्, 'सुहंसुहेणं विहरमाणे' सुखसुखेन विहरन्=संयमयात्रानिर्वाहपूर्वकं विहरन्, यत्रैव चम्पानगरी यत्रैव पुण्यभद्रं चैत्यं तत्रैव समवसृतः–चम्पा=अङ्गदेशराजधानी, पुण्यभद्रम्-एतन्नामकम्, चैत्यं=यक्षायतनम्, यद्वा पत्रपुष्पफलादीनां समृद्धिश्चितिः, तत्र साधु चित्यम्, तदेव चैत्यम्, उद्यानमित्यर्थः; समवसृतः=समागतः। 'परिसा निग्गया जाव परिसा पडिगया' परिषन्निर्गता यावत्परिषत् प्रतिगता--परिषत्=जनसमुदायरूपा सभा, निर्गता=स्वस्वगृहाद् धमकथां श्रोतुं निःसृता, यावत् परिषत् प्रतिगता=धर्मकथां श्रुत्वा परिषत् स्वस्वस्थानं प्रति निवृत्तेत्यर्थः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽन्तेवासी–अन्ते=समीपे वस्तुं शीलमस्येति अन्तेवासी–शिष्य आर्यजम्बूः=जम्बूस्वामी काश्यपगोत्रः सप्तहस्तोच्छ्रितगात्र इत्यादिविशेषणविशिष्टः, यावत् पर्युपासीनः=सेवमानः एवमवादीत्=वक्ष्यमाण-प्रकारेणाऽपृच्छत्–

यदि खलु, 'भन्ते' भदन्त भयान्त भवान्त इति वाच्छाया, तत्र

परिषत्--जनसमुदायरूप सभा धर्मकथा सुनने के लिये अपने-अपने घर से निकली और धर्मकथा सुन कर अपने-अपने स्थान को गयी।

उस काल और उस समय में आर्य सुधर्मास्वामी की सेवामें सदा समीप रहने वाले, रत्नत्रयप्राप्ति के इच्छुक, काश्यप--गोत्रीय, सप्तहस्तपरिमितदेहधारी आर्य जम्बूने सुधर्मा स्वामीसे इस प्रकार पूछा—

हे भदन्त! अर्थात्–हे कल्याण करने वाले!, हे भयनिवारक

સ્થવિર કહે છે. પરિષત્–જનસમુદાયરૂપ સભા ધર્મકથા સાંભળવા માટે પોતપોતાના ઘેરથી નીકળી ધર્મકથા સાંભળી પોતપોતાને સ્થાને ગઈ.

તે કાલ તે સમય આર્ય સુધર્મા સ્વામીની સેવામાં સદા સમીપ રહેવાવાળા રત્નત્રય પ્રાપ્તિના ઇચ્છુક, કાશ્યપગોત્રીય, સપ્તહસ્તપરિમિતદેહધારી જમ્બૂએ આ પ્રકારે પૂછ્યું :—

હે ભદંત! અર્થાત્–હે કલ્યાણ કરવાવાળા! હે ભયનિવારક! સંસારસંકટવિનાશક

हे कल्याणकारिन्, भयहारिन्, भवहारिन् भगवन् !

'समणेणं भगवया महावीरेणं' श्रमणेन भगवता महावीरेण, 'आइगरेणं जाव संपत्तेणं' आदिकरेण यावत् सम्प्राप्तेन–आदिकरेण=धर्मस्यादिकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन=गतेन सप्तमस्य अङ्गस्य उपासकदशानाम् अयं=पूर्वोक्तरूपः, अर्थः=श्रावकाचाररूपो विषयः, प्रज्ञप्तः= प्रतिपादितः। अष्टमस्य खलु भदन्त ! अङ्गस्य अन्तकृतदशानां श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? ॥ सू० २ ॥

॥ मूलम् ॥

एवं खलु जंबू ? समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पण्णत्ता। जइ णं भंते ? समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–गोयम समुद्द सागर, गंभीरे चेव होइ थिमिए य। अयले कंपिल्ले खलु, अक्खोभ पसेणजी विण्हू ॥ सू० ३ ॥

संसारसंकटविनाशक, अथवा–हे मुक्तिदाता ! अपने शासन की अपेक्षा से धर्म की आदि करने वाले, सिद्धिगतिनामक स्थान को प्राप्त, श्रमण भगवान महावीर प्रभुने उपासकदशा नामक सातवें अङ्ग में श्रावकों के आचार का निरूपण किया है, परन्तु अन्तकृतदशा नामक आठवें अङ्ग में भगवान ने किस विषय का प्रतिपादन किया है ? ॥ सू० २ ॥

અથવા હે મુક્તિદાતા ! પોતાનાં શાસનની અપેક્ષાથી ધર્મને આદિ કરવાવાળા, સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત, શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ उपासकदशा નામના સાતમા અંગમાં શ્રાવકોના આચારનું નિરૂપણ કર્યું છે, પરંતુ अन्तकृतदशा નામના આઠમાં અંગમાં ભગવાને કયા વિષયનું પ્રતિપાદન કર્યું છે ? (सू० ३)

॥ टीका ॥

'एवं खलु इत्यादि ।

एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन=मोक्षं गतेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानाम् अष्ट वर्गाः प्रज्ञप्ताः । यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानाम् अष्ट वर्गाः प्रज्ञप्ताः, प्रथमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य अन्तकृतदशानां श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कति=कियत्संख्यकानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ? सुधर्मा स्वामी प्राह-एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां प्रथमस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि । अधीयते=पठ्यते विनयादिक्रमेण गुरुसमीपे इत्यध्ययनं,

---

सुधर्मा स्वामी कहते हैं-हे जम्बू ! जिन्होंने भवका अन्त कर दिया है, उन महापुरुषों के चरित्र को प्रतिपादन करने वाली ग्रंथपद्धति को अन्तकृतदशा कहते हैं, उस आठवें अङ्ग में सिद्ध-पदप्राप्त श्रमण भगवान महावीर प्रभुने आठ वर्गों का प्रतिपादन किया है।

हे भगवन् ! अन्तकृतदशानामक आठवें अङ्गमें श्रमण भगवान महावीर प्रभुने आठ वर्गों का प्रतिपादन किया है, उनमें प्रथमवर्ग के कितने अध्ययन कहे हैं ?

हे जम्बू ! मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर प्रभुने अन्तकृतदशानामक आठवें अङ्ग के प्रथम वर्ग के दस अध्ययन कहे हैं।

जो विनयादिक्रमसे गुरुके समीप पढा जाय, अथवा-जिससे आत्मकल्याण की प्राप्ति हो, अथवा जिसके द्वारा अनेक-

---

સુધર્મા સ્વામી કહે છે-હે જમ્બૂ ! જેમણે ભવનો અંત કરી દીધો છે એવા મહાપુરુષોના ચરિત્રનું પ્રતિપાદન કરવાવાળી ગ્રન્થપદ્ધતિને अन्तकृतदशा કહે છે. તેના આઠમાં અંગમાં સિદ્ધપદ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ આઠ વર્ગોનું પ્રતિપાદન કર્યું છે.

હે ભગવાન ! अन्तकृतदशा નામના આઠમાં અંગમાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ આઠ વર્ગોનું પ્રતિપાદન કર્યું છે, તેમાં પ્રથમ વર્ગનાં કેટલાં અધ્યયન કહ્યાં છે ?

હે જમ્બૂ ! મોક્ષને પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ अन्तकृतदशा નામના આઠમાં અંગના પ્રથમ વર્ગનાં દશ અધ્યયન કહ્યાં છે.

જે વિનય આદિ ક્રમથી ગુરુની સમીપ ભણાય, અથવા જેનાથી આત્મકલ્યાણની

विशिष्टात्मकल्याणार्थनिरूपकसन्दर्भरूपश्रुतमित्यर्थः, यद्वा पूर्वभवोपार्जितकर्मणां निर्जरा जायते नूतनकर्मबन्धाभावो वा यत्र भवतीत्यध्ययनम् । उक्तंच—

अज्झप्पस्साणयणं कम्माणं अवचओ उवचियाणं
अणुवचओ य नवाणं तम्हा अज्झयणमिच्छंति ॥ १ ॥

छाया-अध्यात्ममानयनं कर्मणां अपचयः उपचितानाम् ।
अनुपचयश्च नवानां, तस्मात् अध्ययनमिच्छन्ति ॥ १ ॥

अध्यात्मं=चेतः तस्य आनयनं=प्रापणं शुभध्याने, तथा उपचितानां कर्मणाम् अपचयः, नवानां कर्मणामनुपचयश्चानेन भवतीतीदमध्ययनमुच्यते-इति । तानि दशाध्ययनान्याह-'तं=जहा' तद्यथा-गौतमः समुद्रः सागरो गम्भीरश्चैव भवति स्तिमितश्च । अचलः काम्पिल्यः खलु अक्षोभः प्रसेनजिद् विष्णुरिति । तेषां प्रत्येकनाम्ना प्रत्येकमध्ययनं ज्ञातव्यम् ॥ सू० ३ ॥

भवोपार्जित कर्मों की निर्जरा हो, अथवा- जिससे नवीन कर्मों का बंध नहीं हो, उसका नाम अध्ययन है ।

इस अर्थ का निरूपण करने वाली गाथा इस प्रकार है:—

"अज्झप्पस्साणयणं, कम्माणं अवचओ उवचियाणं ।
अणुवचओ य नवाणं, तम्हा अज्झयणमिच्छंति ॥" इत्यादि ।

वे क्रमशः इस प्रकार हैं:—

(१) गौतम (२) समुद्र (३) सागर (४) गम्भीर (५) स्तिमित (६) अचल (७) काम्पिल्य (८) अक्षोभ (९) प्रसेनजित् और (१०) विष्णुकुमार ॥ सू० ३ ॥

પ્રાપ્તિ થાય, અથવા જેના વડે અનેકભવોપાર્જિત કર્મોની નિર્જરા થાય, અથવા જેનાથી નવીન કર્મોનું બંધ ન થાય તેને અધ્યયન કહે છે.

આ અર્થનું નિરૂપણ કરવાવાળી ગાથા આ પ્રકારે છે :—

"अज्झप्पस्साणयणं, कम्माणं अवचओ उवचियाणं ।
अणुवचओ य नवाणं, तम्हा अज्झयणमिच्छंति ॥ ઇત્યાદિ.

તે અધ્યયનોના નામ આ પ્રકારે છે :—

(૧) ગૌતમ (૨) સમુદ્ર (૩) સાગર (૪) ગંભીર (૫) સ્તિમિત (૬) અચલ (૭) કામ્પિલ્ય (૮) અક્ષોભ (૯) પ્રસેનજિત્ (૧૦) વિષ્ણુકુમાર (સૂ૦ ૩)

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्य वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–गोयम जाव विण्हू । पढमस्स णं जाव भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवई णामं नयरी होत्था, दुवालसजोयणायामा णवजोयणवित्थिण्णा धणवइमइनिम्मिया चामीकरपागारा नाणामणिपंचवण्णकविसीसगपरिमंडिया सुरम्मा अलकापुरिसंकासा पमुइयपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ सू० ४ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं भंते' इत्यादि ।

यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां प्रथमस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–गौतमो यावद् विष्णुः, गौतमादीनि विष्णुकुमारान्तानि दश अध्ययनानि प्ररूपितानीति भावः । प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य अन्तकृतदशानां श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'वारवई णामं णयरी'

हे भदन्त ! –हे भगवन् ! अन्तकृतदशानामक आठवें अङ्ग के प्रथम वर्ग में भगवान ने दस अध्ययनों का प्रतिपादन किया है, किन्तु उनमें से प्रथम अध्ययन में किस भावका निरूपण किया है ? सुधर्मा स्वामी कहते हैं–

हे जम्बू ! अवसर्पिणी काल के चौथे आरे में, जबकि बाईसवें तीर्थंकर भगवान अरिष्टनेमि विचरते थे तब उसी हीयमान रूप समय में, सौराष्ट्र देश की राजधानी द्वारका नामकी

હે ભગવાન ! अन्तकृतदशा નામના આઠમાં અંગના પ્રથમ વર્ગમાં ભગવાને દશ અધ્યયનોનું પ્રતિપાદન કર્યું છે, પરંતુ તેમાંથી પ્રથમ અધ્યયનમાં કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

સુધર્મા કહે છે–હે જમ્બૂ ! અવસર્પિણી કાલના ચોથા આરામાં જ્યારે બાવીસમાં તીર્થંકર ભગવાન અરિષ્ટનેમિ વિચરતા હતા ત્યારે તે હીયમાનરૂપ સમયમાં સૌરાષ્ટ્ર દેશની

द्वारावती नाम नगरी आसीत्, 'दुवालसजोयणायामा' द्वादशयोजनायामा–द्वादश योजनानि आयामो=दैर्घ्यं यस्याः सा, 'णवजोयणवित्थिण्णा' नवयोजनविस्तीर्णा= नवयोजनानि विस्तीर्णा=विस्तृता 'धणवइमइनिम्मिया'=धनपतिमतिनिर्मिता– धनपतिः=कुबेरः, तस्य मतिस्तया निर्मिता इति धनपतिमतिनिर्मिता–कुबेरबुद्धि- रचिता इत्यर्थः, 'चामीकरपागारा' चामीकर-प्राकारा–चामीकरस्य प्राकारोऽर्थात् चामीकरनिर्मितः प्राकारो यस्यां सा, सुवर्णमयप्राकारवतीत्यर्थः। 'नाणामणिपंच- वण्णकविसीसगपरिमंडिया' नानामणिपञ्चवर्णकपिशीर्षकपरिमण्डिता, नाना– मणिभिः=इन्द्रनीलवैदूर्यपद्मरागादिकैर्मणिभिः पञ्चवर्णाः कपिशीर्षकाः='कंगूरा' इति भाषाप्रसिद्धाः तैः परिमण्डिता=शोभिता, 'सुरम्मा' सुरम्या=अतिशयरमणी- येत्यर्थः, 'अलकापुरिसंकासा' अलकापुरीसंकाशा, कुबेरनगरीतुल्या 'पमुइयपक्कीलिया' प्रमुदितप्रक्रीडिता–प्रमुदितयोगात् प्रमुदिता, प्रक्रीडित- योगात् प्रक्रीडिता, प्रमुदिता चासौ प्रक्रीडीता प्रमुदितप्रक्रीडिता–सुखयुक्तत्वात् हर्षिता क्रीडाकारकजनापन्नेत्यर्थः 'पच्चक्खं देवलोगभूया' प्रत्यक्षं देवलोकभूता =साक्षाद्देवलोकसमाना, 'पासाईया' प्रासादीया–प्रसादो= मनःप्रमोदः

प्रसिद्ध नगरी थी। वह बारह योजन लम्बी और नौ योजन की चौडी थी। जिसका निर्माण स्वयं कुबेर ने अत्यन्त बुद्धिकौशल द्वारा किया था। जो स्वर्ण के परकोटे से तथा इन्द्रनील, वैदूर्य, पद्म- राग-आदिमणि-जटित कंगूरों से सुसज्जित, शोभनीय एवं दर्शनीय थी। जिसकी उपमा कुबेर की नगरी से दी जाती थी। जो क्रीडा–प्रमोद आदि समस्त सामग्रियों से परिपूर्ण होनेसे साक्षात् देवलोकस्वरूपा थी। उस द्वारावती नगरी का निर्माण इस ढंग से

રાજધાની દ્વારકા નામે પ્રસિદ્ધ નગરી હતી. તે બાર યોજન લાંબી અને નવ યોજન પહોળી હતી. જેનું નિર્માણ કુબેરે પોતે અત્યંત બુદ્ધિકૌશલ્યથી કર્યું હતું. જે સુવર્ણના પરકોટાથી તથા ઈંદ્રનીલ–વૈદૂર્ય–પદ્મરાગાદિ–મણિજડિત કંગુરોથી સુસજ્જિત, શોભનીય, દર્શનીય હતી. જેની સરખામણી કુબેરની નગરી સાથે થતી હતી. જે ક્રીડા–પ્રમોદ આદિ સમસ્ત સામગ્રીઓથી પરિપૂર્ણ હોવાથી સાક્ષાત દેવલોક- સ્વરૂપા હતી. તે દ્વારાવતી નગરીનું નિર્માણ એવી રીતે કરવામાં આવ્યું હતું કે

प्रयोजनं यस्याः सा इति व्युत्पत्तिः; द्रष्टॄणां मनःप्रमोदजनिका, 'दरिसणिज्जा' दर्शनीया=प्रेक्षणीया, 'अभिरूवा'-अभिरूपा अभि=आभिमुख्येन सर्वदाऽवस्थितानि रूपाणि=राजहंसचक्रवाकसारसादीनि करिमहिषमृगकुलादीनि जलान्तर्गतानि करिमकरादीनि वा यत्र सा, अथवा अभि=प्रतिक्षणं नवं नवमिव रूपं यस्याः सा, सर्वकालरमणीया, 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः' इति रमणीयतास्वरूपोक्तेः। 'पडिरूवा'-प्रतिरूपा, प्रति=विशिष्टमसाधारणं रूपं यस्याः सा, सर्वोत्तमेत्यर्थः ॥ सू० ४ ॥

॥ मूलम् ॥

तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं रेवयए नाम पव्वए होत्था, वण्णओ ! तत्थ णं रेवयए पव्वए नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, वण्णओ, सुरप्पिए णामं जक्खाययणे होत्था, पोराणे, से णं एगेणं वण-

---

किया गया था कि देखने वालों का मन सहज ही आनन्दित एवं आकर्षित हो जाता था।

जिसकी दीवारों पर राजहंस, चक्रवाक, सारस, हाथी, घोडे, मयूर, मृग आदि के तथा जल में स्थित (विहार करते हुए) हाथी, मगरमच्छ आदि जल के प्राणियों के सुन्दर चित्र बने हुए थे। श्वेत और उज्ज्वल स्फटिक निर्मित दीवारो पर प्रतिबिम्ब सर्वदा प्रतिफलित होता रहता था। ऐसी वह सर्वांगसौन्दर्यपूर्ण देदीप्यमान द्वारका नगरी थी ॥ सू० ४ ॥

જોનારનાં મન સહેજેજ આનંદિત અને આકર્ષિત થઇ જાય.

જેની ભીંત ઉપર રાજહંસ, ચક્રવાક, સારસ, હાથી, ઘોડા, મોર, મૃગ આદિના તથા જલમાં સ્થિત (વિહાર કરતાં) હાથી; મગરમચ્છ આદિ જલચર પ્રાણિઓનાં સુંદર ચિત્રો બનાવેલાં હતાં. શ્વેત અને ઉજ્જવલ સ્ફટિકની ભીંતો ઉપર પ્રતિબિંબ સર્વદા પ્રતિફલિત થતું રહેતું, એવી તે સર્વાંગસૌંદર્યપૂર્ણ દેદીપ્યમાન દ્વારકા નગરી હતી. (સૂ૦ ૪)

सडेणं परिक्खित्ते, असोगवरपायवे। तत्थ णं वारवईए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे राया परिवसइ। महया रायवण्णओ।

से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, पज्जुण्णपामोक्खाणं अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संवपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, महसेणपामोक्खाणं छप्पण्णाए बलवग्गसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाए वीरसाहस्सीणं उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं रायसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं सोलसण्हं देविसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं ईसर जाव सत्थवाहाणं बारवईए नयरीए अद्धभरहस्स य समत्तस्स य आहेवच्चं जाव विहरइ ॥ सू० ५ ॥

॥ टीका ॥

'तीसे णं' इत्यादि। तस्याः खलु द्वारावत्या नगर्या बहिः, उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे, अत्र खलु, रैवतको नाम पर्वत आसीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=रैवतकवर्णनमन्यतोऽवसेयम्। तत्र खलु रैवतके पर्वते, नन्दनवनं नाम उद्यानम्=नन्दनवननामधेय आराम इत्यर्थः, आसीत्। 'वण्णओ' वर्णकः=

उसी द्वारका नगरी के बाहर ईशान कोण में, रैवतक नामक पर्वत था। उस पर्वत पर 'नन्दनवन' नामक उद्यान था।

તે દ્વારકાનગરીની બહાર ઇશાનકોણમાં 'રૈવતક' નામે પર્વત હતો. તે પર્વત ઉપર 'નન્દનવન' નામે ઉદ્યાન હતું. તેનું પૂરૂં વર્ણન જમ્બૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ આદિ

विशेषतो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यादिषु द्रष्टव्यः, सुरप्रियं नाम यक्षायतनम् आसीत्। तत् यक्षायतनं 'पौराणे'=पुराणं=पुरातनमित्यर्थः। एकेन वनषण्डेन परिक्षिप्तं=सर्वतो, वेष्टितम्, अशोकवरपादपः। तत्र खलु 'बारवईणयरीए'=द्वारावतीनगर्याम्' कृष्णो नाम वासुदेवो राजा प्रतिवसति, 'महया'=महान्, 'रायवण्णओ'= राजवर्णकः कोणिकराजवर्णनवद् विज्ञेयः। स कृष्णः खलु 'तत्थ' तत्र द्वारावत्याम्, 'समुद्दविजयपामोक्खाणं' समुद्रविजयप्रमुखानां–समुद्रविजयः प्रमुखो= मुख्यः–प्रथमो यत्र तेषाम्, दशानां दशार्हाणाम्। बलदेवप्रमुखानाम्, पश्चानाम् महावीराणां–विशेषेण ईरयन्ति=अकम्पन्ति शत्रून् ये ते वीराः, महान्तश्च ते वीराश्च तेषाम्, अतिशूराणामित्यर्थः, प्रद्युम्नप्रमुखानाम् 'अद्धुट्ठाणं' अर्धचतुष्काणाम्=सार्धत्रिसंख्यकानामित्यर्थः, 'कुमारकोडीणं' कुमारकोटीनाम्-कुमाराणां कोटयस्तासाम्, सार्धत्रिकोटिकुमाराणामित्यर्थः; साम्बप्रमुखानां–साम्बो=जाम्बवतीपुत्रः प्रमुख आदिर्येषां तेषां–साम्बप्रधानानामित्यर्थः, 'सट्ठीए' षष्ट्याः=षष्टिसंख्यानाम्, 'दुदंतसाहस्सीणं' दुर्दान्त-

---

उसका पूरा वर्णन जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति आदि सूत्र में है। उस उद्यान में 'सुरप्रिय' नामका जीर्ण यक्षायतन था। वह एक वनखण्ड से घिरा हुआ था। उसी नन्दनवन के बीच में श्रेष्ठ एक अशोक वृक्ष था। और उसके निचे आसन के आकारवाला सुन्दर शिलापट था इस द्वारका नगरी का महान मर्यादावान कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे। इनका वर्णन कूणिक के समान समझना चाहिए।

द्वारका नगरी में समुद्र विजय आदि दस दशार और बलदेव आदि पांच महावीर थे। प्रद्युम्न आदि साढेतीन करोड कुमार थे।

સૂત્રમાં જોઈ લેવું. તે ઉદ્યાનમાં 'સુરપ્રિય' નામે જીર્ણ યક્ષાયતન હતું. તે એક વનખંડથી ઘેરાયેલું હતું. તેજ નંદનવનની વચમાં શ્રેષ્ઠ એક અશોક વૃક્ષ હતું અને તેની નીચે આસનના આકારવાળું સુંદર શિલાપટ્ટ હતું. આ દ્વારકાનગરીનું રાજ્ય મહાન મર્યાદાવાન કૃષ્ણ વાસુદેવ કરતા હતા. તેમનું વર્ણન કોણિકના જેવું સમજી લેવું જોઇએ.

દ્વારકાનગરીમાં સમુદ્રવિજય આદિ દશ દશાર તથા બલદેવ આદિ પાંચ મહાવીર હતા. પ્રદ્યુમ્ન આદિ સાડાત્રણ કરોડ કુમાર હતા. શત્રુઓથી કદી

साहस्रीणां-दुर्दान्तानां=परैर्दमितुमशक्यानां साहस्र्यस्तासाम् शत्रुभिरदम्यानां-साम्बादीनां षष्टिसहस्रसंख्यानामित्यर्थः; महासेनप्रमुखानां महासेनः-प्रमुखो यासां तासाम्, षट्पञ्चाशतः बलवर्गसाहस्रीणां-बलवर्गाणां=सैन्यसमूहानां साहस्र्यस्तासां-महासेनाधिकृतषट्पञ्चाशत्सैन्यसमूहसहस्राणामित्यर्थः, वीरसेन-प्रमुखानाम् एकविंशत्याः=एकविंशतिसंख्यानामित्यर्थः । 'वीरसाहस्सीणं'=वीर-साहस्रीणां=शूरसहस्राणाम्; उग्रसेनप्रमुखानाम् षोडशानाम् राजसाहस्रीणाम्; रुक्मिणीप्रमुखानां षोडशानां देवीसाहस्रीणाम्, अनङ्गसेनाप्रमुखानाम्, अनेकासां, गणिकासाहस्रीणाम् 'अण्णेसिं च बहूणं' अन्येषां च बहूनां=पूर्वोक्ते-भ्योऽधिकानामितरेषां चेत्यर्थः 'ईसर जाव सत्थवाहाणं' ईश्वर यावत्सार्थवाहनाम्-'यावत्'-शब्देन-ईश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिके-भ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाहानामिति पाठो विवक्षितः । तत्र-ईश्वरः=ऐश्वर्यशाली विभवयुक्त इत्यर्थः । तलवरः=नगररक्षकः-कोट्टपालः'-कोतवाल' इति भाषाप्रसिद्धः, 'माडम्बिकः-मडम्बः=छिन्नजनाश्रयदेशविशेषस्तस्याधिपतिः-सीमान्तराजेत्यर्थः । सीमान्तदेशो

शत्रुओं से कभी पराजित न होने वाले साम्ब आदि साठ हजार शूर थे। महासेन आदि सेनापतियों के अधीन में रहने वाला छप्पन हजार का बलवर्ग सैनिकदल था। संकेत पाते ही कार्यारूढ होने वाले दक्ष वीरसेन आदि इक्कीस हजार वीर थे। उग्रसेन आदि सोलह हजार अधीन में रहने वाले नृपगण थे। रुक्मिणी आदि सोलह हजार रानियाँ थी। चौंसठ कलाओ में निपुण अनंगसेना-आदि अनेक गणिकाएँ थी। तथा सर्वदा आज्ञा में रहने वाले और भी बहुत से ऐश्वर्यशाली नागरिक, नगररक्षक, सीमान्तराजा, गाँव का

પરાજિત ન થાય એવા સામ્બ આદિ સાઠ હજાર શૂર હતા. મહાસેન આદિ સેના-પતિઓના તાબામાં રહેવાવાળાં છપ્પન હજાર બલવર્ગ-સૈનિકદલ હતું સંકેત મળતાંજ કાર્યારૂઢ થઈ જાય એવા દક્ષ વીરસેન આદિ એકવીશ હજાર વીર હતા. ઉગ્રસેન આદિ આધીનમાં રહેવાવાળા સોળહજાર નૃપગણ હતા. રુક્મણી આદિ સોળહજાર રાણીઓ હતી, ચોસઠ કળાઓમાં નિપુણ અનંગસેના આદિ ગણિકાઓ હતી. તથા સર્વદા આજ્ઞામાં રહેનારાં બીજા ઘણા ઐશ્વર્યશાલી નાગરિક, નગરરક્ષક, સીમાન્તરાજા, ગામના મુખિયા, અને ઇભ્ય હતાં.

हि शत्रुभिरभियातः प्रायश्छिन्नजनाश्रयो भवति। कौटुम्बिकः=परिवारश्रेष्ठो ग्राममुख्यो वा, इभ्यः–इभो=हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हतीति इभ्यः, सच जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदात्त्रिविधः, तत्र जघन्यः=हस्तिपरिमितमणिमुक्ताप्रवाल सुवर्णरजतादिद्रव्यराशिस्वामी, मध्यमः–हस्तिपरिमितवज्रमणिमाणिक्यराशीश्वरः। उत्कृष्टः–हस्तिपरिमितकेवलवज्रराशिस्वामी। श्रेष्ठी=नगरप्रधान–व्यवहर्ता। सेनापतिः=चतुरङ्गसेनानायकः। सार्थवाहः=गणिम–धरिम–मेय–परिच्छेद्यरूप–क्रेयविक्रेयवस्तुजातमादाय लाभेच्छया देशान्तरं व्रजतां सार्थं=समूहं वाहयति=योगक्षेमाभ्यां परिपालयतीति, दीन जनानामुपकाराय मूलधनं दत्त्वा तान् समर्द्धयतीति वा यः स तथा; तत्र गणिमम्=एक–द्वि–त्रि–चतुरादि–संख्या-क्रमेण गणयित्वा यद् दीयते, यथा–नारिकेल–पूगीफल–कदलीफलादिकम्। धरिमम्=तुलासूत्रेणोत्तोल्य यद् दीयते, यथा व्रीहि–लवणादिकम्। मेयम्–शरा-वादिनोत्तोल्य यद् दीयते, यथा दुग्धादिकम्। परिच्छेद्यम्=प्रत्यक्षतो निकषादिपरीक्षया यद् दीयते, यथा मण्यादिकम् इति द्वारावत्या नगर्याः, अर्ध

मुखिया और इभ्य थे। इभ का अर्थ है हाथी, और हाथी के बराबर द्रव्य जिसके पास हो उसे इभ्य कहते हैं। जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट के भेदसे इभ्य तीन प्रकारके हैं। जो हाथी के बराबर मणि, मुक्ता, प्रवाल (मूगा), सोना, चांदी आदि द्रव्यराशिके स्वामी हों वे जघन्य इभ्य हैं। जो हाथी के बराबर हीरा और माणिक की राशि के स्वामी हों वे मध्यम इभ्य हैं। जो हाथीके बराबर केवल हीरों की राशिके स्वामी हों वे उत्कृष्ट इभ्य हैं। तथा सेठ सेनापति और सार्थवाह आदि भी उनकी आज्ञा में रहते थे।

ऐसे परम प्रतापी कृष्ण वासुदेव द्वारका से लेकर क्षेत्रकी

ઇભ એટલે હાથી. હાથીના વજન બરાબર દ્રવ્ય જેની પાસે હોય તે ઇભ્ય કહેવાય છે. જઘન્ય મધ્યમ અને ઉત્કૃષ્ટ ભેદથી ઇભ્ય ત્રણ પ્રકારના છે. જે હાથી બરાબર મણી, મુક્તાફળ, પ્રવાલ, સોનું, ચાંદી, આદિ દ્રવ્યરાશિનો સ્વામી હોય તે જઘન્ય ઇભ્ય છે. જે હાથી બરાબર હીરા અને માણેકની રાશિનો સ્વામી હોય તે મધ્યમ ઇભ્ય છે. અને જે હાથી બરાબર કેવળ હીરાની રાશિનો સ્વામી હોય તે ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય છે. તથા શેઠ, સેનાપતિ અને સાર્થવાહ આદિ તેમની આજ્ઞામાં રહેતા હતા.

એવા પરમ પ્રતાપી કૃષ્ણ વાસુદેવ દ્વારકાથી માંડીને જેની સીમા વૈતાઢ્ય

तथा भरतस्य च समस्तस्य=संपूर्णस्य-वैताढ्यगिरिपर्यन्तस्य दक्षिणार्धभरतस्य, 'आहेवच्चं' आधिपत्यं यावत्=आधिपत्यं पौरपत्यम्-इत्यादिकं कुर्वन् विहरति ॥ सू० ५ ॥

॥ मूलम् ॥

तत्थ णं बारवईए नयरीए अंधगवण्ही णामं राया परिवसइ, महयाहिमवंत०वण्णओ०। तस्स णं अंधगवण्हिस्स रण्णो धारिणी नाम देवी होत्था, वण्णओ०। तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइं तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि एवं जहा महाबले।

'सुमिणदंसण कहणा, जम्मं बालत्तणं कलाओ य।
जोवण पाणिग्गहणं कंता पासायभोगा य ॥ १ ॥

णवरं-गोयमो नामेणं, अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, अट्ठट्ठओ दाओ ॥ सू० ६ ॥

॥ टीका ॥

'तत्थ णं' इत्यादि। तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्याम् अन्धकवृष्णिर्नाम राजा परिवसति, महाहिमवद् वर्णकः=महाहिम इत्यर्थः वर्णकः वन्महामलये-त्यादिवर्णनं कूणिकराज-वर्णनवद् बोध्यम्। तस्य खलु अन्धकवृष्णे राज्ञः धारिणी नाम देवी आसीत्। वर्णको वाच्यः। ततःखलु सा धारिणी देवी अन्यदा

सीमा को करने वाले वैताढ्य पर्वत पर्यन्त अर्धभरत, अर्थात् तीन खण्ड का संपूर्ण राज्य करते थे ॥ सू० ५ ॥

उस द्वारिका नगरी में महाहिमवान मन्दर आदि पर्वतों के समान स्थिर, बलशाली एवं मर्यादापालक अन्धकवृष्णि नाम के

પર્વત પર્યન્ત છે તે અર્ધભરત સુધીનું અર્થાત્ ત્રણ ખંડનું સંપૂર્ણ રાજ્ય કરતા હતા (સૂ૦ ૫)

તે દ્વારકા નગરીમાં મહા હિમવાન મંદર આદિ પર્વતોના જેવા સ્થિર, બળશાળી એવં મર્યાદાપાલક અન્ધકવૃષ્ણિ નામે રાજા હતા. સ્ત્રીઓનાં સર્વલક્ષણોથી યુક્ત

कदाचित् 'तंसि तारिसगंसि' तस्मिन् तादृशके-तस्मिन्=वहुगुणसमन्विते, तादृशके=कृतपुण्योपसेव्ये शयनीये=शय्यायामित्यर्थः । 'एवं जहा महव्वले'-एवं यथा महावलः- यथा महावलस्य जन्मप्रसङ्गे तन्माता स्वप्नमपश्यत्, यथा च तस्य चरितं तथैवात्राऽपि ज्ञातव्यम् । तदेवाह गाथया—

सुमिणदंसण कहणा, जम्मं बालत्तणं कलाओ य। जोव्वण पाणिग्गहणं कंता पासायभोगा य" ॥ १ ॥

समिणदंसणं स्वप्नदर्शनम्-रात्रौ शयाना शुभ स्वप्नमपश्यत् । 'कहणा' कथनम्, तत्स्वप्नदर्शनस्य स्वपतयेकथनम् 'जम्मं' जन्म 'वालत्तणं' वालत्वम्=कुमारावस्था, 'कलाओय' कलाश्च, कला लेखादयो द्वासप्तिः । इह तासां ग्रहणमित्यर्थः । 'जोव्वण' यौवनं=तरुणावस्था 'पाणिग्गहणं' पाणिग्रहणं=विवाहः 'कंता पासायभोगा य' कान्ताः प्रासादभोगाश्च, कान्ता=मनोज्ञाः प्रासादाः=

राजा थे। स्त्रियों के सभी लक्षणों से युक्त धारिणी नामकी उनकी रानी थी। वह धारिणी रानी किसी समय में पुण्यात्माओं के शयन करने योग्य, कोमलता आदि गुणों से युक्त शय्या पर सोई हुई थी। उस समय उसने एक शुभ स्वप्न देखा और नींद खुलने के पश्चात् उस स्वप्न का वृत्तान्त राजा को सुनाया। उसके बाद बालक का जन्म हुआ। उसका बाल्यकाल बहुत सुखपूर्वक बीता। उसने लेख आदि बहत्तर कलाओं को सीखा। उसके बाद युवा होने पर उसका विवाह हुआ। उसका महल बहुत सुन्दर था और उसकी उपभोगसामग्रियाँ चित्ताकर्षक थीं। इसका सभी

'धारिणी' नामे तेनी राणी हती. ते धारिणी राणी એક સમયમાં જ્યારે પુણ્યાત્માઓજ શયન કરી શકે એવી કોમળતા આદિ ગુણોથી યુકત (સુંવાળી) શય્યા ઉપર સુતી હતી ત્યારે તેણે એક શુભ સ્વપ્ન જોયું, અને નિદ્રા ઉડી જવા પછી તે સ્વપ્નનો વૃત્તાન્ત રાજાને કહી સંભળાવ્યો. ત્યાર પછી બાળકનો જન્મ થયો. તેનો બાલ્યકાળ બહુ સુખપૂર્વક વીત્યો. તે કુમાર લેખન આદિ બોતેર કળાઓ શીખ્યો. પછી યુવાન થતાં તેનાં લગ્ન થયાં, તેનો મહેલ બહુ સુંદર હતો. અને તેની ઉપભોગ સામગ્રીઓ ચિત્તાકર્ષક હતી. એનું બધું વૃત્તાન્ત મહાબલના જેવું છે. વિશેષ માત્ર એટલું છે કે

सौधाः-राजभवनानीत्यर्थः, भोगाः सुखानि च 'गोयमो नामेणं' गौतमो नाम्ना, मातापितरौ अष्टानां राजवरकन्यानाम्, एकदिवसेन पाणिं ग्राहयतः। अष्टाष्टको दायः ॥ सू० ६ ॥

॥ मूलम् ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी आइगरे जाव विहरइ, चउव्विहा देवा आगया। कण्णेवि णिग्गये तएणं से गोयमे कुमारे जहा मेहे तहा णिग्गए, धम्मं सोच्चा णिसम्म जं नवरं देवाणुप्पिया! अम्मा पियरो आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि, एवं जहा मेहे जाव अणगारे जाए इरिया समिए जाव इणमेव निग्गन्थं पावयणं पुरओ काउं विहरइ। तएणं से गोयमे अणागरे अण्णया कयाइं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता, बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तएणं अरिहा अरिट्ठनेमी अण्णया कयाइं बारवईओ नयरीओ नंदणवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता, बहिया जणवय विहारं विहरइ ॥ सू० ७ ॥

वृत्तान्त महाबल के सदृश है। विशेष केवल इतना है— इनका नाम गौतम था। मातापिताने एक दिन में ही सुन्दर आठ राजकन्याओं के साथ इनका विवाह करवाया। विवाह में आठ हिरण्य-कोटि, आठ सुवर्णकोटि आदि आठ आठ वस्तुएं उन्हें दहेज में मिलीं ॥ सू० ६ ॥

તેનું નામ ગૌતમ હતું. માતાપિતાએ એક દિવસમાંજ રાજાઓની આઠ સુંદર કન્યાઓની સાથે તેનાં લગ્ન કરાવ્યાં. વિવાહમાં આઠ આઠ પ્રકારના દહેજ મળ્યા. (સૂ૦ ૬)

॥ टीका ॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये, अर्हन् अरिष्टनेमिः 'आइगरे' आदिकरः=स्वशासनापेक्षया धर्मस्यादिकरः, 'जाव' यावत्- यावच्छब्दसंग्राह्याणि भगवतोऽन्यान्यपि विशेषणानि विज्ञेयानि; विहरति। 'चउव्विहा देवा आगया' चतुर्विधा देवा आगताः-चतुर्विधाः=भवनपति-व्यन्तर-ज्योतिष्क-वैमानिका देवा भगवतः समीपे धर्मकथां श्रोतुं समागता इत्यर्थः । कृष्णवासुदेवोऽपि निर्गतः=स्वस्थानाद्धर्मं श्रोतुं प्रचलितः भगवत्समीपे समागत इत्यर्थः ।

ततः खलु स गौतमकुमारः यथा मेघस्तथा निर्गतः, 'धम्मं सोच्चा णिसम्म' धर्मं श्रुत्वा निशम्य-भगवतः समीपे धर्मं=श्रुतचारित्रलक्षणं श्रुत्वा=कर्णाभ्यामाकर्ण्य, निशम्य=हृदयेऽवधार्य 'जं नवरं' यो विशेषः स तु एवम्-

---

उस काल उस समय में अपने शासनकी अपेक्षा से धर्म के आदि करने वाले भगवान अर्हत अरिष्टनेमि तीर्थंकर परम्परा से विचरते हुए द्वारका नगरी के नन्दनवन नामक उद्यान में पधारे। वहाँ भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, वैमानिक, ये चारों प्रकार के देवगण, धर्मकथा सुनने के लिए आये। वासुदेव कृष्ण भी अपने महल से निकलकर भगवान के पास धर्मश्रवण करने के लिए पहुंचे। उनके बाद गौतमकुमार भी मेघकुमार की तरह धर्मकथा सुनने के लिए घर से निकले। श्रुतचारित्र-लक्षण धर्म सुनकर और उसे हृदयमें धारण कर गौतमकुमारने भगवान के पास प्रार्थना की।

તે કાલ તે સમય પોતાના શાસનની અપેક્ષાથી ધર્મની આદિ કરનાર ભગવાન અર્હંત અરિષ્ટનેમિ, તીર્થંકરપરંપરાથી વિચરતા દ્વારકા નગરીના નંદનવન નામના ઉદ્યાનમાં પધાર્યા. ત્યાં ભવનપતિ, વ્યન્તર, જ્યોતિષ્ક, વૈમાનિક, આ ચારે પ્રકારના દેવગણ, ધર્મકથા સાંભળવા આવ્યા. વાસુદેવકૃષ્ણ પણ પોતાના મહેલમાંથી નીકળી ભગવાનની પાસે ધર્મશ્રવણ કરવા આવ્યા. ત્યારપછી ગૌતમકુમાર પણ મેઘકુમારની પેઠે ધર્મકથા સાંભળવા માટે ઘેરથી નીકળ્યા. ભગવાને ધર્મ સંભળાવ્યો. શ્રુતચારિત્રલક્ષણ ધર્મ સાંભળીને તથા તેને હૃદયથી અવધારણ કરી ભગવાનની પાસે તેમણે પ્રાર્થના કરી :-

हे देवानुप्रियाः ! मातापितरौ आपृच्छामि, देवानुप्रियाणामन्तिके= समीपे प्रव्रजामि-मातापित्रोरनुमतो भवतः समीपे प्रव्रज्यां ग्रहीष्यामि-इति भावः । एवं यथा मेघो यावदनगारो जातः । 'यथा मेघकुमारो वैराग्यं प्राप्य मातापितृभ्यां बहुशः प्रतिषेधितोऽपि सर्वं भोग्यविलासवस्तुजातं परित्यज्य अनगारो जातस्तथैवायमप्यनगारो जातः । 'इरियासमिए' ईर्यासमितः-ईर्यायां=गमने समितो=यत्नवान् यावत् एतदेव नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं 'पुरओ काउं' पुरतः कृत्वा विहरति । 'यावत्' पदेन भाषासमितादयोऽपि विशेषणत्वेन ग्राह्याः । एतदेव=पूर्वोक्तमेव नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं 'जिनप्रवचनं' पुरतःकृत्वा=ईर्यासमित्यादिरूपं प्रवचनमादर्शत्वेन पुरस्कृत्य विहरति= विचरति । ततः खलु स गौतमोऽनगारः, अन्यदा कदाचित् अर्हतोऽरिष्टनेमेः तथारूपाणं स्थविराणामन्तिके= समीपे-तथारूपाणाम्=तथा तत्प्रकारकं रूपं नेपथ्यादिः स्वभावो वा येषां

हे भगवन् ! मैं मातापिता से पूछकर आपके समीप प्रव्रज्या लेना चाहता हूँ। इसके बाद गौतम के अनगार होने तक का वृत्तान्त मेघकुमार के वृत्तान्त के समान समझना चाहिये। जैसे-मेघकुमार वैराग्य प्राप्त कर मातापिता के बहुत समझाने पर भी भोगविलास की सामग्रियों को छोडकर अनगार होगये उसी तरह गौतम भी अनगार हुवे, और अनगार होने के बाद ईर्यासमिति, भाषासमिति आदि से लेकर इसी निर्ग्रन्थप्रवचन (जिनप्रवचन) को अपने आगे रखकर अर्थात् भगवान के कहे हुए वचनों का पालन करते हुए विहार करने लगे। उसके बाद गौतम अनगार किसी एक समय में अर्हत अरिष्टनेमि के गीतार्थ स्थविरों के समीप सावद्ययोगपरिवर्जन निरवद्ययोगसेवन-रूप सामायिक आदि

હે ભગવન્ ! હું માતાપિતાને પૂછીને આપની પાસે દીક્ષા લેવા ચાહું છું. ત્યારપછી ગૌતમ અનગાર થવા સુધીનો વૃત્તાન્ત મેઘકુમારના વૃત્તાન્તના જેવો સમજી લેવો. જેમ-મેઘકુમાર વૈરાગ્ય પ્રાપ્ત કરી માતાપિતાના બહુજ સમજાવવા છતાં પણ સઘળી ભોગવિલાસની સામગ્રીઓ છોડી અનગાર થયા, તેવીજ રીતે ગૌતમકુમાર અનગાર થઇ ગયા. અને અનગાર થયા પછી ઇર્યાસમિતિ, ભાષાસમિતિ આદિથી માંડીને આ નિર્ગ્રન્થપ્રવચન (જિનપ્રવચન) ને પોતાની સામે રાખીને અર્થાત્ ભગવાનનાં કહેલાં વચનો પાલન કરતાં કરતાં વિહાર કરવા લાગ્યા. ત્યારપછી ગૌતમ અનગારે અર્હંત અરિષ્ટનેમિના ગીતાર્થ સ્થવિરોની પાસે સાવદ્યયોગપરિવર્જન,

ते तथारूपाः—द्रव्यतः सदोरकमुखवस्त्रिका रजोहरणादिमन्तः, भावतः सम्यग्ज्ञानादिमन्तः तेषाम्, सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते—पठतीत्यर्थः, अधीत्य बहुभिः 'चउत्थ जाव' चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशमासार्धमासक्षपणैस्तपः-कर्मभिः आत्मानम् 'भावेमाणे' भावयन्=वासयन् विहरति। ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः अन्यदा कदाचित् 'द्वारावत्या नगर्या नन्दनवनादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य, बहिः जनपदविहारं विहरति ॥ सू० ७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से गोयमे अणगारे अण्णया कयाइं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं विहरित्तए। एवं जहा खंदओ; तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ, फासित्ता गुणरयणं वि तवोकम्मं तहेव फासेइ निरवसेसं, जहा खंदओ तहा चिंतइ, तहा आपुच्छइ, तहा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुंजं दुरूहइ, मासियाए संलेहणाए बारस वरिसाइं परियाए जाव सिद्धे ॥ सू० ८ ॥

ग्यारह अङ्गों का अध्ययन किया और बहुत से चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, अर्धमास और मासक्षपण आदि तप कर आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। उसके बाद एक दिन भगवान अर्हत अरिष्टनेमिने द्वारका नगरी के नन्दनवन उद्यान से विहार किया, और धर्मोपदेश करते हुए देशदेशान्तरमें विचरने लगे ॥ सू० ७ ॥

निरवद्ययोगसेवनरूप सामायिक आदि अगीयार अंगोनुं अध्ययन कर्युं, अने अध्ययन कर्या पछी घणां चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, अर्धमास अने मासक्षपण आदि तप करीने आत्माने भावित करता विचरवा लाग्या. त्यार पछी એક દિવસ भगवान अर्हंत अरिष्टनेमि द्वारकानगरीना नन्दनवन नामना उद्यानथी विहार करीने धर्मोपदेश करतां करतां विचरवा लाग्या. (सू० ७)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । ततः खलु स गौतमोऽनगारः अन्यदा कदाचित् यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः तत्रैव उपागच्छति । उपागत्य अर्हन्तमरिष्टनेमिम् त्रिकृत्वः 'आयाहिणपयाहिणं' आदक्षिणप्रदक्षिणम्—आदक्षिणतः प्रदक्षिणमिति विग्रहः, बद्धाञ्जलिपुटं निजदक्षिणकर्णादारभ्य ललाटप्रदेशेन निजवामकर्णपर्यन्तं नीत्वा हनुप्रदेशेन पुनर्दक्षिणकर्णान्तिकं समानीय तस्य ललाटप्रदेशे स्थापनमित्यर्थः, करोति, कृत्वा, 'वंदइ' वन्दते=स्तौति 'नमंसइ' नमस्यति=पञ्चभिरङ्गैर्नमस्करोति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्—इच्छामि खलु भदन्त ! युष्माभिः अभ्यनुज्ञातः सन्=आज्ञप्तः सन् मासिकीं भिक्षुप्रतिमाम्—भिक्षोः=साधोः प्रतिमा=अभिग्रहविशेष-स्ताम् 'उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' उपसंपद्य=स्वीकृत्य खलु विहर्तुम्, एवं

उसके बाद एक दिन गौतम, अनगार जहाँ अर्हत अरिष्टनेमि थे, वहाँ आये। वहाँ अर्हत अरिष्टनेमि को तीन वार अदक्षिण-प्रदक्षिण किया। अंजलिपुट को दाहिने कानसे लेकर शिर पर घुमाते हुए अपने बायें कान तक ले जाकर फिर उसे घुमाते हुए दाहिने कान पर लेजावे और बाद में उसे अपने ललाट पर स्थापन करे, उसे 'आदक्षिण–प्रदक्षिण' कहते हैं। आदक्षिणप्रदक्षिण करने के बाद गौतम अनगारने वन्दना की और नमस्कार किया, और बोले-

हे भदन्त ! आपकी आज्ञा हो तो मैं मासिक भिक्षुप्रतिमा स्वीकार करूँ ? भगवानने कहा जैसा सुख हो वैसा करो। भगवान

त्यारपछी એક દિવસ અનગાર ગૌતમ, જ્યાં અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ હતા ત્યાં આવ્યા અને અર્હત્ અરિષ્ટનેમિને ત્રણવાર 'આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ' કર્યા. હાથોને અંજલી પુટરૂપ બાંધી જમણા કાનથી લઇ લલાટ ઉપર ફેરવી પોતાના ડાબા કાન સુધી લઇ જઇ પાછો તેને ફેરવી જમણા કાન પર લઇ આવવો અને પછી તેને પોતાના કપાળ પર સ્થાપન કરવું તેને આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ કહે છે. આદક્ષિણ-પ્રદક્ષિણ કર્યા પછી તેમની વન્દના કરી તથા પંચાંગ નમસ્કાર કર્યો. તેમણે ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિને આવી રીતે પ્રાર્થના કરી. હે ભદન્ત ! આપની આજ્ઞા મેળવી માસિક ભિક્ષુપ્રતિમાનો સ્વીકાર કરી હું વિચરણ કરવા ઇચ્છા રાખું છું. ભગવાને આજ્ઞા

यथा स्कन्दकः तथा द्वादश भिक्षुप्रतिमाः स्पृशति-स्कन्दक इव द्वादश भिक्षुप्रतिमाः समाराधयतीत्यभिप्रायः । स्पृष्ट्वा=समाराध्य 'गुणरयणंपि तवोकम्मं' गुणरत्नमपि तपःकर्म=गुणरत्ननामकं तपःकर्म, 'तहेव फासेइ निरवसेसं' तथैव स्पृशति निरवशेषम्, गुणरत्ननामापि तपः स्कन्दक इव निरवशेषं=संपूर्णमाचरतीत्यर्थः । यथा स्कन्दकस्तथा चिन्तयति, तथा= तथैव भगवन्तम् आपृच्छति, तथा स्थविरैः सार्द्धं शत्रुञ्जयं=शत्रुञ्जयपर्वतम् दूरोहति=आरोहति, मासिक्या संलेखनया, द्वादशवर्षाणि 'परियाए' पर्यायो=दीक्षाकालः यावत् सिद्धः-द्वादशवर्षपर्यन्तं चारित्रपर्यायं पालयित्वा मुक्तिं गत इत्यर्थः ॥ सू० ८ ॥

॥ मूलम् ॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। एवं जहा गोयमो, तहा सेसा, वण्ही पिया, धारिणी

की आज्ञा पाकर स्कन्दक की तरह उन्होंने बारह भिक्षुप्रतिमा का समाराधन किया।

उसने स्कन्दक के समान ही गुणरत्न-नामक तपका भी पूर्णरूप से आराधन किया। जिस तरह स्कन्दक ने विचार किया और जैसे भगवान से पूछा उसी तरह गौतम ने भी विचार किया और पूछा। उसी तरह स्थविरों के साथ शत्रुञ्जय पर्वत पर गये और बारह बरसकी दीक्षापर्याय पालनकर मासिकसंलेखना के द्वारा मोक्ष को प्राप्त हुए ॥ सू० ८ ॥

આપી ભગવાનની આજ્ઞા મેળવી સ્કન્દકની પેઠે તેમણે બાર ભિક્ષુપ્રતિમાનું સમારાધન કર્યું. ત્યાર પછી સ્કન્દકની પેઠેજ ગુણરત્ન નામની તપસ્યાનું પણ પૂર્ણરૂપે આરાધન કર્યું. જેવી રીતે સ્કન્દકે વિચાર કર્યો અને જેમ તેમણે ભગવાનને પૂછ્યું તે રીતે ગૌતમે પણ વિચાર કર્યો અને પૂછ્યું. એવી રીતે સ્થવિરોની સાથે શત્રુંજય પર્વતપર ગયા અને બાર વરસ દીક્ષાપર્યાય પાલન કરી માસિક સંલેખના દ્વારા મોક્ષ પ્રાપ્ત કર્યો. (સૂ૦ ૮)

माया, २ समुद्दे, ३ सागरे, ४ गंभीरे, ५ थिमिए, ६ अयले, ७ कंपिल्ले, ८ अक्खोभे ९ पसेणई, १० विण्हुए, एए एगगमा, पढमो वग्गो, दस अज्झयणा पण्णत्ता ॥ सू० ९ ॥

॥ टीका ॥

'एवं खलु जंबू' इत्यादि ।

एवं=पूर्वोक्त प्रकारेण हे जम्बूः! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन=मोक्षं गतेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृद्दशानाम् प्रथमवर्गस्य प्रथमस्य अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । एवं यथा गौतमः तथा शेषाः=यथा गौतमस्याध्ययनं तथैव शेषाणि समुद्रप्रभृतीन्यध्ययनानि ज्ञातव्यानि । समुद्रादीनां सर्वेषां कुमाराणां वृष्णिः पिता धारिणी माता । तेषां नामानि प्राह–समुद्रः, सागरः, गम्भीरः, स्तिमितः, अचलः, काम्पिल्यः, अक्षोभः, प्रसेनजित् विष्णुरिति । एते एकगमाः= समुद्रादयो नव समाना इत्यर्थः । प्रथमो वर्गो दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि–प्रथमो

'एवं खलु' इत्यादि । हे जम्बू! सिद्धगति नामक स्थान को प्राप्त श्रमणभगवान महावीर ने पूर्वोक्त प्रकार से अन्तकृतदशा नामक आठवें अङ्ग के प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययनमें गौतमकुमार के मोक्ष प्राप्ति का वर्णन किया है। जिस तरह गौतम अध्ययन का प्रतिपादन किया गया है, उसी तरह शेष समुद्रादि अध्ययनों का भी वर्णन जानना चाहिये। समुद्रादि सर्व कुमारोंका पिताका नाम अन्धकवृष्णि और माताका नाम धारिणी है, और कुमारों का नाम समुद्र, सागर, गंभीर, स्तिमित, अचल, काम्पिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित् एवं विष्णुकुमार है। इसके अतिरिक्त समुद्र आदि नवों अध्ययनों

'एवं खलु जंबू' ઇત્યાદિ. હે જમ્બૂ! સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પૂર્વોક્ત પ્રકારે अन्तकृतदशा નામના આઠમા અંગના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનમાં ગૌતમકુમારના મોક્ષ પ્રાપ્તિનું વર્ણન કર્યું છે. જેવી રીતે ગૌતમ અધ્ય-યનનું પ્રતિપાદન કર્યું છે, તેવી રીતે શેષ સમુદ્રાદિ અધ્યયનોનું વર્ણન પણ સમજી લેવું જોઇએ. અહીં પિતાનું નામ અન્ધકવૃષ્ણિ, માતાનું નામ ધારિણી, અને કુમારોના નામ સમુદ્ર, સાગર, ગંભીર, સ્તિમિત, અચલ, કામ્પિલ્ય, અક્ષોભ, પ્રસેનજિત્ એવં વિષ્ણુકુમાર છે.

वर्गः प्रतिपादितः, प्रथमवर्गस्य दशाध्ययनरूपतया प्रथमवर्गप्रतिपादनेन दशाध्ययनान्यपि प्रतिपादितानि ॥ सू० ९ ॥

इति श्रीविश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापाऽऽलापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहू-छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य'-पदभूषित-कोल्हापुर-राजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायाम् अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य मुनिकुमुदन्द्रिकाटीकायां प्रथमवर्गः समाप्तः ॥ १ ॥



में कोई भेद नहीं है। इस प्रकार प्रथम वर्ग के दस अध्ययनों का प्रतिपादन किया गया है ॥ सू० ९ ॥

प्रथम वर्ग का हिन्दीभाषानुवाद समाप्त ॥ १ ॥



આ સિવાય સમુદ્ર આદિ નવે અધ્યયનોમાં કોઇ ભેદ નથી. આ પ્રકારે પ્રથમ વર્ગના દશ અધ્યયનોનું પ્રતિપાદન કર્યું છે. (સૂ૦ ૯)

પ્રથમ વર્ગનો ગુજરાતી ભાષાનુવાદ સંપૂર્ણ



अथ द्वितीयोवर्गः

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा- अक्खोभ सागरे खलु, समुद्द हिमवंत अयलणामे य। धरणे य पूरणे वि य, अभिचंदे चेव अट्ठमए ॥ सू० १ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं भंते' इत्यादि। यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन= श्रमणेन भगवता महावीरेण स्वशासनस्यापेक्षया धर्मस्यादिकरेण यावत् सिद्धिगति- नामधेयं स्थानं संप्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य 'अयमट्ठे' अयमर्थः=गौतमादीनां मोक्षप्राप्तिरूपो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त! वर्गस्य अन्तकृद्दशानाम् श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि? एवं खलु जम्बूः!

अथ द्वितीय वर्ग.

हे भदन्त! मोक्ष को प्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग में गौतम आदि कुमारों के मोक्षपर्यन्त चरित्र का वर्णन किया है। उसके बाद द्वितीय वर्ग में उन्होंने कितने अध्ययनों का प्रतिपादन किया है? सुधर्मा स्वामी कहते हैं।

हे जम्बू! भगवान् महावीर ने द्वितीय वर्ग में आठ अध्ययनों का वर्णन किया है। वे इस प्रकार हैं—

બીજો વર્ગ

હે ભદન્ત! મોક્ષને પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે પ્રથમ વર્ગમાં ગૌતમ આદિ કુમારોનાં મોક્ષપર્યન્ત ચરિત્રનું વર્ણન કર્યું છે. ત્યાર પછી બીજા વર્ગમાં તેમણે કેટલાં અધ્યયનોમાં કયા ભાવનું પ્રતિપાદન કર્યું છે.

સુધર્મા સ્વામી કહે છે :-

હે જમ્બૂ! ભગવાન મહાવીરે દ્વિતીય વર્ગમાં આઠ અધ્યયનોનું વર્ણન કર્યું છે. તે આ પ્રકારે છે :—

एवम् = अनेन प्रकारेण—वक्ष्यमाणरीत्येत्यर्थः, खलु निश्चये, श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन अष्ट अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि—मोक्षं प्राप्तेन श्रमणेन भगवता महावीरेण द्वितीयस्मिन्वर्गेऽष्टाध्ययनानि प्ररूपितानि। तानि कानि? इत्याह—'तं जहा' इत्यादिना। तद्यथा—अक्षोभः १ सागरः २ खलु समुद्रो ३ हिमवान् ४ अचलनामा ५ च। धरणः ६ च पूरणो ऽ ७ पि च अभिचन्द्र ८ श्चैव अष्टमकः इति। अक्षोभादीन्यष्टौ अध्ययनानि सन्तीत्यर्थः ॥ सू० १ ॥

॥ मूलम् ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं वारवईए णयरीए वण्ही पिया धारिणी माया जहा पढमो वग्गो तहा सव्वे, अट्ठ अज्झयणा, गुणरयणतवोकम्मं, सोलस वासाइं परियाओ, सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धा। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू. २ ॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावत्यां नगर्याम् वृष्णिः पिता धारिणी माता यथा प्रथमो वर्गस्तथा सर्वाण्यष्टाध्ययनानि। यथा प्रथमवर्गे गौतमादीन्यध्ययनानि तथैवात्रापि अक्षोभादीन्यष्टाऽ

जिस समय अर्हत अरिष्टनेमि विचरते थे उस काल उस समय द्वारका नगरी में अन्धकवृष्णि नामक राजा राज्य करते थे। उनकी धारिणी नामकी रानी थीं। उनके अक्षोभ, सागर, समुद्र, हिमवान, अचल, धरण, पूरण और अभिचन्द्र नामके आठ राजकुमार थे ॥ सू० १ ॥

जैसे प्रथम प्रथम वर्ग में गौतमादि अध्ययन है, उसी तरह

જે સમયે અર્હન્ત અરિષ્ટનેમિ વિચરતા હતા તે કાલ તે સમય દ્વારકાનગરીમાં અન્ધકવૃષ્ણિ નામક રાજા રાજ્ય કરતા હતા. તેને ધારિણી નામક રાણી હતી. તેમને અક્ષોભ, સાગર, સમુદ્ર, હિમવાન, અચલ, ધરણ, પૂરણ અને અભિચન્દ્ર નામે આઠ રાજકુમાર હતા. (સૂ૦ ૧)

ध्ययनानि विज्ञेयानि। गुणरत्नतपःकर्म, षोडश वर्षाणि पर्यायः–तेषां गुणरत्न-तपःकरणं, षोडशवर्षपर्यन्तं दीक्षापर्यायश्च, शत्रुञ्जये मासिक्या संलेखनया यावत्सिद्धाः=मुक्तिं गता इत्यर्थः। एवं खलु जम्बूः–एवम्=अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण हे जम्बूः! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य द्वितीयस्य वर्गस्य=अष्टमाङ्गसम्बन्धिनो द्वितीयवर्गस्येत्यर्थः, अयमर्थः प्रज्ञप्तः=अक्षोभाद्यष्टाऽध्ययनरूपोऽर्थोऽभिहितः ॥ सू० २ ॥

इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापाऽऽलापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहू-छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य'–पदभूषित–कोल्हापुर-राजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री-घासीलाल–व्रतिविरचितायाम् अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिकायां टीकायां द्वितीयो वर्गः संपूर्णः ॥२॥

अक्षोभादि आठ अध्ययनों को भी जानना चाहिये। गौतम आदि दस कुमारों की तरह इन्होंने भी गुणरत्न–नामक तपस्या की; सोलहवर्ष की दीक्षापर्याय पाली, शत्रुञ्जय पर्वत का आरोहण किया और अन्त में ये मासिक संलेखना करके मोक्ष पधारे। हे जम्बू! इस प्रकार श्रमण भगवान महावीर ने अन्तकृतनामक आठवें अङ्ग के द्वितीय वर्ग में अक्षोभादि आठ अध्ययनों का प्रतिपादन किया है ॥ सू० २ ॥

॥ द्वितीय वर्ग का हिन्दी भाषानुवाद समाप्त ॥

તેમના પિતાનું નામ વૃષ્ણિ હતું તથા માતાનું નામ ધારિણી. જે પ્રકારનું પ્રથમ વર્ગમાં ગૌતમાદિ અધ્યયન છે તેજ પ્રકારે અક્ષોભાદિ આઠ અધ્યયનોને પણ જાણવાં જોઇએ. ગૌતમાદિ દશ કુમારોની પેઠે તેઓએ પણ ગુણરત્ન નામે તપસ્યા કરી, સોળ વર્ષ સુધી દીક્ષાપર્યાય પાળ્યો, શત્રુંજય પર્વત પર આરોહણ કર્યું. તથા અંતમાં તેમણે માસિક સંલેખના કરી અને મોક્ષમાં પધાર્યા.

હે જમ્બૂ! આ પ્રકારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃતનામક આઠમાં અંગના બીજા વર્ગમાં અક્ષોભાદિ આઠ અધ્યયનોનું પ્રતિપાદન કર્યું છે (સૂ૦ ૨)

બીજા વર્ગનો ગુજરાતી ભાષાનુવાદ સમાપ્ત.

अथ तृतीयो वर्गः

अथ द्वितीयवर्गसमाप्त्यनन्तरं क्रमप्राप्तं तृतीयवर्गमाह–'जइ णं' इत्यादि।

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। तच्चस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–अणीयससेणे १, अणंतसेणे २, अजियसेणे ३, अणिहयरिऊ ४, देवसेणे ५, सत्तुसेणे ६, सारणे ७, गए ८, सुमुहे ९, दुम्मुहे १०, कूवए ११, दारुए १२, अणादिट्ठी १३। जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा अणीयसेणे जाव अणादिट्ठी। पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥१॥

॥ टीका ॥

'जइणं भंते' इत्यादि। यदि खलु हे भदन्त! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन=मोक्षं गतेन भगवता महावीरेण अष्टमस्य अङ्गस्य द्वितीयस्य वर्गस्य

अथ तृतीय वर्ग

द्वितीय वर्ग के भाव जानने के बाद, तृतीय वर्ग के भाव समझने के लिए जम्बूस्वामी आर्य सुधर्मास्वामी से पूछते हैं—

'जइ णं भंते' इत्यादि। हे भदन्त! मोक्षको प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने आठवें अङ्ग के दूसरे वर्ग में अक्षोभादि आठ

त्रीजो वर्ग

बीजा वर्गना भाव जाणी लीधा पछी, त्रीजा वर्गना भाव जाणवानी इच्छाथी जम्बूस्वामी आर्य सुधर्मास्वामीने पूछे छेः—

'जइ णं भंते' इत्यादि. हे भदन्त! मोक्षने प्राप्त श्रमण भगवान महावीरे आठमां अंगना बीजा वर्गमां अक्षोभादि आठ अध्ययनोनुं वर्णन कर्युं छे. त्यारपछी

अयमर्थः=अक्षोभाद्यध्ययनरूपोऽर्थः प्रज्ञप्तः=प्रतिपादितः, तृतीयस्य खलु भदन्त! वर्गस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः! एवं पृच्छन्तं जम्बूस्वामिनं सुधर्मा स्वामी कथयति-एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण हे जम्बूः! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन अष्टमस्याङ्गस्य तृतीयस्य वर्गस्य अन्तकृतदशानां त्रयोदश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, अन्तकृतदशारूपाऽष्टमाङ्गसम्बन्धितृतीयवर्गेऽभिधेयतया त्रयोदशाऽध्ययनानि प्रतिपादितानीत्यभिप्रायः! तद्यथा-अणीयससेनः१, अनन्तसेनः२, अजितसेनः३, अनिहतरिपुः४, देवसेनः५, शत्रुसेनः६, सारणः७, गजः८, सुमुखः९, दुर्मुखः१०, कूपकः११, दारुकः१२, अनादृष्टिः१३, इति अणीयससेनादित्रयोदशाध्ययनानि तृतीयवर्गप्रतिपाद्यानि । तत्र प्रथमाध्ययनस्यार्थः कीदृशः? इत्याह 'जइ णं' इत्यादि । यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य

अध्ययनों का वर्णन किया है । इसके बाद उन्होंने तृतीय वर्ग में किस भावका निरूपण किया है? इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी बोले—

हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययनों का वर्णन किया है। वे इस प्रकार हैः—

(१) अणीयससेन, (२) अनन्तसेन, (३) अजितसेन, (४) अनिहतरिपु, (५) देवसेन, (६) शत्रुसेन, (७) सारण, (८) गज, (९) सुमुख, (१०) दुर्मुख, (११) कूपक, (१२) दारुक और (१३) अनादृष्टि ।

हे भदन्त ! इस तीसरे वर्ग में भगवान महावीर ने अणी-

તેમણે ત્રીજા વર્ગમાં કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે? આ પ્રકારે જમ્બૂ સ્વામીના પૂછવાથી સુધર્માસ્વામી બોલ્યા.

હે જમ્બૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ત્રીજાવર્ગમાં તેર અધ્યયનોનું વર્ણન કર્યું છે, તે આ પ્રકારે છે.

(૧) अणीयससेन, (२) अनन्तसेन, (૩) अजितसेन, (४) अनिहतरिपु, (૫) देवसेन, (૬) शत्रुसेन, (૭) सारण, (૮) गज, (૯) सुमुख, (१०) दुर्मुख, (११) कूपक, (१२) दारुक, તથા (૧૩) अनादृष्टि.

હે ભદન્ત! આ ત્રીજાવર્ગમાં ભગવાન મહાવીરે अणीयससेन થી માંડીને

अन्तकृतदशानां तृतीयस्य वर्गस्य त्रयोदश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—अणीयससेनो यावदनादृष्टिरिति। प्रथमस्य खलु भदन्त! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? ॥ सू० १ ॥

॥ मूलम् ॥

एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णामं णयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे वण्णओ०। तस्स णं भद्दिलपुरस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरीवणे णामं उज्जाणे होत्था, वण्णओ० जियसत्तू राया। तत्थ णं भद्दिलपुरे णयरे नागे णामं गाहावई होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा णामं भारिया होत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा। तस्स णं नागस्स गाहावइस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयससेणे णामं कुमारे होत्था। सुकुमाल जाव सुरूवे पंचधाईपरिक्खित्ते, तं जहा—खीरधाई, मज्जणधाई, मंडणधाई, कीलावणधाई, अंकधाई। जहा दढपइन्ने जाव गिरिकंदरमल्लीणेव चंपगवरपायवे सुहं सुहेणं परिवड्ढइ ॥ सू० २ ॥

॥ टीका ॥

'एवं खलु' इत्यादि। एवं खलु जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये भद्दिलपुरं नाम नगरम् आसीत्, 'रिद्धत्थिमियसमिद्धे' ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्-ऋद्धम्=नभःस्पर्शिवहुलप्रासादयुक्तं वहुलजनसंकुलं च, स्तिमितम्=स्वपरचक्र-

---

यससेन से लेकर अनादृष्टि तक तेरह अध्ययनों का प्रतिपादन किया है, तो प्रथम अध्ययन में किस भाव का निरूपण किया है ॥ सू० १ ॥

हे जम्बू ! उस काल उस समय में भद्दिलपुर नामका नगर था। वह नगर उत्तम नगरों के सभी गुणों से युक्त था। उस

અનાદૃષ્ટિ સુધી તેર અધ્યયનોનું પ્રતિપાદન કર્યું છે તો પ્રથમ અધ્યયનમાં કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે ?

હે જમ્બૂ! તે કાલે તે સમયે ભદ્દિલપુર નામે નગર હતું. તે નગર ઉત્તમ નગરોના સર્વ ગુણોથી યુક્ત હતું. તે નગરમાં ગગનચુમ્બી ઉંચાં ઉંચાં વિશાળ ભવન

भयरहितम्, समृद्धम्=धनधान्यादिपरिपूर्णम्, 'वण्णओ' वर्णकः=नगरवर्णनमन्यतोऽवसेयम् । तस्य खलु भद्दिलपुरस्य नगरस्य बहिः 'उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए' उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे श्रीवनं नाम उद्यानमासीत् 'वण्णओ' वर्णकः-अन्यत्रोक्तो विज्ञेयः, जितशत्रू राजा-जितशत्रुनामा राजा=भद्दिलपुराऽधिपतिरासीत् । तत्र खलु भद्दिलपुरे नगरे नागनामा गाथापतिरासीत् आढ्यो=धनधान्यादिपरिपूर्णः यावद् अपरिभूतः=बहुजनैरपि अपरिभवनीय इति । तस्य खलु नागस्य गाथापतेः सुलसा नाम भार्या आसीत्-सुकुमार यावत् सुरूपा-सुकुमारपाणिपादा यावत् सुरूपा = शोभनं रूपं यस्याः सा, सुन्दरीत्यर्थः । तस्य खलु नागस्य गाथापतेः पुत्रः सुलसाया भार्याया आत्मजः अणीयससेननामा कुमार आसीत् । सुकुमार यावत्सुरूपः, सुकुमार यावत्=सुकुमारपाणिपादः-सुकुमारं पाणिपादं यस्यासौ तथोक्तः-कोमलकर-

---

नगर में गगनचुम्बी ऊँचे ऊँचे विशाल भवन थे । वहाँ स्वचक्र परचक्र अर्थात् भीतरी और बाहरी शत्रुओं का भय बिल्कुल नहीं था, तथा वह धनधान्यादि से सर्वदा परिपूर्ण था।

उस भद्दिलपुर नगर के बाहर ईशानकोण में उद्यान के सभी गुणों से परिपूर्ण श्रीवन नामका उद्यान था। उस भद्दिलपुर में जितशत्रु नामका राजा राज्य करता था। उसी भद्दिलपुर में नाग नामका एक धनिक गाथापति रहता था। उसकी पत्नी का नाम सुलसा था जो अत्यन्त सुरूपा थी । उस नागगाथापति को सुलसा से एक अणीयससेन नामका पुत्र उत्पन्न हुआ । उसके हाथ-पैर आदि अंग अत्यन्त कोमल थे। वह अत्यन्त सुन्दर था।

હતાં. ત્યાં સ્વચક્ર પરચક્ર અર્થાત્ અંદર તથા બહાર શત્રુઓનો ભય બિલકુલ નહોતો અને તે ધનધાન્યાદિથી સર્વદા પરિપૂર્ણ હતું.

તે ભદ્દિલપુર નગરની બહાર ઇશાનકોણમાં ઉદ્યાનના સર્વ ગુણોથી પરિપૂર્ણ શ્રીવન નામે ઉદ્યાન હતું. તે ભદ્દિલપુર-નગરમાં જિતશત્રુ નામે રાજા રાજ્ય કરતો હતો. તે ભદ્દિલપુરમાં નાગ નામે એક ધનિક ગાથાપતિ રહેતો હતો. તેની પત્નીનું નામ સુલસા હતું. જે બહુજ સુરૂપા હતી. તે નાગ ગાથાપતિને સુલસાથી એક अणीयससेन નામે પુત્ર ઉત્પન્ન થયો. જેનાં હાથપગ આદિ અંગ અત્યંત કોમળ હતાં. જે અત્યંત સુંદર

चरणसमन्वित इत्यर्थः। 'पंचधाईपरिक्खित्ते' पञ्चधात्रीपरिक्षिप्तः-पञ्चधात्रीभिः= पञ्चप्रकाराभिर्धात्रीभिः परिक्षिप्तः=परिवेष्टितः-परिपालित इति यावत्। तद्यथा, 'खीरधाई १ मंजणधाई २, मंडणधाई ३, कीलावणधाई ४, अंकधाई ५' क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मण्डनधात्री, क्रीडनधात्री, अङ्कधात्री। यथा दृढप्रतिज्ञः=दृढप्रतिज्ञकुमारवत्सर्ववृत्तान्तो विज्ञेयः, 'जाव' यावत्, 'गिरिकंदरमल्लीणेव चंपगवरपायवे' गिरिकन्दरालीन इव चम्पकवरपादपः-गिरिकन्दरे= पर्वतगुहायाम् 'अल्लीणः' आलीनः=स्थितः-गिरिकन्दरालीनः-पर्वतगुहायां परिरक्षित इत्यर्थः, 'गिरिकन्दरमल्लीण' इत्यत्र मकार आर्षत्वात्, चम्पकवरपादप इव=मनोहरचम्पकतरुरिव 'सुहं सुहेणं परिवड्ढइ' सुखं सुखेन परिवर्धते-सुखं यथा स्यात्तथा सुखेनाऽनायासेन वृद्धिं प्राप्नोतीत्यर्थः ॥ सू० २ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तं अणीयसकुमारं सातिरेगअट्ठवासजायं अम्मापियरो कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाए यावि होत्था। तए णं तं अणीयसं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाणेत्ता अम्मापियरो सरिसयाणं सरिसव्वयाणं सरिसतयाणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं सरिसेहिंतो कुलेहिंतो आणिल्लियाणं बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं एगदिवसे पाणिं गेण्हावेंति ॥सू० ३॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। ततः खलु 'तं अणीयसकुमारं सातिरेगअट्ठवा-

तथा वह क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मण्डनधात्री, क्रीडनधात्री और अङ्कधात्री, इन पाँच प्रकार की धाइमाताओं से दृढप्रतिज्ञ कुमार के समान सर्वदा प्रतिपालित होकर पर्वतगुहा में लीन मनोहर चम्पक लता के समान सुख से बढने लगा ॥ सू० २ ॥

उसके बाद आठ वर्ष से कुछ अधिक उमर हुई तब उस

હતા, તથા તે ક્ષીરધાત્રી, મજ્જનધાત્રી, મણ્ડનધાત્રી, ક્રીડનધાત્રી, અને અંકધાત્રી એ પાંચ પ્રકારની ધાઈમાતાઓથી દૃઢપ્રતિજ્ઞકુમારની પેઠે સર્વદા પ્રતિપાલિત થઈ પર્વતગુહામાં લીન મનોહર ચંપકલતાની જેમ સુખથી વધવા લાગ્યા (સૂ૦ ૨)

ત્યારબાદ આઠ વર્ષથી અધિક ઉમર થયા પછી તે અણીયસસેન કુમારને માતા-

सजायं' तमणीयसकुमारं सातिरेकाष्टवर्षजातम्, अतिरेको वृद्धिस्तेन सहितानि सातिरेकाणि, तानि च अष्टवर्षाणि च सातिरेकाष्टवर्षाणि तानि जातः प्राप्तस्तम्, किंचिदधिकाष्टवर्षमित्यर्थः ।

अम्मापितरौ=मातापितरौ, 'कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाए यावि होत्था' कलाचार्यं यावद् भोगसमर्थौ जातश्चापि आसीत्, यावत्पदादयमभिप्रायो गृह्यते--मातापितरौ किंचिदधिकाष्टवर्षं तमणीयसकुमारं कलाचार्यसमीपे द्वासप्ततिकलाः शिक्षयितुं प्रेषितवन्तौ । अनन्तरं समधिगतसकलकलश्चायं कुमारः सांसारिकभोगसमर्थश्चाभूत्, ततः खलु, 'तं अणीयसं कुमारं उम्मुक्क-बालभावं' तमणीयसं कुमारम् उन्मुक्तबालभावम्, उन्मुक्तः=परित्यक्तो बालभावो=बाल्यं येनाऽसौ तम्–परित्यक्तबालत्वम्, यौवने परिप्लुतपदमित्यर्थः, ज्ञात्वा अम्मापितरौ, 'सरिसियाणं सरिसव्वयाणं सरिसतयाणं' सदृशीनां सदृशवयस्कानाम्=अवस्थादिभिः सदृशीनामित्यर्थः सदृशत्वचाम्=समानत्वचा-वतीनाम् 'सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं' सदृशलावण्यरूपयौवन-गुणोपपेतानाम्–सदृशा ये लावण्यरूपयौवनगुणास्तैरुपपेतास्तासाम्, लावण्यं कान्तिः; रूपमाकृतिः, यौवनं युवावस्था, गुणाः सौशील्यादयः; एतैः समानाना-मित्यर्थः; सदृशेभ्यः कुलेभ्य आनीतानाम्, 'बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाणं द्वात्रिंशत इभ्यवरकन्यकानाम् – इभ्यानाम्=इभ्यश्रेष्ठिनां वराः=श्रेष्ठा याः कन्यकाः

अणीयससेनकुमार को मातापिता ने कलाचार्य के समीप कलाओं का अध्ययन करने के लिये भेजा। इसके बाद वह बालक सभी कलाओं में पारंगत होगया। और युवावस्था को पाया।

उस अणीयससेन कुमार को यौवनावस्था से युक्त देखकर मातापिताने समान वय, समान त्वचा, और समान लावण्य रूप यौवन एवं सुशीलता आदि गुणों से युक्त सदृश कुलों से लायी

પિતાએ કલાચાર્યની પાસે કલાઓનું અધ્યયન કરવા માટે મોકલ્યો. પછી તે બાળક યુવાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી બધી કળાઓમાં પારંગત થયો.

તે અણીયસેનકુમારને યુવાવસ્થાથી યુક્ત જોઇને માતાપિતાએ સમાનવય, સમાનત્વચા, સમાન લાવણ્ય, રૂપ, યૌવન એવં સુશીલતા આદિ ગુણોથી યુક્ત

पुत्र्यस्तासाम् 'एगदिवसे' एकदिवसे एकस्मिन् दिवसे पाणिं ग्राहयतो=विवाहं कारयत इत्यर्थः ॥ सू० ३ ॥

विवाहानन्तरमणीयसकुमारस्य मोक्षावधिचरितं वर्ण्यते ।

॥ मूलम् ॥

तए णं से नागे गाहावई अणीयसस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तंजहा–बत्तीसं हिरण्णकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जाव समोसढे, सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं जाव विहरइ। परिसा णिग्गया। तए णं तस्स अणीयसस्स कुमारस्स महया जणसद्दं, जह गोयमे तहा, नवरं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, वीसं वासाइं परियाओ, सेसं तहेव जाव सेत्तुंजे पव्वए मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्य अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ४ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं इत्यादि । ततः खलु स नागनामा गाथापतिः अणीयसाय कुमाराय, 'इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ' इदमेतद्रूपं प्रीतिदानं ददाति–इदं=पुरो वक्ष्यमाणम्, एतद्रूपम्=एतत्स्वरूपम् वक्ष्यमाणसंख्यकं प्रीतिदानं=

हुई इभ्य श्रेष्ठियों (सेठों) की विवाह योग्य बत्तीस कन्याओं के साथ एक दिन में उसका विवाह कर दिया ॥ सू० ३ ॥

विवाह के बाद नागगाथापतिने सोना चाँदी आदि का बत्तीस करोड अणीयससेन कुमार के लिये प्रीतिदान दिया, जैसे

એવાંજ કુળમાંથી લાવેલી ઇભ્ય શ્રેષ્ઠિઓ (શેઠો)ની વિવાહયોગ્ય બત્રીસ કન્યાઓની સાથે એક જ દિવસમાં તેનાં લગ્ન કરી દીધાં. (સૂ૦ ૩)

વિવાહ પછી નાગ ગાથાપતિએ સોનું મણિમુકુટ આદિથી યુક્ત બત્રીસ બત્રીસ કરોડનું અણીયસસેનકુમારને માટે પ્રીતિદાન આપ્યું, જેમ મહાબલને માટે તેના

विवाहोपलक्षितहर्षदानं ददाति । तदेव वर्णयति-तद्यथा 'बत्तीसं हिरण्य-कोडीओ' द्वात्रिंशतं हिरण्यकोटीः=द्वात्रिंशत्कोटिपरिमिताः राजतमुद्रा इत्यर्थः । 'जहा महव्वलस्स जाव उप्पिं पासायवरगए' यथा महाबलाय यावदुपरि प्रासादवरगतः, यथा महाबलाय तत्पिता हिरण्यसुवर्णप्रभृतीनामष्टाष्ट-कोटीर्ददौ तथैव नागगाथापतिरपि अणीयसकुमाराय हिरण्यादीनां द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशत् कोटीर्ददौ । यथा महाबलस्य उपरिप्रासादवरगतसंबन्धिवृत्ता-न्तस्तथैवाणीयसकुमारस्यापि । इदं सर्वं यावत्पदसंग्राह्यम् । पुनः 'फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं' स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः=ताड्यमानैर्मृदङ्गाग्रभागैः-अनवरतगीतवाद्य-समारोहवशेन ध्वनद्भिर्मृदङ्गैरुपलक्षितान् 'भोगभोगाइं'=भोगभोगान्-प्रचुरभोगानित्यर्थः, भुञ्जानः विहरति=आस्ते इत्यर्थः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये, अर्हन् अरिष्टनेमिर्यावत् समवसृतः=समागतः । श्रीवने उद्याने 'अहापडिरूवं' यथाप्रतिरूपम्-यथा कल्पम् । 'उग्गहं' अवग्रहम्=वसते-राज्ञामवगृह्य यावत् विहरति । 'परिसा णिग्गया' परिषन्निर्गता=धर्मकथां श्रोतुं स्वस्वगृहान्निःसृता । ततः खलु तस्य अणीयसस्य कुमारस्य 'महया जणसद्दं' महाजनशब्दम्=जनसमुदायकोलाहलम् इत्यादि, 'जहा गोयमे तहा'

महाबल के लिये उनके पिताने दिया । और महाबल की तरह अणीयससेनकुमार भी ऊपरी महल में निरन्तर बजते हुए मृदङ्गों के द्वारा पूर्वपुण्य-उपार्जित मनुष्यसम्बन्धि भोग भोगते हुए विचरता था । उस काल उस समय में अर्हंत अरिष्टनेमि भद्दिलपुर के श्रीवन नामक उद्यान में पधारे । वहाँ शास्त्रोक्तविधि से अवग्रह लेकर विचरने लगे । जनसमुदायरूप परिषद् धर्म कथा सुनने के लिए अपने घर से निकली । अणीयससेन कुमार भी, मनुष्यों के महान

પિતાએ આપ્યું હતું. અણીયસસેનકુમાર પણ મહાબલની પેઠે મહેલના ઉપલા ભાગમાં હમેશાં બજતાં રહેતાં મૃદંગો દ્વારા પૂર્વપુણ્ય-ઉપાર્જિત મનુષ્ય-સંબંધી ભોગ ભોગવતો રહેતો હતો. તે કાલ તે સમયે અર્હંત અરિષ્ટનેમિ ભદ્દિલપુરના શ્રીવન નામના ઉદ્યાનમાં પધાર્યા. ત્યાં શાસ્ત્રોક્તવિધિથી અવગ્રહ લઈને વિચરવા લાગ્યા. જનસમુદાયરૂપ પરિષદ્ ધર્મકથા સાંભળવા પોતપોતાના ઘેરથી નીકળી. અણીયસસેનકુમાર પણ મનુષ્યોનો મોટો કોલાહલ સાંભળીને ગૌતમકુમારની પેઠે ઘેરથી

यथा गौतमस्तथा=यथा गौतमो महाजनशब्दं श्रुत्वा भगवत्समीपमेत्य धर्मं श्रुत्वाऽनगारो जातस्तथाऽणीयसकुमारोऽपि। 'नवरं' विशेषस्तु, गौतममुनिना सामायिकादीन्येकादशाङ्गानि समधीतानि, तस्य दीक्षापर्यायो द्वादशवर्षाणि अणीयससेनकुमारस्तु सामायिकादीनि चतुर्दश पूर्वाणि अधीते, विंशतिवर्षाणि पर्यायः=विंशतिवर्षपर्यन्तदीक्षापर्यायः, शेषम् तथैव यावच्छत्रुञ्जये पर्वते मासिक्या संलेखनया यावत्सिद्धः-मासिक्या=मासावधिकया, संलेखनया=अनशनरूपया यावत् सिद्धः=मुक्तिं गतः। एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां तृतीयस्य वर्गस्य प्रथमस्य अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः=अणीयसकुमारस्य मोक्षरूपोऽर्थः प्रतिपादितः ॥ सू० ४ ॥

कलरव सुनकर गौतम कुमार के समान घर से निकल भगवान् के पास जाकर धर्म सुनने के बाद अनगार होगये। विशेष केवल इतना है—

इन्होंने सामायिक आदि चौदह पूर्वोंका अध्ययन किया और बीस वर्ष दीक्षापर्याय पाली। उसके बाद शत्रुञ्जय पर्वत का आरोहण कर, मासिक संलेखना के द्वारा मोक्ष को प्राप्त हुए। बाकी चरित्र गौतम के ही समान है। भेद इतना ही है कि गौतम अनगार सामायिक आदि ग्यारह अङ्ग पढे और बारह वर्ष संयम पाले।

हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीर ने अन्तकृतदशा-नामक आठवें अङ्ग के तृतीय वर्ग के प्रथम अध्ययन में अणीयससेन कुमार के मोक्षरूप अर्थ का उक्त प्रकार से वर्णन किया है ॥ सू० ४ ॥

નીકળી ભગવાનની પાસે જઇ ધર્મ સાંભળ્યા અને પછી અનગાર થઇ ગયા. વિશેષ માત્ર એટલું છે—કે ગૌતમ અનગાર સામાયિક આદિ અગીઆર અંગ ભણ્યા તથા બાર વર્ષ સંયમ પાળ્યો, તેમણે સામાયિક આદિ ચૌદ પૂર્વોનું અધ્યયન કર્યું અને વીસ વર્ષ સુધી દીક્ષા પર્યાય પાળ્યો. ત્યાર પછી શત્રુંજય પર્વતનું આરોહણ કર્યું. માસિક સંલેખના દ્વારા મોક્ષને પ્રાપ્ત થયા. આ બધું ચરિત્ર ગૌતમનાજ જેવું છે.

હે જમ્બૂ! શ્રવણ ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃતદશા નામના આઠમાં અંગના તૃતીયવર્ગ સંબંધી પ્રથમ અધ્યયનમાં અણીયસસેનકુમારના મોક્ષરૂપ અર્થનું ઉક્ત પ્રકારે વર્ણન કર્યું છે. (સૂ૦ ૪)

॥ मूलम् ॥

जहा अणीयसे, एवं सेसा वि अणंतसेणे अजियसेणे अणिहयरिऊ देवसेणे सत्तुसेणे छ अज्झयणा एकगमा, बत्ती-साओ दाओ, वीसं वासाइं परियाओ, चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जंति, सेत्तुंजे जाव सिद्धा। छट्ठमज्झयणं समत्तं ॥ सू० ५ ॥

॥ टीका ॥

'जहा अणीयसे' इत्यादि।

एवं यथा अणीयसः=यथा पूर्वोक्तरूपमणीयसकुमाराध्यनम् एवं शेषाण्यपि=अनन्तसेना – ऽजितसेना – ऽनिहतरिपु–देवसेन– शत्रुसेन–नामकानि अध्ययनानि सन्ति, एतानी षडध्ययनानि एकगमानि–एकः=समानो गमः= पाठो येषां तानि–समानपाठानीत्यर्थः; एतेषां सर्वेषामपि मातापितृचारित्रा-दिवर्णनं समानम्।

'बत्तीसाओ दाओ' द्वात्रिंशद् दायः=द्वात्रिंशत्संख्यकयौतुकमित्यर्थः। विंशतिवर्षाणि पर्यायः, चतुर्दश पूर्वाणि अधीयते, 'सेत्तुंजे जाव सिद्धा' शत्रुञ्जये यावत् सिद्धाः 'छट्ठं अज्झयणं समत्तं' षष्ठमध्ययनं समाप्तम्=अणीयस-कुमारमारभ्य शत्रुसेनपर्यन्तं षडध्ययनानि जातानि ॥ सू० ५ ॥

जैसा अणीयससेन कुमार का अध्ययन है, उसी प्रकार अनन्तसेन, अजितसेन अनिहतरिपु, देवसेन, शत्रुसेन नामक अध्ययनों को जानने चाहिये। ये छहों अध्ययन समानपाठवाले हैं। इनके मातापिता एक ही थे। बत्तीस २ रजतकोटि, सुवर्णकोटि तथा बत्तीस २ मणिमुकुट आदि विवाह के उपलक्ष में इन लोगों को मिला। बीस बरस दीक्षापर्याय पाली। चौदह पूर्वोंका अध्ययन किया। शत्रुञ्जय पर्वत पर आरोहण कर मासिक

જેવું અણીયસસેનકુમારનું અધ્યયન છે તેવાજ પ્રકારનાં અનન્તસેન, અજિતસેન, અનિહતરિપુ, દેવસેન, શત્રુસેન–નામનાં અધ્યયનોનું વર્ણન જાણી લેવું જોઇએ.

આ છએ અધ્યયન એક સરખા પાઠવાળાં છે. તેમનાં માતાપિતા એકજ હતા. બત્રીસ બત્રીસ કરોડ સોનાં તથા બત્તીસ ૨ મણિમુકુટ આદિ વિવાહના ઉપલક્ષમાં આ લોકોને મળ્યા. વીસ વરસ દીક્ષાપર્યાય પાળ્યો. ચૌદ પૂર્વોનું અધ્યયન કર્યું.

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते ! उक्खेओ सत्तमस्स । तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए जहा पढमे, नवरं वसुदेवे राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे, सारणे कुमारे, पण्णासओ दाओ, चोद्दस पुव्वाइं, वीसं वासाइं परियाओ, सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुंजए सिद्धे । सत्तमं अज्झयणं समत्तं ॥ सू० ६ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं भंते' इत्यादि । 'यदि खलु भदन्त' इत्यादिः 'उक्खेओ सत्तमस्स'=उत्क्षेपकः=प्रारम्भवाक्यं सप्तमस्य=सप्तमस्याध्ययनस्य विज्ञेयः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावत्यां नगर्याम्, 'जहा पढमे' यथा प्रथमे= यथा प्रथमे वर्गे द्वारावतीवर्णनं तथैवात्रापि ज्ञातव्यम् । 'नवरं' विशेषस्तु, वसुदेवो राजा धारिणी देवी=धारिणी नाम वसुदेवस्य राज्ञी आसीत्, तया सिंहः स्वप्ने दृष्टः । 'सारणे कुमारे' सारणः कुमारः=धारिण्या देव्याः सारणो

संलेखना के द्वारा सिद्ध हुए छ अध्ययन पूरे हुए ॥ सू० ५ ॥

'जइ णं भंते' इत्यादि सातवें अध्ययन का प्रारम्भ वाक्य है । अर्थात् जैसे पूर्व अध्ययनों में जम्बूने जिस क्रम से प्रश्न किया था और आर्य सुधर्मा ने जिस प्रकार जम्बू से कहा था, उसी प्रकार इस अध्ययन के आदिमें समझना चाहिये ।

हे जम्बू ! उस काल उस समय द्वारका नगरी में वसुदेव नाम के राजा थे, धारिणी नामकी रानी थी। उसने एक समय स्वप्न में सिंह को देखा । उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ । जिसका नाम 'सारणकुमार' रखा गया । सारणकुमार ने बहत्तर कलाओंका

શત્રુંજય પર્વતપર આરોહણ કરી માસિક સંલેખનાદ્વારા સિદ્ધ થયા. છ અધ્યયન પૂરાં થયાં. (સૂ૦ ૫)

'जइ णं भंते' ઈત્યાદિ સાતમાં અધ્યયનનું પ્રારંભવાકય છે. અર્થાત્ જેમ પૂર્વ અધ્યયનોમાં જમ્બૂએ જે ક્રમથી પ્રશ્ન કર્યા હતા તથા આર્યસુધર્માસ્વામીએ જે પ્રકારે જમ્બૂને કહ્યું હતું તે પ્રકારેજ આ અધ્યયનના આદિમાં સમજવું જોઇએ.

તે કાલે તે સમયે દ્વારકા નગરીમાં વસુદેવ નામે રાજા રહેતા હતા. ધારિણી નામે તેમની એક રાણી હતી. તેણે એક વખત સ્વપ્નમાં સિંહને જોયો. તેને એક પુત્ર ઉત્પન્ન થયો, જેનું નામ 'सारण कुमार' રાખ્યું. સારણ કુમારે બોંતેર કળાઓનું

नाम कुमारो जातः, तस्य पाणिग्रहणे, 'पण्णासओ दाओ' पञ्चशत्को दायः। 'चोद्दस पुव्वाइं'=चतुर्दश पूर्वाणि, चतुर्दशपूर्वाणामध्ययनमित्यर्थः, विंशति-वर्षाणि पर्यायः, शेषं यथा गौतमस्य यावत् वर्णनं तथैव सारणकुमारस्यापि, शत्रुञ्जये सिद्धः। इति सप्तममध्ययनम् ॥ सू० ६ ॥

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते! उक्खेवओ अट्ठमस्स। एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए नयरीए जहा पढमे जाव अरहा अरिट्ठनेमी सामी समोसढे। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी छ अणगारा भायरो सहोयरा होत्था। सरिसया सरिसत्तया सरिसव्वया नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुम-प्पगासा सिरिवच्छंकियवच्छा कुसुम-कुंडलभद्दालया नलकूवरसमाणा। तए णं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

अध्ययन किया। और तरुणावस्था आने पर मातापिता ने उनका विवाह किया। पचास २ तरह का दहेज मिला। भगवान अरिष्टनेमि का उपदेश सुनकर सारणकुमार अनगार होगये। उन्होंने चौदह पूर्वों का अध्ययन किया और बीस बरस दीक्षापर्याय पाली। अन्तमें गौतम के सदृश शत्रुंजय पर्वत पर आरोहण कर मासिक संलेखना के द्वारा सारणकुमार भी सिद्ध हुए। यह सातमा अध्ययन पूरा हुवा ॥ ६ ॥

અધ્યયન કર્યું અને તરુણાવસ્થા પ્રાપ્ત થતાં તેના માતાપિતાએ તેનું લગ્ન કરી દીધું. પચાસ પચાસ પ્રકારના દહેજ તેને વિવાહમાં મળ્યા. ભગવાન અરિષ્ટનેમિનો ઉપદેશ સાંભળી તે અનગાર થઇ ગયા. તેમણે ચૌદ પૂર્વનું અધ્યયન કર્યું તથા વીસ વરસ દીક્ષાપર્યાય પાળ્યો. અંતમાં ગૌતમની પેઠે શત્રુંજય પર્વત ઉપર આરોહણ કરી માસિક સંલેખનાદ્વારા સારણકુમાર પણ સિદ્ધ થયા. સાતમું અધ્યયન પુરું થયું. (સૂ० ૬)

इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह। तए णं ते छ अणगारा अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेणं जाव विहरेंति ॥ सू० ७ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं भंते' इति। 'यदि खलु भदन्त !' उत्क्षेपकोऽष्टमस्य=अष्टमस्य अध्ययनस्य प्रारम्भवाक्यमस्ति। एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावत्यां नगर्यां यथा प्रथमे यावत् अर्हन् अरिष्टनेमिः भगवान् यथा प्रथमे वर्गे द्वारावत्यां समवसृतः, वर्णनम्, तथैवात्रापि। 'समोसढे' समवसृतः=धर्मदेशनार्थं समागतः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तेवासिनः षडनगारा भ्रातरः सहोदराः=एकमातृजाताः आसन्। 'सरिसया सरित्तया सरिसव्वया' सदृशकाः सदृक्त्वचः सदृशवयस्काः- सदृशकाः=समानाकाराः, सदृक्त्वचः–सदृशी त्वग् येषां ते, समानकान्तय इत्यर्थः। सदृशवयस्काः–सदृशं=समानं वयो येषां ते–समानवयस्काः, आकारेण सौन्दर्येण वयसा च ते षडपि भ्रातरः समाना इत्यर्थः। 'नीलुप्पलगवलगुलिय-

---

आठवें अध्ययन का भी प्रारम्भ वाक्य 'जइ णं भंते' इत्यादि है। इसका अभिप्राय पूर्वोक्त जानना चाहिये।

हे जम्बू ! उस काल उस समय में द्वारावती नामकी नगरी थी। वहाँ अर्हत अरिष्टनेमि भगवान् पधारे। वर्णन प्रथम वर्ग के समान जानना चाहिये। उस काल उस समय में एक माता से जन्मे हुए छ सगे भाई अर्हत अरिष्टनेमि के अन्तेवासी (शिष्य) हुए। ये सभी समान आकारवाले और समानरूप तथा समानवयवाले थे।

આઠમા અધ્યયનનું પણ પ્રારંભ વાકય 'जइ णं भन्ते 'ઇત્યાદિ છે. તેનો અભિપ્રાય પૂર્વોકત પ્રકારે જાણવો જોઇએ.

હે જમ્બૂ ! તે કાલ તે સમયે દ્વારાવતી નામે એક નગરી હતી. ત્યાં અર્હંત અરિષ્ટનેમિ સ્વામી ધર્મોપદેશ કરવા માટે આવ્યા. તેનું વર્ણન પ્રથમ વર્ગના જેવું સમજવું જોઇએ. તે કાલ તે સમયે છ સગાભાઇ અર્હંત અરિષ્ટનેમિના અન્તેવાસી (શિષ્ય) થયા, તે જ્ઞાન, સૌંદર્ય તથા વયમાં સમાન હતા, તેમની શરીરકાન્તિ,

अयसिकुसुमप्पगासा' नीलोत्पलगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशाः–नीलोत्पलं=नीलकमलम्, गवलं=महिषशृङ्गान्तर्वर्त्ति नीलद्रव्यम्, गुलिका=रङ्गविशेषः, अतसीकुसुमम्=अतसीपुष्पम्–'अलसी' इति भाषाप्रसिद्धम्, एतेषां प्रकाश इव प्रकाशः=कान्तिर्येषां ते तथा, नीलवर्णा इत्यर्थः। 'सिरिवच्छंकियवच्छा' श्रीवत्साङ्कितवक्षसः–श्रीवत्सो=महापुरुषाणां वक्षःस्थचिह्नविशेषः; तेन अङ्कितं वक्षः=उरो येषां ते–श्रीवत्सयुक्तवक्षस्थलकाः, 'कुसुमकुंडलभद्दालया' कुसुमकुण्डलभद्रालकाः–कुसुमवत्कोमलाः कुण्डलवद्वर्तुला आकुञ्चितत्वाद् भद्राः=शोभना अलकाः=केशा येषां ते तथा, 'नलकूवरसमाणा' नलकूवरसमानाः=सौन्दर्यलावण्यादिभिर्गुणैर्नलकूवरसदृशा इत्यर्थः। ततः खलु ते षडनगारा यस्मिन्नेव दिवसे द्रव्यतः=केशलुञ्चनात्, भावतः=कषायापनयनयात्, मुण्डाः भूत्वा अगाराद्=गृहाद् अनगारिताम्=अनगारभावं प्रव्रजिताः=प्राप्ताः, तस्मिन्नेव दिवसे अर्हन्तमरिष्टनेमिं, वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवदन्–इच्छामः खलु भदन्त! युष्माभिः अभ्यनुज्ञाताः=आज्ञापिताः सन्तः यावज्जीवम्=जीवनपर्यन्तमित्यर्थः, 'छट्ठछट्ठेणं

इनकी शरीरकान्ति नीलकमल तथा भैंस के सींग के आन्तरिक भाग अथवा गुली के रंग के समान एवं अलसी के फूल के समान नीले रंगवाली थी, और इनका वक्षस्थल श्रीवत्सनामक चिह्नविशेष से अङ्कित था। फूलों के समान कोमल और कुण्डल के समान घूमे हुए घुंघराले इनके बाल बहुत सुन्दर लगते थे। सौन्दर्यादि गुणों से ये नलकूबर के समान थे। वे छहों अनगार जिस दिन दीक्षित हुए उसी दिन वे भगवान को वन्दन–नमस्कार करके इस प्रकार बोले—

हे भदन्त! हम लोग आपसे आज्ञा प्राप्त कर जावजीव

નીલકમલ તથા ભેંસના શીંગડાના આન્તરિક ભાગ અથવા ગળીના રંગના જેવી, એવં અળસીનાં ફૂલના જેવી હતી, તથા તેમનું વક્ષસ્થલ શ્રીવત્સનામના ચિહ્નવિશેષથી અંકિત હતું. ફૂલોના જેવા કોમળ અને કુંડળના જેમ ગોળ ઘુંચળાં વળેલા તેમના વાળ બહુ સુંદર દેખાતા હતા. સૌંદર્યાદિ ગુણોથી તે નળકૂબરના જેવા હતા. તે છએ અનગાર જે દિવસે દીક્ષા લીધી તેજ દિવસે તેમણે ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરીને આ પ્રકારે કહ્યું.—

હે ભદન્ત! અમે લોકો આપની આજ્ઞા મળતાં જાવજીવ (જીવનપર્યન્ત) નિર-

अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं' षष्ठषष्ठेन अनिक्षिप्तेन तपःकर्मणा-अनिक्षिप्तेन= अपरित्यक्तेन-निरन्तरेण तपःकर्मणा=तपस्ययेत्यर्थः आत्मानं भावयन्तः= वासयन्तो विहर्तुम् । भगवानाह-यथासुखं हेदेवानुप्रियाः!- यथा युष्माकमात्मबलं शरीरबलं च तथा कुरुतेत्यर्थः । 'मा पडिबंधं करेह' मा प्रतिबन्धं कुरुत-तपःप्रतिघातरूपं प्रमादं मा कुरुतेत्यर्थः । 'तए णं ते छ अणगारा' ततः खलु ते षडनगाराः 'अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेणं जाव विहरंति' अरिष्टनेमिना अभ्यनुज्ञाताः सन्तः यावज्जीवं षष्ठषष्ठेन यावद् विहरन्ति=षष्ठषष्ठरूपनिरन्तरतपसाऽऽत्मानं भावयन्तो विचरन्तीत्यर्थः ॥ सू० ७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं ते छ अणगारा अण्णया कयाइं छट्ठक्खमण-पारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, जहा गोय-मसामी, जाव इच्छामो णं भंते ! छट्ठक्खमणस्स पारणाए तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा तिहिं संघाडएहिं बारवईए नयरीए जाव अडित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! तए णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा

(जीवनपर्यन्त) निरन्तर षष्ठ-षष्ठरूप तपस्या के द्वारा अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने की इच्छा करते हैं । ऐसा सुनकर भगवान् ने उन अनगारों से कहा-हे देवानुप्रियों ! अपने बल पराक्रम के अनुसार जैसा सुख हो वैसा करो, और प्रमाद छोडो । इसके बाद वे छहों अनगार अर्हत अरिष्टनेमि से आज्ञा पाकर जावजीव षष्ठ-षष्ठ तप द्वारा अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ७ ॥

न्तर षष्ठ-षष्ठरूप(छठ छठ) तपस्या द्वारा अमारा पोताना आत्माने भावित करता करता विचरवानी इच्छा करीअे छीअे. अेवुं सांभळीने भगवाने ते अनागारोने कह्युं-हे देवानुप्रियो ! तमारां बल पराक्रम अनुसार जेम सुख थाय तेम करो, अने प्रमाद छोडो. त्यार पछी ते छअे अनगार अर्हंत अरिष्टनेमिनी आज्ञा लई जाव-जीव षष्ठ-षष्ठ तपद्वारा पोताना आत्माने भावित करता विचरवा लाग्या. (सू० ७)

अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता तिहिं संघाडएहिं अतुरियं जाव अडंति ॥ सू० ८ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं ते छ अणगारा' ततः खलु ते षडनगाराः 'अण्णया कयाइं' अन्यदा कदाचित् 'छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए' षष्ठक्षपणपारणायां प्रथमायां पौरुष्याम्=प्रथमे प्रहरे 'सज्झायं' स्वाध्यायं 'करेंति' कुर्वन्ति, 'जहा गोयमसामी जाव' यथा गौतमस्वामी यावत्=गौतमस्वामिवद् भगवत्समीपमागत्य पृच्छन्ति–'इच्छामो णं भंते ! छट्ठक्खमणस्स पारणाए' इच्छामः खलु भदन्त ! षष्ठक्षपणस्य पारणायाम् 'तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा' युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तः 'तिहिं संघाडएहिं' त्रिभिः संघाटकैः=भागत्रयेण संविभज्येत्यर्थः, 'बारवईए नयरीए जाव अडित्तए' द्वारावत्यां नगर्याम् यावत् मुनिकल्पानुसारेण सामुदानिकभिक्षार्थम् अटितुम्=गन्तुमित्यर्थः । भवदनुज्ञाता वयं द्वौ द्वौ मिलित्वा संघाटकत्रयेण द्वारावत्यां पारणार्थमशनादिग्रहणाय गन्तुमिच्छाम इति भावः । भगवानाह–'अहासुहं देवाणुप्पिया !' यथासुखं हे देवानुप्रियाः ! । 'तए णं ते छ अणगारा अरहया

तदनन्तर एक समय छठ (बेले) के पारणेमें उन छहों अनगारों ने प्रथम प्रहर में स्वाध्याय किया और उसके बाद गौतम स्वामी के समान भगवान् के पास आकर सविनय बोले–हे भदन्त ! आपकी आज्ञा पाकर तीन संघाटकों (संघाडों) में विभक्त हो मुनियों के कल्पानुसार सामुदानिक भिक्षा के लिये हमलोग द्वारका में जानेकी इच्छा करते हैं । उन छहों अनगारों की ऐसी प्रार्थना सुनकर भगवानने कहा–हे देवानुप्रियों !

ત્યાર પછી એક સમય છઠના પારણામાં તે છએ અનગારોએ પ્રથમ પ્રહરમાં સ્વાધ્યાય કરી ગૌતમસ્વામીની પેઠે ભગવાનની પાસે આવ્યા અને સવિનય કહ્યું કે–હે ભદન્ત ! આપની આજ્ઞા લઈ ત્રણ સંઘાટકોમાં વિભકત થઈ મુનિઓના કલ્પાનુસાર સામુદાનિક ભિક્ષા માટે અમે દ્વારકામાં જવાની ઇચ્છા કરીએ છીએ. તે છએ અનગારોની એવી પ્રાર્થના સાંભળી ભગવાને કહ્યું – હે

अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा' ततः खलु ते षडनगाराः अर्हता अरिष्टनेमिना अभ्यनुज्ञाताः सन्तः 'अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति णमंसंति' अर्हन्तम् अरिष्टनेमिं वन्दन्ते नमस्यन्ति, 'वंदित्ता णमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स' वन्दित्वा नमस्यित्वा अर्हतोऽरिष्टनेमेः 'अंतियाओ' अन्तिकात्=समीपात् 'सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ' सहस्राम्रवनात्=सहस्राम्रवननामकात् उद्यानात् 'पडिणिक्खमंति' प्रतिनिष्क्राम्यन्ति=निस्सरन्ति, 'पडिणिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'तिहिं संघाडएहिं' त्रिभिः संघाटकैः, 'अतुरियं जाव' अत्वरितं यावत्-अत्वरितं=त्वरारहितम् , यावत् अचपलमसंभ्रान्तम् ; अत्वरितं-झटिति पारणं कर्त्तव्यमिति त्वरारहितम्, अचपलं चरणव्यापारे, असम्भ्रान्तं लाभालाभचिन्तायाम् एवंविधं यथास्यात्तथा 'अडंति' अटन्ति=हिण्डन्ति ॥ सू० ८ ॥

॥ मूलम् ॥

तत्थ णं एगे संघाडए बारवईए णयरीए उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे अडमाणे वसुदेवस्स रण्णो देवइए देवीए गिहे अणुप्पविट्ठे। तए णं सा देवई देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव हियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं

जैसा सुख हो, वैसा करो। भगवान् अरिष्टनेमि से इस प्रकार आज्ञा पाने के बाद उन अनगारों ने वन्दन-नमस्कार किया। बाद में वे मुनि सहस्राम्रवन के बाहर निकले और तीन संघाडे बनाकर अत्वरित गति, चपलतारहित एवं लाभालाभ चिन्ता में असम्भ्रान्तिपूर्वक-उद्वेगरहित भिक्षा के लिये गये ॥ सू० ८ ॥

દેવાનુપ્રિયો ! જેમ સુખ થાય તેમ કરો. ભગવાન અરિષ્ટનેમિ પાસેથી એ પ્રકારે આજ્ઞા મેળવીને તે અનગારોએ વન્દન નમસ્કાર કરી સહસ્રામ્રવનથી બહાર નીકળ્યા, અને ત્રણ સંઘાડા બનાવીને અત્વરિત ગતિ (પારણું જલ્દી થાય એવી ત્વરારહિત) ચપલતારહિત (અયતનાથી ચાલવું તે ચપલતા કહેવાય), લાભાલાભની ચિંતામાં અસંભ્રાન્તિપૂર્વક (ભિક્ષા મલશે કે નહિ, અગર મલશે તો કયારે મલશે એવા વિચાર રહિત) ભિક્ષાને માટે વિચરવા લાગ્યા. (સૂ૦ ૮)

करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेइ, भरित्ता ते अणगारे पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥सू० ९॥

॥ टीका ॥

'तत्थ णं' इत्यादि । 'तत्थ णं' तत्र खलु 'एगे संघाडए' एकः संघाटको=मुनिद्वयरूपः, 'बारवईए णयरीए' द्वारावत्यां नगर्याम् 'उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं' उच्चनीचमध्यमानि कुलानि 'घरसमुदाणस्स' गृहसमुदानस्य=अनेकगृहाणां 'भिक्खायरियाए' भिक्षाचर्य्यायै=भिक्षाग्रहणाय 'अडमाणे' अटन् 'वसुदेवस्स रण्णो देवईए देवीए गिहे अणुप्पविट्ठे' वसुदेवस्य राज्ञो देवक्या देव्या गृहे अनुप्रविष्टः । 'तए णं सा देवई देवी' ततः खलु सा देवकी देवी 'ते' तौ=द्वौ 'अणगारे एज्जमाणे पासित्ता' अनगारौ एजमानौ=आगच्छन्तौ 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'हट्ठतुट्ठ जाव हियया' हृष्टतुष्ट यावद्धृदया, यावत्पदेन 'हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया' इत्यादि संग्राह्यम् । 'हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया' हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता=हृष्टं-हर्षितम् अनगारयोराकस्मिकागमनेन अतीव प्रमुदितमित्यर्थः, तुष्टं=संतुष्टम्-धन्याऽहं मद्गृहेऽ-

उनमें दो मुनियों का संघाडा द्वारका नगरी के उच्चनीच-मध्यम कुलों में गृहसामुदानिक भिक्षाके लिये घूमता हुआ राजा वसुदेव और रानी देवकी के घर पहुँचा । उस संघाडे (उन दोनों मुनियों) को अपने यहाँ आते हुए देखकर देवकी महारानी आसन से उठी और सात आठ पग उनके सामने गई । उन दोनों अनगारों के आकस्मिक आगमन से हर्षित हुई

તેમાંના બે મુનિઓનો એક સંઘાડો દ્વારકા નગરીના ઉચ્ચનીચમધ્યમ કુળોમાં ગૃહસામુદાનિક ભિક્ષા માટે ફરતો ફરતો રાજા વસુદેવ તથા રાણી દેવકીને ઘેર પહોંચ્યો. તે સંઘાડા (તે બે મુનિઓ) ને પોતાને ત્યાં આવતો જોઇ દેવકી મહારાણી આસનથી ઉઠયા અને સાત આઠ ડગલાં તેમની સામે ગયા. તે બેઉ અનગારોના અકસ્માત્ આગમનથી હર્ષિત થઇ મનમાં બોલ્યા -હું ધન્ય છું કે

नगारावागताविति कृतकृत्यम्; हृष्टं च तुष्टं च यच्चित्तं तेनानन्दिता, 'पीइमणा' प्रीतिमनाः–प्रीतिस्तृप्तिः उत्तमवस्तुप्राप्तिरूपा, सा मनसि यस्याः सा प्रीतिमनाः–तृप्तचित्तेत्यर्थः, 'परमसोमणस्सिया' परमसौमनस्यिता=सातिशयप्रमोदभावसंपन्नेत्यर्थः, 'हरिसवसविसप्पमाणहियया' हर्षवशविसर्पद्धृदया–हर्षवशाद् विसर्पत्=प्रसरद् हृदयं यस्याः सा–हर्षातिशयप्रवर्द्धमानमनाः, महापुरुषाणामाकस्मिकागमनेन पूर्णचन्द्रोदयेन सागरवत् प्रमोदातिशयेन देवकीहृदयपद्मं प्रफुल्लितं जातमिति भावः; 'आसणाओ अब्भुट्ठेइ' आसनादभ्युत्तिष्ठति=आसनं परित्यज्याभ्युत्थानं करोतीत्यर्थः, 'अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ' अभ्युत्थाय सप्ताष्टपदानि अनुगच्छति=मुनिसंमुखं याति, 'अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो' अनुगम्य त्रिकृत्वः 'आयाहिणपयाहिणं करेइ' आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, 'करित्ता वंदइ णमंसइ' कृत्वा वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव भक्तगृहं तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य, 'सीहकेसराणं मोयगाणं' सिंहकेसराणां मोदकानाम्, चतुरशीतिविशिष्टवस्तुविनिर्मिता मोदकाः सिंहकेसरमोदका उच्यन्ते; 'थालं भरेइ' स्थालं भरति, 'भरित्ता ते अणगारे पडिलाभेइ' भृत्वा तौ अनगारौ प्रतिलम्भयति=ददाति, 'पडिलाभित्ता' प्रतिलम्भ्य 'वंदइ णमंसइ' वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'पडिविसज्जेइ' प्रतिविसर्जयति ॥ सू० ९ ॥

और बोली–मैं धन्य हूं जो मेरे घर अनगार पधारे। इस हेतु से सन्तुष्टचित्त होने के कारण वह अत्यन्त आनन्दित हुई। मुनियों के पधारने से उसके अन्तःकरण में अपूर्व प्रेम उत्पन्न हुआ और मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। तथा उसका हृदय हर्ष के अतिरेक (आधिक्य) से उछलने लगा, अर्थात् अपूर्व आनन्दित हुआ। विधिपूर्वक वन्दना करके वह मुनियों को रसोईघर में ले गयी।

મારે ઘેર અનગાર આવ્યા–આ હેતુથી સંતુષ્ટચિત્ત થવાથી તે બહુ આનંદિત થયા, મુનિઓના પધારવાથી તેના અંતઃકરણમાં અપૂર્વ પ્રેમ પ્રગટયો તથા મન અત્યન્ત પ્રસન્ન થયું, અને તેનું હૃદય હર્ષના અતિરેક (આધિક્ય)થી ઉછળવા લાગ્યું, અર્થાત્ દેવકી મહરાણી બહુજ આનંદિત થયા અને વિધિપૂર્વક વન્દના કરી પછી બંને મુનિઓને વિનંતી કરી રસોડામાં લઇ ગયા. અને સિંહકેસર મોદકનો થાળ ભરીને લાવ્યા

॥ मूलम् ॥

तयाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए बारवईए नयरीए उच्च जाव पडिविसज्जेइ। तयाणंतरं च णं तच्चे संघाडए बारवईए नयरीए उच्चनीय जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता एवं वयासी–किण्णं देवाणुप्पिया! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए दुवालसजोयण-आयामाए नवजोयणविच्छिण्णाए पच्चक्खं देवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरिआए अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति! जन्नं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो अणुप्पविसंति ॥ सू० १० ॥

॥ टीका ॥

'तयाणंतरं' इत्यादि। 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरं=प्रथमसंघाटकगमनानन्तरं च खलु 'दोच्चे संघाडए' द्वितीयः संघाटकः 'बारवईए नयरीए' द्वारावत्यां नगर्याम् 'उच्चनीय जाव पडिविसज्जेइ' उच्चनीचयावत्प्रतिविसर्जयति- 'उच्चनीचमध्यमानि कुलानि' इत्यारभ्य 'प्रतिविसर्जयति' इत्यतः प्राग्वर्त्ती पाठः पूर्ववदेव यावत्पदेन संग्राह्यः; 'तयाणंतरं च णं तच्चे संघाडए बारवईए नयरीए उच्चनीय जाव पडिलाभेइ' तदनन्तरं च खलु तृतीयः संघाटकः द्वारावत्यां नगर्याम् उच्चनीच यावत् प्रतिलम्भयति=द्वितीयसंघाटकगमनानन्तरमागताय तृतीयसंघाटकाय देवकी पूर्ववदेव उदारभावेन विपुलमशनादिकं प्रतिलम्भ्य एव-

---

तथा सिंहकेसरमोदकों का थाल भर कर लाई, और उन अनगारों को प्रतिलाभित कर विनय के साथ विसर्जित किया ॥ सू० ९ ॥

उसके बाद दूसरा संघाडा भी उच्च नीच मध्यम कुलों में घूमता हुआ देवकी के घर आया, देवकी रानी ने उसी तरह प्रतिलाभित करके विसर्जित किया। अनन्तर तीसरा संघाडा भी वैसे ही आया। देवकी रानी उसे भी वैसे ही उदारभाव से भिक्षा देकर विनयपूर्वक पूछने लगी—

અને તે અનગારોને પ્રતિલાભિત કરી તેમને વિનયથી વિસર્જિત કર્યા. (સૂ૦ ૯)

ત્યાર પછી બીજો સંઘાડો પણ ઉચ્ચ નીચ મધ્યમ કુળોમાં ફરતો ફરતો દેવકીને ઘેર આવ્યો. દેવકી રાણીએ એજ પ્રમાણે તેમને પ્રતિલાભિત કરી (વહોરાવી) વિસર્જિત કર્યો. પછી ત્રીજો સંઘાડો પણ એવી રીતે આવ્યો. દેવકી રાણીએ તેને પણ

मवदत्–वक्ष्यमाणप्रकारेणाकथयत्– 'किण्णं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए' किं खलु हे देवानुप्रिय ! कृष्णस्य वासुदेवस्य अस्यां द्वारावत्यां नगर्याम् 'दुवालसजोयण–आयामाए' द्वादशयोजनायामायां= द्वादश-योजनदीर्घायामित्यर्थः, 'नवजोयणवित्थिण्णाए पच्चक्खं देवलोगभूयाए' नवयो-जनविस्तीर्णायाम् प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाम् 'समणा निग्गंथा उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए' श्रमणा निर्ग्रन्थाः उच्चनीचमध्यमानि कुलानि गृहसमुदानस्य भिक्षाचर्यायै 'अडमाणा' अटन्तः=भिक्षार्थं भ्रमन्तः, 'भत्तपाणं णो लभंति' भक्तपानम् नो लभन्ते=न प्राप्नुवन्ति । 'जन्नं' यत्खलु 'ताइं चेव कुलाइं' तानि एव कुलानि–पूर्वप्रविष्टान्येव कुलानि 'भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो अणुप्पविसंति' भक्तपानाय भूयो भूयोऽनुप्रविशन्ति ॥ सू० १० ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं ते अणगारा देवइं देविं एवं वयासी–णो खलु देवाणुप्पिये! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए णयरीए जाव देवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्चणीय जाव अडमाणा भत्त-पाणं णो लभंति, णो चेव णं ताइं ताइं कुलाइं दोच्चंपि तच्चंपि भत्तपाणाए अणुप्पविसंति । एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हे भद्दिलपुरे नयरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोयरा सरिसया जाव नलकुब्बरसमाणा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म संसारभ-उव्विग्गा भीया जम्ममरणाओ मुंडा जाव पव्वइया ॥ सू० ११ ॥

हे देवानुप्रिय ! कृष्ण वासुदेव जैसे महाप्रतापी राजा की नौ योजन चौडी और बारह योजन लम्बी स्वर्गलोक सदृश इस द्वारका नगरी के उच्च नीच मध्यम कुलों में सामुदानिकभिक्षा के लिये घूमते हुए श्रमण निर्ग्रंथों को क्या आहार पानी नहीं मिलता है जिससे एक ही कुल में बार–बार आना पडता है ? ॥ सू० १० ॥

એવાજ ઉદાર ભાવથી ભિક્ષા આપી વિનયપૂર્વક પૂછ્યું.

હે દેવાનુપ્રિય ! કૃષ્ણવાસુદેવ જેવા મહાપ્રતાપી રાજાની નવ યોજન પહોળી અને બાર યોજન લાંબી સ્વર્ગલોક જેવી આ દ્વારકા નગરીના ઉચ્ચ નીચ ને મધ્યમ કુળોમાં સામુદાનિક ભિક્ષા માટે ફરતા શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને શું આહાર-પાણી મલતું નથી કે જેથી એકજ કુલમાં વારંવાર આવવું પડે છે ? (સૂ૦ ૧૦)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं ते अणगारा देवइं देविं एवं वयासी' ततः खलु तौ अनगारौ देवकीं देवीम् एवमवदताम्- 'णो खलु देवाणुप्पिये' नो खलु देवानुप्रिये ! 'कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवईए नयरीए जाव' कृष्णस्य वासुदेवस्य अस्यां द्वारावत्यां नगर्यां यावद् 'देवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्चणीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति' देवलोकभूतायां श्रमणा निर्ग्रन्था उच्चनीच यावदटन्तः भक्तपानं नो लभन्ते= हे देवकि ! अत्र द्वारावत्यां नगर्यां श्रमणा निर्ग्रन्था भिक्षां न लभन्ते इति न, किन्तु लभन्त एव । तथा 'णो चेव णं ताइं ताइं कुलाइं दोच्चंपि तच्चंपि भत्तपाणाए अणुप्पविसंति' नो चैव खलु तानि तानि कुलानि द्वितीयमपि तृतीयमपि वारं भक्तपानाय अनुप्रविशन्ति । तत्संदेहनिवारणार्थमाह-'एवं खलु इति' । एवं खलु देवानुप्रिये=हे देवानुप्रिये ! एवं खलु तत्र शङ्काऽस्माकं समानरूपदर्शनाज्जाता । समानरूपता चास्माकं सहोदरादित्वादिति तौ स्वपरिचयमाहतुः- 'अम्हे' इति । 'अम्हे भद्दिलपुरे नयरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोयरा' वयं भद्दिलपुरे नगरे नागस्य गाथापतेः पुत्राः सुलसाया भार्याया आत्मजाः षड्भ्रातरः सहोदराः, 'सरिसया जाव नलकुब्बरसमाणा' सदृशका यावत् नलकूबरसमानाः, 'सदृशकाः' इत्यारभ्य 'नलकूबरसमानाः' इत्यन्तः पाठः पूर्ववदवसेयः । 'अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए' अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके

देवकी का ऐसा प्रश्न सुनकर वे अनगार इस तरह कहने लगे-हे देवानुप्रिये ! कृष्ण वासुदेव की स्वर्गसदृश इस द्वारका नगरी में श्रमण निर्ग्रन्थों को आहार पानी नहीं मिलता है और वे एक घर में बार बार भिक्षा के लिये आते हैं, ऐसी बात नहीं है । किन्तु हे देवानुप्रिये ! हमारे समान रूप आदि के कारण, तुम्हारे मन में शङ्का हुई है । शङ्का का कारण यह है कि हम लोग भद्दिलपुरनिवासी नाग गाथापति के पुत्र एवं सुलसा के अङ्गजात, रूप लावण्य आदि से समान तथा नलकूबर के सदृश सुन्दर छ सहोदर भाई हैं । हम लोगों ने भगवान् अरिष्टनेमि के

દેવકીનો આવો પ્રશ્ન સાંભળીને તે અનગાર આમ કહેવા લાગ્યા—હે દેવાનુપ્રિયે ! કૃષ્ણવાસુદેવની સ્વર્ગ જેવી આ દ્વારકા નગરીમાં શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને આહાર પાણી મલતું નથી તથા તેઓ એક ઘરમાં વારંવાર ભિક્ષા માટે આવે છે, એવી વાત નથી. પરંતુ હે દેવાનુપ્રિયે ! અમારા એક સરખા રૂપ આદિના કારણે, તમારા મનમાં શંકા થઇ છે. શંકાનું કારણ એ છે કે અમે લોકો ભદ્દિલપુરનિવાસી નાગ ગાથાપતિના પુત્ર અને સુલસાના અંગજાત, રૂપ લાવણ્ય આદિથી સરખા તથા નલકૂબરના જેવા સુંદર છ સહોદર ભાઇઓ છીએ. અમોએ

'धम्मं' धर्मं 'सोच्चा' श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य 'णिसम्म' निशम्य=हृदयेनावधार्य 'संसारभउव्विग्गा' संसारभयोद्विग्नाः—संसाराद् यद् भयं तेन उद्विग्नाः—संसारभयोद्भ्रान्ता इत्यर्थः। 'भीया जम्ममरणाओ' भीता जन्ममरणात् 'मुंडा-जाव पव्वइया' मुण्डा यावत्प्रव्रजिताः, 'मुण्डा' इत्यारभ्य प्रव्रजिता इत्यन्तः पाठः पूर्ववदवसेयः ॥ सू० ११ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वइया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामो नमंसामो इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हामो। इच्छामो णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जाव अहासुहं देवाणुप्पिया। तए णं अम्हे अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरामो। तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा, तं नो खलु देवाणुप्पिये! ते चेव णं अम्हे, अम्हे णं अन्ने, देवई देविं एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू० १२ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वइया' ततः खलु वयं यस्मिन्नेव दिवसे प्रव्रजिताः, 'तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामो नमंसामो इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हामो' तस्मिन्नेव दिवसे

समीप धर्म सुनकर संसार के भय से उद्विग्न हो जन्ममरण से छुटकारा पाने के लिये प्रव्रज्या ग्रहण की ॥ सू० ११ ॥

उसके बाद हम लोगों ने जिस दिन दीक्षा ली उसी दिन से भगवान की आज्ञा प्राप्तकर बेले बेले पारणा करने की प्रतिज्ञा

ભગવાન અરિષ્ટનેમિની પાસે ધર્મ સાંભળી સંસારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈ જન્મમરણથી છુટવા માટે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી (સૂ૦ ૧૧)

ત્યાર પછી અમે જે દિવસે દીક્ષા લીધી તેજ દિવસથી ભગવાનની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી છટ્ઠ છટ્ઠ પારણાં કરવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી. અને તેજ પ્રમાણે છટ્ઠ છટ્ઠ પારણાં

अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दामहे नमस्यामः इममेतद्रूपम् अभिग्रहम्=प्रतिज्ञाविशेषम् अभिगृह्णीमः=स्वीकुर्मः । प्रतिज्ञास्वरूपमाह– 'इच्छामो णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जाव अहासुहं देवाणुप्पिया !' इच्छामः खलु हे भदन्त ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तो यावद्यथासुखं देवानुप्रियाः ! यावत्पदेन पूर्वोक्तः पाठः संग्राह्यः । अयं भावः–हे भगवन् ! भवदाज्ञया षष्ठषष्ठ–तपःकर्मणा यावज्जीवं विहर्तुमिच्छामः । तदा भगवानाज्ञपयामास–हे देवानुप्रियाः ! यथासुखं कुरुतेति । 'तए णं अम्हे अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरामो' ततः खलु वयम् अर्हताऽरिष्टनेमिना अभ्यनुज्ञाताः सन्तः यावज्जीवं षष्ठषष्ठेन यावद् विहरामः । 'तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा' तद्वयम् अद्य षष्ठक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां यावदटन्तः=प्रथमे प्रहरे स्वाध्यायं द्वितीये ध्यानं कृत्वा तृतीयप्रहरे भगवताऽऽदिष्टा उच्चनीचमध्यमानि कुलानि अटन्तः तव गृहमनुप्रविष्टाः । 'तं नो खलु देवाणुप्पिये !' तन्नो खलु हे देवानुप्रिये ! 'ते चेव णं अम्हे' त एव खलु वयम्, किन्तु 'अम्हे णं अन्ने' वयं खलु अन्ये' 'देवई देविं एवं वयइ' देवकीं देवीम् एवं वदति–एवं–पूर्वोक्तप्रकारेण देवकीं देवीं वदति=कथयति, 'वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए' उदित्वा यस्या दिशः प्रादुर्भूतः=मुनिद्वयस्य तृतीयसंघाटकः समागतः 'तामेव दिसं पडिगए' तस्यामेव दिशि प्रतिगतः=प्रतिनिवृत्तः ॥ सू० १२ ॥

ली, उसी अनुसार बेले बेले पारणा करते हैं, सो हम लोगों को आज बेले का पारणा है । इसलिये पहले पहर में स्वाध्याय करके दूसरे पहर में ध्यान धर के और तीसरे पहर में भगवान की आज्ञा प्राप्त करके हम तीन संघाडा से निकले और उच्च नीच मध्यम कुलों में सामुदानिक भिक्षा के लिये घूमते हुए तुम्हारे घर आये। अतः हे देवानुप्रिये ! जो अनगार पहिले आये वे दूसरे, बीच में आये

કરીએ છીએ. આજે અમારે બધાઓને છટ્ઠનું પારણું છે. તેથી અમે પહેલા પ્રહરમાં સ્વાધ્યાય કરીને, બીજા પ્રહરમાં ધ્યાન ધરીને અને ત્રીજા પ્રહરમાં ભગવાનની આજ્ઞા લઈ ત્રણ સંઘાડાથી નીકળી ઉચ્ચ, નીચ, મધ્યમ કુળોમાં સામુદાનિક ભિક્ષા માટે ફરતા ફરતા તમારે ઘેર આવ્યા. આથી હે દેવાનુપ્રિયે ! જે અનગાર પહેલા આવ્યા તે જુદા,

॥ मूलम् ॥

तए णं तीसे देवईए देवीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने । एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिया, तुमं णं देवाणुप्पिए ! अट्ठ पुत्ते पयाइस्ससि सरिसए जाव नलकुब्बरसमाणे, नो चेव णं भरहे वासे अण्णाओ अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्संति, तं णं मिच्छा । इमं पच्चक्खमेव दिस्सइ भरहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु एरिसए जाव पुत्ते पयायाओ, तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामित्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-लहुकरणजुत्तजोइयं जाणप्पवरं जाव उवट्ठवेंति, जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासइ ॥ सू० १३ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं' ततः=तृतीयसंघाटकगमनानन्तरं खलु 'तीसे देवईए देवीए' तस्या देवक्याः देव्याः, 'अयमेयारूवे' अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणप्रकारः 'अज्झत्थिए जाव' आध्यात्मिको=मानसिको यावद् विकल्पः 'समुप्पण्णे' समुत्पन्नः । 'एवं खलु अहं पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं कुमार-समणेणं' एवं खलु अहं पोलासपुरे नगरे अतिमुक्तेन कुमारश्रमणेन 'बालत्तणे'

वे दूसरे और हम दूसरे हैं । इस प्रकार देवकी देवी के मन की शंका दूर कर वह संघाडा अपने स्थान पर गया ॥ सू० १२ ॥

उन अनगारों के चले जाने पर उस देवकी देवी के आत्मा में इस प्रकारका मानसिक विकल्प उत्पन्न हुआ कि जब मैं छोटी थी, उस समय पोलासपुर नगर में अतिमुक्तक (एवन्ता) अनगार ने

વચમાં આવ્યા તે જુદા અને અમે જુદા છીએ. આ પ્રકારે દેવકી દેવીના મનની શંકા દૂર કરીને તે સંઘાડો પોતાને સ્થાને ગયો. (સૂ० ૧૨)

તે અનગારો ચાલ્યા ગયા પછી તે દેવકી દેવીના આત્મામાં એવો માનસિક વિકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે જ્યારે હું નાની હતી તે સમયે પોલાસપુર નગરમાં અતિમુકતક

वालत्वे=वाल्ये 'वागरिया' व्याकृता=उक्ता, किमुक्ता? इत्याह- 'तुमं णं देवाणुप्पिये! अट्ठ पुत्ते पयाइस्ससि' त्वं खलु हे देवानुप्रिये! अष्ट पुत्रान् प्रजनयिष्यसि। कीदृशानित्याह- 'सरिसए' इत्यादि। 'सरिसए जाव' सदृशकान् यावत्, यावत्पदेन-आकारेण वयसा कान्त्या च तुल्यानिति संग्राह्यम्; तथा 'नलकुव्वरसमाणे' नलकूवरसमानान्, 'नो चेव णं भरहे वासे अण्णाओ अम्मयाओ' नो चैव खलु भारते वर्षे अन्या अम्बाः=मातरः, 'तारिसए पुत्ते पयाइस्संति' तादृशकान् पुत्रान् प्रजनयिष्यन्ति; 'तं णं मिच्छा' तत्खलु मिथ्या=तस्यानगारस्य वचनं मिथ्या; 'इमं पच्चक्खमेव दिस्सइ' इदं प्रत्यक्षमेव दृश्यते यद् 'भरहे वासे' भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे 'अण्णाओ वि अम्मयाओ खलु' अन्या अपि अम्बाः खलु=मत्तोऽन्या अपि मातरः 'एरिसए जाव पुत्ते पयायाओ' ईदृशान् यावत् पुत्रान् प्रजाताः=प्रजनितवत्यः, अतिमुक्तकमुनिकथितसदृशान् पुत्रान् प्रजनितवत्य इति भावः, 'तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामि नमंसामि' तद्गच्छामि खलु अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दे नमस्यामि, 'वंदित्ता-नमंसित्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सामि' वन्दित्वा नमस्यित्वा इदं च खलु एतद्रूपं व्याकरणं=प्रश्नम्-अतिमुक्तोक्तं कथमन्यथा जातमिति प्रश्नं

मुझे कहा था-हे देवकी! तू आठ पुत्रों को जन्म देगी। तेरे वे सभी पुत्र आकार, वय और कान्ति आदि में समान होंगे और वे नलकूबर के सदृश सुन्दर होंगे। इस भारत वर्ष में दूसरी कोई माता ऐसे सुन्दर पुत्रों को जन्म नहीं दे सकेगी। परन्तु अतिमुक्तक अनगार (एवन्ता अनगार) के ये सभी कथन असत्य हुए; क्यों कि यह प्रत्यक्ष दिखायी दे रहा है जो इस भरत क्षेत्र में अन्य जननियों ने भी इस प्रकार के पुत्रों को जन्म दिया है।

(એવન્તા) અનગારે મને કહ્યું હતું કે હે દેવકી! તું આઠ પુત્રોને જન્મ આપશે. તારા એ બધા પુત્રો આકાર, વય તથા કાન્તિ આદિમાં સમાન થશે તથા તે નલકૂબરના જેવા સુંદર થશે. આ ભારતવર્ષમાં બીજી કોઇ માતા એવા સુંદર પુત્રોને જન્મ આપી શકશે નહિ. પરંતુ અતિમુક્તક અનગાર (એવન્તા અનગાર)નાં આ બધાં કથન અસત્ય થયાં; કેમકે આ પ્રત્યક્ષ જોવામાં આવે છે કે જે આ ભરત ક્ષેત્રમાં બીજી માતાઓએ પણ આવા પ્રકારના પુત્રોને જન્મ આપ્યો છે. અતિમુક્ત અનગારનાં વચન

प्रक्ष्यामि। अनगारवचनमन्यथा भवितुं न शक्नोति, दृश्यते चान्यथाभूतम्, अतो दोलायितं मे मनः, तस्माद् भगवदरिष्टनेमिसंनिधौ गत्वा तं वन्दित्वा प्रणम्य च तस्यानगारस्यान्यथावचनत्वे कारणं पृष्ट्वा स्वसंशयमुन्मूलयामीति भावः। 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=उपर्युक्तमभिप्रायं मनसि कृत्वा 'एवं संपेहेइ' एवं संप्रेक्षते=उक्तप्रकारेण विचारयति 'संपेहित्ता' सम्प्रेक्ष्य=विचार्य 'कोडुंबियपुरिसे' कौटुम्बिकपुरुषान्=सेवकजनान् 'सद्दावेइ' शब्दयति=आह्वयति, 'सद्दावित्ता' शब्दयित्वा 'एवं वयासी' एवमवदत्, 'लहुकरणजुत्तजोइयं' लघुकरणयुक्तयोजितम्-लघुकरणं=क्षिप्रकारित्वं तेन युक्तो लघुकरणयुक्तः=दक्षपुरुषः, तेन योजितम्=दक्षपुरुषयोजितम्, 'जाणप्पवरं' यानप्रवरं=धार्मिकरथम् उपस्थापयत, तद्वचनं श्रुत्वा तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषाः यानप्रवरम् उपस्थापयन्ति= आनयन्ति, सा देवकी, 'जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासइ' यथा देवानन्दा यावत्

अतिमुक्तक अनगार के वचन असत्य नहीं हो सकते, परन्तु फिरभी असत्य दीख रहे हैं। इसलिये मुझे उचित है कि भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि के पास जाऊँ, उन्हें वन्दन नमस्कार कर तथा उनसे पूछ कर अपने इस सन्देह को निवृत्त करूँ। वह देवकी इन बातों को अपने मन में विचारती है और बाद में अपने भृत्यों (सेवकों) को बुलाती है, तथा उनसे कहती है—हे देवानुप्रियो ! धार्मिक रथ को तैयार करो और रथ चलाने में चतुर सारथी के साथ रथ को मेरे पास ले आओ। देवकी की ऐसी आज्ञा सुन कर वे भृत्य (सेवक)-गण चतुर सारथी से युक्त धार्मिक रथ को देवकी के सामने उपस्थित करते हैं। उसके बाद वह देवकी जिस प्रकार महावीर स्वामी की माता देवानन्दा भगवान के समीप रथ पर चढ

અસત્ય હોઇ શકે નહિ. છતાં અસત્ય જેવું દેખાઈ રહ્યું છે. માટે મને ઉચિત છે કે ભગવાન અર્હંત અરિષ્ટનેમિની પાસે જાઉં અને તેમને વન્દન નમસ્કાર કરી તથા તેમને પૂછી મારા આ સંદેહની નિવૃત્તિ કરૂં. તે દેવકી એવા વિચારો મનમાં કરે છે અને પછી પોતાના ભૃત્યો (સેવકો) ને બોલાવે છે તથા તેમને કહે છે— હે દેવાનુપ્રિયો ! ધાર્મિક રથ તૈયાર કરો તથા રથ ચલાવવામાં ચતુર સારથીની સાથે રથને મારી પાસે લઇ આવો. દેવકીની એવી આજ્ઞા સાંભળીને તે ભૃત્ય (સેવક)-ગણ ચતુર સારથીથી યુકત ધાર્મિક રથને લઇ આવી દેવકીની સામે ઉપસ્થિત કરે છે. ત્યાર પછી તે દેવકી જે પ્રકારે મહાવીર સ્વામીની માતા દેવાનન્દા ભગવાન સમીપે રથ પર ચડીને દર્શન કરવા માટે ગઇ હતી તથા

पर्य्युपास्ते—यथा देवानन्दा महावीरजननी भगवतो महावीरस्योपासनामकरोत् तथैवेयमपि अर्हदरिष्टनेमिस्वामिनः उपासनां करोति स्मेति ॥ सू० १३ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी देवइं देविं एवं वयासी-से नूणं तव देवइ ! इमे छ अणगारे पासेत्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था, एवं खलु पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं तं चेव जाव णिग्गच्छसि, णिग्गच्छित्ता जेणेव ममं अंतियं हव्वमागया, से नूणं देवई देवि! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि। एवं खलु देवाणुप्पिये ! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णयरे णागे णामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० । तस्स णं णागस्स गाहावइस्स सुलसा णामं भारिया होत्था। सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव निमित्तिएणं वागरिया—एस णं दारिया णिंदू भविस्सइ । तए णं सा सुलसा बालप्पभिति हरिणेगमेसीदेव-भत्ता यावि होत्था । हरिणेगमेसिस्स पडिमं करेइ, करित्ता कल्लाकल्लिं ण्हाया जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया महरिहं पुप्फच्चणं करेइ, करित्ता जाणुपायवडिया पणामं करेइ, तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा ॥ सू० १४ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी देवइं देविं एवं

कर दर्शन करने के लिये गयी और वन्दना तथा नमस्कार कर उपासना करने लगी उसी प्रकार देवकी भी रथ पर बैठ कर अर्हत अरिष्टनेमि के समीप दर्शन करने के लिये गयी और वन्दन नमस्कार कर के भगवान की निरवद्य सेवा करने लगी ॥ सू० १३ ॥

बाद भगवान् अर्हत अरिष्टनेमि ने देवकी देवी से इस प्रकार

વન્દના અને નમસ્કાર કરી ઉપાસના કરવા લાગી હતી તે પ્રકારે રથ ઉપર બેસીને અર્હંત અરિષ્ટનેમિની પાસે દર્શન કરવા માટે ગઈ અને વન્દન નમસ્કાર કરીને ભગવાનની નિરવદ્ય સેવા કરવા લાગી. (સૂ૦ ૧૩)

બાદ ભગવાન અર્હંત અરિષ્ટનેમિએ દેવકી દેવીને આ પ્રકારે કહ્યું—હે દેવકી!

वयासी' ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः देवकीं देवीम् एवमवदत् 'से नूणं तव देवइ!' तन्नूनं तव देवकि!, 'तत्' इति वाक्योपन्यासे नूनमिति वितर्के; 'इमे छ अणगारे पासेत्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था' इमान् षडनगारान् दृष्ट्वा अयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत। इमान् षडनगरान् दृष्ट्वा तव मनसि विकल्पो जात इत्यर्थः। स च ईदृशः-'एवं खलु पोलासपुरे नयरे अइमुत्तेणं तं चेव जाव' एवं खलु पोलासपुरे नगरे अतिमुक्तेन तदेव यावत्=पोलासपुरे नगरेऽतिमुक्तोऽनगारो मामवोचत्, यत्त्वमेव ईदृशानां पुत्राणां जननी भविष्यसि, नान्या काऽपि भविष्यति भरतक्षेत्रे, दृश्यते चान्याऽपि जाता, कथमनगारवचनमन्यथा जातम्? इति अर्हदरिष्टनेमिसन्निधौ गत्वा शङ्काम् अपनेष्यामि; इति मनसि कृत्वा रथमारुह्य स्वगृहात् 'णिग्गच्छसि' निर्गच्छसि=निर्गताऽसि, 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य 'जेणेव मम अंतियं' यत्रैव ममान्तिकम्=मम समीपम् 'तेणेव' तत्रैव 'हव्वमागया' शीघ्रमागता, 'हव्वं' इति शीघ्रार्थे देशीशब्दः 'से नूणं देवईदेवि! अट्ठे समट्ठे?' स नूनं देवकी-

---

कहा—हे देवकी! आज इन छ अनगारों को देख कर तेरे हृदय में इस प्रकार विकल्प पैदा हुआ कि मुझे पोलासपुर नगर में अतिमुक्त (एवन्ता) अनगार ने इस प्रकार कहा था-"हे देवकी! तू आकार, वय और कान्ति आदि से तुल्य एवं नलकूबर के समान सुन्दर आठ पुत्रों को जन्म देगी, वैसे पुत्रों की जननी इस भरत क्षेत्र में और दूसरी कोई नहीं होगी"। परन्तु दूसरी माता ने भी अतिमुक्त से कथित लक्षणों वाले पुत्रों को जन्म दिया है। अतिमुक्त अनगार के वचन असत्य कैसे हुए? इस शङ्का को अर्हत् अरिष्टनेमि के पास जा कर दूर करूँगी। ऐसा मन में विचार करके रथपर चढकर अपने घर से निकलकर मेरे समीप आयी है। क्यों देवकी

આજે એ છ અનગારોને જોઇને તારા હૃદયમાં આ પ્રકારનો વિકલ્પ પેદા થયો કે મને પોલાસપુર નગરમાં અતિમુકત (એવન્તા) અનગારે આ પ્રકારે કહ્યું હતું—"હે દેવકી! તું આકાર, વય અને કાન્તિ આદિથી સરખાં, નળકૂબર જેવા સુંદર આઠ પુત્રોને જન્મ આપશે. એવા પુત્રોની માતા આ ભરતક્ષેત્રમાં બીજી કોઇ થશે નહિ." પરન્તુ બીજી માતાએ પણ અતિમુકતે કહેલાં લક્ષણોવાળા પુત્રોને જન્મ આપ્યા છે. અતિમુકત અનગારનાં વચન અસત્ય કેમ થયાં? આ શંકાને અર્હંત અરિષ્ટનેમિની પાસે જઇ દૂર કરીશ. એમ મનમાં વિચારીને રથ પર ચડીને પોતાને ઘેરથી નીકળી

देवि ! अर्थः समर्थः–हे देवकि ! सः=उपर्युक्तो मयोक्तोऽर्थः समर्थः=यथार्थः किम्? देवकी वदति–'हंता अत्थि' हन्त अस्ति– हे प्रभो ! सर्वथा सत्यमेतत् । 'हन्त' इति उक्तार्थस्वीकारे । भगवानाह—एवं खलु देवानुप्रिये ?= हे देवानुप्रिये ! अतिमुक्तवचनस्यान्यथात्वे यत्कारणं तदेवमवधारणीयं त्वया । 'तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णयरे णागे णामं गाहावइ' परिवसइ, तस्मिन् काले तस्मिन् समये भद्दिलपुरे नगरे नागो नाम गाथापतिः परिवसति, 'अड्ढे' आढ्यः=धनधान्यादिपरिपूर्णः । 'तस्स णं णागस्स गाहावइस्स सुलसा णामं भारिया होत्था' तस्य खलु नागस्य गाथापतेः सुलसा नाम भार्या आसीत् । 'सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव' सा सुलसा गाथापत्नी बालत्व एव 'नेमित्तिएणं' नैमित्तिकेन–नैमित्तिकः=भविष्यद्वेत्ता तेन, पितुरग्रे 'वागरिया' व्याकृता = उक्ता, 'एसा णं दारिया णिंदू भविस्सइ' एषा खलु दारिका मृतवत्सा भविष्यति । 'णिंदू' इति मृतवत्सार्थो देशीशब्दः । 'तए णं' ततः=नैमित्तिककथनानन्तरं खलु 'सा सुलसा बालप्पभिति चेव' सा

देवी ! यह बात ठीक है ?

हाँ; भगवन् ! आप सर्वज्ञ हैं, सब कुछ जानते हैं, आपने जो कहा है सब सत्य है ।

भगवान ने कहा—हे देवानुप्रिये ! इसका समाधान सुनो। उस काल उस समय में भद्दिलपुर नामक नगर था । उस नगर में धन–धान्य आदि से सम्पन्न नाग नामक गाथापति रहता था । उस नाग गाथापति की पत्नी का नाम सुलसा था । वह सुलसा गाथापत्नी जब बाल अवस्था में थी उस समय भविष्यवक्ता नैमित्तिक ने उसके पितासे इस प्रकार कहा था कि यह बालिका मृत-

---

મારી પાસે તું આવી છે. કેમ દેવકી દેવી ! આ વાત ઠીક છે ?

હા, ભગવાન, આપ સર્વજ્ઞ છો, સર્વ કાંઇ જાણો છો; આપે જે કહ્યું છે તે બધું સત્ય છે.

ભગવાને કહ્યું— હે દેવાનુપ્રિયે ! એનું સમાધાન સાંભળો :— તે કાલ તે સમયે ભદ્દિલપુર નામે નગર હતું. તે નગરમાં ધન–ધાન્ય આદિથી સમ્પન્ન નાગ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તે નાગ ગાથાપતિની પત્નીનું નામ સુલસા હતું. તે સુલસા ગાથાપત્ની જ્યારે બાલ્ય અવસ્થામાં હતી તે સમયે ભવિષ્યવકતા નૈમિત્તિકે તેના પિતાને એમ કહ્યું હતું કે— આ બાલિકા મૃતવન્ધ્યા થશે. ત્યાર પછી તે

सुलसा बालप्रभृत्येव=बाल्यकालमारभ्यैव 'हरिणेगमेसिदेवभत्ता यावि होत्था' हरिनैगमेषिदेवभक्ता चापि अभवत् । 'हरिणेगमेसिस्स' हरिनैगमेषिणः 'कल्ला-कल्लिं' कल्यं कल्यम्=प्रतिदिनं 'ण्हाया' स्नाता=कृतस्नाना 'जाव पायच्छित्ता' यावत् प्रायश्चित्ता-यावच्छब्देन कृतबलिकर्मा=दत्तवायसाद्यर्थान्नादिभागा, कृत-कौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता= कृतमषीतिलकादिकौतुकदध्यक्षतादिमङ्गलकृत्यरूपदुःस्वप्ना-दिदोषविघातकप्रायश्चित्ता, 'उल्लपडसाडिया' आर्द्रपटशाटिका=परिधृतार्द्रवसना, 'महरिहं' महार्हम्=देवोचितम्, 'पुप्फच्चणं करेइ' पुष्पार्चनं करोति,' करित्ता' कृत्वा 'जाणुपायवडिया' जानुपादपतिता=जानुपादाभ्यां कृत्वा पतिता 'पणामं करेइ' प्रणामं करोति, 'तओ पच्छा आहारेइ वा नीहारेइ वा' ततः पश्चात् आहारयति वा नीहारयति वा ॥ सू० १४ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाण-सुस्सूसाए हरिणेगमेसी देवे आराहिए यावि होत्था । तए णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए सुलसं गाहावइणिं तुमं च णं दो वि समउउयाओ करेइ । तए णं तुब्भे दो वि सममेव गब्भे गिण्हह, सममेव गब्भे

वन्ध्या होगी । उसके बाद वह सुलसा अपने बाल्यकाल से ही हरिणैगमेषी देवता की भक्त हो गयी । उसने हरिणैगमेषी देव की प्रतिमा बनाई । अनन्तर प्रातःकाल स्नान कर पशु-पक्षि आदि प्राणियों के लिये अन्न आदि निकालने रूप बलिकर्म किया, और दुःस्वप्न आदि दोष निवारक मषीतिलकादिरूप कौतुक-मंगल कृत्य किये । बाद गीली साडी पहिनकर देवोचित पुष्पार्चन कर प्रणाम करती थी, और बाद आहार आदि क्रिया करती थी ॥ सू० १४ ॥

સુલસા પોતાના બાલ્યકાળથી જ હરિણૈગમેષી દેવતાની ભક્ત બની ગઈ. તેણે હરિણૈગમેષી દેવની પ્રતિમા બનાવી. પછી પ્રાતઃકાલમાં સ્નાન કરી પશુ પક્ષી આદિ પ્રાણિઓને માટે અન્ન વગેરે ભાગ જુદો કાઢવા રૂપ બલિકર્મ કરતી તથા દુઃસ્વપ્ન આદિ દોષ નિવારક મષીતિલકાદિરૂપ કૌતુક મંગલ કૃત્ય કરતી. પછી ભીની સાડી પહેરીને દેવોચિત પુષ્પાર્ચન કરી પ્રણામ કરતી અને ત્યાર પછી આહારાદિ ક્રિયા કરતી હતી (સૂ૦ ૧૪)

परिवहह, सममेव दारए पयायह। तए णं सा सुलसा गाहावइणी विणिहायमावण्णे दारए पयायइ। तए णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठाए विणिहायमावण्णे दारए करतलसंपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता तव अंतियं साहरइ। तं समयं च णं तुमंपि णवण्हं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि, जे वि य णं देवाणुप्पिए! तव पुत्ता ते वि य तव अंतियाओ करयलसंपुडेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरइ, तं तव चेव णं देवइ! एए पुत्ता, णो चेव सुलसाए गाहावइणीए ॥सू० १५॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए' ततः खलु तस्याः सुलसाया गाथापत्न्याः 'भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए' भक्तिबहुमानशुश्रूषया-भक्तिः=अनुरागः, बहुमानं=प्रचुरः सत्कारः, शुश्रूषा=सेवा, एतैः कृत्वा 'हरिणेगमेसी' हरिणैगमेषी=हरेरिन्द्रस्य नैगमम्=आज्ञाम् इच्छतीति हरिणैगमेषी=इन्द्राज्ञापरिपालको 'देवे' देवः 'आराहिए यावि होत्था' आराधितश्चाप्यभवत्=प्रसन्नो जातः। 'तए णं से हरिणेगमेसी देवे' ततः खलु स हरिणैगमेषी देवः 'सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए' सुलसाया गाथापत्न्या अनुकम्पनार्थम् 'सुलसं गाहावइणिं तुमं च णं दोवि' सुलसां गाथापत्नीम् त्वां च खलु द्वे अपि 'समउउयाओ' समऋतुके 'करेइ' करोति। 'तए णं' ततः खलु 'तुब्भे दोवि' युवां द्वे अपि, 'सममेव' समानकाल एव 'गब्भे' गर्भौ 'गिण्हह' गृह्णीथः, 'सममेव गब्भे परिवहह, सममेव दारए पयायह'

उसके बाद उस सुलसा गाथापत्नी की भक्ति, बहुमान एवं शुश्रूषा से वह हरिणैगमेषी देव प्रसन्न हुआ। बाद हरिणैगमेषी ने सुलसा गाथापत्नी की अनुकम्पा के लिये सुलसा गाथापत्नी को और तुम्हें एक काल में ऋतुमती करता था। अनन्तर तुम दोनों साथ ही गर्भ को धारण करती और साथही उनका पालन

ત્યાર પછી તે સુલસા ગાથાપત્નીની ભક્તિ તથા બહુમાન શુશ્રૂષાથી તે હરિ-ણૈગમેષી દેવ પ્રસન્ન થઈ ગયો. બાદ હરિણૈગમેષીએ સુલસા ગાથાપત્નીની અનુકંપાને લીધે સુલસા ગાથાપત્નીને તેમજ તને એકજ વખતે ઋતુમતી કરતો હતો. અનન્તર તમે બન્ને સાથેજ ગર્ભ ધારણ કરતી તથા સાથેજ તેનું પાલન કરતી અને તમે

समममेव गर्भौ परिवहथः, समममेव दारकौ प्रजनयथः । 'तए णं सा सुलसा गाहावइणी' ततः खलु सा सुलसा गाथापत्नी 'विणिहायमावण्णे' विनिघातमापन्नान्=मृतान् 'दारए पयायइ' दारकान् प्रजनयति । 'तए णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठाए' ततः खलु स हरिणैगमेषी देवः सुलसाया गाथापत्न्या अनुकम्पनार्थम् 'विणिहायमावण्णे दारए करतलसंपुडेणं गिण्हइ' विनिघातमापन्नान् दारकान्=मृतान् बालकान् करतलसंपुटेन गृह्णाति 'गिण्हित्ता तव अंतियं' गृहीत्वा तव अन्तिकं 'साहरइ' समाहरति=आनयति 'तं समयं च णं' तस्मिन् समये च खलु 'तुमंपि णवण्हं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि' त्वमपि नवानां मासानाम् सुकुमारदारकान् प्रसूषे=प्रजनितवती । 'जेवि य णं देवाणुप्पिये! तव पुत्ता ते वि य तव अंतियाओ करयलसंपुडेणं गिण्हइ' येऽपि च खलु हे देवानुप्रिये! तव पुत्राः तानपि च तवान्तिकात् करतलसंपुटेन गृह्णाति, 'गिण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए' गृहीत्वा सुलसाया गाथापत्न्या अन्तिके 'साहरइ' समाहरति 'तं' तत्=तस्मात्कारणात् 'तव चेव णं देवइ!' तवैव खलु हे देवकि! 'एए पुत्ता' एते पुत्राः सन्ति 'णो चेव सुलसाए गाहावइणीए' नो चैव सुलसाया गाथापत्न्या एते पुत्राः ॥ सू० १५ ॥

करती तथा तुम दोनों साथही बालकों को जन्म देती थीं; परन्तु सुलसा गाथापत्नीके बालक मरे हुए जन्मते थे। अनन्तर हरिणैगमेषी देवने सुलसा की अनुकम्पा के लिये मरे हुए बालक को अपने हाथों से उठा कर तुम्हारे समीप ले आता था। उस समय तू भी नौ महीना साडे सात दिन बीतने पर सुकुमार पुत्रों को जन्म देती थी। जो जो तुम्हारे पुत्र थे उनको हरिणैगमेषी देवने तुम्हारे पास से अपने हाथों से उठा कर सुलसा गाथापत्नी के पास रख दिये। सो हे देवकी! अतिमुक्तक (एवन्ता) अनगार के वचन सत्य हैं। ये सभी तुम्हारे ही पुत्र हैं, न कि सुलसा गाथापत्नी के॥ सू० १५ ॥

બન્ને સાથે જ બાળકોને જન્મ આપતી હતી. પરન્તુ સુલસા ગાથાપત્નીને બાળકો મરેલા જનમતા હતા. પછી હરિણૈગમેષી દેવે સુલસાની અનુકંપાને લીધે મરેલા બાળકોને પોતાના હાથેથી ઉપાડી તમારી પાસે લાવી મુકતો હતો. તે સમયે તૂં પણ નવ મહિના અને સાડા સાત રાત વીત્યા પછી સુકુમાર પુત્રોને જન્મ આપતી હતી. જે જે તારા પુત્રો હતા તેને હરિણૈગમેષી દેવ પોતાના હાથે ઉપાડી સુલસા ગાથા-

॥ मूलम् ॥

तए णं सा देवई देवी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, ते छप्पि अणगारे वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता आगयपण्हुया पप्पुयलोयणा कंचुयपडिक्खित्तया दरियवलयबाहा धाराहयकलंबपुप्फगं पिव समूससियरोमकूवा ते छप्पि अणगारे अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी२ सुचिरं णिरिक्खइ, णिरिक्खित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता, अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं णयरिं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव सए वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ ॥ सू० १६ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं सा देवई देवी' ततः खलु सा देवकी देवी 'अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव

उसके बाद देवकी देवीने अर्हत् अरिष्टनेमि के मुख से इस वृत्तान्त को सुना और उसे हृदय में अवधारित किया। बाद हृष्ट-

પત્નીના પાસે મુકી હતી. માટે હે દેવકી! અતિમુક્તક (એવન્તા) અનગારનાં વચન સત્ય છે. આ બધા તારા જ પુત્રો છે, નહિ કે સુલસા ગાથાપત્નીના. (સૂ૦ ૧૫)

ત્યારપછી તે દેવકી દેવીએ અર્હત્ અરિષ્ટનેમિના મુખેથી આ વૃત્તાન્ત સાંભળીને તે વાતને પોતાના હૃદયમાં અવધારિત કરી. પછી હૃષ્ટ-તુષ્ટ-હૃદયથી અર્હત્ અરિષ્ટ-

हियया' अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके इममर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट यावद्धृदया, इदं व्याख्यातपूर्वम्; 'अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते छप्पि अणगारे वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता' अर्हन्तमरिष्टनेमिम् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव ते षडनगाराः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तान् षडपि अनगारान् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा 'आगयपण्हुया' आगतप्रस्नुता–आगतं प्रस्नुतं यस्याः सा–स्वीयपुत्रदर्शनेन संजातस्तन्यप्रस्रवणा 'पप्फुयलोयणा' प्रप्लुतलोचना –प्रप्लुते लोचने यस्याः सा–हर्षाश्रुपूर्णनयना, 'कञ्चुयपरिक्खित्तया–कञ्चुक-परिक्षिप्तका–स्वपुत्रावलोकनजनितानन्दप्रकर्षेण स्थूलशरीरतया त्रुटितकञ्चुकबन्धना –त्रुटितकञ्चुककशेत्यर्थः, 'दरियवलयबाहू' दीर्णवलयबाहुः–दीर्णौ=संकुचितौ वलयौ बाहू च यस्याः सा, 'धाराहयकलंबपुप्फगं पिव' धाराहतकदम्बपुष्पकमिव –धारया=वर्षाधारया आहतं यत्कदम्बपुष्पकं=कदम्बकुसुमं तदिव 'समूससियरोमकूवा' समुच्छ्वसितरोमकूपा–समुच्छ्वसितः=पुलकितो रोमकूपो =रोमराजिर्यस्याः सा तथा–धारानिपाताहतं कदम्बपुष्पमेकस्मिन्नेव काले विकसति, तथैवेयं पुलकितसकलरोमा जाता। ततः 'ते छप्पि अणगारे'

तुष्ट हृदय से अर्हत् अरिष्टनेमि को वन्दन नमस्कार किया। अनन्तर जहाँ वे छ अनगार थे वहाँ गयी और उन्हें वन्दन नमस्कार किया। उन अनगारों को देखकर पुत्रप्रेम के कारण उसके स्तनों से दूध झरने लगा। हर्ष के कारण उसकी आँखों में आँसू भर आये। एवं अत्यन्त हर्ष के कारण शरीर के फूलने से कञ्चुकी की कसें टूट गयीं और भुजाओं के आभूषण तथा हाथ की चूडियां तंग होने लगीं। वर्षा की धारा पडने से जिस प्रकार कदम्बपुष्प एक साथ ही कुसुमित हो जाते हैं, उसी प्रकार उसके शरीर के सभी रोम पुलकित हो गये। उन छओं अनगारों को अनिमेष दृष्टि से देखती

નેમિને વંદન નમસ્કાર કર્યા. અને ત્યાર પછી જ્યાં તે છ અનગાર હતા ત્યાં ગઇ અને તેમને વંદન નમસ્કાર કર્યા. તે અનગારોને જોઇ પુત્રપ્રેમને કારણે તેના સ્તનોમાંથી દૂધ ઝરવા લાગ્યું. હર્ષના કારણથી તેની આંખોમાં હર્ષાશ્રુ ભરાઇ આવ્યા. હર્ષથી શરીર ફુલવાના કારણે કંચુકીની કસો તૂટી ગયી અને ભુજાઓ ઉપરનાં ઘરેણાં તથા હાથની ચૂડિઓ ટૂંકી થવા લાગી. વરસાદની ધારા પડવાથી જેમ કદંબપુષ્પ એકી–વખતે જ વિકસિત થઇ જાય છે તે પ્રકારે તેના શરીરનાં બધાં રૂંવાડા પુલકિત થઇ

तान् षडपि अनगारान्, 'अणिमिसाए दिट्ठीए' अनिमिषया दृष्ट्या=निमेषरहितया निश्चलया दृष्ट्या 'पेहमाणी २' प्रेक्षमाणा२=पुनः पुनरवलोकयन्ती 'सुचिरं णिरिक्खइ' सुचिरं निरीक्षते-अनिमिषेण लोचनेन पश्यन्त्यपि अतृप्ता सती बहुकालमवलोकयतीति भावः, 'णिरिक्खित्ता वंदइ णमंसइ' निरीक्ष्य वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य अर्हन्तमरिष्टनेमिं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणम् करोति, कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा 'तमेव धम्मियं जाणप्पवरं' तमेव धार्मिकं यानप्रवरं-धार्मिकम्=केवलधर्मकृत्यकरणाय परिरक्षितं रथमिति भावः ; 'दुरोहति दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं णयरिं अणुप्पविसइ' दूरोहति=दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य द्वारावतीं नगरीम् अनुप्रविशति, 'अणुपविसित्ता, जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला' अनुप्रविश्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, उपस्थानशाला=उपस्थानमण्डपः; 'तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव सए वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ' तत्रैव उपागच्छति उपागत्य धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव स्वकं वासगृहम् यत्रैव स्वकं शयनीयम्, शयनीयं=शय्या, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्वके शयनीये 'निसीयइ' निषीदति=उपविशति ॥ सू० १६ ॥

हुई बहुत काल तक निरखती रही। बाद में उन्हें वन्दन नमस्कार कर भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि के पास आयी और भगवान को विधिपूर्वक वन्दन नमस्कार किया। बाद में अपने धार्मिक रथ पर चढकर द्वारका के मध्य होकर चली और क्रम से अपनी बाहरी उपस्थानशाला (बैठक) में पहुँची, वहाँ अपने श्रेष्ठ धार्मिक रथ

ગયાં. તે છએ અનગારોને અનિમેષદૃષ્ટિથી જોતી થકી બહુકાલ સુધી નિરખવા લાગી. પછી તેમને વંદન-નમસ્કાર કરી ભગવાન અર્હત અરિષ્ટનેમિની પાસે આવી. અને ભગવાનને વિધિપૂર્વક વંદન નમસ્કાર કર્યા પછી પોતાના ધાર્મિક રથ ઉપર ચઢીને દ્વારકાની વચ્ચોવચ્ચ થઈને ચાલી અને ક્રમથી પોતાની બહારની ઉપસ્થાનશાલા

॥ मूलम् ॥

तए णं तीसे देवईए देवीए अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पण्णे—एवं खलु अहं सरिसए जाव नलकुब्बरसमाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणए समणुभूए, एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ, तं धण्णाओ णं ताओ अम्माओ जासिं मण्णे णियगकुच्छिसंभूयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावयाइं मम्मणपजंपियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगे णिवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिए, अहं णं अधन्ना, अपुन्ना, अकयपुन्ना एत्तो एगतरमवि न पत्ता, (एवं) ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ ॥ सू० १७ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तीसे देवईए देवीए' ततः खलु तस्या देवक्या देव्याः 'अयं अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे' अयमाध्यात्मिकश्चिन्तितः प्रार्थितो मनोगतः संकल्पः—आध्यात्मिकः=अध्यात्मभवः स्वपुत्रविषयकः चिन्तितः=चिन्ताविषयीकृतः, प्रार्थितः=अभिलषितः, मनोगतः=मनःस्थितः संकल्पः=विचारः, 'समुप्पण्णे' समुत्पन्नः। 'एवं खलु अहं सरिसए

से उतरी तथा अपने भवनमें जाकर अपनी सुकोमल शय्या पर बैठी ॥ सू० १६ ॥

उसके बाद वह देवकी इस प्रकार पुत्रसम्बन्धी चिन्ता से युक्त अभिलषित (चिन्तन किये हुए) विचार अपने मन में करने लगी कि मैंने आकार, वय और कान्ति से समान यावत् नलकूबर

(બેઠક)માં પહોંચી. ત્યાં પોતાના શ્રેષ્ઠ ધાર્મિક રથ ઉપરથી ઉતરીને પોતાના ભવનમાં જઈને પોતાની સુકોમલ શય્યાપર બેઠી (સૂ૦ ૧૬)

ત્યારપછી તે દેવકી પુત્રસંબંધી ચિંતાથી યુકત અભિલષિત (વિચારેલા વિચારો) પોતાના મનમાં આ પ્રમાણે કરવા લાગી કે-મેં આકાર, વય તથા કાન્તિમાં સરખા

जाव नलकुब्बरसमाणे सत्त पुत्ता पयाया' एवं खलु अहं सदृशकान् यावत् नलकूवरसमानान् सप्त पुत्रान् प्रजाता=प्रजनितवती, 'नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणए समणुभूए' न चैव खलु मया एकस्यापि पुत्रस्य बालत्वम् समनुभूतम्=नानुभूतमित्यर्थः, 'एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छइ' एषोऽपि च खलु कृष्णो वासुदेवः षण्णां मासानां ममान्तिकं पादवन्दको हव्वमागच्छति, 'हव्व' शब्दोऽत्र पश्चादर्थकः, तस्य च मासशब्देन सहान्वयः। षण्मासानन्तरं मम पादौ वन्दितुमागच्छतीति भावः। 'तं' तस्मात् कारणात्, 'धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जासिं मण्णे' धन्याः खलु ता अम्बाः यासां मन्ये 'णियगकुच्छिसंभूयाइं' निजककुक्षिसंभूतानि–निजकुक्षेः सम्भूतानि निजकुक्षिसंभूतानि–स्वोदरजातानि 'थणदुद्धलुद्धयाइं' स्तनदुग्धलुब्धकानि–स्तनदुग्धस्य लुब्धकानि=स्तनदुग्धे संजातस्पृहाणि, 'महुरसमुल्लावयाइं' मधुरसमुल्लापकानि–मधुरः समुल्लापको=बालभाषणं येषां तानि, स्तनपानार्थं बाला मनोहरैः सम्भाषणैर्मातॄरनुकूलयन्तीति बालस्वभावः। 'मम्मणपजंपियाइं' मम्मणप्रजल्पितानि–'मम्मणं' इत्यव्यक्तध्वनिरूपं प्रजल्पितं=भाषणं येषां तानि, 'थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं' स्तनमूलकक्षदेशभागमभिसरन्ति=अभिगच्छन्ति 'मुद्धयाइं' मुग्धकानि=भद्रकाणि, पुनश्च 'कोमलकमलोवमेहिं' कोम-

---

सदृश सुन्दर सात पुत्रों को जन्म दिया, परन्तु उन पुत्रों में से किसीभी पुत्र का बालक्रीडाजनित आनन्द का अनुभव नहीं किया। यह कृष्ण भी मेरे पास चरण वन्दन के लिये छे–छे महीने के बाद आता है, इसलिये मैं समझती हूँ कि वे माताएँ भाग्यशालिनी हैं कि–जिनकी कूंख से उत्पन्न हुए बच्चे दूध के लिये अपनी मनोहर तुतली बोली से उन्हें आकर्षित करते हैं और 'मम्मण' शब्द को उच्चारण करते हुए स्तनमूल से लेकर कक्ष (काँख) तक के भाग में अभिसरण करते रहते हैं। फिर वे मुग्ध बालक बाद में अपनी

નલકૂબર જેવા સાત પુત્રોને જન્મ આપ્યા, પરન્તુ તે પુત્રોમાંથી કોઇપણ પુત્રના બાલક્રીડાથી થતા આનંદનો અનુભવ હું કરી શકી નહિ. આ કૃષ્ણ પણ મારી પાસે ચરણવંદન માટે છ–છ મહિના પછી આવે છે આથી હું માનું છું કે તે માતાઓ ભાગ્યશાલિની છે કે જેઓની કૂંખથી ઉત્પન્ન થતાં બાળકો દૂધને માટે પોતાની મનોહર તોતડી બોલીથી તેમને આકર્ષિત કરે છે, અને 'મમ્મણ' શબ્દનું ઉચ્ચારણ કરી સ્તનના મૂળથી કાંખ સુધીનો ભાગમાં અભિસરણ કરતાં રહે છે. પછી તે મુગ્ધ

लकमलोपमैः=मृदुकमलतुल्यैः 'हत्थेहिं' हस्तैः कृत्वा मातृभिः 'गिण्हिऊण' गृहीत्वा 'उच्छंगे' उत्सङ्गे=क्रोडे 'णिवेसियाइं' निवेशितानि=उपवेशितानि अपत्यानि 'देंति' ददति, किम् ? इत्याह–'समुल्लावए सुमहुरे' समुल्लापकान् सुमधुरान्=मनोहरान्, तथा 'पुणो पुणो मंजुलप्पभणिए' पुनः पुनः मञ्जुलप्रभणितान्=सुकोमलवचनावलिरूपान्, बाला एतादृशं मनोहरं शब्दं स्वस्वमातरं श्रावयन्ति। 'अहं णं अधन्ना, अपुन्ना, अकयपुन्ना' अहं खलु अधन्या अपुण्या अकृतपुण्या–अधन्या=अभाग्या, अपुण्या=पुण्यरहिता, अकृतपुण्या=अविहितपुण्याचरणा, 'जं' यत् 'एत्तो' इतः=एषु विविधबालविनोदजनितसुखेषु मध्ये 'एगतरमवि' एकतरमपि, 'न पत्ता' न प्राप्ता–अहं न प्राप्ताऽस्मि ['एवं' अनेन प्रकारेण,] 'ओहयमणसंकप्पा' अपहतमनःसंकल्पा–अपहतो=भग्नो मनःसंकल्पो यस्याः सा–भग्नमनोरथा 'जाव' यावत् 'झियायइ' ध्यायति=आर्तध्यानं करोति ॥ सू० १७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव विभूसिए देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ। तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं पासइ, पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता देवइं देविं एवं वयासी–अन्नया णं अम्मो! तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव भवह, किं णं अम्मो! अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह। तए णं सा देवई देवी कण्हं वासु-

---

माँ के द्वारा कोमल-कमल-सदृश हाथों से उठाकर गोदी में बैठाये जाने पर दूध पीते हुए अपनी माँ से तुतले शब्दों में बातें करते हैं और मीठी२ बोली बोला करते हैं। मैं अधन्य हूँ, अपुण्य हूँ, मैंने पुण्य नहीं किया, इसलिये मैं अपनी सन्तान की बालक्रीडा का आनन्दानुभव नहीं कर सकी। इस प्रकार वह देवकी खिन्नहृदय से विचार करने लगी ॥ सू० १७ ॥

બાલકોને પોતાની માતાઓ જ્યારે કોમલ કમળ જેવા હાથવડે ઉપાડીને પોતાના ખોળામાં બેસાડે ત્યારે તે દૂધ ધાવતાં ધાવતાં પોતપોતાની મા સાથે તોતડા શબ્દોમાં વાતો કરે છે તથા મીઠી મીઠી બોલી બોલે છે. હું અધન્ય છું, અપુણ્ય છું, મેં પુણ્ય કર્યું નથી, તેથી હું મારાં સંતાનની બાલક્રીડાનો આનંદ અનુભવ કરી શકી નથી. આ પ્રકારે તે દેવકી ખિન્નહૃદયથી વિચાર કરવા લાગી. (સૂ૦ ૧૭)

देवं एवं वयासी–एवं खलु अहं पुत्ता! सरिसए जाव समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणे अणुभूए, तुमं पि य णं पुत्ता! ममं छण्हं छण्हं मासाणं अंतियं पायवंदए हव्वमागच्छसि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव झियामि ॥ सू० १८ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं इत्यादि । 'तए णं से कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव विभूसिए' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः स्नातो यावद् विभूषितः, 'देवईए देवीए पायवंदए हव्वमागच्छइ' देवक्या देव्याः पादवन्दकः हव्वं=शीघ्रमागच्छति 'तए णं से कण्हे वासुदेवे ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः 'देवइं देविं पासइ' देवकीं देवीं पश्यति, 'पासित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ' दृष्ट्वा देवक्या देव्याः पादग्रहणं करोति=चरणवन्दनं करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'देवइं देविं' देवकीं देवीम् 'एवं वयासी' एवमवदत्–'अण्णया णं अम्मो!' अन्यदा खलु अम्ब! 'तुब्भे ममं पासित्ता हट्ठ जाव भवह' यूयं मां दृष्ट्वा, हृष्ट यावत्=हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता इत्यादि पूर्वोक्तं विज्ञेयम्, भवथ, 'किं णं अम्मो!' किं खलु अम्ब! 'अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह' अद्य यूयम् अवहत यावत् ध्यायथ, अवहतमनः–संकल्पा यावत् पूर्वोक्तोऽर्थोऽनुसन्धेयः,

उसके बाद वह कृष्ण वासुदेव स्नान करके और यावत् सभी अलंकारों से अलंकृत हो देवकी देवी के चरणवन्दन के लिये आये, वहाँ आकर उनके चरण में जाकर वन्दन किया और इस प्रकार कहा– हे माता! जब मैं पहिले तुम्हारे चरणवन्दन के लिये आता था तब उस समय मुझे देखकर तुम्हारा हृदय आनन्दित हो उठता था, परन्तु आज तुम्हारी दशा दूसरी ही दिखाई दे रही है। क्यों माता! तुम दुःखित मनसे उदास होकर आज क्या सोच

ત્યારપછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવ સ્નાન કરીને તથા તમામ અલંકારોથી વિભૂષિત થઇ દેવકી દેવીનાં ચરણવંદન માટે આવ્યા, ત્યાં આવીને તેનાં ચરણે વંદન કર્યાં, તથા આ

ध्यायथ=चिन्तयथ। 'तए णं सा देवई देवी' ततः खलु सा देवकी देवी 'कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्–'एवं खलु अहं पुत्ता' एवं खलु अहं पुत्र! 'सरिसए जाव समाणे' सदृशकान् यावत् समानान्–समानान्=नलकूवरसमानान्, 'सत्त पुत्ते पयाया' सप्त पुत्रान् प्रजाता=प्रजनितवती, 'नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणे अणुभूए' नो चैव खलु मया एकस्यापि बालत्वम् अनुभूतम्, 'तुमं पि य णं पुत्ता' त्वमपि च खलु पुत्र!=हे पुत्र! त्वमपि च खलु, 'ममं छण्हं छण्हं मासाणं अंतियं' मम षण्णां षण्णां मासानाम् अन्तिकं 'पायवंदए हव्वमागच्छसि' पादवन्दको हव्यमागच्छसि–त्वमपि ममान्तिकं षण्मासानन्तरं पादौ वन्दितुमागच्छसीति भावः। 'तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव झियामि=तद् धन्याः खलु ता अम्बा यावद् ध्यायामि, व्याख्यातमिदमन्यत्र ॥ सू० १८ ॥

रही हो?

उसके बाद देवकी ने कहा–हे पुत्र! आकार, वय और कान्ति में समान, यावत् नलकूबर के समान सुन्दर सात पुत्रों को मैंने जन्म दिया। परन्तु मैंने एक की भी बालक्रीडा का अनुभव नहीं किया। हे पुत्र! तुम भी मेरे पास चरण में वन्दन करने के लिये छ–छ महीने के बाद आते हो। इसलिये मै समझती हूँ कि वे माताएँ धन्य हैं, पुण्यशालिनी हैं, उन्होंने पुण्याचरण किया है जोकि अपनी सन्तान के बालकपन का अनुभव करती हैं, इसी बात को सोचती हुई दुःखितहृदय से उदासीन होकर बैठी हूँ ॥ सू० १८ ॥

प्रकारे कह्युं :– हे माता! ज्यारे हुं पहेलां तमने चरणवंदन करवा माटे आवतो हतो त्यारे मने जोईने तमारुं हृदय आनंदित थई जतुं हतुं, परंतु आज तमारी दशा बीजीज जोवामां आवे छे. केम माता! तमे दुःखित मनथी उदास बनी आज शुं शोच करी रह्यां छो?

त्यारपछी देवकीए कह्युं—हे पुत्र! आकार, वय अने कान्तिमां एक सरखा यावत् नलकूबर जेवा सुंदर सात पुत्रोने में जन्म आप्या. परंतु में एकेयनी बालक्रीडानो अनुभव कर्यो नथी. हे पुत्र! तुं पण मारी पासे चरणवंदन माटे छ–छ महिने आवे छे. आथी हुं समजुं छुं के ते माताओ धन्य छे, पुण्यशालिनी छे, तेमणे पुण्याचरण कर्यां छे के जे पोतानां संतानोना बालपणांनो अनुभव करे छे. आ वातनो शोच करती थकी दुःखित हृदयथी उदासीन थई बेठी छुं. (सू. १८)

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं एवं वयासी-मा णं तुब्भे अम्मो ! ओहय० जाव झियायह, अहण्णं तहा वत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोयरे कणीयसे भाउए भविस्स-इत्ति कट्टु देवइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता तओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा अभओ हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हइ जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी-इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सहोयरं कणीयसं भाउयं विदिण्णं ॥ सू० १९ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं' ततः=देवकीकथनान्तरं खलु, 'से कण्हे वासुदेवे' स कृष्णो वासुदेवः 'देवइं देविं एवं वयासी' देवकीं देवीम् एवमवदत्-'मा णं तुब्भे अम्मो!' मा खलु यूयमम्ब ! 'ओहय० जाव झियायह' अवहत० यावद् ध्यायत, 'अहण्णं तहा वत्तिस्सामि' अहं खलु तथा वर्तिष्ये=यतिष्ये 'जहा णं ममं कणीयसे सहोयरे भाया भविस्सइ' यथा खलु मम कनीयान् सहोदरो भ्राता भविष्यति। हे मातः ! मा शुचः ! अहं तथा यतिष्ये यथा मम सहोदरो लघुभ्राता भवेत्; 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा 'देवइं देविं' देवकीं देवीम्, 'ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं' ताभिरिष्टाभिः

उसके बाद कृष्ण वासुदेवने उस देवकी देवी से इस प्रकार कहा-हे माता ! तुम अपने मनोरथ पूर्ण नहीं होने के कारण इस प्रकार आर्त्तध्यान मत करो। मैं ऐसा प्रयत्न करूँगा कि जिससे मेरा एक छोटाभाई हो। ऐसा कह कर अभिलषित प्रिय मनोनुकूल

ત્યારપછી કૃષ્ણુ વાસુદેવે તે દેવકી દેવીને આ પ્રકારે કહ્યું-હે માતા ! તમે તમારા મનોરથો ફલીભૂત ન થવાને કારણે આ પ્રકારે આર્તધ્યાન ન કરો. હું એવો પ્રયત્ન કરીશ કે જેથી મારે એક નાનો ભાઇ થશે. એમ કહી અભિલષિત પ્રિય મનોનુકૂળ

कान्ताभिः, इष्टाभिः=अभिलषिताभिः कान्ताभिः=प्रियाभिः, 'जाव वग्गूहिं' यावद् वाग्भिः=यावन्मनोऽनुकूलाभिर्वाग्भिः 'समासासेइ' समाश्वासयति=समाश्वस्तां करोति, 'समासासित्ता' समाश्वास्य 'तओ' ततः=तत्समीपात् 'पडिनिक्खमइ' प्रतिनिष्क्राम्यति, 'पडिनिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव पौषधशाला तत्रैव उपागच्छति 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'जहा अभए' यथा अभयः=यथा अभयः कुमारः सपौषधः सब्रह्मचर्यो यावदेकाकी दर्भसंस्तारकोपगतो मित्रदेवस्य अष्टमभक्तं प्रगृह्णाति तथैवायमपि, 'हरिणेगमेसिस्स' हरिणैगमेषिणः, 'अट्ठमभत्तं' अष्टमभक्तं 'पगिण्हइ' प्रगृह्णाति=स्वीकरोति, 'जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी' यावत् अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-यावत्=दश दिश उद्द्योतयन् दिव्यरूपधारी देवः समीपमागत्य गगनस्थितः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वया स्मृतोऽहं समागतोऽस्मि, विज्ञापय, किं करोमि, किं ददामि, किं च ते हृदयेप्सितम् ? तदनु कृष्णो वासुदेवः आकाशगतं देवं दृष्ट्वा संजातहर्षप्रकर्षः

वचनों से देवकी महारानी को कृष्ण वासुदेवने धीरज और विश्वास बँधाया। बाद में उनके समीप से निकल कर जहाँ पोषधशाला थी वहाँ गये। जिस प्रकार अभयकुमारने ब्रह्मचर्य सहित पौषध से युक्त हो यावत् अकेले दर्भसंस्तार पर बैठकर अष्टमभक्त को स्वीकार कर मित्रदेवकी आराधना की थी, उसी प्रकार कृष्ण वासुदेवने भी हरिणैगमेषी देव की आराधना की। विशेष इतना ही है कि दस दिशा को उद्द्योतित करता हुआ दिव्यरूपधारी वह देव समीप में आकर आकाश में खडा हो कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा:-

हे देवानुप्रिय ! तुमने मेरा स्मरण किया है, मैं उपस्थित हूँ, बोलो, क्या करूँ ? क्या दूँ ? तुम्हारा मनोरथ क्या है ?

વચનોથી દેવકી મહારાણીને કૃષ્ણ વાસદેવે ધીરજ અને વિશ્વાસ આપ્યો. પછી તેની પાસેથી નીકળી જ્યાં પૌષધશાળા હતી ત્યાં ગયા. અને જેવી રીતે અભયકુમારે બ્રહ્મચર્ય સહિત પૌષધથી યુકત એકલા દર્ભના આસને બેસી અષ્ટમ ભકતનો સ્વીકાર કરી મિત્ર દેવની આરાધના કરી હતી તેવીજ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવે પણ હરિણૈગમેષી દેવની આરાધના કરી. વિશેષ એટલું જ છે કે દશેય દિશાઓને પ્રકાશમય કરતા દિવ્યરૂપધારી તે દેવે તેની સમીપ આવી આકાશમાં ઊભા રહી કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રકારે કહ્યું :—

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મારૂં સ્મરણ કર્યું છે તેથી હું ઉપસ્થિત થયો છું.

पौषधं पारयित्वा करतलपरिगृहीतं मस्तकेऽञ्जलिं निधाय एवमवादीत् -- 'इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सहोयरं कणीयसं भाउयं विदिण्णं' इच्छामि खलु देवानुप्रियाः ! सहोदरं कनीयांसं भ्रातरं वितीर्णम्=भवता प्रदत्तं कनिष्ठं सहोदरमभिलषामि ॥ सू० १९ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से हरिणेगमेसी देवे कण्हं वासुदेव एवं वयासी- होहिति णं देवाणुप्पिया ! तव देवलोयचुए सहोयरे कणीयसे भाउए, से णं उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणगमणुपत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडे जाव पव्वइस्सइ । कण्हं वासुदेवं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू० २० ॥

॥ टीका ॥

तए णं इत्यादि । 'तए णं से हरिणेगमेसी देवे' ततः खलु स हरिणैगमेषी देवः 'कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्- 'होहिति णं देवाणुप्पिया ! तव देवलोयचुए सहोयरे' भविष्यति खलु देवानुप्रिय ! तव देवलोकच्युतः सहोदरः 'कणीयसे' कनीयान्=लघुः 'भाउए' भ्राता, 'से णं उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणगमणुपत्ते' स खलु उन्मुक्तबालभावो यावत्

उसके बाद कृष्ण वासुदेव, आकाश में स्थित उस देव को देखकर अत्यन्त हर्षित हो पोषध पाला और हाथ जोडकर इस प्रकार बोले-हे देवानुप्रिय ! आपकी कृपा से मेरे एक सहोदर लघु भ्राता का जन्म हो, यह मेरी इच्छा है ॥ सू० १९ ॥

उसके बाद उस हरिणैगमेषी देवने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहाः- हे देवानुप्रिय ! देवलोक से एक देवता आयुष्य पूर्ण करके तुम्हारा छोटाभाई होकर जन्म लेगा और वह बाल्यावस्था

બોલો. હું શું કરૂં ? શું આપું ? તમારો શું મનોરથ છે ? ત્યારપછી કૃષ્ણ વાસુદેવે આકાશમાં ઊભેલા તે દેવને જોઇને બહુજ હર્ષિત થઇ પૌષધ પાળ્યું અને હાથ જોડીને આ પ્રકારે કહ્યું—હે દેવાનુપ્રિય ! આપની કૃપાથી મારે એક સહોદર લઘુભ્રાતાનો જન્મ થાય એવી મારી ઇચ્છા છે. (સૂ. ૧૯)

ત્યારપછી તે હરિણૈગમેષી દેવે કૃષ્ણવાસુદેવને આ પ્રકારે કહ્યું—હે દેવાનુપ્રિય ! દેવલોકથી એક દેવતા આયુષ્ય પૂર્ણ કરી તમારો નાનો ભાઇ થઇને જન્મ લેશે અને તે

यौवनकमनुप्राप्तः—उन्मुक्तबालभावः = परित्यक्तबालस्वभावः, यौवनकम् = तरुणावस्थाम् अनुप्राप्तः=संप्राप्तः सन् 'अरहओ अरिट्ठनेमिस्स' अर्हतोऽरिष्टनेमेः 'अंतियं मुंडे जाव पव्वइस्सइ' अन्तिकं मुण्डो यावत् प्रव्रजिष्यति। 'कण्हं वासुदेवं दोच्चंपि तच्चंपि' कृष्णं वासुदेवम् द्वितीयमपि तृतीयमपि वारम् 'एवं' एवम् = 'भविष्यति तव लघुभ्राता' इति 'वयइ' वदति, 'वइत्ता' उदित्वा 'जामेव दिसं पाउब्भूए' यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतः 'तामेव दिसं पडिगए' तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू. २० ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव देवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता एवं वयासी—होहिति णं अम्मो! ममं सहोदरे कणीयसे भाउत्ति कट्टु देवइं देविं इट्ठाहिं जाव आसासइ, आसासित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। तए णं सा देवई देवी अन्नया कयाइं तंसि तारिसगंसि जाव सीहं सुमिणे पासेत्ता पडिबुद्धा जाव हट्ठतुट्ठहियया गब्भं सुहं सुहेणं परिवहइ ॥ सू० २१ ॥

टीका

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः 'पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ' पौषधशालातः प्रतिनिष्क्राम्यति,

---

बीतने पर अर्थात् युवावस्था प्राप्त होते ही अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप मुंडित हो प्रव्रजित होगा। उस हरिणैगमेषी देवने कृष्ण वासुदेव से दुवारा तिवारा भी पूर्वोक्त प्रकार से कहा। अनन्तर जिस दिशा से वह आया था उसी दिशा की और वापिस चला गया ॥ सू० २० ॥

उसके बाद वह कृष्ण वासुदेव पौषधशाला से निकल कर

બાલ્યાવસ્થા વીતી જતાં અર્થાત્ યુવાવસ્થા પ્રાપ્ત થતાંજ અર્હત અરિષ્ટનેમિની પાસે મુંડિત થઈ દીક્ષા લેશે. તે હરિણૈગમેષી દેવે કૃષ્ણવાસુદેવને બીજી વાર ત્રીજી વાર ઉપર પ્રમાણે કહ્યું, અને પછી જે દિશામાંથી તે આવ્યો હતો તેજ દિશા તરફ પાછો ચાલ્યો ગયો. (સૂ. ૨૦)

ત્યારપછી તે કૃષ્ણવાસુદેવ પૌષધશાળામાંથી નીકળી દેવકી દેવીની પાસે આવ્યા

'पडिनिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'जेणेव देवई देवी तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव देवकी देवी तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'देवईए देवीए पायग्गहणं करेइ' देवक्या देव्याः पादग्रहणं करोति, 'करित्ता एवं वयासी' कृत्वा एवम-वदत्–'होहिति णं अम्मो! ममं सहोदरे कणीयसे भाउत्ति कट्टु' भविष्यति खलु अम्ब! मम सहोदरो भ्रातेति कृत्वा 'देवइं देविं' देवकीं देवीम् 'इट्ठाहिं जाव' इष्टाभिर्यावत्=इष्टाभिर्वाग्भिरित्यर्थः, 'आसासइ' आश्वासयति=सन्तोषयति, 'आसासित्ता' आश्वास्य=संतोष्य 'जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए' यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः। 'तए णं सा देवई देवी' ततः खलु सा देवकी देवी 'अन्नया कयाइं' अन्यदा कदाचित् 'तंसि तारिसगंसि जाव' तस्मिन् तादृशके यावत्– कृतपुण्योपप्राप्ये कोमलतादिगुणसंपन्ने शुभे शयनीये सुप्ता 'सीहं सुमिणे पासित्ता' सिंहं स्वप्ने दृष्ट्वा, 'पडिबुद्धा जाव हट्टतुट्टहियया' प्रतिबुद्धा यावद् हृष्टतुष्टहृदया–स्वप्नदर्शनानन्तरं जागरिता सती तद्वृत्तान्तं राज्ञे निवेदितवती, अनन्तरं शुभस्वप्नजनितस्वाभि-

---

देवकी के समीप आये और उनका चरण वन्दन किया। बाद में उन्होंने देवकी से इस प्रकार कहा– हे माता! मुझे एक छोटा भाई होगा तुम चिन्ता मत करो, तुम्हारे मनोरथ पूर्ण होंगे। इस प्रकार के इष्ट, मनोहर एवं मनोनुकूल वचनों से कृष्ण वासुदेवने देवकी देवी को सन्तुष्ट किया। इस प्रकार उन्हें सन्तोष देकर उनके पास से चले गये। उसके बाद पुण्यशालियों से ही उपभोग्य सुकोमल शय्या में सोयी हुई इस देवकी ने स्वप्न में सिंह को देखा। स्वप्न देखने के बाद जागी और स्वप्न का वृत्तान्त उसने वसुदेव से कहा। अपने मनोरथ की पूर्णता को निश्चित समझ कर देवकी का मन हृष्टतुष्ट हो गया। अनन्तर उन्होंने अत्यन्त

અને તેઓના ચરણમાં વંદન કર્યું. પછી તેમણે દેવકી દેવીને આ પ્રકારે કહ્યું— હે માતા! મારે એક નાનો ભાઈ થશે. તમે ચિંતા ન કરો. તમારા મનોરથ પૂર્ણ થશે. આ પ્રકારનાં ઇષ્ટ મનોહર અને મનોનુકૂળ વચનોથી કૃષ્ણવાસુદેવે દેવકી દેવીને સંતુષ્ટ કર્યાં. એ પ્રમાણે તેમને સંતોષ આપીને તેમની પાસેથી ચાલ્યા ગયા. ત્યારપછી પુણ્યશાળીઓજ માત્ર જેનો ઉપભોગ કરી શકે છે તેવી સુકોમલ શય્યામાં સુતેલી તે દેવકીએ સ્વપ્નમાં સિંહને જોયો. સ્વપ્ન જોયા પછી જ્યારે જાગૃત થઈ ત્યારે સ્વપ્નનો વૃત્તાન્ત તેણે વસુદેવને કહ્યો. પોતાના મનોરથની પરિપૂર્ણતાને નિશ્ચિત સમજીને દેવકીનું મન હૃષ્ટતુષ્ટ થઇ ગયું.

मतप्राप्तेरवश्यम्भावितया हृष्टतुष्टमानसा 'गब्भं सुहं सुहेणं परिवहइ' गर्भं सुखं सुखेन परिवहति=धारयति ॥ सू० २१ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं सा देवई देवी नवण्हं मासाणं जासुमणरत्तबंधुजीवयलक्खरससरसपारिजातकतरुणदिवायरसमप्पभं सव्वनयणकंतं सुकुमालं जाव सुरूवं गयतालुयसमाणं दारयं पयाया। जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए गयतालुसमाणे तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसुकुमाले। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं करेइ गयसुकुमालेत्ति, सेसं जहा मेहे जाव अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था। तत्थ णं बारवईए नयरीए सोमिले नामं माहणे परिवसइ अड्ढे रिउव्वेय० जाव सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था, तस्स सोमिलस्स माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था सुकुमाला। तस्स णं सोमिलस्स माहणस्स धूया सोमसिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया होत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा रूवेणं जाव लावण्णेणं उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ॥ सू० २२ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं' ततः=गर्भधारणानन्तरं खलु, 'सा देवई देवी' सा देवकी देवी 'नवण्हं मासाणं' नवानां मासानाम्=सार्धसप्तदिनाधिकेषु नवसु मासेषु व्यतीतेषु, 'जासुमणरत्तबंधुजीवयलक्खरससरसपारिजातकतरुणदिवायरसमप्पभं' जपासुमनोरक्तबन्धुजीवकलाक्षारससरसपारिजातकतरुणदिवाकरसमप्रभम्, जपासुमनसः=जपाकुसुमानि, रक्तबन्धुजीवकाः=रक्तबन्धूका रक्तपु-

---

सुख से गर्भ को धारण किया ॥ सू० २१ ॥

उसके बाद नौ महिने साढे सात दिन बीतने पर देवकी देवी ने जपाकुसुम, बन्धूकपुष्प, लाक्षारस, तथा पारिजात और

ત્યારપછી તેણે અત્યન્ત સુખથી ગર્ભને ધારણ કર્યો. (સૂ. ૨૧)

ત્યારપછી નવ મહિના અને સાડાસાત દિવસ વીત્યાપછી દેવકીદેવીએ, જપાકુસુમ,

ष्पविशेषाः, लाक्षारसः प्रसिद्धः, सरसपारिजातकः=अभिनवपारिजातपुष्पम्, तरुणदिवाकरः=उदीयमानसूर्यः, एतेषां द्वन्द्वसमासः, तैः समा=तुल्या प्रभा=कान्तिर्यस्य तम्—जपाकुसुमादिवद्रक्तकान्तिधरमित्यर्थः; 'सव्वनयणकंतं सुकुमारं जाव सुरूवं' सर्वनयनकान्तं सुकुमारं यावत्सुरूपम्—सर्वजननयनानन्दजनकं सुकुमारं यावत् सुरूपम् 'गयतालुयसमाणं' गजतालुकसमानम्=गजतालुवत्सुकोमलम् 'दारयं पयाया' दारकं प्रजाता=प्रजनितवतीत्यर्थः। 'जम्मणं जहा मेहकुमारे जाव' जन्म यथा मेघकुमारो यावत्, यथा मेघकुमारस्य जन्ममहोत्सवादिकम् एवमेवास्य कुमारस्यापि विज्ञेयम्। 'जम्हा णं अम्हं इमे दारए गयतालुसमाणे' यस्मात् खलु अस्माकम् अयं दारको गजतालुसमानः=गजतालुसदृशः सुकुमालः 'तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसुकुमाले' तद् भवतु खलु आवयोरेतस्य दारकस्य नामधेयं गजसुकुमालः। 'तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं करेंति गयसुकुमालेत्ति' ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ नाम कुरुतः गजसुकुमाल इति। 'सेसं जहा मेहे जाव अलं भोगसमत्थे यावि होत्था' शेषं यथा मेघो यावत् अलं भोगसमर्थश्चाप्यभवत्। 'तत्थ णं बारवईए नयरीए सोमिले नामं माहणे

उदय होते हुए सूर्य के समान प्रभावाले तथा सभी जनों के नयन को सुख देने वाले, अत्यन्त कोमल यावत् सुरूप एवं गजके तालु के समान सुकोमल बालक को जन्म दिया। जिस प्रकार मेघकुमार के जन्म समय में उनके मातापिता ने महोत्सव किया, उसी प्रकार देवकी और वसुदेव ने भी जन्ममहोत्सव किया। उन्होंने सोचा कि यह हमारा बालक गजके तालु समान सुकोमल है इसलिये इसका नाम गजसुकुमाल हो। उसके बाद मातापिता ने उस बालक का नाम गजसुकुमाल रखा। गजसुकुमाल कुमार का बाल्यकाल से लेकर यौवन तक का वृत्तान्त मेघकुमार के समान जानना चाहिये।

બન્ધૂકપુષ્પ, લાક્ષારસ તથા પારિજાત અને ઉગતા સૂર્યના જેવી પ્રભાવાળો અને બધા જનોનાં નયનને સુખ આપવાવાળો, અત્યંત કોમળ યાવત્ સુરૂપ અને હાથીના તાળવાં જેવો સુકોમળ બાળકને જન્મ આપ્યો, જે પ્રકારે મેઘકુમારનો જન્મ થતાં તેના માતાપિતાએ મહોત્સવ કર્યો હતો તેવી જ રીતે દેવકી અને વસુદેવે જન્મમહોત્સવ કર્યો. તેમણે વિચાર્યું કે આ અમારો બાળક હાથીના તાળવા જેવો સુકોમલ છે; માટે એનું નામ ગજસુકુમાલ રહે. પછી તેના માતાપિતાએ તે બાળકનું નામ ગજસુકુમાલ પાડ્યું. ગજસુકુમાલ કુમારના બાલ્યકાળથી માંડીને યૌવનકાળ સુધીનો વૃત્તાન્ત મેઘકુમારના જેવો જાણવો.

परिवसइ अड्ढे रिउव्वेय० जाव सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था' तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां सोमिलो नाम ब्राह्मणः परिवसति आढ्य ऋग्वेद० यावत् सुपरिनिष्ठितश्चाऽप्यभवत्–आढ्यः=समृद्धः, ऋग्वेद० यावत् सुपरिनिष्ठितः=ऋग्यजुःसामाथर्वसु चतुर्षु वेदेषु तदङ्गेषु च पारंगतः, 'तस्स सोमिलस्स माहणस्स सोमसिरी नामं माहणी होत्था सुकुमाला' तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य सोमश्रीर्नाम ब्राह्मणी अभवत् सुकुमारा, 'तस्स णं सोमिलस्स माहणस्स' तस्य खलु सोमिलस्य ब्राह्मणस्य 'धूया' दुहिता=पुत्री 'सोमसिरीए माहणीए अत्तया' सोमश्रियो ब्राह्मण्या आत्मजा 'सोमा नामं दारिया' सोमा नाम दारिका=बालिका 'होत्था' अभवत्, कीदृशी सा? इत्याह–सुकुमाला जाव सुरूवा' सुकुमारा यावत् सुरूपा, तथा 'रूवेणं' रूपेण=आकारेण 'जाव लावण्णेणं' यावत् लावण्येन=यावत् परमया शोभया 'उक्किट्ठा' उत्कृष्टा=उत्तमा, 'उक्किट्ठसरीरा' उत्कृष्टशरीरा=उत्कृष्टम्=अहीन पञ्चेन्द्रियतया यथाऽत्रस्थिताऽवयवसंनिवेशतया चोत्तमं शरीरं यस्याः सा तथोक्ता 'यावि होत्था' चापि आसीत् ॥ सू० २२ ॥

उस द्वारावती नगरी में ऋग्वेद आदि चारों वेदों में तथा वेदाङ्गों में परिनिष्ठित और धन-धान्यसे समृद्ध सोमिल नामका ब्राह्मण रहता था, उस ब्राह्मण की पत्नी का नाम सोमश्री था। वह सोमश्री ब्राह्मणी अत्यन्त सुकुमार थी। उस सोमिल ब्राह्मण की पुत्री सोमश्री की आत्मजा सोमा नामकी एक दारिका (कन्या) थी। जो सुकुमार यावत् रूपवती थी और आकार एवं लावण्य में उत्कृष्ट थी। तथा वह सोमा बालिका पाँचों इन्द्रियों से अहीन होने के कारण एवं अवयवों की यथावत् स्थिति के कारण उत्कृष्ट शरीरशोभावाली थी ॥ सू० २२ ॥

તે દ્વારાવતી નગરીમાં ઋગ્વેદ આદિ ચારેય વેદોમાં અને વેદાંગોમાં પરિનિષ્ઠિત તથા ધનધાન્યથી સમૃદ્ધ સોમિલનામને બ્રાહ્મણ રહેતો હતો. તે બ્રાહ્મણની પત્નીનું નામ સોમશ્રી હતું. તે સોમશ્રી બ્રાહ્મણી અત્યન્ત સુકુમાર હતી. તે સોમિલ બ્રાહ્મણની પુત્રી સોમશ્રીની આત્મજા સોમા નામની એક દારિકા (કન્યા) હતી. જે સુકુમાર અને સુરૂપા હતી તથા આકાર અને લાવણ્યમાં ઉત્કૃષ્ટ હતી, તથા તે સોમા બાલિકા પાંચે ઇન્દ્રિયોથી અહીન (ખોડવગરની) હોવાને કારણે અને અવયવોની યથાવત્ સ્થિતિ પ્રાપ્ત હોવાને કારણે ઉત્કૃષ્ટ શરીરશોભાવાળી હતી. (સૂ૦ ૨૨)

॥ मूलम् ॥

तए णं सा सोमा दारिया अण्णया कयाइं ण्हाया जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायमग्गंसि कणगतिंदूसएणं कीलेमाणी २ चिट्ठइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे, परिसा णिग्गया। तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए जाव विभूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धिं हत्थिखंधवरवए सकोरंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स पायवंदए णिग्गच्छमाणे सोमं दारियं पासइ, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण जोव्वणेण य विम्हिए ॥ सू० २३ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं सा सोमा दारिया' ततः खलु सा सोमा दारिका 'अण्णया कयाइं' अन्यदा कदाचित् 'ण्हाया जाव विभूसिया' स्नाता यावद् विभूषिता, 'बहूहिं खुज्जाहिं' बहुभिः कुब्जाभिः=कुब्जादासीभिः, 'जाव' यावत्=अन्यप्रकाराभिरपि दासीभिः 'परिक्खित्ता' परिक्षिप्ता=परिवेष्टिता 'सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ' स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति, 'पिडिनि-क्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'जेणेव रायमग्गो तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव राजमार्गः तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'रायमग्गे' राजमार्गे 'कणगतिंदू-

उसके बाद वह सोमा बालिका स्नान कर यावत् अनेकविध अलंकारों से अलंकृत हो अनेक कुब्जादासियों से तथा अन्य दूसरी दासियों से घिरी हुई अपने घर से निकल कर राजमार्ग

ત્યારપછી તે સોમા બાલિકા સ્નાન કરી યાવત્ અનેક જાતના અલંકારોથી વિભૂષિત થઇ ઘણી કુબ્જા દાસીઓ અને બીજી કેટલીક દાસીઓથી ઘેરાઇને પોતાનાં ઘેરથી નીકળી રાજમાર્ગ ઉપર આવી અને ત્યાં સોનાના દડાથી રમવા લાગી તે કાલ

सएणं' कनकतिन्दूसकेन 'कीलेमाणी२ चिट्ठइ' क्रीडन्ती २ तिष्ठति। 'तिन्दूसक' इति कन्दुकार्थो देशीशब्दः। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'अरहा अरिट्ठनेमी' अर्हन् अरिष्टनेमिः 'समोसढे' समवसृतः= समागतः, 'परिसा णिग्गया' परिषन्निर्गता=धर्मकथाश्रवणाय जनसमुदायरूपा परिषत् स्वस्वगृहान्निष्क्रान्ता। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः, 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' अस्याः कथाया लब्धार्थः सन्= 'भगवदरिष्टनेमिरागत' इति वृत्तान्तं ज्ञात्वेत्यर्थः, 'ण्हाए जाव विभूसिए' स्नातो यावद् विभूषितः, 'गयसुकुमालेणं कुमारेणं' गजसुकुमारेण कुमारेण 'सद्धिं' सार्द्धम्-स्वानुजेन गजसुकुमारेण कुमारेण सह, 'हत्थिखंधवरगए' हस्तिस्कन्ध-वरगतः=गजकन्धरामारूढः, 'सकोरंटमल्लदामेणं' सकोरण्टमाल्यदाम्ना-कोरण्ट-माल्यस्य दाम कोरण्टमाल्यदाम तेन सह वर्तते यत्तेन-पीतवर्णपुष्पमालासहितेन 'छत्तेणं धरिज्जमाणेणं' छत्रेण ध्रियमाणेन 'सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं' श्वेतवरचामरैरुद्धुवद्भिः=वीज्यमानैः-श्रेष्ठश्वेतचामरैश्चोपलक्षित इत्यर्थः, 'बारवईए नयरीए' द्वारावत्या नगर्याः 'मज्झंमज्झेणं' मध्यमध्येन 'अरहओ अरिट्ठनेमिस्स' अर्हतोऽरिष्टनेमेः='पायवंदए' पादवन्दकः=चरणवन्दनार्थीत्यर्थः, 'णिग्गच्छमाणे

पर आयी और वहाँ सोने के गेंद से खेलने लगी। उसकाल उस समय में अर्हत् अरिष्टनेमि उस द्वारका नगरी में पधारे। जिससे धर्मकथा सुनने के लिये परिषद् अपने २ घर से निकली। उसके बाद कृष्ण वासुदेवने भगवान् के आने का वृत्तान्त सुनकर स्नान किया और यावत् भूषणों से विभूषित हो अपने छोटे भाई गज-सुकुमाल कुमार के साथ हाथी पर बैठे क़ुरण्ट फूलों की माला से युक्त छत्र से तथा बींजते हुए चामरों से सुशोभित वह कृष्ण वासुदेव द्वारावती नगरी के मध्य से अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप उनके चरणवन्दन के लिये निकले। उस समय द्वारका

ते समये अर्हत अरिष्टनेमि भगवान ते द्वारकानगरीमां पधार्या. तेथी धर्मकथा सांभळवा माटे परिषद पोतपोताने घेरथी नीकळी. त्यारपछी कृष्णवासुदेव भगवानना आववाना वृत्तान्त सांभळी स्नान करी यावत आभूषणोथी विभूषित थई पोताना नानाभाई गजसुकुमाल कुमारनी साथे हाथी उपर बेठा. कुरण्ट फूलोनी माळाथी युक्त छत्रथी तथा विंझाता चामरोथी सुशोभित ते कृष्णवासुदेव द्वारावती नगरीना मध्यमांथी अर्हत् अरिष्टनेमिनी पासे तेमनां चरणवंदन करवा माटे नीकळ्या. ते

सोमं दारियं पासइ' निर्गच्छन् सोमां दारिकां पश्यति, 'पासित्ता सोमाए दारियाए' दृष्ट्वा सोमाया दारिकायाः 'रूवेण य जोव्वणेण य' रूपेण च यौवनेन च 'विम्हिए' विस्मितः=आश्चर्ययुक्तो जातः ॥ सू० २३ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सोमिलं जाइत्ता सोमं दारियं गेण्हह, गेण्हित्ता कन्नंतेउरंसि पक्खिवह। तए णं एसा गयसुकुमालस्स भारिया भविस्सइ। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पक्खिवंति। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जाव पज्जुवासइ। तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य० धम्मकहा, कण्हे पडिगये ॥ सू० २४ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं' ततः=तदन्तरं–दारिकाविलोकनानन्तरं खलु 'से कण्हे वासुदेवे, स कृष्णो वासुदेवः कोडुंबियपुरिसे' कौटुम्बिक-पुरुषान्=राजसेवकान् 'सद्दावेइ' शब्दयति=आह्वयति, 'सद्दावित्ता एवं वयासी' शब्दयित्वा एवमवदत्–'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया!' गच्छत खलु यूयं

नगरी के राजमार्ग में खेलती हुई सोमा दारिका को कृष्ण वासुदेवने देखा। उस सोमा दारिका के रूप लावण्य यौवन को देखकर कृष्ण वासुदेव को अत्यन्त आश्चर्य हुआ ॥ सू० २३ ॥

उसको देखकर कृष्ण वासुदेव ने अपने भृत्यों को बुलाया और इस प्रकार आज्ञा दी–हे देवानुप्रियो! तुम लोग सोमिल

સમયે દ્વારકા નગરીના રાજમાર્ગમાં રમતી સોમા દારિકાને કૃષ્ણવાસુદેવે જોઇ. તે સોમા દારિકાનું રૂપ, લાવણ્ય અને યૌવનને જોઇને કૃષ્ણવાસુદેવને ઘણું જ આશ્ચર્ય થયું. (સૂ૦ ૨૩)

તેને જોઇને કૃષ્ણવાસુદેવે પોતાના ભૃત્યોને બોલાવ્યા અને આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી– હે દેવાનુપ્રિય! તમે લોકો સોમિલ બ્રાહ્મણની પાસે જાઓ અને તેની પાસેથી

देवानुप्रियाः ! 'सोमिलं माहणं' सोमिलं ब्राह्मणं 'जाइत्ता' याचित्वा 'सोमं दारियं गेण्हह' सोमां दारिकां गृह्णीत, 'गेण्हित्ता' गृहीत्वा 'कन्नंतेउरंसि पक्खिवह' कन्यान्तःपुरे प्रक्षिपत=कन्यानिवासभवने स्थापयत। 'तए णं एसा' ततः खलु एषा 'गयसुकुमालस्स' गजसुकुमालस्य कुमारस्य 'भारिया' भार्या 'भविस्सइ' भविष्यति। 'तए णं' ततः खलु 'ते कोडुंबियपुरिसा जाव पक्खिवंति' ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रक्षिपन्ति–कौटुम्बिकपुरुषाः कृष्णस्य वासुदेवस्याज्ञां शिरसि धृत्वा सोमिलब्राह्मणसकाशात्तां सोमां याचित्वा कन्यान्तपुरेऽस्थापयन्। 'तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति' ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रत्यर्पयन्ति–हे देवानुप्रिय ! भवदुक्तं कार्यमस्माभिः कृतमिति निवेदयन्ति। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः, 'बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ' द्वारावत्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, 'णिग्गच्छित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जाव पज्जुवासइ' निर्गत्य यत्रैव सहस्राम्रवनमुद्यानं यावत्पर्युपास्ते–द्वारकाया मध्यमध्येन निर्गत्य सहस्राम्रवनमुद्यानं गत्वा भगवन्तं प्रणम्य च भगवतः संमुखे स्थितः पर्युपासनां करोतीत्यर्थः। 'तए णं' ततः खलु

ब्राह्मण के पास जाओ, और उससे कन्या की याचना करो। तत्पश्चात् उसकी कन्या सोमा को लेकर कन्याओं के अन्तःपुर में पहुँचा दो। यह सोमा दारिका गजसुकुमार कुमार की भार्या होगी। अनन्तर आज्ञा के अनुसार वे राजसेवक सोमिल ब्राह्मण के पास गये, और उससे कन्या की याचना की। सोमिल ब्राह्मण ने प्रसन्नचित्त से उस कन्या को उन राजपुरुषों को अर्पित किया। उन्होंने उस कन्या को कृष्ण वासुदेव के कन्या के अन्तःपुर में रखी। उसके बाद कृष्ण वासुदेव द्वारावती नगरी के बीचोबीच से सहस्राम्रवन उद्यान में जहाँ भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि विराजते थे वहाँ गये, वहाँ जाकर उन को वन्दन नमस्कार किया और भगवान् की उपासना करने लगे।

तेनी कन्यानी याचना करो. ते पछी तेनी कन्या सोमाने लईने कन्याओना अंतःपुरमां पहोंचाडो. आ सोमा दारिका गजसुकुमाल कुमारनी भार्या थशे पछी आज्ञाप्रमाणे ते राजसेवक सोमिल ब्राह्मणनी पासे गया अने तेना पासे कन्यानी याचना करी. सोमिल ब्राह्मणे प्रसन्नचित्तथी ते कन्याने ते राजपुरुषोने सोंपी दीधी. तेमणे ते कन्याने कृष्णवासुदेवना कन्याना अंतःपुरमां राखी. त्यारपछी कृष्णवासुदेवे द्वारावती नगरीनी वच्चोवच्च थई सहस्राम्रवन उद्यानमां ज्यां भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि

'अरहा अरिट्ठनेमी' अर्हन्नरिष्टनेमिः 'कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स' कृष्णस्य वासुदेवस्य गजसुकुमालस्य कुमारस्य 'तीसे य० धम्मकहा' तस्यां च० धर्मकथा, भगवानर्हन्नरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवं गजसुकुमालं कुमारं चोपलक्ष्य तस्यां विशालायां परिषदि धर्मकथामुपादिशदिति भावः। 'कण्हे पडिगए' कृष्णः प्रतिगतः = धर्मकथाश्रवणानन्तरं कृष्णः स्वभवनं प्रतिनिवृत्तः ॥ सू० २४ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से गयसुकुमाले कुमारे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियं धम्मं सोच्चा जं नवरं अम्मापियरं आपुच्छामि, जहा मेहे, णवरं महिलियावज्जे जाव वड्ढियकुले। तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालं कुमारं आलिंगइ, आलिंगित्ता उच्छंगे निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी–तुमं ममं सहोदरे कणीयसे भाया, तं मा णं देवाणुप्पिया! इयाणिं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वयाहि। अहण्णं बारवईए नयरीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि। तए णं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ सू० २५ ॥

उसके बाद भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमिने कृष्ण वासुदेव और गजसुकुमाल के लिये उस विशाल परिषद् में धर्मोपदेश किया। अनन्तर धर्मकथा सुनकर वासुदेव कृष्ण अपने भवनकी ओर प्रस्थान किये ॥ सू० २४ ॥

બિરાજતા હતા ત્યાં જઈ તેમને વંદન નમસ્કાર કર્યા અને ભગવાનની ઉપાસના કરવા લાગ્યા ત્યારપછી ભગવાન્ અર્હત્ અરિષ્ટનેમિએ કૃષ્ણ વાસુદેવ અને ગજસુકુમાલને માટે તે વિશાળ પરિષદમાં ધર્મોપદેશ કર્યો. પછી ધર્મકથા સાંભળી કૃષ્ણવાસુદેવે પોતાના મહેલ તરફ પ્રસ્થાન કર્યું. (સૂ૦ ૨૪)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं' ततः खलु=कृष्णस्य गमनानन्तरं खलु 'से गयसुकुमाले कुमारे' स गजसुकुमालः कुमारः, 'अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा' अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तिके धर्मं श्रुत्वा, 'जं नवरं' यो विशेषः स उच्यते--अम्मापियरं आपुच्छामि' अम्बापितरौ आपृच्छामि, 'जहा मेहे' यथा मेघः=यथा मेघो धर्मं श्रुत्वा भगवन्तमेवं न्यवेदयत्-हे भदन्त ! मातापित्रोरनुमतिमादाय भवदन्तिके प्रव्रज्यां ग्रहीतुमिच्छामि, एवमयपि कुमारो न्यवेदयत्; 'णवरं' विशेषश्चायम्-'महिलियावज्जे जाव वड्ढियकुले' महिलिकावर्जो यावद् वर्धितकुलः-मेघवद्यमपि कुमारो भगवतः समीपात्प्रतिनिवृत्तो मातापितृभ्यां निवेदिताऽखिलनिजाभिप्रायो दीक्षाग्रहणाय तदाज्ञां प्रार्थयामास, अनन्तरं ज्ञाततदभिप्रायौ मातापितरौ एवमुक्तवन्तौ-हे वत्स ! त्वं साम्प्रतं 'महिलियावज्जे' महिलिकावर्जः-अकृतविवाहोऽसि, अतो विवाहं कृत्वा सांसारिकभोगविलासान् भुञ्जानः 'जाव वड्ढियकुले' यावद्वर्धितकुलः-वर्धितं सन्तानोत्पत्त्या कुलं येन स तथाभूतः प्रव्रज्यां गृहाणेति । तए णं से कण्हे वासुदेवे' ततः

परन्तु गजसुकुमाल को भगवान् अरिष्टनेमि की वाणी सुनकर वैराग्य उत्पन्न हो गया। बाद उन्होंने हाथ जोड कर भगवान से निवेदन किया कि-हे भदन्त ! मैं अपने माता-पिता से पूछकर आपके समीप प्रव्रज्या (दीक्षा) ग्रहण करूँगा। इस प्रकार मेघकुमार के समान भगवान को निवेदन करके अपने घर आये और वहाँ उन्होंने माता-पिताके समक्ष अपना अभिप्राय प्रगट किया। माता-पिता ने उनकी दीक्षा की बात सुनकर उनसे कहा-

हे वत्स ! तुम्हारा अभी विवाह भी नहीं हुआ है और तुम वर्धितकुल नहीं हो। इसलिये पहले तुम विवाह करो; बाद में

परन्तु गजसुकुमालने भगवान अरिष्टनेमिनी वाणी सांभळी वैराग्य उत्पन्न थयुं. आथी तेमणे हाथ जोडी भगवानने निवेदन कर्युं के—हे भदन्त ! हुं मारा मातापिताने पूछीने आपनी पासे दीक्षा ग्रहण करीश. ए प्रकारे मेघकुमारनी पेठे भगवानने निवेदन करी पोताने घेर आव्या, अने मातपिताने पोतानो अभिप्राय कही संभळाव्यो. मातापिता तेनी दीक्षानी वात सांभळी तेने कह्युं:—

हे वत्स ! तमारो हजी विवाह पण थयो नथी अने हजी तमे वंशवृद्धि करी नथी माटे तमे विवाह करो. संतान थया पछी तमारो भार तेने सोंपी दीक्षा

खलु स कृष्णो वासुदेवः, 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' अस्याः कथायाः लब्धार्थः सन्=गजसुकुमालस्य संयमग्रहणेच्छारूपवृत्तान्तमधिगतः सन्, 'जेणेव' यत्रैव 'गयसुकुमाले कुमारे तेणेव उवागच्छइ' गजसुकुमालः कुमारस्तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता गयसुकुमालं कुमारं आलिंगइ' उपागत्य गजसुकुमारं कुमारमालिङ्गति, 'आलिंगित्ता' आलिङ्ग्य, 'उच्छंगे निवेसेइ' उत्सङ्गे निवेशयति, 'निवेसित्ता एवं वयासी' निवेश्य एवमवदत्-'तुमं ममं सहोयरे' त्वं मम सहोदरः 'कणीयसे भाया' कनीयान्=लघुर्भ्राता, 'तं मा णं देवाणुप्पिया'! तत् मा खलु देवानुप्रिय! 'इयाणिं अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वयाहि' इदानीम् अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डो यावत्प्रव्रज। 'अहण्णं वारवईए नयरीए महया महया रायाभिसेएणं' अहं खलु द्वारावत्या नगर्यां महता महता राजाभिषेकेण-राज्ञो योऽभिषेकस्तेन 'अभिसिंचिस्सामि' अभिषेक्ष्यामि। महता समारोहेण द्वारावत्या नगर्यां राजपदे त्वां स्थापयिष्यामीत्यर्थः। 'तए णं

सन्तति होने पर अपना भार उसे सौंपकर दीक्षा ग्रहण करना। इत्यादि, दीक्षा नहीं लेने के बारे में अनेकों बातें कही।

गजसुकुमाल के वैराग्य का समाचार पाकर कृष्ण वासुदेव गजसुकुमाल के पास आये और उन्होंने गजसुकुमाल को स्नेहपूर्वक अपने हृदय से लगाया। तत्पश्चात् उसे अपनी गोदी में बैठाकर इस प्रकार बोले-

हे देवानुप्रिय! तुम मेरे छोटे भाई हो, इसलिये आशा करता हूँ तुम मेरी बातों पर अवश्य ध्यान दोगे। तुमसे यही कहना है कि अभी अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप दीक्षा मत लो। मैं आज अत्यन्त समारोह के साथ तुम्हारा राज्याभिषेक कर इस द्वारावती

ગ્રહણ કરજો. ઇત્યાદિ દીક્ષા ન લેવાના વિષયમાં અનેક વાતો કહી.

ગજસુકુમાલના વૈરાગ્યના સમાચાર મળતાં કૃષ્ણવાસુદેવ ગજસુકુમાલની પાસે આવ્યા. પછી તેમણે ગજસુકુમાલને સ્નેહપૂર્વક પોતાના હૃદયથી ભેટયા. ત્યારપછી તેને પોતાના ખોળામાં બેસાડી આ પ્રકારે કહ્યું—

હે દેવાનુપ્રિય! તું મારો નાનો ભાઈ છો, માટે આશા રાખું છું કે તું મારી વાત ઉપર અવશ્ય ધ્યાન દઈશ. તને એટલું જ કહેવું છે કે હાલ અર્હત્ અરિષ્ટનેમિની પાસે દીક્ષા ન લે. હું આજે જ અત્યન્ત સમારોહપૂર્વક તારો રાજ્યાભિષેક કરાવી આ

से गयसुकुमाले कुमारे कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ' ततःखलु स गजसुकुमारः कुमारः कृष्णेन वासुदेवेन एवमुक्तः सन् तुष्णीकः संतिष्ठते ॥ सू० २५ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी – एवं खलु देवाणुप्पिया! माणुस्सया कामा असुई असायसा वंतासवा जाव विप्पजहियव्वा भविस्संति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वइत्तए। तए णं तं गयसुकुमालं कुमारं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो सचाएंति बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए, ताहे अकामा चेव एवं वयासी–तं इच्छामो णं ते जाया! एगदिवसमपि रज्जसिरिं पासित्तए, निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमित्तए, से गयसुकुमाले इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ सू० २६ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं से' इत्यादि । 'तए णं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हं वासुदेवं' ततः खलु स गजसुकुमालः कुमारः कृष्णं वासुदेवम् 'अम्मापियरो य दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी, अम्बापितरौ च द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्वित्रिवारम् एवमवदत्–

नगरी का तुम्हें राजा बनाऊँगा। कृष्ण वासुदेव का ऐसा वचन सुन कर गजसुकुमाल कुमार मौन हो गये ॥ सू० २५ ॥

उसके बाद गजसुकुमाल कुमार ने कृष्ण वासुदेव और अपने माता-पिता से दो तीन बार इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय!

द्वारावती नगरीनो तने राजा बनावीश. कृष्णवासुदेवनां એવાં વચન સાંભળી ગજસુકુમાલ કુમાર મૌન થઇ ગયા. (સૂ० ૨૫)

ત્યારપછી ગજસુકુમાલ કુમારે કૃષ્ણવાસુદેવ તથા પોતાનાં માતાપિતાને બે ત્રણ વખત આ પ્રકારે કહ્યું—હે દેવાનુપ્રિય! કામોપભોગના આધારભૂત આ સ્ત્રીપુરુષસંબંધી

'एवं खलु देवाणुप्पिया!' एवं खलु देवानुप्रियाः! 'माणुस्सया कामा' मानुष्यकाः कामाः, कामशब्देनात्र कामाधारभूताः स्त्रीपुरुषशरीरा गृह्यन्ते, अत्र अर्धर्चादित्वात् पुंस्त्वम्; 'असुई' अशुचयः=अशुचिस्थानभूता 'असासया' अशाश्वताः 'वंतासवा जाव विप्पजहियव्वा' वान्तास्रवा यावद् विप्रहातव्याः, वान्तास्रवाः=वमनोद्गिरणस्थानभूताः, यावच्छब्देन 'पित्तासवा' पित्तास्रवाः=पित्तस्थानरूपाः, 'खेलासवा' श्लेष्मास्रवाः, 'सुक्कासवा' शुक्रास्रवाः, 'सोणियासवा' शोणितास्रवाः, 'दुरुस्सासनिस्सासा' दुरुच्छ्वासनिःश्वासाः=दुर्गन्धमयश्वासोच्छ्वासस्थानरूपाः, 'दुरूवमुत्तपुरीसपूयवहुपरिपुन्ना' दूरूपमूत्रपुरीषपूयवहुप्रतिपूर्णाः 'उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणवंतपित्तसुक्कसोणियसंभवा' उच्चारप्रस्रवणश्लेष्मजल्लसिङ्घाणवान्तपित्तशुक्रशोणितसंभवाः=उच्चारादिसंभवस्थानानि, 'अधुवा' अध्रुवाः=अस्थिराः, 'अणियया' अनियताः=अनिश्चिताः, 'असासया' अशाश्वताः=अनित्याः, शटनपतनविध्वसनधर्माः पश्चात् पुरश्च खलु अवश्यं 'विप्पजहियव्वा' विप्रहातव्याः=परिहरणीया भविष्यन्ति। 'तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया!' तत् इच्छामि खलु देवानुप्रियाः! 'तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए

कामोपभोग का आधारभूत यह स्त्रीपुरुषसम्बन्धी शरीर, मल मूत्र, कफ, वमन, पित्त, शुक्र और शोणित का भण्डार है। यह शरीर अस्थिर है, अनिश्चित है, अनित्य है तथा सड़ना गिरना और नष्ट होना-रूप धर्म से युक्त होने के कारण आगे पीछे कभी न कभी अवश्य नष्ट होने वाला है, और यह अशुचिका स्थान है, वमनका स्थान है, पित्तका स्थान है, कफ का स्थान है, शुक्र का स्थान है, शोणितका स्थान है, दुर्गन्ध-श्वास और निःश्वास का स्थान है और यह शरीर दुर्गन्ध युक्त मूत्र, विष्ठा और पीप से पूर्ण है। इस शरीर को एक दिन अवश्य छोडना होगा। इसलिये हे मातापिता!

શરીર મલ, મૂત્ર, કફ, વમન, પિત્ત, શુક્ર, અને શોણિતનો ભંડાર છે આ શરીર અસ્થિર છે, અનિશ્ચિત છે, અનિત્ય છે, તથા સડવું, પડવું, અને નષ્ટ થવું, એવા ધર્મથી યુક્ત હોવાને કારણે આગલ પાછલ કયારેને કયારેક અવશ્ય નષ્ટ થવાનો છે. અને એ અશુચિનું સ્થાન છે. વમનનું સ્થાન છે. પિત્તનું સ્થાન છે, કફનું સ્થાન છે, શુક્રનું સ્થાન છે, શોણિતનું સ્થાન છે, દુર્ગન્ધ-શ્વાસ તથા નિઃશ્વાસનું સ્થાન છે. વળી આ શરીર દુર્ગન્ધયુક્ત મૂત્ર વિષ્ઠા તથા પરૂથી ભરેલું છે. આ શરીરને એક દિવસ અવશ્ય છોડવું પડશે. માટે હે માતાપિતા! હે બન્ધુવર! આપ લોકોની આજ્ઞા લઈ

जाव पव्वइत्तए' युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके यावत्प्रव्रजितुम्–भवद्भिरभ्यनुज्ञातो भगवदरिष्टनेमिसमीपे गत्वा प्रव्रजितुमिच्छामीति भावः। 'तए णं तं गयसुकुमालं कुमारं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो संचाएंति बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव' ततः खलु तं गजसुकुमालं कुमारं कृष्णो वासुदेवः अम्बापितरौ च यदा नो शक्नुवन्ति बहुकाभिरनुलोमाभिर्यावत्=बहुप्रकाराभिरनुकूलाभिः प्रतिकूलाभिश्च कथाभिरित्यर्थः, 'आघवित्तए' आख्यापयितुं=युक्त्यादिभिर्गृहे स्थापयितुम्; 'ताहे अकामा चेव' तदा अकामा एव=इच्छारहिता एव, 'एवं वयासी' एवमवदन्–'तं इच्छामो णं ते जाया' तत् इच्छामः खलु ते जात ! 'एगदिवसमपि रज्जसिरिं पासित्तए' एकदिवसमपि राज्यश्रियं द्रष्टुम्=हे पुत्र ! अस्माकमाग्रहवशात् एकदिवसमपि राज्यलक्ष्मीं स्वीकुरु। मातापित्रादिवचनमनुवर्तमानो मौनमवलम्ब्य स्थितो गजसुकुमालो राजा जातः। तदनन्तरं मातापित्रादयस्तं पृच्छन्ति–कथय हे पुत्र ! किं ते

हे बन्धुवर ! आप लोगों की आज्ञा लेकर अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप प्रवज्या (दीक्षा) लेना चाहता हूँ। उसके बाद कृष्ण वासुदेव और वसुदेव, देवकी, जब गजसुकुमाल को अनेक प्रकार से अनुकूल प्रतिकूल कथन से नहीं समझा सके, तब वे असमर्थ हो इस प्रकार बोले–

हे पुत्र ! हम लोग तुझे एक दिन के लिये भी राजसिंहासन पर बैठाकर तेरी राज्यश्री देखना चाहते हैं। इसलिये तुम एकदिन के लिये भी इस राज्यलक्ष्मी को स्वीकार करो। मातापिता और बडे भाई के अनुरोध से गजसुकुमाल चुप होगये। अनन्तर उनका राज्याभिषेक हुआ और वे राजा होगये। उनके राजा होने के बाद मातापिता ने पूछा–हे पुत्र ! तुम क्या चाहते हो !

અર્હત્ અરિષ્ટનેમિની પાસે દીક્ષા લેવા ચાહું છું. ત્યારપછી કૃષ્ણવાસુદેવ અને વસુદેવ તથા દેવકી જ્યારે ગજસુકુમાલને અનેક પ્રકારનાં અનુકૂલ પ્રતિકૂલ કથનથી સમજાવી શકયાં નહિ ત્યારે તેઓ અસમર્થ થઇ આ પ્રકારે બોલ્યાં.

હે પુત્ર ! અમે લોકો તને એક દિવસ માટે પણ રાજ્ય-સિંહાસનપર બેસાડીને તારી રાજ્યશ્રી જોવા ઇચ્છીએ છીએ. માટે તું એક દિવસ માટે પણ આ રાજ્ય-લક્ષ્મીનો સ્વીકાર કર. માતાપિતા અને મોટાભાઇના અનુરોધથી ગજસુકુમાલ ચુપ થઇ ગયા. ત્યારપછી તેનો રાજ્યાભિષેક થયો અને તે રાજા થઇ ગયા. તેમના રાજા થઇ

हृदयेप्सितम् ? सोऽवदत्–संयमं ग्रहीतुमिच्छामि, 'निक्खमणं' निष्क्रमणं=दीक्षाग्रहणं 'जहा महब्बलस्स' यथा महाबलस्य, 'जाव' यावत् 'तमाणाए' तदाज्ञया दीक्षाग्रहण-सामग्रीसमानयनादिकं 'तहा' तथा=तथैव 'संजमिए' संयमितः=प्रव्रजितः; गृहीतदीक्षः 'से गयसुकुमाले' स गजसुकुमालोऽनगारो जातः, कीदृश इत्याह–'इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी' ईर्यासमितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी' स गजसुकुमालोऽनगार ईर्यासमित्यादियुक्तः शब्दादिविषयान्निवृत्य वशीकृतसकलेन्द्रियो ब्रह्मचारी जात इति भावः ॥ सू० २६ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जं चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! तए णं से गयसुकुमाले अणगारे अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुन्नाए समाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स

वे बोले- संयम ग्रहण करना चाहता हूँ। उसके बाद गजसुकुमाल की आज्ञा से संयम की सभी सामग्रियाँ लायी गईं और महाबल के समान प्रव्रजित होकर वे गजसुकुमाल अनगार होगये, तथा ईर्यासमिति आदि से युक्त बनकर शब्द आदि विषयों से निवृत्त हो सभी इन्द्रियों को अपने वश में करके गुप्तब्रह्मचारी होगये ॥ सू० २६ ॥

ગયા પછી માતાપિતાએ પૂછ્યું—હે પુત્ર ! તમારી શું ઇચ્છા છે ?

તે બોલ્યા—'સંયમ ગ્રહણ કરવા ચાહું છું.' ત્યારપછી ગજસુકુમાલની આજ્ઞાથી સંયમની તમામ સામગ્રીઓ લાવવામાં આવી અને મહાબલની પેઠે પ્રવ્રજિત થઇ તે ગજસુકુમાલ અણગાર થઈ ગયા તથા ઇર્યાસમિતિ આદિથી યુકત શબ્દાદિ વિષયોથી નિવૃત્ત બની સર્વે ઇન્દ્રિયોને પોતાના વશમાં રાખી ગુપ્તબ્રહ્મચારી થઇ ગયા. (સૂ૦ ૨૬)

अंतियाओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडि- निक्खमित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ,पडिलेहित्ता ईसिं पब्भारगएणं काएणं जाव दो वि पाए साहट्टु एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विरहइ ॥ सू० २७ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं से' इत्यादि। 'तए णं से गयसुकुमाले अणगारे' ततः खलु स गजकुसुमालोऽनगारः, 'जं चेव दिवसं पव्वइए' यस्मिन्नेव दिवसे प्रव्रजितः, 'तस्सेव दिवसस्स' तस्यैव दिवसस्य 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' पूर्वापराह्णकालसमये=अपराह्णकालस्य पूर्वस्मिन् प्रहरे 'जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिस्तत्रैवोपागच्छति, 'उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ' उपागत्य अर्हन्तमरिष्टनेमिं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, करित्ता एवं वयासी' कृत्वा एवमवदत्- 'इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे' इच्छामि खलु भदन्त! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् 'महाकालम्मि' महाकाले=महाकालनामके 'सुसाणंसि श्मशाने 'एगराइयं महापडिमं' ऐकरात्रिकीं महाप्रतिमाम्=एकरात्रसम्बन्धिनीं महाप्रतिमामित्यर्थः, 'उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए' उपसंपद्य खलु विहर्तुम्। हे भदन्त! भवताऽनुज्ञात एकरात्रसम्बन्धिनीं महाप्रतिमां स्वीकर्तुमिच्छामीति

उसके बाद वे गजसुकुमाल अनगार जिस दिन प्रव्रजित हुए उसीदिन के चौथे प्रहर में भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप गये और तीन वार वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोले-हे भदन्त! मेरी इच्छा है कि महाकाल श्मशान में एक रात की भिक्षु महाप्रतिमा को स्वीकार कर विचरण करूँ अर्थात् सम्पूर्ण रात्रि ध्यानस्थ हो खडा रहूँ।

त्यारपछी ते गजसुकुमाल अनगार जे दिवसे प्रव्रजित थया तेज दिवसे चोथा प्रहरमां भगवान अर्हत् अरिष्टनेमिनी पासे गया अने त्रणवार वंदन नमस्कार करी आ प्रकारे कह्युं :- हे भदन्त! मारी ईच्छा छे के महाकाल श्मशानमां एक रात भिक्षु महाप्रतिमानो स्वीकार करी विचरणु करुं, अर्थात् संपूर्ण रात्रिभर ध्यानस्थ थइ उभो रहुं.

भावः। तदनु भगवानाह-'अहासुहं देवाणुप्पिया!' यथासुखं देवानुप्रिय! 'तए णं से गयसुकुमाले अणगारे' ततः खलु स गजसुकुमारोऽनगारः, 'अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाए समाणे' अर्हताऽरिष्टनेमिना अभ्यनुज्ञातः सन् 'अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ' अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दते नमस्यति=अर्हन्तमरिष्टनेमिं स्तौति पञ्चाङ्गेन नमस्करोति च, 'वंदित्ता णमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स' वन्दित्वा नमस्यित्वा अर्हतोऽरिष्टनेमेः 'अंतियाओ' अन्तिकात्=समीपादित्यर्थः, 'सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ' सहस्राम्रवनात् उद्यानात् 'पडिनिक्खमइ' प्रतिनिष्क्रामति=निस्सरति, 'पडिनिक्खमित्ता' प्रतिनिष्क्रम्य 'जेणेव' यत्रैव 'महाकालं सुसाणं' महाकालं श्मशानं 'तेणेव उवागए' तत्रैव उपागतः 'उवागच्छित्ता थंडिलं पडिलेहेइ' उपागत्य स्थण्डिलं=प्रासुकभूमिं प्रतिलेखयति=निरीक्षते, 'पडिलेहित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ' प्रतिलेख्य उच्चारप्रस्रवणभूमिं प्रतिलेखयति, 'ईसिं पब्भारगएणं काएणं' ईषत्प्राग्भारगतेन कायेन=किंचिन्नम्रीभूतेन कायेन 'जाव दोवि पाए संहट्टु' यावद् द्वावपि पादौ संहृत्य=संकोचं नीत्वा, 'एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ' ऐकरात्रिकीं महाप्रतिमाम् उपसंपद्य खलु विहरति ॥ सू० २७ ॥

भगवानने कहा हे देवानुप्रिय! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो उस प्रकार करो। उसके बाद वह गजसुकुमाल अनगार अर्हत् अरिष्टनेमि से आज्ञा प्राप्त कर उन्हें वन्दन नमस्कार कर सहस्राम्रवन उद्यान से निकल कर महाकाल श्मशान में गये। वहाँ पर उन्होंने कायोत्सर्ग करने के लिये प्रासुकभूमि तथा उच्चार पासवण-बडीनीत, लघुनीत के परिष्ठापन-परिठने योग्य भूमिकी प्रतिलेखना की। बाद में काया को कुछ नमाकार चार अंगुल के अन्तर से दोनों पाँवों को सिकोड़ कर एक पुद्गल पर दृष्टि रखते हुए ऐकरात्रिकी महापडिमा को स्वीकार कर ध्यान में निमग्न हुए ॥ सू० २७ ॥

ભગવાને કહ્યું :- હે દેવાનુપ્રિય! જે પ્રકારે તને સુખ થાય તેમ કર. પછી તે ગજસુકુમાલ અનગાર અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ પાસેથી આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી તેમને વંદન નમસ્કાર કરી સહસ્રામ્રવન ઉદ્યાનથી નીકળીને મહાકાલ શ્મશાનમાં ગયા. ત્યાં તેમણે કાયોત્સર્ગ કરવા માટે પ્રાસુકભૂમિ તથા ઉચ્ચાર પાસવણ-ખડીનીત, લઘુનીતના પરિષ્ઠાપન યોગ્ય ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી. પછી કાયાને જરા નમાવીને ચાર આંગુલના અંતરે બેઉ પગોને સંકોચી એક પુદ્ગલ પર દૃષ્ટિ રાખીને ઐકરાત્રિકી મહાપડિમાનો સ્વીકાર કરી ધ્યાનમાં નિમગ્ન થયા (સૂ૦ ૨૭)

॥ मूलम् ॥

इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए बारवईओ नयरीओ बहिया पुव्वणिग्गए समिहाओ य दब्भे य कुसे य पत्तामोडयं च गिण्हइ, गिण्हित्ता तओ पडिनिवत्तइ, पडिनिवत्तित्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंते णं वीइवयमाणे २ संझाकालसमयंसि पविरलमणुसंसि गयसुकुमालं अणगारं पासइ, पासित्ता तं वेरं सरइ, सरित्ता आसुरुत्ते एवं वयासी–एस णं भो! से गयसुकुमाले कुमारे अप्पत्थिय जाव परिवज्जिए, जे णं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपइयं कालवत्तिणीं विप्पजहेत्ता मुंडे जाव पव्वइए ॥ सू० २८ ॥

॥ टीका ॥

'इमं च णं' इत्यादि । 'इमं च णं' इतश्च खलु 'सोमिलो माहणो' सोमिलो ब्राह्मणः 'सामिधेयस्स' सामिधस्य 'अट्ठाए' अर्थाय=हवनार्थं विविधशुष्ककाष्ठग्रहणाय 'बारवईओ नयरीओ बहिया' द्वारावत्या नगर्या बहिः 'पुव्वणिग्गए' पूर्वनिर्गतः–पूर्वं निर्गतः=गजसुकुमारस्य श्मशानगमनात्पूर्वमेव द्वारावत्या नगर्या बहिर्निर्गतः, 'समिहाओ य समिधश्च 'दब्भे य' दर्भांश्च 'कुसे य' कुशांश्च 'पत्तामोडयं च' पत्रामोटं च–समिधः=यज्ञकाष्ठानि, दर्भान्=कुशसजातीयतृणान्, पत्रामोटम्–पत्राणामामोटः पत्रामोटस्तं पत्रामोटम्–पत्रसमूहं 'गिण्हइ' गृह्णाति, 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'तओ पडिनिवत्तइ' ततः प्रतिनिवर्तते, 'पडिनि-

---

उस समय वह सोमिल ब्राह्मण गजसुकुमाल अनगार के श्मशान जाने से पूर्व ही हवन के निमित्त समिधा आदि लाने के लिये द्वारका नगरी से बाहर निकला था, सो वह सोमिल ब्राह्मण समिधा, कुश, डाभ और पत्तों को लेकर अपने घर आरहा था।

તે સમયે તે સોમિલ બ્રાહ્મણ ગજસુકુમાલ અનગારના શ્મશાન જવા પહેલાંજ હવનને નિમિત્તે સમિધ આદિ લેવા માટે દ્વારકાનગરીથી બહાર નીકળ્યો હતો. તે સોમિલ બ્રાહ્મણ સમિધ, કુશ, ડાભ તથા પાંદડાં લઇને પાછો પોતાને ઘેર આવતો હતો..

वत्तित्ता' प्रतिनिवृत्य 'महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं' महाकालस्य श्मशानस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिनिकटे खलु, 'वीइवयमाणे २' व्यतिव्रजन् २=गच्छन् २, 'संझाकालसमयंसि' संध्याकालसमये, 'पविरलमणुसंसि' प्रविरलमानुषे-प्रविरला मानुषा यस्मिन् तस्मिन्-कचित्कचिद्दृष्टिगोचरीभवज्जने-प्रायोमनुष्यागमनरहित इत्यर्थः; 'गयसुकुमालं अणगारं पासइ' गजसुकुमालमनगारं पश्यति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'तं वेरं' तद्वैरम्=स्वपुत्रीपरित्यागरूपं वैरं 'सरइ' स्मरति, 'सरित्ता' स्मृत्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=वैरस्मरणजनितकोपवशाद्विमूढः, 'एवं वयासी' एवमवदत्-'एस णं भो! से गयसुकुमाले कुमारे' एष खलु भोः! स गजसुकुमालः कुमारः 'अप्पत्थिय जाव परिवज्जिए' अप्रार्थित यावत् परिवर्जितः, अत्र 'यावत्'-पदेन 'अप्पत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे हीनपुन्न-चाउद्दसे हिरिसिरिपरिवज्जिए' अप्रार्थितप्रार्थकः दुरन्तप्रान्तलक्षणः हीनपुण्य-चातुर्दशः ह्रीश्रीपरिवर्जित-इति संग्राह्यम्, तत्र-अप्रार्थितप्रार्थकः-अप्रार्थितस्य= अयाचितस्य मृत्योः प्रार्थको-मरणवाञ्छक इति भावः, दुरन्तप्रान्तलक्षणः-दुरन्तं=दुष्टावसानम् अत एव प्रान्तम्=अमनोज्ञं लक्षणं यस्य सः-भाग्यहीन इत्यर्थः, हीनपुण्यचातुर्दशः-चतुर्दश्यां जातः=चातुर्दशः, हीनं पुण्यं यस्यासौ हीनपुण्यः, हीनपुण्यश्चासौ चातुर्दशश्च हीनपुण्यचातुर्दशः-पापात्मा इत्यर्थः,

---

तब महाकाल श्मशान के समीप से जाता हुआ उस सोमिल ब्राह्मण ने मनुष्यों के गमनागमन से रहित संध्याकाल में श्मशान भूमि में कायोत्सर्ग करते हुए गजसुकुमाल अनगार को देखा, देखते ही उसके हृदय में वैरभाव जागृत हुवा और क्रोधित होकर वह इस प्रकार बोला-

ओह! यह वही निर्लज्ज अप्रार्थितप्रार्थक-मरण को चाहने वाला गजसुकुमाल कुमार है। यह दुर्लक्षणयुक्त और पुण्यहीन है,

---

તે વખતે મહાકાલ શ્મશાનની પાસે થઇને જતા તે સોમિલ બ્રાહ્મણે મનુષ્યની આવજાથી રહિત સંધ્યાકાલના સમયે શ્મશાનમાં કાયોત્સર્ગ કરતા ગજસુકુમાલ અનગારને જોયા. જોતાં વેંત તેના હૃદયમાં વૈરભાવની જાગૃતિ થઇ અને ક્રોધિત થઈ તે આ પ્રકારે બોલ્યો.

ઓહો! આ તે જ નિર્લજ્જ અપ્રાર્થિતપ્રાર્થક - મરણને ચાહવાવાળો ગજસુકુમાલ કુમાર છે.

આ દુર્લક્ષવાળો અને પુણ્યહીન છે, જે મારી પુત્રી, સોમશ્રીની અંગજાત

ह्रीश्रीपरिवर्जितः=लज्जालक्ष्मीरहित इत्यर्थः; 'जे णं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं' यः खलु मम दुहितरं सोमश्रियो भार्याया आत्मजां सोमां दारिकाम्, 'अदिट्ठदोसपइयं' अदृष्टदोषप्रकृतिम्-न दृष्टो दोषो यया सा अदृष्टदोषा, तादृशी प्रकृतिर्यस्याः सा ताम्-अदुष्टस्वभावामित्यर्थः 'कालवत्तिणिं' कालवर्तिनीम्=यौवनकालवर्तिनीं-प्राप्तयौवनावस्थां 'विप्पजहेत्ता' विप्रहाय 'मुंडे जाव पव्वइए' मुण्डो यावत् प्रव्रजितः=दीक्षितो जातः ॥सू० २८॥

॥ मूलम् ॥

तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स वेरनिज्जायणं करेत्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता दिसापडिलेहणं करेइ, करित्ता सरसं मट्टियं गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता जलंतीओ चिययाओ फुल्लिय-किंसुयसमाणे खयरंगारे कहल्लेणं गिण्हइ, गिण्हित्ता गयसु-कुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता भीए तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू० २९ ॥

॥ टीका ॥

'तं सेयं' इत्यादि । 'तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स वेरनिज्जा-यणं करित्तए' तच्छ्रेयः खलु मम गजसुकुमालस्य वैरनिर्यातनं कर्तुम्, गज-सुकुमारसंबन्धिप्रतिवैरस्यायमवसर इति भावः । 'एवं संपेहेइ' एवं संप्रेक्षते= एवं विचारयति 'संपेहित्ता' संप्रेक्ष्य=विचार्य 'दिसापडिलेहणं' दिशाप्रतिलेखनं

जो मेरी बेटी सोमश्री की अंगजा, प्राणसे प्यारी दोषरहित सोमा को छोडकर संयमी होगया है । ॥ सू० २८ ॥

इसलिये मुझे उचित है कि मैं इस वैर का बदला लूँ । वह सोमिल ब्राह्मण इस प्रकार विचार कर चारों ओर देखने लगा कि

દીકરી, પ્રાણથી પણ જે પ્યારી છે તેનો દોષ વિના ત્યાગ કરી સંયમી થઈ ગયો છે. (સૂ૦ ૨૮)

આથી મારા માટે એ ઉચિત છે કે હું આ વેરનો બદલો લઉં. તે સોમિલ બ્રાહ્મણે આ પ્રકારે વિચાર કરીને ચારે બાજુ જોયું કે કોઈ આવતું જાતું નથી ને?

'करेइ' करोति=अस्मिन्नवसरे कोऽपि आगच्छति प्रत्यागच्छति न वेति सकल-दिशाऽवलोकनं करोति, 'करित्ता' कृत्वा=जनानां गमनागमनमदृष्ट्वा 'सरसं मट्टियं' सरसां मृत्तिकाम्=आर्द्रां सरोमृत्तिकां 'गिण्हइ' गृह्णाति, 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'जेणेव गयसुकुमाले अणगारे' यत्रैव गजसुकुमालोऽनगार ईषदवनतशरीरः समाहितसर्वेन्द्रियः स्थिरीकृतसर्वाङ्गश्चरणद्वयं चतुरङ्गुलावकाशेन संकुचितं विधाय जानुपर्यन्तमलम्बितभुजद्वयः शुष्कैकपुद्गलोपरिसंनिविष्टानिमेषदृष्टिरूर्ध्वकायेन ध्यानावस्थितो वर्तते, 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए' उपागत्य गजसुकुमालस्य अनगारस्य मस्तके 'मट्टियाए पालिं बंधइ' मृत्तिकया पालिं बध्नाति=मृत्तिकया शिरसि परिवेषं करोति, 'बंधित्ता' बद्ध्वा 'जलंतीओ चिययाओ' ज्वलन्त्याश्चितिकायाः=प्रज्वलितायाश्चितायाः सकाशात् 'किंसुयसमाणे खयरंगारे' किंशुकसमानान् खदिराङ्गारान्-विकशितपलाशपुष्पसदृशान् जाज्वल्यमानान् खदिरकाष्ठाङ्गारान् 'कहल्लेणं' कर्परेण 'कहल्ल' इति कर्परार्थो देशी शब्दः, 'गिण्हइ' गृह्णाति'

कोई आता जाता तो नहीं है। चारों ओर देखकर उसने तालाब से गीली मिट्टी निकाली। अनन्तर जहाँ पर गजसुकुमाल अनगार अपनी काया को नमा कर सभी इन्द्रियों को वश में रख अपने अङ्ग-उपाङ्गों को स्थिर रखते हुए अपने दोनों चरणों को चार अंगुल के अन्तर से सिकोड कर अपने हाथों को घुटनों तक लटका कर एक सूखे हुए पुद्गल पर अनिमेष दृष्टि रखते हुए ऊर्ध्वकाय से ध्यानावस्थित थे, वहाँ आया। वहाँ आकर गजसुकुमाल अनगार के शिर पर मिट्टी की पाल बाँधी। अनन्तर सोमिल ने जलती हुई चिता से फूले हुए टेसू के समान लाल२ खैर लकडी के अङ्गारों को फूटे हुए मिट्टी के वर्तन के टुकडे (ठीकरे) में भरकर लाया

ચારે બાજુ જોઈને તેણે તળાવમાંથી ભીની માટી કાઢી. પછી જ્યાં ગજસુકુમાલ પોતાની કાયાને નમાવી, બધી ઇન્દ્રિઓ વશ રાખી, પોતાનાં અંગ-ઉપાંગોને સ્થિર રાખી, પોતાના બેઉ પગને ચાર આંગુલને અંતરે સંકોચીને, પોતાના હાથોને ઘુંટણો સુધી લટકાવી, એક સૂકાયેલા પુદ્ગલપર અનિમેષદૃષ્ટિ રાખી, ઉર્ધ્વકાયથી ધ્યાનાવસ્થિત હતા, ત્યાં આવ્યો. ત્યાં આવીને ગજસુકુમાલ અનગારના શિરે માટીની પાલ બાંધી. પછી સોમિલે બળતી ચિતામાંથી ટેસૂના ફૂલ જેવા લાલચોળ ખેરના લાકડાંના અંગારા લઈને ફૂટેલા માટીના વાસણના કટકા (ઠીકરાં)માં ભરીને ગજસુકુમાલ અનગારના માથા ઉપર નાખી

'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ' गजसुकुमालस्य अनगारस्य मस्तके प्रक्षिपति, 'पक्खिवित्ता' प्रक्षिप्य 'भीए' भीतः 'तओ' ततः=श्मशानात् 'खिप्पामेव' क्षिप्रमेव=झटित्येव, 'अवक्कमइ' अपक्रामति=पलायते, 'अवक्कमित्ता' अपक्रम्य=प्रपलाय्य, 'जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए' यस्या दिशः प्रादुर्भूतः तस्यामेव दिशि प्रतिगतः ॥ सू० २९ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तस्स गजसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा। तए णं से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसावि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव अहियासेइ। तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थज्झवसाणेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुप्पविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे। तओ सिद्धे जावप्पहीणे। तत्थ णं अहासंनिहिएहिं देवेहिं सम्मं आराहियंति कट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडए, चेलुक्खेवे कए, दिव्वे य गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था ॥ सू० ३० ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स'

और उन धधगते हुए अंगारों को गजसुकुमाल अनगार के शिर पर रख दिया। उसके बाद-'कोई मुझे देख न ले' इस भय से चारों ओर इधर उधर देखता हुआ वह जल्दी२ वहाँ से भाग गया और जिस दिशा से आया था उसी दिशा में चला गया ॥सू० २९॥

सोमिल द्वारा शिरपर अंगारों के रखने से गजसुकुमाल

દીધા. અંગારા નાખ્યા પછી કોઈ મને દેખી ન જાય, એવા ભયથી ચારે બાજુ આમ તેમ જોતો તે જલદી ૨ ત્યાંથી ભાગી ગયો. ને જે બાજુથી આવ્યો હતો તે દિશામાં ચાલ્યો ગયો. (સૂ૦ ૨૯)

સોમિલ દ્વારા માથા ઉપર અંગારા મુકાયા પછી ગજસુકુમાલ અનગારના શરીરમાં

ततः खलु तस्य गजसुकुमालस्यानगारस्य 'सरीरे' शरीरे 'वेयणा' वेदना-विद्यते-अनुभूयतेऽनयेति वेदना-उदयावलिकाप्रविष्टस्य स्वकृतकर्मणोऽशातरूपानुभवः प्रादुर्भूता=प्रकटिता, कीदृशीत्याह-'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरधिसहा, उज्ज्वला=दुःखरूपतया जाज्वल्यमाना सुखलेशेनापि वर्जिता, यावच्छब्देन विपुला=महती प्रगाढा=कल्पनातीतेति ग्राह्यम्, तथा दुरधिसहा=नितरामसह्या। 'तए णं से गयसुकुमाले अणगारे' ततः खलु स गजसुकुमालोऽनगारः 'सोमिलस्स माहणस्स मणसावि' सोमिलस्य ब्राह्मणस्य मनसाऽपि 'अप्पदुस्समाणे' अप्रदुष्यन्=तदुपरि लेशतोऽपि द्वेषमकुर्वन् 'तं उज्जलं जाव अहियासेइ' ताम् उज्ज्वलां यावद् दुःसहवेदनाम् अधिसहते=परिषहते। 'तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स' ततः खलु तस्य गजसुकुमालस्य अनगारस्य 'तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स' तामुज्ज्वलां यावत् दुःसहवेदनामधिसहमानस्य 'सुहेणं परिणामेणं' शुभेन परिणामेन=शुभात्मकपरिणतिलक्षणेन, 'पसत्थज्झवसाणेणं' प्रशस्ताऽध्यवसानेन=उत्कृष्टतया सूक्ष्मात्मचिन्तनेन 'तयावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं' तदावरणीयानां कर्मणां क्षयेण-तदावरणीयानां=तत्तदात्मगुणावरणकानां कर्मणां क्षयेण 'कम्मरयविकिरणकरं' कर्मरजोविकिरण-

---

अनगार के शरीर में महावेदना उत्पन्न हुई; जो वेदना अत्यन्त दुःखमयी थी, जाज्वल्यमान थी, कल्पनातीत थी और असह्य थी। फिरभी वे गजसुकुमाल अनगार उस सोमिल ब्राह्मण के प्रति लेशमात्र भी द्वेष नहीं करते हुए उस असह्य वेदना को सहन करने लगे। और उस दुःखरूप जाज्वल्यमान वेदना को सहन करते हुए उन गजसुकुमाल अनगार ने शुभ परिणाम और प्रशस्त अध्यवसाय से तथा उन-उन आत्मा के गुणों के आच्छादक कर्मों के नाश से ज्ञानावरणादि कर्मों के निवारक आत्मा के अपूर्व करण

મહાવેદના ઉત્પન્ન થઇ. તે વેદના અત્યન્ત દુઃખમયી હતી, જાજવલ્યમાન હતી, કલ્પનાતીત હતી અને બહુજ અસહ્ય હતી. છતાં પણ ગજસુકુમાલ અનગાર તે સોમિલ બ્રાહ્મણ પર લેશમાત્ર પણ દ્વેષ ન કરતાં તે અસહ્ય વેદના સહન કરવા લાગ્યા. અને તે દુઃખરૂપ જાજવલ્યમાન વેદનાને સહન કરતા ગજસુકુમાલ અનગારે, શુભપરિણામ તથા પ્રશસ્ત અધ્યવસાયથી, તથા તે તે આત્માના ગુણોનાં આચ્છાદક કર્મોના નાશથી, જ્ઞાનાવરણાદિ કર્મોના નિવારક આત્માના અપૂર્વ કરણમાં પ્રવેશ કર્યો. જેથી તેઓને

करम्-कर्म=ज्ञानावरणादिः तदेव रजः मलिनकारकत्वात्, तस्य यद् विकिरणं= प्रक्षेपणं पृथक्करणं ध्वंसनमिति यावत्, तस्य करं=तत्कारकम् 'अपुव्वकरणं' अपूर्वकरणम्=आत्मनोऽभूतपूर्वं शुभपरिणामम् 'अणुप्पविट्ठस्स' अनुप्रविष्टस्य= प्राप्तस्येत्यर्थः, 'अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे' अनन्तमनुत्तरं यावत् केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम्-अनन्तम्=अन्तरहितम्, अनुत्तरम्=प्रधानम्, यावत्-यावच्छब्देन 'निव्वाघाए' निर्व्याघातम्=व्याघात- रहितम्=कुड्यादिभिरप्रतिहतम्, 'निरावरणे' निरावरणम् = आवरणवर्जितम्- सर्वतः प्रद्योतमानमित्यर्थः; 'कसिणे' कृत्स्नम्=संपूर्णम्, 'पडिपुण्णे' प्रतिपूर्णं=सर्वतोव्याप्तम् केवलवरज्ञानदर्शनं='केवल' इति नाम्ना प्रसिद्धम् एकमात्रं= सजातीयद्वितीयरहितं वरं=मतिश्रुतज्ञानाद्यपेक्षया श्रेष्ठं ज्ञानं चक्षुर्दर्शनाद्यपेक्षया च श्रेष्ठं दर्शनम्, अनयोः सकलद्रव्यपर्यायविषयकत्वात्; केवलज्ञानं केवलदर्शनं चेति द्वयं समुत्पन्नम्। 'तओ' ततः=केवलज्ञानकेवलदर्शनोत्पादानन्तरमसौ गज- सुकुमालोऽनगारः 'सिद्धे जाव पहीणे' सिद्धो यावत् प्रहीणः-सिद्धः कृतकृत्यत्वात्, यावत्प्रहीणः, यावच्छब्देन 'बुद्धे' बुद्धः-लोकालोकसकलपदार्थावगमात्, 'मुत्ते' मुक्तः-सकलकर्मव्यपगमात्, 'परिनिव्वाए' परिनिर्वातः=सकलकर्मकृतविकारनि- राकरणेन शीतीभूतत्वात् 'सव्वदुक्खप्पहीणे' सर्वदुःखप्रहीणः-शारीरमानसदुःख-

---

में प्रवेश किया। जिससे उनको अनन्त-अन्तरहित, अनुत्तर-प्रधान, निर्व्याघात-रुकावटरहित, निरावरण-आवरणरहित, कृत्स्न-सम्पूर्ण प्रतिपूर्ण केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हुए। और केवलज्ञान केवलदर्शन उत्पन्न होनें के बाद वे गजसुकुमाल अनगार कृतकृत्य बनकर 'सिद्ध' पद को प्राप्त हुए, जिससे वे लोकालोक सभी पदार्थों के ज्ञान से 'बुद्ध' होगये। सभी कर्मों के नाश होने के कारण 'मुक्त' होगये। सभी प्रकार के कर्मों से उत्पन्न विकारों को दूर करने कारण 'परिनिर्वात' शीतलीभूत होगये। एवं शारीरिक दुःख

અનન્ત—અન્તરહિત, અનુત્તર—પ્રધાન, નિર્વ્યાઘાત—રૂકાવટ વગર, નિરાવરણ—આવરણ રહિત, કૃત્સન-સંપૂર્ણ, પ્રતિપૂર્ણ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થયાં. તથા કેવળજ્ઞાન કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થયા પછી તે ગજસુકુમાલ અનગાર કૃતકૃત્ય થઇને 'સિદ્ધ' પદને પ્રાપ્ત થયા. તેથી તેઓ લોકાલોક સર્વે પદાર્થોના જ્ઞાનથી 'બુદ્ધ' થઇ ગયા. બધાં કર્મોના નાશ થઇ જવાને કારણે 'મુક્ત' થઇ ગયાં. સર્વે પ્રકારનાં કર્મોથી ઉત્પન્ન થત વિકારોને દૂર કરવાના કારણથી 'પરિનિર્વાત' શીતલીભૂત થઇ ગયા. તેમજ શારીરિ

रहितत्वात्। 'तत्थ णं' तत्र खलु 'अहासंनिहिएहिं देवेहिं' यथा संनिहितैर्देवैः=तत्समयसमीपवर्तिदेवैः 'सम्मं आराहियं' सम्यक् आराधितम्=अनेन गजसुकुमालेन मुनिना चारित्रं सम्यक् आराधितम् 'ति कट्टु' इति कृत्वा=एवं मनसि निधाय 'दिव्वे सुरहिगंधोदए' दिव्यं सुरभिगन्धोदकम्–दिव्यम्=वैक्रियशक्त्या संपादितं सुरभिगन्धोदकम्=सुगन्धितमचित्तं जलम्, 'वुट्टे' वृष्टम्, 'दसद्धवन्ने कुसुमे' दशार्धवर्णानि=पञ्चवर्णानि कुसुमानि=पुष्पाणि 'निवाइए' निपातितानि=वर्षितानि, चेलुक्खेवे कए' चैलोत्क्षेपः कृतः=वस्त्रवृष्टिः कृता; 'दिव्वे य' दिव्यश्च=देवसंबन्धी च, 'गीयगंधव्वनिनाए' गीतगान्धर्वनिनादः–गीतं=स्वरतालयुक्तं गानं, गान्धर्वं=मृदङ्गादिवादनम्, अनयोर्निनादः=ध्वनिः 'कए यावि होत्था' कृतश्चाप्यभूत् ॥ सू० ३० ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिक्खंधवरगए सकोरंटमल्ल-

तथा मानसिक दुःखसे रहित होने के कारण 'सर्वदुःखप्रहीण' होगये अर्थात् वह गजसुकुमाल अनगार परमपद को प्राप्त होगये। उन गजसुकुमाल अनगार के परमपद प्राप्त होने पर उस समय वहाँ के समीपवर्ती देवोंने 'इन गजसुकुमाल अनगारने चारित्र का सम्यक् आराधन किया है' ऐसा विचार कर अपनी वैक्रियशक्ति के द्वारा दिव्य सुगन्धित अचित्तजल की और पाँच वर्णों के अचित्त फूलों की वृष्टि करके तथा दिव्य वस्त्रों की वर्षा करके उन देवताओंने दिव्य सुमधुर गान (गायन) से तथा मृदङ्गादि वाद्यों की ध्वनि से आकाश को व्याप्त कर (गुंजा) दिया ॥ सू० ३० ॥

દુઃખ અને માનસિક દુઃખથી રહિત હોવાના કારણે 'સર્વદુઃખપ્રહીણ' થઇ ગયા, અર્થાત્ તે ગજસુકુમાલ અનગાર પરમપદને પ્રાપ્ત થયા. તે ગજસુકુમાલ અનગાર પરમપદને પ્રાપ્ત થયા પછી તે સમયે ત્યાં સમીપવર્તી દેવોએ, 'એ ગજસુકુમાલ અનગારે ચારિત્રનું સમ્યક્ આરાધન કર્યું છે' એમ વિચાર કરી, પોતાની વૈક્રિય શક્તિદ્વારા દિવ્ય સુગન્ધિત અચિત્ત જળની અને પાંચ વર્ણોનાં અચિત્ત ફૂલોની વૃષ્ટિ કરી. તથા દિવ્ય વસ્ત્રોની વૃષ્ટિ કરીને તે દેવતાઓએ દિવ્ય સુમધુર ગીત (ગાયન)-થી અને મૃદંગાદિ વાદ્યોની ધ્વનિથી આકાશને વ્યાપ્ત કરી (ગુંજાવી) દીધું. (સૂ૦ ૩૦)

दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं महया भडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते बारवइं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं पासइ जुण्णं जराजज्जरियदेहं जाव किलंतं महइमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय बहियारत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसमाणं पासइ। तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिक्खंधवरगए चेव एगं इट्टगं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहियारत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसइ। तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए ॥ सू० ३१ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः 'कल्लं' कल्ये=दीक्षाद्वितीयदिवसे 'पाउप्पभायाए जाव जलंते' प्रादुःप्रभातायां यावत् ज्वलति, रात्रौ व्यतीतायां सूर्ये समुदिते सति-इत्यर्थः; 'ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिक्खंधवरगए' स्नातो यावद् विभूषितः हस्तिस्कन्धवरगतः=करिस्कन्धारूढः 'सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं' सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धुवद्भिः 'महयाभडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते' महाभटचटकरप्रकरवृन्द-

---

इधर गजसुकुमाल की दीक्षा के दूसरे दिन सूर्योदय होजाने पर स्नान करके यावत् सभी अलंकारों से अलंकृत हो हाथी के ऊपर बैठकर, कुरण्ट के फूलों की माला से युक्त छत्र को शिर पर धराते हुए तथा दायें बायें-दोनों तर्फ श्वेत चामर ढोंजाते हुए अनेक

તે બાજુ ગજસુકુમાલની દીક્ષાને બીજે દિવસે સૂર્યોદય થયા પછી સ્નાન કરીને તમામ અલંકારોથી વિભૂષિત થઇને હાથીના ઉપર બેસીને, કોરન્ટના ફૂલોની માલાથી યુક્ત છત્રને શિર ઉપર ધરાવતા, તથા ડાબી જમણી બેઉ બાજુએ શ્વેત ચામર ઢોળાવતા,

परिक्षिप्तः—महाभटानां ये चटकरप्रकाराः=विस्तृतसमूहास्तेषां यद् वृन्दं तेन परिक्षिप्तः=संवेष्टितः 'बारवइं णयरिं मज्झं मज्झेणं' द्वारावत्या नगर्या मध्यमध्येन 'जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थ गमणाए' यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=अरिष्टनेमिसन्निधे गमनाय निश्चयमकरोत् । 'तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छमाणे एकं पुरिसं पासइ' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः द्वारावत्यां नगर्यां मध्यमध्येन निर्गच्छन् एकं पुरुषम् पश्यति, कीदृशमित्याह—'जुण्णं जराजज्जरियदेहं' जीर्णं जराजर्जरितदेहम्—जरसा जर्जरितं=जर्जरीकृतं देहं यस्य तम्, 'जाव किलंतं' यावत् क्लाम्यन्तम्=ग्लायन्तं 'महइमहालयाओ' महामहालयात्=अतिमहतः 'इट्टगरासीओ' इष्टकाराशेः 'एगमेगं इट्टगं गहाय' एकामेकाम् इष्टकां गृहीत्वा 'बहियारत्थापहाओ' बहीरथ्यापथात्=बाह्यरथ्याप्रदेशात् 'अंतोगिहं' अन्तर्गृहम्=गृहमध्ये 'अणुप्पवेसमाणं' अनुप्रवेशयन्तं 'पासइ' पश्यति । 'तए णं' ततः खलु 'से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स' स कृष्णो वासुदेवः तस्य पुरुषस्य 'अणुकंपण-

---

सुभटों के समूह से युक्त वे कृष्ण वासुदेव द्वारावती नगरी के राजमार्ग से होते हुए भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप जाने के लिए रवाना हुए। तब द्वारका नगरी के बीचोबीच से जाते हुए उन कृष्ण वासुदेव ने एक पुरुष को देखा, वह पुरुष पूर्ण वृद्ध था, वृद्धावस्था के कारण उसकी देह जर्जरित होने से वह बहुत दुःखी था। ऐसी स्थिति को प्राप्त वह वृद्ध पुरुष ईंटों की विशाल राशिमें से एक २ ईंट को उठाकर बाहर के राजमार्ग से अपने घर में रखता था। उस समय उस दुःखी वृद्ध को इस प्रकार कार्य करते हुए देखकर कृष्ण वासुदेवने उसकी अनुकम्पा के लिये हाथी के ऊपर बैठे बैठे ही अपने हाथ से एक ईंट को उठाकर उसके घर

અનેક સુભટોના સમૂહથી યુકત, તે કૃષ્ણ વાસુદેવે દ્વારાવતી નગરીના રાજમાર્ગમાંથી પસાર થઇને, અર્હત અરિષ્ટનેમિની પાસે જવા પ્રસ્થાન કર્યું. ત્યારે દ્વારકા નગરીની વચ્ચોવચ્ચ થઇને જતા તે કૃષ્ણવાસુદેવે એક પુરુષને જોયો. તે પુરુષ પૂર્ણ વૃદ્ધ હતો. વૃદ્ધવસ્થાના કારણથી તેનો દેહ જર્જરિત હોવાથી તે ઘણોજ દુઃખી હતો. આવી દુઃખિત સ્થિતિવાળો તે વૃદ્ધ પુરુષ એક મોટા ઇંટના ઢગલામાંથી એક એક ઇંટ ઉપાડીને બહારના રાજમાર્ગ ઉપરથી પોતાના ઘરમાં મૂકતો હતો. તે સમયે તે દુઃખી વૃદ્ધને આવી રીતે કાર્ય કરતો થકો જોઇને કૃષ્ણ વાસુદેવે તેના ઉપર દયા લાવી હાથી ઉપર બેઠા બેઠા

ट्टाए' अनुकम्पनार्थाय 'हत्थिक्खंधवरगए चेव' हस्तिस्कन्धवरगत एव=हस्तिन उपरि स्थित एव स्वहस्तेन 'एगं इट्टगं गेण्हइ' एकाम् इष्टकाम् गृह्णाति, 'गिण्हित्ता' गृहीत्वा 'बहियारत्थापहाओ' बहीरथ्यापथात् 'अंतोगिहं' अन्तर्गृहम्=गृहमध्ये 'अणुप्पवेसइ' अनुप्रवेशयति=स्थापयति। 'तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं एगाए इट्टगाए गहियाए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालए इट्टगस्स रासी बहियारत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए' ततः खलु कृष्णेन वासुदेवेन एकस्यामिष्टकायां गृहीतायां सत्याम् अनेकैः पुरुषशतैः स इष्टकाया राशिः बहीरथ्यापथात् अन्तर्गृहे अनुप्रवेशितः ॥ सू० ३१ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता जाव वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—कहि णं भंते! से मम सहोयरे भाया गयसुकुमाले अणगारे? जण्णं अहं वंदामि णमंसामि। तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—साहिए णं कण्हा! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे। तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी—कहण्णं भंते! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ॥ सू० ३२ ॥

में रख दिया। वासुदेव कृष्ण के द्वारा एक ईंट उठाये जाने पर अन्य सभी जनोंने अपने हाथों-हाथ ईंटों को उठाकर क्रमसे सारी राशि को उसके घर में पहुंचा दी, इस प्रकार श्रीकृष्ण के एक ईंट उठाने मात्र से उस वृद्ध पुरुष का बार२ चक्कर काटने का कष्ट दूर होगया ॥ सू० ३१ ॥

પોતાને હાથે એક ઈંટ ઉપાડીને તેના ઘરમાં મૂકી દીધી. કૃષ્ણ વાસુદેવ દ્વારા એક ઈંટ ઉપાડવાથી અન્ય સર્વે જનોએ પોતાના હાથો હાથ ઈંટોના ઢગલાને ઉપાડીને તેના ઘરમાં પહોંચાડી દીધો. આ પ્રકારે શ્રીકૃષ્ણના એક ઈંટ ઉપાડવામાત્રથી તે વૃદ્ધ પુરુષના વારંવાર ફેરા કરવાનું કષ્ટ દૂર થઈ ગયું. (સૂ૦ ૩૧)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः 'बारवईए णयरीए' द्वारावत्या नगर्याः 'मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ' मध्यमध्येन निर्गच्छति, 'णिग्गच्छित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागए' निर्गत्य यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः तत्रैव उपागतः 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'जाव वंदइ णमंसइ' यावद् वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'गयसुकुमालं अणगारं' गजसुकुमालम् अनगारम् 'अपासमाणे' अपश्यन् 'अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्–'कहि णं भंते! से मम सहोयरे भाया गयसुकुमाले अणगारे' क्व खलु भदन्त! स मम सहोदरः कनीयान् भ्राता गजसुकुमालोऽनगारः? 'जण्णं अहं वंदामि णमंसामि' यं खलु अहं वन्दे नमस्यामि। 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी' ततः खलु अर्हन्नरिष्टनेमिः 'कण्हं वासुदेवं' कृष्णं वासुदेवम् 'एवं वयासी' एवमवदत्–

फिर वे कृष्ण वासुदेव द्वारका नगरी के मध्यभाग से होते हुए जहाँ भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि विराजते थे वहाँ पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि को वन्दन नमस्कार किया और बाद में अपने लघुभ्राता व नवदीक्षित गजसुकुमाल अनगार को वन्दना करने के लिये इधर उधर देखने लगे। जब उन्होंने गजसुकुमाल अनगार को कहीं नहीं देखा तब उन्होंने भगवान् से पूछा–हे भदन्त! मेरा छोटा भाई नवदीक्षित गजसुकुमाल अनगार कहाँ है? मैं उनको वन्दन नमस्कार करना चाहता हूँ। यह सुन-कर भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार

પછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવ દ્વારકા નગરીના મધ્ય ભાગમાં થઇને નીકળ્યા અને જ્યાં ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ બિરાજતા હતા ત્યાં પહોંચ્યા, ત્યાં જઇને તેમણે ભગવાન્ અર્હત્ અરિષ્ટનેમિને વન્દન નમસ્કાર કર્યા. અને પછી પોતાના નાનાભાઈ અને નવદીક્ષિત ગજસુકુમાલ અનગારને વન્દના કરવા માટે આમ તેમ જોવા લાગ્યા. જ્યારે તેમણે ગજસુકુમાલ અનગારને ત્યાં જોયા નહિ ત્યારે તેમણે ભગવાન્‌ને પૂછ્યું–હે ભદન્ત! મ્હારો નાનોભાઇ—નવદીક્ષિત ગજસુકુમાલ અનગાર ક્યાં છે? હું તેમને વન્દન–નમસ્કાર કરવા ચાહું છું. આ સાંભળીને ભગવાન્ અર્હત્ અરિષ્ટનેમિએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ

'साहिए णं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे' साधितः खलुः कृष्ण ! गजसुकुमालेन अनगारेण आत्मनोऽर्थः=हे कृष्ण ! गजसुकुमालेन अनगारेण मोक्षप्राप्तिरूप आत्मनोऽर्थः साधितः। तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः अर्हन्तमरिष्टनेमिमेवमवादीत्–'कहण्णं भंते ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे' कथं खलु भदन्त ! गजसुकुमालेन अनगारेण साधित आत्मनोऽर्थः?॥सू० ३२॥

॥ मूलम् ॥

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमाले णं अणगारे मम कल्लं पुव्वावरण्हकालसमयंसि वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ! तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव सिद्धे। तं एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे। तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी–केस णं भंते ! से पुरिसे अप्पत्थियपत्थए जाव परिवज्जिए, जे णं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए। तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि, एवं खलु कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स साहिज्जे दिन्ने ॥ सू० ३३ ॥

कहा–हे कृष्ण ! गजसुकुमार अनगारने जिस अर्थ के लिये संयम को स्वीकार किया था उसने उस आत्मा के अर्थ को सिद्ध कर लिया है। यह सुनकर कृष्ण वासुदेवने आश्चर्ययुक्त होकर पूछा–हे भदन्त ! उन्होंने किस प्रकार अपने अर्थ को सिद्ध कर लिया ॥ सू० ३२ ॥

પ્રકારે કહ્યું—હે કૃષ્ણ ! ગજસુકુમાલ અનગારે જે હેતુ માટે સંયમનો સ્વીકાર કર્યો હતો તે હેતુ તેમણે સિદ્ધ કરી લીધો છે. કૃષ્ણ વાસુદેવે આશ્ચર્યયુકત થઇને પૂછયું–હે ભદન્ત ! તેમણે કઇ રીતે પોતાનો અર્થ સિદ્ધ કરી લીધો ? (સૂ૦ ૩૨)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्-'एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमाले णं अणगारे मम' एवं खलु कृष्ण ! गजसुकुमालः खलु अनगारः माम् 'कल्लं' कल्यम्=व्यतीतेऽह्नि 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' पूर्वापराह्णकालसमये=दिवसस्य पश्चिमे प्रहरे 'वंदइ णमंसइ' वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-'इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' इच्छामि खलु यावत् उपसंपद्य विहरति, यावत्पदेन अर्हदरिष्टनेमिनाऽनुज्ञातः श्मशानं गत्वा विशुद्धां भूमिमन्विष्य ध्यानमग्नो विहरति- इत्यर्थो गम्यः। 'तए णं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासइ' ततः खलु तं गजसुकुमालमनगारमेकः पुरुषः पश्यति, 'पासित्ता आसुरुत्ते जाव सिद्धे' दृष्ट्वा आशुरुप्तो यावत् सिद्धः, अत्र सोमिलकृतपापाचारः, गजसुकुमालस्य अनगारस्य अनभिद्रोहपूर्वकं मरणं मोक्षप्राप्तिश्च-इत्यादि पूर्वोक्तोऽर्थो

कृष्ण वासुदेव के इस प्रकार पूछने पर भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमिने इस प्रकार कहा- हे कृष्ण ! कल दीक्षा लेने के बाद चौथे प्रहर में गजसुकुमाल अनगारने वन्दन नमस्कार कर मेरे समक्ष इस प्रकार इच्छा प्रगट की थी कि- हे भदन्त ! मैं आपकी आज्ञा प्राप्त कर महाकाल श्मशान में ऐकरात्रिकी भिक्षुप्रतिमा का आराधन करना चाहता हूँ। हे कृष्ण ! मैंने कहा, जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो। इस प्रकार आज्ञा प्राप्त कर वह गजसुकुमाल अनगार महाकाल श्मशान में गये और वहां ध्यानारूढ होगये।

उस समय वहां हे कृष्ण ! एक पुरुष आया और उसने गजसुकुमाल अनगार को ध्यानमग्न देखा। देखते ही उसे वैरभाव

કૃષ્ણ વાસુદેવ તરફથી આવી રીતે પૂછવા પરથી ભગવાન્ અર્હત અરિષ્ટનેમિએ આ પ્રમાણે કહ્યું— હે કૃષ્ણ ! કાલે દીક્ષા-લીધા પછી ચોથા પ્રહરમાં ગજસુકુમાલ અનગારે વન્દન નમસ્કાર કરી મ્હારી સમક્ષ આ પ્રકારની ઇચ્છા પ્રગટ કરી હતી કે- હે ભદન્ત ! હું આપની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને મહાકાલ શ્મશાનમાં એકરાત્રિકી ભિક્ષુ-પ્રતિમાનું આરાધન કરવા ચાહું છું. હે કૃષ્ણ ! મેં કહ્યું-જેમ તમને સુખ હોય તેમ કરો, આવી રીતે આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી તે ગજસુકુમાલ અનગાર મહાકાલ શ્મશાનમાં જઇને ધ્યાનારૂઢ થઈ ગયા.

તે સમયે હે કૃષ્ણ ! ત્યાં એક પુરુષ આવ્યો, અને તેણે ગજસુકુમાલ અનગારને

गम्यः। 'तं एवं खलु कण्हा! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे' तदेवं खलु कृष्ण! गजसुकुमालेनानगारेण साधित आत्मनोऽर्थः, गजसुकुमाल आत्मसिद्धरूपं स्वकीयमभिलषितं प्राप्तवानिति भावः। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः अर्हन्तमरिष्टनेमिम् एवमवदत्-'केस णं भंते! अप्पत्थियपत्थए जाव परिवज्जिए' कीदृशः खलु भदन्त! स पुरुषः अप्रार्थितप्रार्थको यावत् परिवर्जितः-अप्रार्थितप्रार्थकः=मरणाभिलाषुकः, यावत् लज्जालक्ष्मीपरिवर्जितः 'जे णं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं' यः खलु मम सहोदरं कनीयांसं भ्रातरं गजसुकुमालमनगारम् 'अकाले चेव जीवियाओ' अकाल एव जीविताद्

जागृत हुवा और वह क्रोध से आतुर होकर तालाब से गीली मिट्टी लाया, लाकर उसने उनके शिर पर चारों ओर उस मिट्टी की पाल बाँधी, फिर चिता से जलते हुए खैर के अत्यन्त लाल अंगारों को एक फूटे हुए मिट्टी के बर्तन में लेकर गजसुकुमाल अनगार के शिर पर डाल दिये। जिससे गजसुकुमाल अनगार को असह्य वेदना हुई। परन्तु फिरभी उनके हृदयमें उस घातक पुरुष के प्रति थोडा भी द्वेषभाव नहीं हुआ। वे समभावों से भयंकर वेदना को सहनकर शुभ परिणाम और शुभ अध्यवसाय से केवलज्ञान प्राप्तकर मोक्ष पहुंच गये। इसीलिये हे कृष्ण! गजसुकुमाल अनगारने अपना कार्य सिद्ध कर लिया ऐसा मैंने कहा है। यह सुनकर कृष्ण बोले--हे भदन्त! मृत्यु को चाहनेवाला लज्जारहित वह पुरुष कौन है? जिसने मेरे छोटे भाई गजसुकुमाल

ध्यानमग्न जोया अने ते जोतांज तेने वैरभाव जागृत थयो अने ते क्रोधथी आतुर थईने तळावमांथी भीनी माटी लई आवी तेणे तेमना शिरपर चारे तरफ ते माटीनी पाळ बांधी. पछी चितामांथी बळता खेरना लालचोळ अंगारा एक फूटेला माटीना वासणमां लई आवी गजसुकुमाल अनगारना शिर उपर नाखी दीधा. जेथी गजसुकुमाल अणगारने असह्य वेदना थई. परन्तु तेमना हृदयमां ते घातक पुरुष प्रति जरा पण द्वेषभाव न थयो. तेओ समभावथी भयंकर वेदनाने सहन करी शुभपरिणाम अने शुभ अध्यवसायथी केवळज्ञान प्राप्त करी मोक्षे पहोंची गया. हे कृष्ण! तेथीज में कह्युं के गजसुकुमाल अनगारे पोतानुं कार्य सिद्ध करी लीधुं. आ सांभळी कृष्ण बोल्या—हे भदन्त! मृत्युने चाहनारो लज्जारहित ते पुरुष कोण छे जेणे मारा नाना भाई गजसुकुमाल अनगारना

'ववरोविए' व्यपरोपितवान्=प्राणरहितं कृतवान्। 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्- 'मा णं कण्हो !' मा खलु कृष्ण ! 'तुमं तस्स पुरिसस्स' त्वं तस्य पुरुषस्य 'पओसमावज्जाहि' प्रद्वेषमापद्यस्व=हे कृष्ण ! त्वं तस्य पुरुषस्योपरि द्वेषं मा कुरु। यतः-'एवं खलु कण्हा !=एवं खलु कृष्ण !=अनेन प्रकारेण हे कृष्ण !'तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स साहिज्जे दिन्ने' तेन पुरुषेण गजसुकुमालाय साहाय्यं दत्तम् ॥ सू० ३३ ॥

॥ मूलम् ॥

कहण्णं भंते ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स णं साहिज्जे दिन्ने ? तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-से नूणं कण्हा ! ममं तुमं पायदए हव्वमागच्छमाणे बारवईए णयरीए एगं पुरिसं पाससि जाव अणुप्पवेसिए। जहा णं कण्हा ! तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिन्ने एवमेव कण्हा। तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभवसयसहस्ससंचियं कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिज्जरट्ठं साहिज्जे दिन्ने। तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी - से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ? तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-जे णं कण्हा ! तुमं बारवईए णयरीए अणुप्पविसमाणं पासेत्ता ठियए चेव ठिइभेएणं कालं करिस्सइ तं णं तुमं जाणेज्जासि,एस णं से पुरिसे ॥ सू० ३४ ॥

अनगार का अकाल में ही प्राण हरण कर लिया। यह सुनकर भगवान्ने इस प्रकार कहा-हे कृष्ण ! तुम उस पुरुष के ऊपर क्रोध मत करो; क्योंकि वह पुरुष गजसुकुमाल अनगार को परमपद प्राप्ति कराने में सहायक बना है ॥ सू० ३३ ॥

અકાલે પ્રાણ હરણ કરી લીધા. આ સાંભળી ભગવાને આ પ્રકારે કહ્યું —હે કૃષ્ણ ! તમે તે પુરુષ ઉપર ક્રોધ નહિ કરો; કેમકે તે પુરુષ ગજસુકુમાલ અણુગારને પરમપદ પ્રાપ્તિ કરાવવામાં સહાયક થએલ છે (સૂ૦ ૩૩)

अथ कृष्णो वासुदेवोऽरिष्टनेमिमपृच्छत् – 'कहण्णं' इत्यादि । 'कहण्णं भंते! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स णं साहिज्जे दिन्ने?' कथं खलु भदन्त! तेन पुरुषेण गजसुकुमालाय खलु साहाय्यं दत्तम्? 'तए णं' ततः खलु 'अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवमवदत्–'से नूणं' अथ नूनं=निश्चयेन 'कण्हा! ममं तुमं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे बारवईए णयरीए एगं पुरिसं पाससि जाव अणुप्पवेसिए' हे कृष्ण! मम त्वं पादवन्दकः शीघ्रमागच्छन् द्वारावत्यां नगर्याम् एकं पुरुषं पश्यसि यावत् अनुप्रवेशितः, 'जहा णं कण्हा!' यथा खलु कृष्ण! 'तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिन्ने' त्वया तस्मै पुरुषाय दत्तम्, 'एवमेव कण्हा!'

यह सुनकर कृष्ण वासुदेवने भगवान् से पूछा–हे भदन्त! वह पुरुष गजसुकुमाल अनगार को सहायक कैसे बना!

कृष्ण वासुदेव द्वारा इस प्रकार पूछे जानेपर भगवानने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा–हे कृष्ण? मेरे चरणवन्दन करने के लिये आते हुए तुमने द्वारका के राजमार्ग पर एक बहुत बडी ईंट की राशि (ढेरी) में से एक ईंट को उठा कर घरमें रखते हुए एक दीन दुर्बल वृद्ध को देखा। उस वृद्ध को तुमने उस राशि को उठाने में असमर्थ देखकर उसकी अनुकम्पा के लिये हाथी परसे ही बैठे बैठे एक ईंट को उठाकर उसके घर में रखदी, जिससे तुम्हारे साथ वाले सभी पुरुषों ने क्रमसे उन सभी इटों को उठाकर उसके घर में पहुंचादी, इससे उस वृद्ध का दुःख दूर हुआ।

આ સાંભળીને કૃષ્ણ વાસુદેવે ભગવાનને પૂછ્યું—હે ભદન્ત! તે પુરુષ ગજસુકુમાલ અનગારને કેવી રીતે સહાયક થયો છે?

કૃષ્ણ વાસુદેવ દ્વારા આવી રીતે પૂછવાથી ભગવાને કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રકારે કહ્યું–હે કૃષ્ણ! મારા ચરણ વંદન કરવાને માટે આવતા માર્ગમાં તમે દ્વારકા ના રાજમાર્ગ ઉપર એક મોટા ઇંટના ઢગલામાંથી એક એક ઇંટ ઉપાડીને ઘરમાં રાખતા એક દીન દુર્બલ વૃદ્ધને જોયો. તે વૃદ્ધને તમે તે ઇંટરાશિને ઉઠાવવામાં અસમર્થ જોઇને તેની અનુકંપા ખાતર તમે હાથી ઉપર બેઠાં બેઠાંજ એક ઇંટને ઉપાડી તેના ઘરમાં રાખી દીધી જેથી તમારી સાથેના બધા પુરુષોએ ક્રમથી તે સર્વે ઇંટો ઉપાડી તેના ઘરમાં પહોંચાડી દીધી જેથી તે વૃદ્ધનું દુઃખ દૂર થયું.

एवमेव कृष्ण ! 'तेणं पुरिसेणं' तेन पुरुषेण 'गयसुकुमालस्स अणगारस्स' गजसुकुमालस्य अनगारस्य 'अणेगभवसयसहस्ससंचियं' अनेकभवशतसहस्रसंचितं-भवस्य शतसहस्राणि भवशतसहस्राणि, अनेकानि च भवशतसहस्राणि अनेक-भवशतसहस्राणि, तेषु संचितम्-अनेकशतसहस्रजन्मोपार्जितं 'कम्मं' कर्म 'उदीरेमाणेणं' उदीरयता=अप्राप्तेऽपि काले भोक्तुमुदयावलिकायां प्रवेशयता, 'बहुकम्मणिज्जरट्ठं' बहुकर्मनिर्जरार्थं=बहुकर्मविनाशाय 'साहिज्जे दिन्ने' साहाय्यं दत्तम् । 'तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः अर्हन्तमरिष्टनेमिम् एवमवदत्-'से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे' स खलु भदन्त ! पुरुषः मया कथं ज्ञातव्यः ? 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्-'जे णं कण्हा ! तुमं बारवईए णयरीए अणुप्पविसमाणं पासेत्ता' यः खलु कृष्ण ! त्वां द्वारावत्यां नगर्याम् अनुप्रविशन्तं दृष्ट्वा 'ठियए चेव' स्थित एव 'ठिइभेएणं' स्थितिभेदेन=आयुषः स्थितिक्षयेण 'कालं करिस्सइ' कालं करिष्यति=मृत्युं प्राप्स्यति, 'तण्णं तुमं' तं खलु त्वं 'जाणेज्जासि'

हे कृष्ण ! जिस प्रकार तुमने उस वृद्ध पुरुष की सहायता की उसी प्रकार उस पुरुषने लाखों भवों में संचय किये हुए कर्मों की एकान्त उदीरणा करके गजसुकुमाल अनगार के अनेक लाखों भवों के संचित सम्पूर्ण कर्मों के नाश करने में बडी सहायता की है ।

यह सुनकर कृष्ण वासुदेवने भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि से फिर पूछा-हे भदन्त ! मैं उस पुरुष को किस प्रकार जान सकूँगा । भगवान्‌ने कहा-हे कृष्ण ! द्वारका नगरी में प्रवेश करते हुए तुम्हें देखते ही जो पुरुष आयु तथा स्थितिक्षय से वहीं पर मृत्यु को

હે કૃષ્ણ ! જે પ્રકારે તમે તે વૃદ્ધ પુરુષને સહાયતા કરી તેવાજ પ્રકારે તે પુરુષે પણ લાખો ભવોમાં સંચય કરાયેલાં કર્મોની એકાન્ત ઉદીરણા કરીને ગજસુકુમાલ અનગારના અનેક લાખો ભવોના સંચિત સંપૂર્ણ કર્મોના નાશ કરવામાં ભારે સહાયતા કરી છે.

આ સાંભળીને કૃષ્ણ વાસુદેવે ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિને પૂછ્યું—હે ભદન્ત ! હું તે પુરુષને કેવી રીતે જાણી શકું ? ભગવાને કહ્યું—હે કૃષ્ણ ! દ્વારકા નગરીમાં

जानीयाः 'एस णं से पुरिसे' एष खलु स पुरुषः=यस्त्वां दृष्ट्वा स्थित एव मृत्युमाप्नुयात्, स त्वया निजानुजघातकत्वेनावसेयः ॥ सू० ३४ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव आभिसेक्कं हत्थिरयणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी, जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पण्णे। एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं पायवंदए निग्गए, तं णायमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स तं न नज्जइ णं कण्हे वासुदेवे ममं केणवि कुमारेणं मारिस्सइ त्ति कट्टु भीए सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स बारवइं णयरिं अणुप्पविसमाणस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसिं हव्वमागए ॥ सू० ३५ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव आभिसेक्कं हत्थिरयणं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी, जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः अर्हन्तमरिष्टनेमिं

प्राप्त होजाय उसी पुरुष को तुम गजसुकुमाल अनगार का घातक जानना ॥ सू० ३४ ॥

उसके बाद वे कृष्ण वासुदेव भगवान् को वन्दन नमस्कार करके आभिषेक्य हाथी पर बैठकर अपने स्थान द्वारका नगरी की

પ્રવેશ કરતાં થકાં તમને દેખતાજ જે પુરુષ આયુ અને સ્થિતિ ક્ષયથી ત્યાંજ મૃત્યુને પ્રાપ્ત થાય તે પુરુષને તમારે ગજસુકુમાલનો ઘાતક જાણવો (સૂ૦ ૩૪)

ત્યાર પછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવ ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરી આભિષેક્ય હાથી

वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव आभिषेक्यं हस्तिरत्नं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य हस्तिनं दूरोहति, दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुमना अभवत्। 'तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पण्णे' ततः खलु तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य कल्ये यावज्ज्वलति=प्रभाते व्यतीतायां रजन्यां सूर्योदये सति,अयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् समुत्पन्नः=वक्ष्यमाणप्रकार आत्मगतस्तर्कः समुत्पन्नः, कीदृशः सः? इत्याह-'एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं पायवंदए निग्गए' एवं खलु कृष्णो वासुदेवः अर्हन्तमरिष्टनेमिं पादवन्दको निर्गतः, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात्, 'णायमेयं अरहया' ज्ञातमेतदर्हता, 'विण्णायमेयं अरहया' विज्ञातमेतदर्हता=एतमन्मया कृतं सर्वं कर्म अर्हताऽरिष्टनेमिना ज्ञातं सामान्यरूपेण, विज्ञातं विशेषरूपेण भविष्यति, 'सुयमेयं अर्हता' श्रुतमेतदर्हता=कस्मादपि देवविशेषाद्वा भगवता श्रुतं भविष्यति, 'सिट्ठमेयं अरहया भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स' शिष्टमेतदर्हता भविष्यति कृष्णाय वासुदेवाय=कृष्णाय वासुदेवाय शिष्टं=कथितं भविष्यतीति, 'तं न नज्जइ णं कण्हे वासुदेवे ममं केणवि कुमारेणं मारिस्सइ' तद् न ज्ञायते खलु कृष्णो वासुदेवो मां केनापि कुमारेण मारयिष्यति, 'अपि' शब्दो निश्चये; 'त्ति कट्टु भीए' इति कृत्वा भीतः=भययुक्तोऽसौ 'कृष्णो वासुदेवो राजमार्गेण समागमिष्यतीत्यतो

ओर जाने के लिये तैयार हुए। इधर सूर्योदय होते ही सोमिल ब्राह्मण ने मनमें सोचा कि कृष्ण वासुदेव भगवान् के चरण वन्दन को गये हैं और भगवान् सर्वज्ञ हैं, उनसे कोई बात छिपी हुई नहीं है, वे सारा वृत्तान्त कृष्ण वासुदेव को कह देंगे। कृष्ण वासुदेव इस वृत्तान्त को जानकर न जाने मुझे किस कुमौत से मारेंगे! ऐसा विचार कर भयभीत हो उस सोमिलने द्वारका से

ઉપર બેસીને પોતાને સ્થાને દ્વારકા નગરી તરફ જવા તૈયાર થયા. આ બાજુ સૂર્યોદય થતાંજ સોમિલ બ્રાહ્મણે મનમાં વિચાર કર્યો કે કૃષ્ણ વાસુદેવ ભગવાનના ચરણવંદન માટે ગયા છે, અને ભગવાન સર્વજ્ઞ છે, તેનાથી કોઈ વાત છાની નથી, તેઓ સર્વ વૃત્તાન્ત કૃષ્ણ વાસુદેવને કહી દેશે. કૃષ્ણ વાસુદેવ તે વૃત્તાન્તને જાણી મને કેવા કુમોતે મારી નાખશે, એમ વિચારી ભયભીત થઇ તે સોમિલે દ્વારકાથી ભાગી જવા વિચાર કર્યો.

मया रथ्यामार्गेण गन्तव्यम्' इति चिन्तयन् 'सयाओ गिहाओ' स्वकाद् गृहात् 'पडिनिक्खमइ'प्रतिनिष्क्रामति=निस्सरति, 'पडिनिक्खमित्ता'प्रतिनिष्क्रम्य 'कण्हस्स वासुदेवस्स बारवइं णयरिं अणुप्पविसमाणस्स' कृष्णस्य वासुदेवस्य द्वारावतीं नगरीमनुप्रविशतः=भ्रातृशोकेन राजमार्गं विहाय रथ्यापथेन द्वारावत्यां प्रवेशं कुर्वतः 'पुरओ' पुरतः=अग्रतः 'सपक्खिं समपडिदिसिं' सपक्षं सप्रतिदिशम्=सर्वथा संमुखम्, 'हव्वमागए' शीघ्रमागतः=अकस्मादागत इति भावः ॥सू० ३५॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासित्ता भीए ठियए चेव ठिइभेएणं कालं करेइ, करित्ता धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति संनिवडिए। तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–एस णं भो देवाणुप्पिया! से सोमिले माहणे अप्पत्थियपत्थए जाव परिवज्जए। जेण ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए–तिकट्टु सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेइ, कड्ढावित्ता तं भूमिं

भागने का विचार किया। फिर उसने सोचा कि कृष्ण वासुदेव राजमार्ग से ही आवेंगे इसलिये मुझे उचित है कि मैं गली के रास्ते चलकर द्वारका नगरी से निकल भागूँ। ऐसा विचार कर वह अपने घरसे निकला और गली के रास्ते भागता हुवा जाने लगा। इधर कृष्ण वासुदेव भी अपने छोटे भाई गजसुकुमाल अनगार के मरणजन्य शोक से व्याकुल होने के कारण राजमार्ग को छोडकर गली के रास्ते से ही आ रहे थे, जिससे संयगोवश वह सोमिल कृष्ण वासुदेव के सामने ही आ निकला ॥ सू० ३५ ॥

ફરી તેણે વિચાર્યું કે કૃષ્ણ વાસુદેવ રાજમાર્ગે થઈનેજ આવશે, માટે મ્હને ઉચિત છે કે હું ગલીને રસ્તે દ્વારકા નગરીમાંથી ભાગી જાઉં. એમ વિચાર કરી તે પોતાના ઘેરથી નીકળ્યો અને ગલીને રસ્તે ભાગતો થકો જવા લાગ્યો. આ બાજુ કૃષ્ણ વાસુદેવ પણ પોતાના નાનાભાઈ ગજસુકુમાલ અનગારના મરણજન્ય શોકથી વ્યાકુળ હોવાને કારણે રાજમાર્ગ છોડીને ગલીને રસ્તે થઈનેજ આવતા હતા. જેથી સંયોગવશ તે સોમિલ, કૃષ્ણ વાસુદેવની સામેજ આવી નીકળ્યો. (સૂ૦ ૩૫)

पाणिएणं अब्भोक्खावेइ, अब्भोक्खावेत्ता, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए सयं गिहं अणुप्पविट्ठे । एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगड-दसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ३६ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं' ततः खलु स सोमिलो ब्राह्मणः कृष्णं वासुदेवं संमुखमागच्छन्तं सहसा=अकस्मात् 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'भीए ठियए चेव' भीतः स्थित एव 'ठिइभेएणं' स्थितिभेदेन=आयुषः स्थितिनाशेन 'कालं करेइ' कालं करोति=मृत्युमाप्नोति, 'करित्ता' कृत्वा=मृत्युं प्राप्य 'धरणितलंसि' धरणितले 'सव्वंगेहिं' सर्वाङ्गैः कृत्वा 'धसित्ति'-'धस' इति शब्देन 'संनिवडिए' संनिपतितः । 'तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सोमिलं ब्राह्मणं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवदत्-'एस णं भो देवाणुप्पिया!' एष खलु भो देवानुप्रियाः!-एषः=पुरोवर्ती भूमिनिपतितो जनः 'से सोमिले माहणे अप्पत्थियपत्थए जाव परिवज्जिए' स सोमिलो ब्राह्मणः अप्रार्थितप्रार्थको यावत् परिवर्ज्जितः; 'जेण ममं सहोयरे कणीयसे भायरे गय-सुकुमाले अणगारे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए' येन मम सहोदरः

उस समय वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण वासुदेव को सामने आते हुए देखकर भयभीत हो खडा होगया। और वह खडा ही खडा आयु की स्थिति के भेद (पूर्ण होने)से मृत्यु को प्राप्त होगया, जिससे उसका मृतशरीर पृथ्वी पर धड़ाम से गिर पडा । ज्योंही कृष्ण वासुदेवने सोमिल ब्राह्मण को मृत्यु प्राप्त होते देखा त्यों ही वे इस प्रकार बोले-हे देवानुप्रियो! यह वही अप्रार्थितप्रार्थक-मृत्यु को चाहनेवाला निर्लज्ज सोमिल ब्राह्मण है, जिसने मेरे सहोदर छोटे

તે સમયે તે સોમિલ બ્રાહ્મણ કૃષ્ણ વાસુદેવને સામે આવતા જોઇને ભયભીત થઇ ઉભો રહ્યો. અને ઉભો ઉભોજ આયુની સ્થિતિના ભેદ (પૂર્ણ હોવા)થી મૃત્યુને પ્રાપ્ત થયો. જેથી તેનો મૃત શરીર ધડામથી પૃથ્વી ઉપર પડી ગયો. તે સમયે કૃષ્ણ વાસુદેવે સોમિલ બ્રાહ્મણને તે પ્રકારે મૃત્યુ પ્રાપ્ત થતો જોયો અને આ પ્રકારે કહ્યું—હે દેવાનુપ્રિયો! આ તે અપ્રાર્થિતપ્રાર્થક- મૃત્યુને ચાહવાવાળો નિર્લજ્જ સોમિલ બ્રાહ્મણ

कनीयान् भ्राता =लघुभ्राता; गजसुकुमालोऽनगारः, अकाल एव जीविताद् व्यपरोपितः, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इति उक्त्वा 'सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेइ' सोमिलं ब्राह्मणं पाणैः=चाण्डालैः कर्षयति=चरणे रज्जुं बन्धयित्वा चाण्डालैः नगराद् बहिर्निष्काशयति, 'कड्ढावित्ता' नगराद् बहिर्निष्काश्य 'तं भूमिं पाणिएणं अब्भोक्खावेइ' तां भूमिं पानीयेन अभ्युक्षयति = यत्र भूमौ पापात्मा सोमिलो मृत्वा निपतितस्तां भूमिं जलेन प्रक्षालयतीत्यर्थः, 'अब्भोक्खावित्ता' अभ्युक्ष्य=जलेन क्षालयित्वा 'जेणेव सए गिहे' यत्रैव स्वकं गृहं 'तेणेव' तत्रैव 'उवागए' उपागतः, 'सयं गिहं अणुप्पविट्ठे' स्वकं गृहम् अनुप्रविष्टः=गतः। 'एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं' एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता यावत्संप्राप्तेन=मोक्षं संप्राप्तेन 'अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमस्स अज्झयणस्स' अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां तृतीयस्स वर्गस्य अष्टमस्य अध्ययनस्य 'अयमट्ठे पण्णत्ते' अयमर्थः प्रज्ञप्तः ॥ सू० ३६ ॥

॥ इत्यन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्याष्टममध्ययनं संपूर्णम् ॥

भाई गजसुकुमाल अनगार को अकाल में ही मृत्यु के शरण पहुँचा दिया। ऐसा कह कर उस मृत सोमिल ब्राह्मण के पैरों को रस्सी से बंधवा कर तथा चण्डालों से घसीटवाकर कर नगर के बाहर फिकवा दिया और उससे स्पर्शी हुई अपवित्र भूमि को पानी से धुलवाकर शुद्ध करवाया। फिर वहाँ से चलकर कृष्ण वासुदेव अपने महल में पहुँच गये। हे जम्बू ! मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने अन्तकृतदशा नामक आठवें अंग के तृतीय वर्ग के आठवें अध्ययन का इस प्रकार यह भाव कहा है ॥ सू० ३६ ॥

॥ इति आठवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥

છે, જેણે મારા સહોદર નાનાભાઈ ગજસુકુમાલ અનગારને અકાલે મૃત્યુની શરણે પહોંચાડી દીધો, આવી રીતે કહીને તે મરેલા સોમિલ બ્રાહ્મણના પગોને દોરડાથી બંધાવી તથા ચાંડાલો દ્વારા ઘસેડાવી નગરની બહાર ફેંકાવી દીધો. અને તેનાથી સ્પર્શાયેલી જમીનને પાણીથી ધોવરાવી શુદ્ધ કરાવ્યા. પછી ત્યાંથી ચાલીને કૃષ્ણ વાસુદેવ પોતાના મહેલમાં પહોંચી ગયા.

હે જમ્બૂ ! મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે અન્તકૃતદશા નામના આઠમા અંગના તૃતીય વર્ગમાંના આઠમા અધ્યયનનો આ પ્રકારે એ ભાવ કહ્યો છે. (સૂ૦ ૩૬)

ઇતિ આઠમું અધ્યયન સંપૂર્ણ.

॥ मूलम् ॥

नवमस्स णं उक्खेवओ० । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए णयरीए जहा पढमे जाव विहरइ । तत्थ णं बारवईए णयरीए बलदेवे नामं राया होत्था । वण्णओ० । तस्स णं बलदेवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था, वण्णओ० । तए णं सा धारिणी सीहं सुमिणे, जहा गोयमे, णवरं सुमुहे णामं कुमारे, पण्णासं कण्णाओ, पन्नासं दाओ, चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, वीसं वासाइं परियाओ, सेसं तं चेव जाव सेत्तुंजे सिद्धे, निक्खेवओ ॥ ९ ॥ एवं दुम्मुहे वि कूवदारए वि, दोण्हं वि बलदेवे पिया धारिणी माया ॥ १० ॥ दारुए वि, एवं चेव णवरं वसुदेवे पिया, धारिणी माया ॥ ११ ॥ एवं अणादिट्ठी वि, वसुदेवे पिया, धारिणी माया । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेसरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥१२॥ ॥सू० ३७॥

॥ टीका ॥

गजसुकुमालनामकाष्टमाध्ययनानन्तरं नवममाह—'नवमस्स णं, इत्यादिना- 'नवमस्स णं उक्खेवओ' नवमस्य खलु उत्क्षेपकः=हे भदन्त ! अष्टमस्य अध्ययनस्यायं भावो भगवता प्रतिपादितः, अनन्तरं नवमस्य अध्ययनस्य भगवता कीदृशोऽर्थः प्रतिपादित इति नवमस्याध्ययनस्य प्रारम्भ-

---

हे भदन्त ! भगवान ने उक्तरूप से जो आठवें अध्ययन के भावों का निरूपण किया वह आपके समीप मैंने सुना । हे भदन्त ! अब नववां अध्ययन के भावों का निरूपण भगवान ने किस प्रकार से निरूपण किया है ? श्री जम्बूस्वामी का इस प्रकार प्रश्न सुनकर

હે ભદન્ત ! ભગવાને ઉકતરૂપે જે આઠમા અધ્યયનના ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે તે આપની પાસેથી મેં સાંભળ્યું. હે ભદન્ત ! હવે નવમા અધ્યયનના ભાવોનું ભગવાને કયા પ્રકારે નિરૂપણ કર્યું છે ? શ્રી જમ્બૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન સાંભળી શ્રી સુધર્મા સ્વામી

वाक्यार्थो ज्ञातव्यः ! एतच्छ्रुत्वा सुधर्मा स्वामी प्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये, द्वारावत्यां नगर्यां यथा प्रथमे यावद् विहरति, हे जम्बूः ! अर्हन्नरिष्टनेमिः पूर्वोक्तसर्वविशेषणविशिष्टायां द्वारावत्यां नगर्यां तीर्थङ्करपरम्परया विहरन् समवसृतः। तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां बलदेवो नाम राजाऽसीत्। वर्णकः=राजवर्णनं पूर्ववदेवावसेयम्। तस्य खलु बलदेवस्य राज्ञः धारिणी नाम देवी आसीत्, वर्णकः=धारिण्या वर्णनमपि पूर्वोक्तमेव विज्ञेयम्। ततः खलु सा धारिणी सिंहं स्वप्ने=सा धारिणीदेवी सुकोमलायां शय्यायां शयाना स्वप्ने सिंहमपश्यत्, स्वप्नवृत्तान्तं च सा स्वपतये निवेदितवती। 'जहा गोयमे' यथा गौतमः=गौतमकुमारवत् सर्वं विज्ञेयम्। स कुमारः शीलेन सौन्दर्येण आकारप्रकारेण गुणैश्च गौतमसदृश आसीत्। 'णवरं' विशेषस्तु 'सुमुहे णामं कुमारे' सुमुखो नाम कुमारः=तस्य कुमारस्य नाम सुमुख

श्री सुधर्मास्वामी ने कहा-हे जम्बू ! उस काल उस समय द्वारका नाम की मनोहर नगरी थी, जिसका वर्णन पहिले आचुका है। उस नगरी में भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि तीर्थङ्करपरम्परासे विचरते हुए पधारे। उस द्वारका नगरी में बलदेव नामक राजा थे। उनकी पत्नी का नाम धारिणी था। वह अत्यन्त सुन्दर और सुकोमल थी। एक समय सुकोमल शय्या पर सोयी हुई धारिणी रानी ने स्वप्न में सिंह को देखा। स्वप्न देखते ही जागृत होकर उनने अपने पति के समीप जाकर स्वप्नवृत्तान्त सुनाया। स्वप्नानुसार उन्हें श्रेष्ठ पुण्योदय से पुण्यशाली पुत्र उत्पन्न हुआ। इस पुत्र का जन्म, बाल्यकाल आदि का वर्णन गौतमकुमार के समान जानना चाहिए। यह कुमार शील, स्वभाव, सुन्दरता और आकारप्रकार में गौतम

બોલ્યા :- હે જમ્બૂ ! તે કાળ તે સમયે દ્વારકા નામે મનોહર નગરી હતી. જેનું વર્ણન પહેલાં આવી ગયું છે. તે નગરીમાં ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ તીર્થંકર- પરંપરાથી વિચરતા પધાર્યા. દ્વારકા નગરીમાં બલદેવ નામના રાજા હતા. તેમની પત્નીનું નામ ધારિણી હતું, જે અત્યન્ત સુંદર તથા સુકોમલ હતી, એક વખત સુકોમલ શય્યા ઉપર સુતેલી તે ધારિણી રાણીએ સ્વપ્નામાં સિંહને જોયો સ્વપ્ન આવતાંજ જાગૃત થઇ તે પોતાના પતિ પાસે જઇ સ્વપ્નવૃત્તાન્ત સંભળાવ્યો. પછી તેને સ્વપ્નાનુસારે શ્રેષ્ઠ પુણ્યોદયથી પુણ્યશાલી પુત્ર ઉત્પન્ન થયો. તે પુત્રનો જન્મ, બાલ્યકાળ આદિનું વર્ણન ગૌતમ કુમારના જેવું જાણી લેવું. આ કુમાર શીલ, સ્વભાવ, સુંદરતા તથા આકાર-

आसीत् । स सुमुखः कुमारो यौवनमनुप्राप्तः 'पण्णासं कण्णाओ' पञ्चाशत् कन्याः=राजकन्याः परिणीतवान् । परिणये 'पन्नासं दाओ' पञ्चाशद्विधो दायो लब्धः, यावत्स प्रव्रजितः । अनन्तरम् 'चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ' चतुर्दश पूर्वाणि अधीते । तस्य सुमुखस्यानगारस्य 'वीसं वासाइं परियाओ' विंशति वर्षाणि पर्यायः, पर्यायः=दीक्षापर्यायः; 'सेसं तं चेव जाव सेत्तुंजे सिद्धे' शेषं तदेव यावत् शत्रुञ्जये सिद्धः, अनन्तरम् 'निक्खेवओ' निक्षेपकः=उपसंहारवाक्यम्- 'एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता यावत्संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां तृतीयस्य वर्गस्य नवमस्य अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः' इत्येवं विज्ञातव्यम् ॥ सू० ९ ॥

के समान ही था। उस कुमार का नाम सुमुख था। यौवन-अवस्था प्राप्त होने पर उस कुमार का विवाह पचास राजकन्याओं के साथ हुआ और विवाह में कन्याओं के मातापिता की तरफ से पचास-पचास तरह का कुमार को दहेज मिला। अनन्तर जब भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि पधारे तब उनकी वाणी सुनकर वे उनके पास, वैराग्य से प्रव्रजित होगये। एवं थोडे काल में ही उन्होंने चौदह पूर्वों का अध्ययन किया और वीस वर्ष पर्यन्त चारित्र पर्याय का पालन किया। अंतिम समय में सन्थारा करके शत्रुञ्जय पर्वत पर मोक्ष को प्राप्त हुए।

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने अन्तकृतदशा-नामक आठवें अंग के तृतीय-वर्ग-सम्बन्धी नववें अध्ययन के भाव का इस प्रकार से वर्णन किया है ॥ ९ ॥

પ્રકારમાં ગૌતમના જેવા જ હતા તે કુમારનું નામ સુમુખ હતું. યુવાવસ્થા પ્રાપ્ત થતાં તે કુમારના વિવાહ પચાસ રાજકન્યાઓની સાથે થયા અને વિવાહમાં કન્યાઓના માતા-પિતા તરફથી પચાસ-પચાસ તરેહના દહેજ કુમારને મળ્યા. થોડા સમય પછી જ્યારે ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ પધાર્યા ત્યારે તેઓની વાણી સાંભળી ભગવાનની પાસે તેઓ વૈરાગ્યથી પ્રવ્રજિત થઇ ગયા. થોડાજ વખતમાં તેમણે ચૌદ પૂર્વનું અધ્યયન કર્યું અને વીશ વરસ પર્યન્ત ચારિત્રપર્યાયનું પાલન કર્યું. અંતિમ સમયે સંથારો કરીને શત્રુંજય પર્વત ઉપર મોક્ષને પ્રાપ્ત થયા.

હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે અન્તકૃતદશા નામે આઠમા અંગના તૃતીય-વર્ગ-સંબંધી નવમા અધ્યયનનો ભાવ આ પ્રકારે વર્ણન કર્યો છે. (સૂ૦ ૯)

'एवं दुम्मुहे वि' एवं दुर्मुखोऽपि 'कूवदारए वि' कूपदारकोऽपि; यथा सुमुखः एवमेव दुर्मुखः कूपदारकोऽपि कुमारौ; 'दोण्हं वि बलदेवे पिया धारिणी माया' द्वयोरपि बलदेवः पिता धारिणी माता, सुमुखकुमारवदनयोरपि चरितं विज्ञेयम् ॥ १०-११ ॥

'दारुए वि एवं चेव' दारुकोऽपि एवमेव=दारुकस्यापि कुमारस्य सर्वं चरितं पूर्ववदेव ज्ञातव्यम् । 'णवरं' विशेषः-'वसुदेवे पिया, धारिणी माया' वसुदेवः पिता धारिणी माता ॥ १२ ॥

'एवं अणादिट्ठी वि' एवमनादिष्टिरपि=अनादिष्टेरपि चरितं पूर्ववदेव ज्ञातव्यम्, अस्यापि कुमारस्य 'वसुदेवे पिया धारिणी माया' वसुदेवः पिता धारिणी माता। 'एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स

इसी प्रकार दुर्मुख और कूपदारक कुमार का वर्णन जानना। इन्होंने भी अन्त समय सन्थारा करके मोक्ष को प्राप्त किया। इन दोनों के पिता का नाम बलदेव और माता का नाम धारिणी था। इनका सारा चरित्र सुमुख अनगार के समान ही जानना चाहिए ॥ १०-११ ॥

दारुक कुमार का भी सारा वर्णन सुमुख कुमार के समान ही जानना। विशेष केवल इतना ही है कि इनके पिता का नाम वसुदेव था और माता का नाम धारिणी था ॥ १२ ॥

इस प्रकार अनादिष्टि के भी चरित्र का वर्णन जानना चाहिए। इनके पिता का नाम भी वसुदेव था और माता का नाम धारिणी था।

એજ પ્રકારે દુર્મુખ અને કૂપદારક કુમારનાં વર્ણન પણ જાણી લેવાં જોઇએ. તેમણે પણ અંત સમયે સંથારા કરીને મોક્ષ પ્રાપ્ત કર્યો હતો. એ બેઉના પિતાનું નામ બલદેવ અને માતાનું નામ ધારિણી હતું. તેમનું આખું ચરિત્ર સુમુખ અનગારના જેવું જ જાણવું જોઇએ. (સૂ૦ ૧૦-૧૧)

દારુક કુમારનું પણ આખું ચરિત્ર સુમુખ કુમારના જેવું જાણવું. વિશેષ માત્ર એટલું જ છે કે તેમના પિતાનું નામ વસુદેવ તથા માતાનું નામ ધારિણી હતું. (સૂ૦ ૧૨)

આ પ્રકારે અનાદિષ્ટિના પણ ચરિત્રનું વર્ણન જાણવું જોઇએ. તેના પિતાનું નામ વસુદેવ અને માતાનું નામ ધારિણી હતું.

अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते' एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां तृतीयस्य वर्गस्य त्रयोदशस्य अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः ॥ सू० ३७ ॥

॥ इति त्रयोदशमध्ययनं सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापाऽऽलापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहू-छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य'–पदभूषित–कोल्हापुर-राजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री-घासीलाल–व्रतिविरचितायाम् अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिकायां टीकायां तृतीयवर्गः संपूर्णः ॥३॥



हे जम्बू ! इस प्रकार मोक्ष प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने अन्तकृतदशा नामक आठवें अंग के तृतीय वर्ग में तेहरवें अध्ययन के भावको कहा है ॥ १३ ॥

॥ इति तेरहवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥

॥ इति तृतीय वर्ग संपूर्ण ॥



હે જમ્બૂ! આ પ્રકારે મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે અન્તકૃતદશા નામે આઠમા અંગના તૃતીય વર્ગમાં તેરમા અધ્યયનના ભાવ કહ્યા છે. (સૂ૦ ૧૩)

ઇતિ તેરમું અધ્યયન સંપૂર્ણ

ઇતિ તૃતીય વર્ગ સંપૂર્ણ



॥ अथ चतुर्थो वर्गः ॥

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–जालि मयालि उवयालि, पुरिससेणे य वारिसेणे य।

पज्जुन्न संब अनिरुद्धे, सच्चनेमी य दढनेमी ॥ १ ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णामं णयरी होत्था। जहा पढमे कण्हे वासुदेवे आहेवच्च जाव विहरति ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

तृतीयवर्गसमाप्त्यनन्तरं चतुर्थो वर्गः समारभ्यते–'जइ णं भंते' इत्यादि। 'जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते' यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां तृतीयस्स वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः, अयम्=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः, प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः। 'चउत्थस्स णं भंते! वग्गस्स

अथ चतुर्थ वर्ग

अब चतुर्थवर्ग के प्रारम्भ में श्री जम्बूस्वामी श्रीसुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि–हे भदन्त! श्रमण भगवान् महावीर प्रभु जो मुक्ति में पधारे, उन्होंने आठवें अङ्ग

અથ ચતુર્થ વર્ગ.

ત્રીજા વર્ગની સમાપ્તિ પછી ચતુર્થવર્ગના પ્રારંભમાં શ્રીજંબૂસ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ જે મુક્તિમાં પધાર્યા તેઓએ આઠમા અંગ શ્રી અન્તકૃત સૂત્રના ત્રીજા વર્ગનો જે ભાવ કહ્યા તે

अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते' चतुर्थस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य अन्तकृतदशानां श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? = हे भदन्त ! भगवता चतुर्थस्य अध्ययनस्य कोऽर्थो निरूपितः ? सुधर्मा स्वामी प्राह-'एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता' एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य अन्तकृतदशानां दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, 'तं जहा—

जालि मयालि उवयालि, पुरिससेणे य वारिणे य।
पज्जुन्न संब अनिरुद्धे, सच्चनेमी य दढनेमी ॥ १ ॥

तद्यथा—

जालिर्मयालिरुपयालिः, पुरुषसेनश्च वारिषेणश्च ।
प्रद्युम्नः साम्बोऽनिरुद्धः सत्यनेमिश्च दृढनेमिः ॥१॥

श्री अन्तकृत सूत्र के तृतीय वर्ग का जो भाव कहा उसे मैंने आपके श्रीमुख से सुना। फिर उसके बाद हे भदन्त ! श्रमण भगवान् महावीरने चतुर्थवर्ग के भावों का निरूपण किस प्रकार से किया है, उसे कहने की कृपा करें।

इस प्रकार विनयशील सुशिष्य श्री जम्बूस्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मा स्वामीने कहा-हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने अन्तकृतदशा नामक आठवें अङ्ग के चतुर्थ वर्ग में दश अध्ययनों का निरूपण किया है, जिनके नाम इस प्रकार हैंः—

(१) जालि (२) मयालि (३) उपयालि (४) पुरुषसेन (५) वारिषेण (६) प्रद्युम्न (७) साम्ब (८) अनिरुद्ध (९) सत्यनेमि और (१०) दृढनेमि ।

में आपना श्रीमुखथी सांभळ्या. पछी हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरे चतुर्थ वर्गना भावोनुं निरूपण कया प्रकारे कर्युं छे, ते कहेवानी कृपा करो.

आ प्रकारे विनयशील सुशिष्य श्रीजंबूस्वामीए प्रश्न करवाथी श्रीसुधर्मा स्वामीए कह्युं :- हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीरे अन्तकृतदशा नामना आठमा अंगना चतुर्थ वर्गमां दश अध्ययनोनुं निरूपण कर्युं छे, जेमनां नाम आ प्रकारे छे:-

(१) जालि (२) मयालि (३) उपयालि (४) पुरुषसेन (५) वारिषेण (६) प्रद्युम्न (७) साम्ब (८) अनिरुद्ध (९) सत्यनेमि तथा (१०) दृढनेमि.

'जइ णं भंते ! समणंणे जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता' यदि खलु भदन्त श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, 'पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं' प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन 'के अट्ठे' कोऽर्थः 'पण्णत्ते' प्रज्ञप्तः ? सुधर्मा स्वामी प्राह–'एवं खलु जंबू !' एवं खलु हे जम्बूः ! 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'बारवई णामं णयरी होत्था' द्वारावती नाम नगरी आसीत् । 'जहा पढमे कण्हे वासुदेवे' यथा प्रथमे कृष्णो वासुदेवः 'आहेवच्चं जाव विहरइ' आधिपत्यं यावद् विहरति । द्वारावत्या नगर्याः कृष्णस्य वासुदेवस्य च वर्णनं प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनवद् विज्ञेयम् ॥ सू० १ ॥

॥ मूलम् ॥

तत्थ णं बारवईए णयरीए वसुदेवे राया, धारिणी देवी, वण्णओ० । जहा गोयमो, णवरं जालिकुमारे, पण्णासओ

हे भदन्त ! यदि मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने चतुर्थ वर्ग में दस अध्ययनों का निरूपण किया है, तो उन्होंने प्रथम अध्ययन का क्या भाव कहा है ?

श्री सुधर्मा स्वामीने कहा--हे जम्बू ! भगवानने चतुर्थ वर्ग के प्रथम अध्ययन का भाव इस प्रकार कहा है:—

उस काल उस समय में द्वारावती नामकी नगरी थी। जिसका वर्णन प्रथम अध्ययनमें कर चुके हैं और वहाँ श्री कृष्ण वासुदेव राज करते थे ॥ सू० १ ॥

હે ભદન્ત ! જો મોક્ષ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ચતુર્થ વર્ગમાં દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો તેઓએ પ્રથમ અધ્યયનનો શું ભાવ કહ્યો છે ?

શ્રીસુધર્માસ્વામીએ કહ્યું :- હે જંબૂ ! ભગવાને ચતુર્થ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો ભાવ આ પ્રકારે કહ્યો છે :-

તે કાલે તે સમયે દ્વારાવતી નામે નગરી હતી, (જેનું વર્ણન પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનમાં અપાઈ ગયું છે) અને ત્યાં શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવ રાજ્ય કરતા હતા. (સૂ૦ ૧)

दाओ, बारसंगी, सोलसवासा परियाओ, सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुंजए सिद्धे। एवं मयालि उवयालि पुरिससेणे वारिसेणे य। एवं पज्जुन्ने वित्ति, णवरं कण्हे पिया, रुप्पिणी माया। एवं संबे वि, णवरं जंबवई माता। एवं अनिरुद्धे वि, णवरं पज्जुन्ने पिया, वेदब्भी माया। एवं सच्चनेमी, णवरं समुद्दविजए पिया, सिवा माया। एवं दढनेमी वि। सव्वे एगगमा। चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ ॥ सू० २ ॥

॥ टीका ॥

'तत्थ णं' इत्यादि। 'तत्थ णं बारवईए णयरीए' तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां 'वसुदेवे राया' 'वसुदेवो राजा' धारिणी देवी, धारिणी देवी, 'वण्णओ' वर्णकः=वर्णनं पूर्ववदेव विज्ञेयम्। एकदा सुकोमलशय्यायां शयाना धारिणी स्वप्ने सिंहमवलोकितवती, स्वप्नवृत्तान्तं च वसुदेवाय निवेदितवती। अनन्तरम् 'जहा गोयमो, यथा गौतमः=यथा गौतमः कुमार उत्पन्नः, तथैव तस्या अपि पुत्र उत्पन्नः। 'णवरं' विशेषोऽयमेव यत्तस्य कुमारस्य नाम 'जालिकुमारे' जालिकुमार आसीत्। संप्राप्ते यौवने तस्य कुमारस्य विवाहः पञ्चाशता राजकन्याभिः

उस द्वारावती नगरी में वसुदेव महाराजा राज करते थे, उनकी रानी का नाम धारिणी था जो अत्यन्त सुकुमारी एवं सुशीला थी। एक समय सुकोमल शय्या पर सोयी हुई उस धारिणी देवीने स्वप्न में सिंह देखा। स्वप्नवृत्तान्त को उसने अपने पति वसुदेव को जाकर सुनाया। बाद गौतम के समान एक तेजस्वी बालक को महारानीने जन्म दिया, जिसका नाम जालिकुमार रखा गया। जब वह कुमार युवावस्था को प्राप्त हुआ तब उसका विवाह पचास कन्याओं के साथ किया गया और उसे

તે દ્વારાવતી નગરીમાં વસુદેવ મહારાજા રાજ્ય કરતા હતા. તેમની રાણીનું નામ ધારિણી હતું, જે અત્યંત સુકુમાર અને સુશીલા હતી. એક સમય સુકોમલ શય્યા ઉપર નિદ્રાવસ્થામાં તે ધારિણી દેવીએ સ્વપ્નમાં સિંહ જોયો. સ્વપ્નવૃત્તાન્ત તેણે પોતાના પતિ વસુદેવને કહી સંભળાવ્યો. ત્યાર પછી ગૌતમના જેવો એક તેજસ્વી બાળકને મહારાણીએ જન્મ આપ્યો, જેનું નામ જાલિકુમાર રાખવામાં આવ્યું. જ્યારે તે કુમાર યુવાવસ્થાને પ્રાપ્ત થયા ત્યારે તેમનાં લગ્ન પચાસ કન્યાઓની સાથે

सहाभूत्। विवाहे च तस्मै कन्यापितृभिः 'पण्णासओ दाओ' पञ्चाशद्विधो दायः=पञ्चाशत्प्रकारको दायो दत्तः। अनन्तरमेकदा स भगवदर्हदरिष्टनेमिसमीपे दर्शनार्थं गतः, तत्र भगवदुपदेशेन संजातवैराग्यो मातापित्रोरनुमत्या भगवतः समीपे प्रव्रजितः। प्रव्रज्यानन्तरं स 'बारसंगी' द्वादशाङ्गी-द्वादश अङ्गानि सन्त्यधीतत्वेनास्य सः-अधीतद्वादशाङ्गो जातः। अथ च तस्य 'सोलस वासा' षोडश वर्षाणि 'परियाओ' पर्यायः=चारित्रपर्याय आसीत्। 'सेसं जहा गोयमस्स' शेषं यथा गौतमस्य=यथा गौतमस्य अनगारस्य चरितं तथैव अस्यापि अनगारस्य अवशिष्टं चरितं विज्ञेयम्। 'जाव सेत्तुंजए सिद्धे' यावत् शत्रुञ्जये सिद्धः=असौ जालिकुमारोऽप्यनगारो मासिक्या संलेखनया शत्रुञ्जये पर्वते सिद्धः। 'एवं मयालि उवयालि पुरिससेणे य वारिसेणे य' एवं मयालिः, उपयालिः, पुरुषसेनश्च वारिषेणश्च--एवं मयाल्यादीनामपि चरितं विज्ञेयम्। एतेषामपि पिता वसुदेवो, माता धारिणी। 'एवं पज्जुण्णे वित्ति' एवं प्रद्युम्नोऽपीति=एवमेव

श्वशुरपक्ष की ओर से पचास-पचास प्रकार का दहेज मिला। बाद एक दिन भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि विहार करते हुए द्वारका पधारे तब वह कुमार दर्शन करने के लिये गया और वहाँ भगवान् के उपदेश को सुनकर उसे वैराग्य उत्पन्न हुआ जिससे वह माता-पिता की आज्ञा प्राप्त कर प्रव्रजित होगया। प्रव्रज्या लेने पर उन्होंने बारह अंगों का अध्ययन किया और सोलह वर्ष पर्यन्त दीक्षा पर्याय पाली। अन्त में गौतम अनगार के समान इन्होंने भी मासिक सन्थारा किया और सर्वकर्म से मुक्त होकर शत्रुञ्जय पर्वत पर सिद्ध हुए ॥ १ ॥ इसी प्रकार मयालि, उपयालि, पुरुषसेन और वारिषेण का भी चरित्र जानना चाहिये। ये सभी वसुदेव के पुत्र और

થયાં અને તેઓને સસરાં પક્ષ તરફથી પચાસ-પચાસ પ્રકારના દહેજ મળ્યા. ત્યાર પછી એક દિવસ ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ વિહાર કરતા થકા જ્યારે દ્વારકા પધાર્યા ત્યારે તે કુમાર દર્શન કરવા માટે ગયા અને ત્યાં ભગવાનનો ઉપદેશ સાંભળી તેઓને વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો જેથી તેઓ માતા-પિતાની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી પ્રવ્રજિત થઈ ગયા. દીક્ષા લીધા પછી તેઓએ બાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને સોળ વરસ સુધી દીક્ષા-પર્યાયનું પાલન કર્યું. અંતમાં ગૌતમ અનગારની પેઠે તેઓએ પણ માસિક સન્થારો કર્યો તથા સર્વ કર્મથી મુક્ત થઇ શત્રુંજય પર્વત પર સિદ્ધ થયા (૧). આ પ્રકારે મયાલિ, ઉપયાલિ, પુરુષસેન અને વારિષેણનું પણ ચરિત્ર જાણી લેવું જોઇએ. તે બધા વસુદેવના પુત્ર તથા ધારિણીના અંગજાત હતા. એ પ્રકારે પ્રદ્યુમ્નનું પણ ચરિત્ર

प्रद्युम्नस्यापि चरितं विज्ञेयम् । 'णवरं' विशेपस्त्वयमेव यद् अस्य 'कण्हे पिया रुप्पिणी माया' कृष्णः पिता, रुक्मिणी माता । 'एवं संवे वि' एवं साम्बोऽपि, प्रद्युम्नवदेव साम्बस्यापि चरितं विज्ञेयम् । अस्यापि पिता कृष्ण एव । 'णवरं' विशेपस्त्वयम् — 'जंबवई माया' जाम्बवती माता । 'एवं अणिरुद्धे वि' एवमनिरुद्धोऽपि, अनिरुद्धस्यापि कुमारस्य चरितमेवं विज्ञेयम् । 'णवरं' विशेपस्तु—'पज्जुन्ने पिया वेदब्भी माया' प्रद्युम्नः पिता वैदर्भी माता । 'एवं सच्चणेमी' एवं सत्यनेमिः—एवं सत्यनेमेरपि सर्वं चरितं विज्ञेयम् । 'नवरं' विशेपः— 'समुद्दविजए पिया सिवा माया' समुद्रविजयः पिता, शिवा देवी माता । 'एवं दढनेमी वि' एवं दृढनेमिरपि=दृढनेमेरपि कुमारस्य चरितं पूर्ववदेव । अस्यापि मातापितरौ शिवादेवी—समुद्रविजयौ । 'सव्वे एगगमा' सर्वाणि एक-

---

धारिणी के अङ्गजात थे । इसी प्रकार प्रद्युम्न का भी चरित्र जानना चाहिए । परन्तु इनकी माता का नाम रुक्मिणी और पिता का नाम कृष्ण था ॥ ६ ॥ इसी प्रकार साम्बकुमार का भी चरित्र जानना चाहिये । इनके पिता कृष्ण और माता जाम्बवती थी ॥७॥ इसी तरह अनिरुद्ध का भी वृत्तान्त जानना, विशेष जीवन वृत्तान्त यह है कि इनके पिता का नाम प्रद्युम्न और माता का नाम वैदर्भी था ॥ ८ ॥ तथा सत्यनेमि का भी वर्णन इसी प्रकार जानना, अन्तर केवल इतना है कि इनके पिता का नाम समुद्रविजय और माता का नाम शिवादेवी था ॥ ९ ॥ इसी प्रकार दृढनेमि का, इनके पिता का नाम भी समुद्रविजय और माता का नाम शिवादेवी था ॥ १० ॥

જાણવું. પરન્તુ તેમની માતાનું નામ રુકિમણી અને પિતાનું નામ કૃષ્ણ હતું (૬). એજ રીતે સામ્બનું પણ ચરિત્ર જાણી લેવું જોઇએ. તેમના પિતા કૃષ્ણ અને માતા જાંબવતી હતી (૭). એજ પ્રકારે અનિરુદ્ધનું પણ વૃત્તાન્ત જાણવું. વિશેષ જીવન-વૃત્તાન્ત એ છે કે એમના પિતાનું નામ પ્રદ્યુમ્ન અને માતાનું નામ વૈદર્ભી હતું (૮). સત્યનેમિનું પણ વર્ણન એવુંજ જાણવું, અન્તર માત્ર એટલુંજ છે કે એમના પિતાનું નામ સમુદ્રવિજય અને માતાનું નામ શિવાદેવી હતું (૯). એજ રીતે દૃઢનેમિનું વૃત્તાન્ત જાણવું. તેમના પિતાનું નામ સમુદ્રવિજય અને માતાનું નામ શિવાદેવી હતું (૧૦). બધાં અધ્યયનોનો પાઠ (વર્ણન) સમાન રીતે જાણવો જોઇએ.

गमानि, सर्वाणि अध्ययनानि समानपाठानीति भावः। 'चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवओ' चतुर्थस्य वर्गस्य निक्षेपकः=चतुर्थस्य वर्गस्य समाप्तिवाक्यम्- एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन भगवता यावत्संप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः- इत्येवं विज्ञातव्यम् ॥ सू० २ ॥

इति श्रीविश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापाऽऽलापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहू-छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य'-पदभूषित-कोल्हापुर-राजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायाम् अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिकायां टीकायां चतुर्थो वर्गः संपूर्णः ॥४॥



सभी अध्ययनों का पाठ (वर्णन) समान प्रकार से जानना चाहिये ।

हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर प्रभुने चतुर्थ वर्ग के भावों को इस प्रकार कहा है ॥ सू० २ ॥

॥ इति चतुर्थ वर्ग संपूर्ण ॥



હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ ચતુર્થ વર્ગના ભાવોને આ પ્રકારે કહ્યા છે (સૂ૦ ૨)

ઇતિ ચતુર્થ વર્ગ સંપૂર્ણ.



॥ अथ पञ्चमो वर्गः ॥

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते! वग्गस्स अंतगडसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खणा सुसीमा य।
जंबवई सच्चभामा, रुप्पिणि मूलसिरी मूलदत्तावि ॥ १ ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥ सू० १ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं भंते' इत्यादि। 'जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं' यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन 'चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते' चतुर्थस्य वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः=पूर्वोक्तो भावः प्ररूपितः, 'पंचमस्स णं भंते!

॥ अथ पञ्चम वर्ग ॥

अब पाँचवा वर्ग कहते हैं:–

हे भदन्त! सिद्धिगति–नामक स्थान को प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने अन्तकृत सूत्र के चौथे वर्ग में इन पूर्वोक्त भावों का निरूपण किया वह सुना, अब हे भदन्त! इसके बाद पंचम वर्ग में भगवान् ने कौनसे भाव निरूपण किये हैं? श्री

અથ પંચમ વર્ગ

હવે પાંચમો વર્ગ કહે છે:-

હે ભદન્ત! સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃતસૂત્રના ચોથા વર્ગમાં એ પૂર્વોકત ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું તે સાંભળ્યું. હવે હે ભદન્ત! ત્યાર પછીના પાંચમાં વર્ગમાં ભગવાને કયા કયા ભાવ નિરૂપણ કર્યા છે?

वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?' पञ्चमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य अन्तकृतदशानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। सुधर्मा स्वामी प्राह–'एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता' एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन पञ्चमस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि;

'तंजहा–

पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खणा सुसीमा य ।
जंबवई सच्चभामा, रुप्पिणि मूलसिरी मूलदत्ता वि ॥ १ ॥'

तद्यथा–

पद्मावती च गौरी, गान्धारी लक्ष्मणा सुषीमा च ।
जाम्बवती सत्यभामा, रुक्मिणी मूलश्रीर्मूलदत्ताऽपि ॥ १ ॥

'जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते' यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन पञ्चमस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? ॥ सू० १ ॥

सुधर्मा स्वामीने कहा–हे जम्बू ! सिद्धिगति–नामक स्थान को प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने पञ्चम वर्ग में दस अध्ययनों का निरूपण किया है, वह इस प्रकार से है:–

(१) पद्मावती (२) गौरी (३) गान्धारी (४) लक्ष्मणा (५) सुषीमा (६) जाम्बवती (७) सत्यभामा (८) रुक्मिणी (९) मूलश्री और (१०) मूलदत्ता ।

श्रीजम्बूस्वामी पूछते हैं–हे भदन्त ! यदि भगवान् ने पंचम वर्ग में पद्मावती आदि दस अध्ययनोंका निरूपण किया है

શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું :– હે જંબૂ ! સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પંચમ વર્ગમાં દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે, જે આ પ્રકારે છે:–

(૧) પદ્માવતી (૨) ગૌરી (૩) ગાન્ધારી (૪) લક્ષ્મણા (૫) સુષીમા (૬) જાંબવતી (૭) સત્યભામા (૮) રુક્મિણી (૯) મૂલશ્રી તથા (૧૦) મૂલદત્તા.

શ્રી જમ્બૂસ્વામી પૂછે છે–હે ભદન્ત ! જો ભગવાને પંચમ વર્ગમાં પદ્માવતી

॥ मूलम् ॥

एवं खलु जंबू। तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णामं णयरी होत्था, जहा पढमे, जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरइ। तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नामं देवी होत्था। वण्णओ०। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे जाव विहरइ। कण्हे निग्गए जाव पज्जुवासइ। तए णं सा पउमावई देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ-तुट्ठ० जहा देवई जाव पज्जुवासइ। तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए देवीए जाव धम्मकहा, परिसा पडिगया। तए णं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इमीसे णं भंते! बारवईए दुवालसजोयणआयामाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए किंमूलए विणासे भविस्सइ? कण्हाइ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु! कण्हा! इमीसे बारवईए णयरीए दुवालसजोयणआयामाए नवजोयण जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए सुरग्गिदीवायणमूलए विणासे भविस्सइ ॥ सू० २ ॥

॥ टीका ॥

'एवं खलु' इत्यादि।

'एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णामं णयरी

तो उनमें प्रथम अध्ययन के भाव का किस प्रकार निरूपण किया है ॥ सू० १ ॥

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं-

हे जम्बू! उस काल उस समय में द्वारावती नामकी नगरी थी,

આદિ દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો તેમાં પ્રથમ અધ્યયનના ભાવને કયા પ્રકારે નિરૂપણ કર્યો છે? (સૂ૦ ૧)

સુધર્મા સ્વામી કહે છે :-

હે જંબૂ! તે કાલ તે સમયે દ્વારાવતી નામની નગરી હતી. તે નગરીમાં કૃષ્ણ વાસુદેવ

होत्था' एवं खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावती नाम नगरी आसीत्। 'जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरइ' यथा प्रथमे यावत् कृष्णो वासुदेव आधिपत्यं यावद् विहरति। 'तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावई नामं देवी होत्था' तस्य खलु कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मावती नाम देवी आसीत्। देवी=पट्टमहिषी। 'वण्णओ' वर्णकः=पद्मावत्या वर्णनमन्यराज्ञीवदन्यतोऽवसेयम्। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे' तस्मिन् काले तस्मिन् समये अर्हन् अरिष्टनेमिः समवसृतः=द्वारावत्यां नगर्यां समुपागतो 'जाव विहरइ' यावद् विहरति। 'कण्हे निग्गए जाव पज्जुवासइ' कृष्णो निर्गतो यावत्पर्युपास्ते। 'तए णं सा पउमावई देवी' ततः खलु सा पद्मावती देवी 'इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी' अस्याः कथायाः लब्धार्था सती=ज्ञातभगवदागमनवृत्तान्ता सती 'हट्ठतुट्ठ० जहा देवई जाव पज्जुवासइ' हृष्टतुष्ट०

उस नगरी में कृष्ण वासुदेव राजा राज्य करते थे। द्वारावती नगरी और कृष्ण वासुदेव का विस्तृत वर्णन प्रथम वर्ग में हो चुका है। उन कृष्ण वासुदेव की रानी का नाम पद्मावती था, जो अत्यन्त सुकुमार अंगवाली थी। इस सम्बन्ध का वर्णन अन्य रानी के समान जानना चाहिये।

उस काल उस समय में अर्हत् अरिष्टनेमि भगवान् विचरते हुए वहाँ पधारे, और उद्यानपाल की आज्ञा लेकर उद्यानमें ठहरे, एवं तपसंयम से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। भगवान् का आगमन सुनकर कृष्ण वासुदेव उनके दर्शन के लिये गये और यावत् उपासना करने लगे। भगवान के आनेका वृत्तान्त जानकर पद्मावती देवी भी अत्यन्त हृष्ट-तुष्ट हो देवकी

રાજા રાજ્ય કરતા હતા. દ્વારાવતી નગરી અને કૃષ્ણ વાસુદેવનું સવિસ્તર વર્ણન પ્રથમ વર્ગમાં અપાઈ ગયું છે. તે કૃષ્ણ વાસુદેવની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું, જે અત્યંત સુકુમાર અંગવાળી હતી. તેનું વિસ્તૃત વર્ણન બીજી રાણીઓના જેવું જાણવું જોઈએ.

તે કાલ તે સમયે અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ ભગવાન વિચરતા થકા ત્યાં પધાર્યા તથા ઉદ્યાનપાલની આજ્ઞા લઈને ઉદ્યાનમાં વિરાજ્યા અને તપસંયમથી આત્માને ભાવિત કરતા વિચરવા લાગ્યા. ભગવાનના આગમનના સમાચાર સાંભળી કૃષ્ણ વાસુદેવ તેમનાં દર્શન માટે ગયા અને યાવત્ ઉપાસના કરવા લાગ્યા. ભગવાનના આવવાના સમાચાર જાણી રાણી પદ્માવતી દેવી અત્યંત હૃષ્ટતુષ્ટ થઈ દેવકીની પેઠે ધાર્મિક રથ પર ચઢી

यथा देवकी यावत् पर्युपास्ते। देवकीवदेषाऽपि पद्मावतीदेवी हृष्टतुष्टहृदया धार्मिकरथमारुह्य भगवत्समीपे दर्शनार्थं गतेत्यर्थः। 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए देवीए' ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मावत्या देव्याः, 'जाव धम्मकहा' यावद् धर्मकथा। कृष्णं वासुदेवं पद्मावतीं देवीं चोद्दिश्य भगवता धर्मकथा कथितेत्यर्थः। धर्मकथा-श्रवणानन्तरं 'परिसा पडिगया' परिषत् प्रतिगता=धर्मं श्रुत्वा परिषत् स्वस्व-स्थानं प्रतिनिवृत्ता। 'तए णं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' ततः खलु कृष्णो वासुदेवः अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्—'इमीसे णं भंते! बारवईए णयरीए दुवालसजोयणआयामाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए किंमूलए विणासे भविस्सइ' अस्याः खलु भदन्त! द्वारावत्या नगर्या द्वादशयोज-नायामाया यावत् प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः किम्मूलको विनाशो भविष्यति। अस्या द्वारकायाः केन कारणेन विनाशो भविष्यतीति भावः! 'कण्हाइ' कृष्ण

के समान ही धार्मिक रथपर चढकर भगवान् के दर्शन के लिये निकली और भगवान् के समीप जाकर विधियुक्त वन्दन-नमस्कार किया। उसके बाद भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव तथा रानी पद्मावती को उद्देश करके धर्मकथा कही। धर्मकथा सुन-कर परिषत् अपने २ घर लौट आयी। उसके बाद कृष्ण वासुदेवने अर्हत् अरिष्टनेमि को वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार पूछा-हे भदन्त! बारह योजन लम्बी यावत् प्रत्यक्ष देवलोक समान इस द्वारका नगरी का विनाश किस कारण से होगा?

भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-हे कृष्ण! बारह योजन लम्बी और नौ योजन चौडी तथा प्रत्यक्ष

ભગવાનનાં દર્શન માટે નીકળી, અને ભગવાનની પાસે જઇને વિધિસહિત વંદન-નમસ્કાર કર્યા. ત્યાર પછી ભગવાન અર્હત અરિષ્ટનેમિએ કૃષ્ણ વાસુદેવ તથા રાણી પદ્માવતીને ઉદ્દેશીને ધર્મકથા કહી. ધર્મકથા સાંભળી પરિષદ્ પોતપોતાને ઘેર પાછી ગઇ. ત્યાર પછી કૃષ્ણ વાસુદેવે અર્હત્ અરિષ્ટનેમિને વંદન નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે પૂછયું :- હે ભદન્ત! બાર યોજન લાંબી આ પ્રત્યક્ષ દેવલોકના જેવી દ્વારકા નગરીનો વિનાશ કયા કારણુથી થશે?

ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રકારે કહ્યું :- હે કૃષ્ણ!

इति=हे कृष्ण ! इत्युक्त्वा 'अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्-'एवं खलु कण्हा ! इमीसे बारवईए णयरीए' एवं खलु हे कृष्ण ! अस्या द्वारावत्या नगर्याः 'दुवालसजोयणआयामाए नवजोयण जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए' द्वादश-योजनायामाया नवयोजनयावत्-प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः=द्वादशयोजनपर्यन्तं लम्बायमानाया नवयोजनपर्यन्तं विस्तृतायाः स्वर्गतुल्याया अस्या द्वारावत्या नगर्याः 'सुरग्गिदीवायणमूलए' सुराग्निद्वैपायनमूलकः-सुराग्निद्वैपायनाः-सुरा=मदिरा, अग्निः=अनलः, द्वैपायनः=ऋषिविशेषः, एते मूलं=कारणं यस्मिन् सः, सुराग्निद्वैपायननिमित्त इत्यर्थः; विनाशः=विध्वंसो भविष्यति । यदुवंशिनां सुरापानेन, द्वैपायनऋषेरपराधेन, निदानवशादग्निकुमारदेवतयोत्पन्नद्वैपायन-ऋषिकृताग्निवर्षणेन चैतत्कारणत्रयेण द्वारकाया विनाशो भविष्यतीति भावः ॥ सू० २ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने-धन्ना णं ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिसेण-पज्जुन्न-संब-अणिरुद्ध-दढनेमि- सच्चनेमिप्पभियओ कुमारा, जे णं चिच्चा हिरण्णं जाव परिभाएत्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडा जाव पव्वइया, अहण्णं अधन्ने अकयपुण्णे रज्जे य जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए नो संचाएमि अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वइत्तए । कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-से नूणं कण्हा! तव अयं अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने-धन्ना णं ते

देवलोक समान इस द्वारका नगरीका विनाश मदिरा, अग्नि और द्वैपायन ऋषि के क्रोध के कारण होगा ॥ सू० २ ॥

બાર યોજન લાંબી, નવ યોજન પહોળી તથા પ્રત્યક્ષ દેવલોકના સમાન આ દ્વારકાનગરીનો વિનાશ મદિરા, અગ્નિ અને દ્વૈપાયન ઋષિના ક્રોધના કારણે થશે. (સૂ૦ ૨)

जाली जाव पव्वइत्तए; से नूणं कण्हा! अयमट्ठे समट्ठे? हंता! अत्थि ॥ सू० ३ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने' ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्य अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा अयमेवंरूप आध्यात्मिकः ४ समुत्पन्नः। अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके द्वारकाया विनाशकारणं श्रुत्वा कृष्णस्य वासुदेवस्याऽऽत्मनि वक्ष्यमाणप्रकारो विचारः समुत्पन्न इति भावः। कीदृशः स विचारः? इत्याह–'धन्ना णं ते' धन्याः खलु ते, 'जालि–मयालि–उवयालि–पुरिससेण–वारिसेण–पज्जुन्न–संब–अणिरुद्ध–दढनेमि–सच्चनेमिप्पभियओ कुमारा' जालि–मयाल्युपयालि–पुरुषसेन–वारिषेण–प्रद्युम्न–साम्बा–निरुद्ध–दृढनेमि–सत्यनेमि–प्रभृतयः कुमाराः, 'जे णं चिच्चा हिरण्णं जाव परिभाएत्ता' ये खलु त्यक्त्वा हिरण्यं यावत्परिभाज्य=ये खलु कुमारा हिरण्यादिकं स्वीयं धनं परित्यज्य बान्धवेभ्यो याचकेभ्यश्च दत्त्वा 'अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडा जाव पव्वइया' अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रजिताः, 'अहण्णं अधन्ने अकयपुण्णे' अहं खलु अधन्योऽकृतपुण्यः; योऽहम् 'रज्जे य जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु कामभोगेसु मुच्छिए'

भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप इस प्रकार द्वारका नगरी का वृत्तान्त जानने के बाद श्रीकृष्ण वासुदेव के हृदय में ऐसा आध्यात्मिक विचार उत्पन्न हुआ कि वे जालि, मयालि, उपयालि, पुरुषसेन, वारिषेण, प्रद्युम्न, साम्ब, अनिरुद्ध, दृढनेमि और सत्यनेमि धन्य हैं कि जिन्होंने अपनी सम्पत्ति, स्वजन और याचकों को देकर अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप मुण्डित हो प्रव्रजित हो गये। मैं तो अधन्य हूँ, अकृतपुण्य हूँ, जिससे मैं राज्य में,

---

ભગવાન અર્હત અરિષ્ટનેમિ સમીપે દ્વારકા નગરીનો વિનાશ વૃત્તાન્ત આવી રીતે સાંભળ્યા પછી શ્રી કૃષ્ણ વાસુદેવના હૃદયમાં એવો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે તે જાલિ, મયાલિ, ઉપયાલિ, પુરુષસેન, વારિષેણ, પ્રદ્યુમ્ન, સાંબ, અનિરુદ્ધ, દૃઢનેમિ તથા સત્યનેમિને ધન્ય છે કે જેઓએ પોતાની સંપત્તિ, સ્વજન તથા યાચકોને આપીને અર્હત અરિષ્ટનેમિ પાસે મુંડિત થઈ પ્રવ્રજિત થઈ ગયા. હું તો અધન્ય છું, અકૃતપુણ્ય છું, કેમકે રાજ્યમાં, અંતઃપુરમાં તથા મનુષ્યસંબંધી કામભોગમાંજ

राज्ये च यावत् अन्तःपुरे च मानुष्यकेषु च कामभोगेषु सुखेषु मूर्च्छितः। अतो 'नो संचाएमि अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वइत्तए' नो शक्नोमि अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके यावत् प्रव्रजितुं-अहं न शक्नोमि=न समर्थोऽस्मि अर्हतोऽरिष्टनेमेः समीपे प्रव्रजितुं दीक्षां ग्रहीतुम्। एवं विचारयन्तं कृष्णं वासुदेवं 'कण्हाइ' कृष्ण! इति सम्बोध्य, 'अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' अर्हन्नरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवादीत्- 'से नूणं कण्हा!' तन्नूनं हे कृष्ण! 'तव अयं अज्झत्थिए समुप्पण्णे' तवाय-माध्यात्मिकः समुत्पन्नः=हे कृष्ण! तव मनसि एतादृशो विचारः समुत्पन्नः, यत्-'धण्णा णं ते जाली जाव पव्वइत्तए' धन्याः खलु ते जालिर्यावत्-प्रव्रजितुम्=ते जालिप्रभृतिसत्यनेमिपर्यन्ताः कुमारा एव धन्याः, ये हि परित्यज्य प्रविभज्य च हिरण्यादीनि धनानि अर्हदरिष्टनेमिसविधे दीक्षिताः, अहं हि राज्ये

अन्तःपुर में तथा मनुष्यसम्बन्धी कामभोगों में ही फंसा हुआ पडा रहा! क्या मैं भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप प्रव्रज्या नहीं ले सकता?

उस समय अपने ज्ञान द्वारा कृष्ण वासुदेव के हृदय में आये हुए विचारों को जानकर उन आर्तध्यान करते हुए कृष्ण वासुदेव को 'कृष्ण' इस शब्द से सम्बोधन कर अर्हत् अरिष्ट-नेमिने इस प्रकार कहा:-

हे कृष्ण! तुम्हारे मनमें इस प्रकार की भावना हो रही है कि उन जालि आदिकुमारों को धन्य है कि जो अपना धन वैभव याचकों और सम्बन्धियों में बाँट कर अनगार होगये। मैं तो अधन्य हूँ, अकृतपुण्य हूँ, जो ऐहिक भोगविलास में ही फसा हुवा पडा रहा। क्या मैं अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप

ફસાએલો પડી રહ્યો છું. શું હું ભગવાન અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પાસે દીક્ષા ન લઇ શકું?

તે સમયે પોતાના દિવ્યજ્ઞાનથી કૃષ્ણ વાસુદેવના હૃદયમાં ઉત્પન્ન થએલા વિચારોને જાણી, આર્તધ્યાન કરતા તે કૃષ્ણ વાસુદેવને, 'હે કૃષ્ણ' એ શબ્દથી સંબોધન કરી અર્હંત અરિષ્ટનેમિએ આ પ્રકારે કહ્યું:-

હે કૃષ્ણ! તમારાં મનમાં આવા પ્રકારની ભાવના થઇ રહી છે કે તે જાલિ આદિ કુમારને ધન્ય છે કે જેઓ પોતાનાં ધન-વૈભવને યાચકો તથા સંબંધીઓમાં વહેંચી આપી અનગાર થઇ ગયા. હું તો અધન્ય છું, અકૃતપુણ્ય છું, જેથી ઐહિક ભોગવિલાસમાંજ ફસાએલો પડયો રહ્યો છું. શું હું અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પાસે દીક્ષા

अन्तःपुरे कामभोगेषु च मूर्च्छितो न शक्नोमि भगवदन्तिके दीक्षां ग्रहीतुम्। 'से नूणं कण्हा! अयमट्ठे समट्ठे?' तन्नूनं हे कृष्ण! अयमर्थः समर्थः? इति भगवत्कथनानन्तरं कृष्णः प्राह-'हंता! अत्थि' हन्त! अस्ति, 'हन्त' इति कथितस्वीकारे; हे भदन्त! यद् भवता प्रोक्तं तत्सर्वं सत्यमेवास्ति ॥ सू० ३ ॥

॥ मूलम् ॥

तं नो खलु कण्हा! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सइ वा जन्नं वासुदेवा चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइस्संति। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-न एवं भूयं वा जाव पव्वइस्संति! कण्हाइ अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु कण्हा! सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे नियाणकडा, से एएणट्ठेणं कण्हा! एवं वुच्चइ-न एवं जाव पव्वइस्संति ॥ सू० ४ ॥

॥ टीका ॥

'तं नो' इत्यादि। 'तं नो खलु कण्हा! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सइ वा जन्नं वासुदेवा चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइस्संति' तन्नो खलु कृष्ण! एवं भूतं वा भव्यं वा भविष्यति वा यत्खलु वासुदेवास्त्यक्त्वा हिरण्यं यावत् प्रव्रजिष्यन्ति!=हे कृष्ण! वासुदेवाः कामभोगान् त्यक्त्वा हिरण्यादिकं सर्वं प्रविभाज्य न प्रव्रजिताः, न प्रव्रजन्ति, न वा प्रव्रजिष्यन्ति, यतः कालत्रयेऽपि

प्रव्रज्या नहीं ले सकता?

हे कृष्ण! क्या मैंने तुम्हारे हृदय में जो बात उत्पन्न हुई वह कही, वह बिलकुल ठीक है?

कृष्ण ने कहा- हे भदन्त! आप सर्वज्ञ हैं, आपसे कोई बात छिपी हुई नहीं है, आपने जो कुछ कहा वह सर्वथा सत्य है ॥ सू० ३ ॥

भगवान् ने कहा- हे कृष्ण! वासुदेव अपने भवमें हिरण्य

ન લઈ શકું?

હે કૃષ્ણ! તમારા હૃદયમાં ઉત્પન્ન થએલ જે વાત મેં કહી તે ઠીક છે?

કૃષ્ણે કહ્યું-હે ભદન્ત! આપે જે કહ્યું છે તે બધું ઠીક છે, કારણકે આપ સર્વજ્ઞ છો, આપથી કોઈ વાત અજાણી નથી (સૂ૦ ૩)

ભગવાને કહ્યું-હે કૃષ્ણ, એ તો કદી ભૂતકાળમાં બન્યું નથી, વર્તમાનમાં બનતું

वासुदेवानामनगारित्वमसम्भवि। एतच्छ्रुत्वा कृष्णो वासुदेवः प्राह–'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–न एवं भूयं वा जाव पव्वइस्संति' तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते– न एवं भूतं वा यावत् प्रव्रजिष्यन्ति। एतच्छ्रुत्वा 'कण्हाइ'= कृष्ण! इति संबोध्य, 'अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्, 'एवं खलु कण्हा!' एवं खलु हे कृष्ण! 'सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे नियाणकडा' सर्वेऽपि च खलु वासुदेवाः पूर्वभवे निदानकृताः= हे कृष्ण! सर्वेऽपि वासुदेवाः पूर्वजन्मनि कृतनिदाना भवन्ति। 'से एएणट्ठेणं कण्हा! एवं वुच्चइ–न एवं जाव पव्वइस्संति' तदेतेनार्थेन कृष्ण! एवमुच्यते न एवं भूतं यावत् प्रव्रजिष्यन्ति=हे कृष्ण! एतस्मादेव कारणादेवमुच्यते–यद् वासुदेवानां कालत्रयेऽपि प्रव्रजनमसंभवि ॥ सू० ४ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी–अहं णं भंते! इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि? कहिं उववज्जिस्सामि? तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी – एवं खलु कण्हा! तुमं बारवईए णयरीए

आदि संपत्ति को छोडकर भूत काल में न कभी प्रव्रजित हुए, वर्तमान में न प्रव्रजित होते हैं, और न भविष्य में प्रव्रजित बनेंगे।

कृष्ण ने कहा–हे भदन्त! इस प्रकार आप क्यों कहते हैं?

भगवानने कहा–हे कृष्ण! सभी वासुदेव अपने पूर्वजन्म में निदानकृत (नियाणा करने वाले) होते हैं। इसीलिये मैं ऐसा कहता हूँ–न कभी हुआ, न होता है, न कभी होगा जो कि वासुदेव अपनी हिरण्य आदि संपत्ति को छोडकर प्रव्रजित बनें ॥ सू० ४ ॥

નથી, તેમ કદી ભવિષ્યમાં બનનાર પણ નથી કે વાસુદેવ પોતાના હિરણ્ય આદિ સંપત્તિને છોડીને પ્રવ્રજિત થાય.

કૃષ્ણે કહ્યું:- હે ભદન્ત! એ પ્રકારે આપ કેમ કહો છો?

ભગવાને કહ્યું-હે કૃષ્ણ! બધા વાસુદેવ પોતાના પૂર્વજન્મમાં નિદાનકૃત (નિયાણું કરવાવાળા) થાય છે. તેથી હું એમ કહું છું કે ક્યારેય નથી બન્યું, હાલ નથી બનતું અને હવે પછી ક્યારેય બનશે નહિ કે વાસુદેવ પોતાની હિરણ્ય આદિ સંપત્તિને છોડી પ્રવ્રજિત થાય (સૂ૦ ૪)

सुरग्गिदीवायणकोवनिदड्ढाए अम्मापिइनियविप्पहूणे रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेलाए अभिमुहे जोहिट्ठिल्लपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिए कोसंबवणकाणणे नग्गोहवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीयवत्थपच्छाइयसरीरे जरकुमारेणं तिक्खेणं कोदंडविप्पमुक्केणं इसुणा वामे पाए विद्धे समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए जाव उववज्जिहिसि ॥ सू० ५ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः अर्हन्तमरिष्टनेमिम् एवमवदत्-'अहं णं भंते ! इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ? कहिं उववज्जिस्सामि ?' अहं खलु भदन्त ! कालमासे कालं कृत्वा कुत्र गमिष्यामि ? कुत्र उत्पत्स्ये ? । 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' ततः खलु अर्हन्नरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवादीत्-'एवं खलु कण्हा !' एवं खलु हे कृष्ण ! 'तुमं वारवईए णयरीए सुरग्गिदीवायणकोवनिदड्ढाए' त्वं द्वारावत्यां नगर्यां सुराग्निद्वैपायनकोपनिर्दग्धायाम् 'अंबापिइनियविप्पहूणे' अम्बापितृनिजकविप्रहीणः=हे कृष्ण ! सुराग्निद्वैपायनकोपेन द्वारावत्यां नगर्यां प्रज्वलितायां सत्यां मातापितृभ्यां स्वजनेभ्यश्च विहीनस्त्वम् 'रामेण बलदेवेण सद्धिं' रामेण बलदेवेन सार्द्धम्=स्वज्येष्ठभ्रात्रा रामेण सह 'दाहिणवेलाए अभिमुहे' दक्षिणवेलाया अभिमुखे

यह सुनकर कृष्ण वासुदेवने अर्हत् अरिष्टनेमि से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! मैं कालमास में कालकर कहाँ जाऊँगा ? कहाँ उत्पन्न होऊँगा ? भगवान्ने कहा-हे कृष्ण ! अग्नि और द्वैपायनऋषि के क्रोध से इस द्वारका नगरी का नाश होजाने पर एवं अपने मातापिता और स्वजनों से विहीन होकर तुम राम बलदेव के साथ दक्षिण समुद्र के किनारे पाण्डुराजा के पुत्र युधि-

---

આ સાંભળી કૃષ્ણ વાસુદેવ અર્હત્ અરિષ્ટનેમિને આ પ્રકારે કહ્યું-હે ભદન્ત ! હું કાલમાસમાં કાલ કરીને ક્યાં જઈશ ? ક્યાં ઉત્પન્ન થઈશ ? ભગવાને કહ્યું-હે કૃષ્ણ ! મદિરા, અગ્નિ, દ્વૈપાયન ઋષિના ક્રોધથી આ દ્વારકા નગરીનો નાશ થઈ જવાથી તથા પોતાના માતા પિતા અને સ્વજનોથી વિહીન થઈ રામ બલદેવની સાથે દક્ષિણ સમુદ્ર

'जोहिट्ठिलपामोक्खाणं' युधिष्ठिरप्रमुखाणां 'पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं' पञ्चानां पाण्डवानां पाण्डुराजपुत्राणां 'पासं' पार्श्वम्=समीपे 'पंडुमहुरं संपत्थिए' पाण्डुमथुरां संप्रस्थितः, पाण्डुपुत्राणां युधिष्ठिर–भीमार्जुन–नकुल–सहदेवानां समीपे पाण्डुमथुरां प्रति प्रस्थित इति भावः; 'कोसंबवणकाणणे' कोशाम्रवनकानने= कोशाम्रनामकफलविशेषवृक्षाणामरण्ये 'नग्गोहवरपायवस्स' न्यग्रोधवरपादपस्य= महावटवृक्षस्य 'अहे' अधः=छायायामित्यर्थः, 'पुढविसिलापट्टए' पृथ्वीशिलापट्टके= भूमिस्थितशिलापट्टके 'पीयवत्थपच्छाइयसरीरे' पीतवस्त्रप्रच्छादितशरीरः–पीताम्बरप्रच्छादिततनुः सन् शयानो 'जरकुमारेणं' जरकुमारेण 'तिक्खेणं' तीक्ष्णेन= निशितेन 'कोदंडविप्पमुक्केणं' कोदण्डविप्रमुक्तेन=कोदण्डाद् विप्रमुक्तः कोदण्डविप्रमुक्तस्तेन–धनुर्विनिर्गतेन, 'इसुणा' इषुणा=वाणेन 'वामे पाए विद्धे समाणे' वामे पादे विद्धः सन् 'कालमासे कालं किच्चा' कालमासे कालं कृत्वा= मृत्युसमये मृत्युं प्राप्य 'तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए' तृतीयस्यां वालुकाप्रभायां पृथिव्याम् 'जाव उववज्जिहिसि' यावदुपपत्स्यसे ॥ सू० ५ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहय जाव झियाइ। कण्हाइ! अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी – मा णं तुमं

ष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव इन पांचों पाण्डवों के समीप पाण्डुमथुरा की तरफ जाते हुए विश्राम लेने के लिये कोशाम्रवृक्ष के वनमें अत्यन्त विशाल वट वृक्ष के नीचे पृथ्वीशिलापट्ट पर पीताम्बर से अपनी देह को ढाँक कर सो जाओगे। उस समय जराकुमार द्वारा मृगकी आशङ्का से चलाया हुवा तीक्ष्ण बाण तुम्हारे दाहिने पैरको बींधेगा। इस प्रकार बाणविद्ध होकर तुम कालमास में काल करके तीसरी पृथ्वी में उत्पन्न होवोगे। ॥ सू० ५ ॥

કિનારે પાંડુરાજાના પુત્ર યુધિષ્ઠિર, ભીમ, અર્જુન, નકુલ અને સહદેવ એ પાંચે પાંડવોની પાસે પાંડુમથુરા તરફ જાતા થકા વિશ્રામ લેવા માટે કોશામ્રવૃક્ષના વનમાં અત્યંત વિશાલ વટ વૃક્ષની નીચે પૃથ્વીશિલાપટ્ટ પર પીતાંબરથી તમારાં શરીરને ઢાંકીને સૂઇ જશો. તે સમયે જરાકુમાર દ્વારા મૃગની આશંકાએ ચલાવેલ તીક્ષ્ણ બાણુથી તમારો ડાબો પગ વિંધાઇ જશે. આમ બાણુ લાગવાથી કાલમાસમાં કાલ કરી ત્રીજી પૃથ્વીમાં ઉત્પન્ન થશો. (સૂ૦ ૫)

देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि ।। एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ अणंतरं उव्विट्टित्ता इहेव जंबूदीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे बारसमे अममे नामं अरहा भविस्ससि, तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलपरियायं पाउणित्ता सिज्झिहिसि ॥ सू० ६ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए' ततः खलु कृष्णो वासुदेवः अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तिके 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=उक्तमर्थम् 'सोच्चा निसम्म ओहय जाव झियाइ' श्रुत्वा निशम्य अवहत यावद् ध्यायति । ततः 'कण्हाइ' कृष्ण ! इति संबोध्य 'अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी' अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्- 'मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि' मा खलु त्वं देवानुप्रिय ! अवहत यावद् ध्याय, यतः 'एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया !' एवं खलु त्व हे देवानुप्रिय ! 'तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ' तृतीयस्याः पृथिव्या उज्ज्वलितायाः 'अणंतरं' अनन्तरम् 'उव्विट्टित्ता' उद्वृत्य=निःसृत्येत्यर्थः, 'इहेव जंबूदीवे भारहे वासे' इहैव जम्बूद्वीपे भारते वर्षे=इह जम्बूद्वीपस्थितभरतक्षेत्रे 'आगमेस्साए उस्सप्पिणीए' आगमिष्यन्त्याम् उत्सर्पिण्याम्, 'पुंडेसु जणवएसु'

अपनी भविष्यदशा का उक्त वर्णन अर्हत् अरिष्टनेमि के मुख से सुनकर कृष्ण वासुदेव आर्तध्यान करने लगे। उस समय आर्तध्यान करते हुए कृष्ण वासुदेव को भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमिने इस प्रकार कहा-

हे देवानुप्रिय ! इस प्रकार दुःख मत करो; क्यों कि आनेवाली उत्सर्पिणी काल में तृतीय पृथ्वी से निकल कर इसी जम्बूद्वीप स्थित भरतक्षेत्र के पुण्ड्र जनपद के शतद्वार नगर में 'अमम'

પોતાની ભવિષ્ય દશાનો ઉક્ત વર્ણન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિના મુખથી સાંભળી કૃષ્ણ વાસુદેવ આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યા. તે સમયે આર્તધ્યાન કરતા કૃષ્ણ વાસુદેવને ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિએ આ પ્રકારે કહ્યું-

હે દેવાનુપ્રિય ! આપ દુઃખ ન કરો, કેમકે આવતા ઉત્સર્પિણી કાલમાં તૃતીય પૃથ્વીથી નીકળીને આ જંબૂદ્વીપમાં આવેલા ભરતક્ષેત્રના પુંડ્રજનપદના શતદ્વાર

पुण्ड्रेषु जनपदेषु 'सयदुवारे' शतद्वारे=शतद्वारनामके नगरे 'बारसमे अममे नामं अरिहा भविस्ससि' द्वादशः अममो नाम अर्हन् भविष्यसि, 'तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलपरियायं पाउणित्ता' तत्र त्वं बहूनि वर्षाणि केवलपर्यायं पालयित्वा 'सिज्झिहिसि' सेत्स्यसि=सिद्धो भविष्यसि ॥ सू० ६ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० अप्फोडेइ, अप्फोडित्ता वग्गइ, वग्गित्ता तिवइं छिंदइ, छिंदित्वा सीहनायं करेइ, करित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव अभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए अभिसेयहत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवईए णयरीए सिंघाडग जाव उवघोसेमाणा एवं वयह--एवं खलु देवाणुप्पिया! बारवईए णयरीए दुवालसजोयणआयामाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए सुरग्गिदीवायणमूलए विणासे भविस्सइ, तं जो णं देवाणुप्पिया! इच्छइ बारवईए णयरीए राया वा जुवराया वा ईसरे तलवरे माडंबिए कोडुंबिए इब्भे सेट्ठी वा देवी वा कुमारो वा कुमारी वा अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइत्तए, तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जइ, पच्छातुरस्स वि य से

नामक बारहवें तीर्थङ्कर बनोगे। वहाँ बहुत वर्षोंतक केवलपर्याय का पालन कर सिद्धिपद पाओगे। ॥ सू० ६ ॥

નગરમાં 'અમમ' નામના બારમા તીર્થંકર થશો, ત્યાં ઘણાં વર્ષો સુધી કેવલપર્યાયનું પાલન કરી સિદ્ધપદને મેળવશો. (સૂ૦ ૬)

अहापवित्तं वित्तं अणुजाणइ, महया इड्ढीसक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेइ, दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसइत्ता मम एयं आणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥ सू० ७ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः अर्हतोऽरिष्टनेमेः अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य 'हट्ठतुट्ठ० अप्फोडेइ' हृष्टतुष्ट० आस्फोटयति=हृष्टतुष्टहृदयः सन् बाहुमास्फालयति, 'अप्फोडित्ता' आस्फोट्य=बाहुमास्फाल्य 'वग्गइ' वल्गति=उच्चैः शब्दं करोति, 'वग्गित्ता' वल्गित्वा, 'तिवइं छिंदइ' त्रिपदीं छिनत्ति=पश्चात् पदत्रयमुल्लङ्घते–समवसरणे पदत्रयं समुच्छलतीत्यर्थः, छिंदित्ता' छित्त्वा 'सीहनायं करेइ' सिंहनादं करोति, 'करित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ' कृत्वा अर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा, 'तमेव अभिसेक्कं हत्थिरयणं' तदेव आभिषेक्यं हस्तिरत्नम् 'दुरूहइ' दूरोहति=आरोहति, 'दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए' दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागतः 'अभिसेयहत्थिरयणाओ' आभिषेक्यहस्तिरत्नात् 'पच्चो-

अर्हत् अरिष्टनेमि के मुख से अपना भविष्य वृत्तान्त सुनकर कृष्ण वासुदेव हृष्टतुष्टहृदय से अपनी भुजा फरकाने लगे और खुशी के कारण जोर २ से आवाज करते हुए समवसरणमें फूर्त्ती से तीन कदम तक पीछे गये और वहाँ सिंहनाद करने लगे। बाद में भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि को वन्दना–नमस्कार कर आभिषेक्य हस्तिरत्नपर चढकर द्वारका नगरी में होते हुए अपने महल में पहुँचे। हाथी से उतर कर जहाँ उपस्थानशाला थी और जहाँ उनका

અર્હંત અરિષ્ટનેમિના મુખથી પોતાના ભવિષ્યનું વૃત્તાન્ત સાંભળીને કૃષ્ણ વાસુદેવ હૃષ્ટતુષ્ટહૃદયથી પોતાની ભુજા ફરકાવવા લાગ્યા અને આનંદમાં આવી જઇને જોર જોરથી અવાજ કરતા સમવસરણમાં ફુર્તીથી ત્રણ પગલાં સુધી પાછા ગયા અને ત્યાં સિંહનાદ કરવા લાગ્યા. પછી ભગવાન અર્હંત્ અરિષ્ટનેમિને વંદન નમસ્કાર કરી આભિષેક્ય હસ્તિરત્ન (શ્રેષ્ઠ હાથી) પર ચઢીને દ્વારકા નગરીમાં થઇને પોતાના મહેલમાં પહોંચ્યા. હાથી ઉપરથી ઉતરી જ્યાં ઉપસ્થાન શાલા (કચેરી, બેઠક) હતી અને જ્યાં

रुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य 'जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव स्वकं सिंहासनं तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे' उपागत्य सिंहासनवरे पौरास्त्याभिमुखः=पूर्वाभिमुखो 'निसीयइ' निषीदति=उपविशति, 'निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ' निषद्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, 'सद्दावित्ता एवं वयासी' शब्दयित्वा एवमवदत्–'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवईए णयरीए सिंघाडग जाव उवघोसेमाणा एवं वयह' गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! द्वारावत्यां नगर्यां शृङ्गाटक यावत् महापथेषु उपघोषयन्त एवं वदत=हे देवानुप्रियाः! यूयं चतुष्पथादिषु सर्वस्थलेषु गत्वा एवं घोषणामुद्घोषयत–यत् 'एवं खलु देवाणुप्पिया! बारवईए णयरीए दुवालसजोयणआयामाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए सुरग्गिदीवायणमूलए विणासे भविस्सइ' एवं खलु देवानुप्रियाः! द्वारावत्या नगर्याः द्वादशयोजनायामाया यावत् प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः सुराग्निद्वैपायनमूलको विनाशो भविष्यति=हे देवानुप्रियाः! द्वादशयोजनदीर्घा नवयोजनविस्तृता यावत् प्रत्यक्षदेवलोकसमाना एषा द्वारका सुराग्निद्वैपायनकोपाग्निदाहेन विनष्टा भविष्यति, 'तं जो णं देवाणुप्पिया' इच्छइ बारवईए णयरीए' तद् यः खलु देवानुप्रियाः! इच्छति द्वारावत्या

सिंहासन था वहाँ गये, वे सिंहासन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठे और कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाकर इस प्रकार बोले–हे देवानुप्रिय! इस द्वारका नगरी के प्रत्येक चतुष्पथ (जहां चार रास्ते मिलते हैं) आदि सभी स्थलों में मेरी आज्ञा को इस प्रकार उद्घोषित करो कि–हे देवानुप्रियों! बारह योजन लम्बी नौ योजन चौडी यावत् प्रत्यक्ष-देवलोक सदृश इस द्वारका नगरी का नाश मदिरा, अग्नि और द्वैपायन ऋषि के द्वारा होगा। इसलिये द्वारका नगरीका कोई भी व्यक्ति

તેમનું સિંહાસન હતું ત્યાં ગયા. તેઓ સિંહાસન પર પૂર્વાભિમુખ થઈને બેઠા અને કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવીને તેઓએ આ પ્રકારે કહ્યું–હે દેવાનુપ્રિયો! આ દ્વારકા-નગરીના પ્રત્યેક ચતુષ્પથ (જ્યાં ચાર માર્ગ ભેગા થાય) આદિ બધાં સ્થળોમાં મારી આજ્ઞાને આ પ્રકારે ઉદ્ઘોષિત કરો (જાહેર કરો) કે હે દેવાનુપ્રિયો! બાર યોજન લાંબી, નવ યોજન પહોળી અને પ્રત્યક્ષ દેવલોક જેવી આ દ્વારકા નગરીનો નાશ મદિરા, અગ્નિ તથા દ્વૈપાયન ઋષિ દ્વારા થશે. માટે દ્વારકા નગરીની કોઇ પણ વ્યક્તિ, ચાહે તે

नगर्यां 'राया वा' राजा वा 'जुवराया वा' युवराजो वा 'ईसरे तलवरे' ईश्वरस्तलवरो 'माडंबिए' माडम्बिकः 'कोडुंबिए' कौटुम्बिकः 'इब्भे सेट्ठी वा' इभ्यः श्रेष्ठी वा 'देवी वा' देवी वा 'कुमारो वा' कुमारो वा 'कुमारी वा' कुमारी वा 'अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए' अर्हतः अरिष्टनेमेरन्तिके 'मुंडे जाव पव्वइत्तए' मुण्डो यावत् प्रव्रजितुम्, 'तं णं कण्हे वासुदेवे विसज्जइ' तं खलु कृष्णो वासुदेवो विसृजति=तस्मै कृष्णो वासुदेवः प्रव्रजितुमाज्ञां ददाति, 'पच्छातुरस्स वि य से अहापवित्तं वित्तं अणुजाणइ' पश्चादातुरायापि स यथाप्रवृत्तं वित्तम् अनुजानाति–यः कश्चिदनगारो भविष्यति, तद्गृहे यः कश्चिद् बालो वा वृद्धो वा रोगी वा भविष्यति, तत्परिपोषणार्थं स कृष्णो वासुदेवो यावता तत्परिपोषणं भविष्यति तावद् वित्तं दत्त्वा सर्वथा तस्य निर्वाहं करिष्यति, पुनश्च 'महया इड्ढिसक्कारसमुदएण य से निक्खमणं करेइ' महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन तस्य निष्क्रमणं करोति–महर्द्धिसत्कारैस्तस्य दीक्षामोहत्सवं करिष्यतीति भावः। 'दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह' द्वितीयमपि तृतीयमपि घोषणां घोषयत=हे देवानुप्रियाः! यूयमेवंविधां ममाज्ञाघोषणां द्विवारं त्रिवारं

चाहे वह राजा हो, युवराज हो, ईश्वर हो, तलवर हो, माडम्बिक हो, कौटुम्बिक हो, इभ्यश्रेष्ठी हो, रानी हो, कुमार हो, या कुमारी हो, जो भी भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप प्रव्रजित होना चाहते हों उन्हें कृष्ण वासुदेव प्रव्रज्या लेने की आज्ञा देते हैं। जो कोई प्रव्रजित होगा उसके पीछे घर में जो कोई बाल, वृद्ध और रोगी होंगे उनका परिपोषण कृष्ण वासुदेव स्वयं अपनी तरफ से करेंगे, और जो दीक्षित होंगे उनका दीक्षामहोत्सव बहुत बडे समारोह के साथ श्रीकृष्ण अपनी ओर से ही करेंगे। इस प्रकार दो बार–तीन बार घोषणा करके मेरे पास आओ और मुझे

રાજા હોય, યુવરાજ હોય, ઈશ્વર હોય, તલવર હોય, માડંબિક હોય, કૌટુંબિક હોય, ઇભ્યશ્રેષ્ઠી હોય, રાણી હોય, કુમાર હોય, કુમારી હોય તે ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ પાસે દીક્ષા લેવા ચાહતા હોય તો તેને કૃષ્ણ વાસુદેવ દીક્ષા લેવાની આજ્ઞા આપે છે. જે કોઈ દીક્ષા લેશે તેના ઘરમાં જે કોઈ બાલ, વૃદ્ધ અને રોગી હશે તેનું પાલનપોષણ કૃષ્ણ વાસુદેવ તમામ પ્રકારે કરશે, અને જે દીક્ષા લેશે તેમનો દીક્ષા-મહોત્સવ ઘણા મોટા સમારોહથી શ્રી કૃષ્ણ પોતાના તરફથી કરશે. આ પ્રકારે બે ત્રણ વાર ઘોષણા કરીને મારી પાસે આવો અને મને સૂચિત કરો. ત્યાર પછી તે કૌટુંબિક

घोषयत, 'घोसइत्ता मम एवं आणत्तियं पच्चप्पिणह' घोषयित्वा ममैतामाज्ञप्तिं प्रत्यर्पयत–घोषणानन्तरं यूयं मां निवेदयत। 'तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति' ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रत्यर्पयन्ति–ते राजपुरुषाः वासुदेवस्य कृष्णस्याज्ञां शिरसि धारयित्वा सर्वत्र तामुद्घोष्य पुनस्तस्मै कृष्णाय वासुदेवाय निवेदयन्ति ॥ सू० ७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं सा पउमावई देवी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–सद्दहामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं, से जहेयं तुब्भे वदह, जं णवरं देवाणुप्पिया! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणां अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ॥ सू० ८ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं सा पउमावई देवी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स' ततः खलु सा पद्मावती देवी अर्हतोऽरिष्टनेमेः 'अंतिए' अन्तिके= समीपे 'धम्मं' धर्मं=सर्वविरतिरूपं 'सोच्चा निसम्म' श्रुत्वा निशम्य=हृदयेऽवधार्य 'हट्ठतुट्ठ जाव हियया' हृष्टतुष्टयावद्हृदया 'अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ' अर्हन्तमरिष्टनेमिं

सूचित करो। उसके बाद वे कौटुम्बिक पुरुष कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को सर्वत्र उद्घोषित (जाहिर) करते हैं और शहरमें सर्वत्र उद्घोषणा करने के बाद उसकी सूचना पुनः श्री कृष्ण वासुदेव को करते हैं ॥ सू० ७ ॥

उसके बाद वह पद्मावती देवी अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप धर्म सुनकर और उसे अपने हृदय में धारण कर हृष्टतुष्ट यावत् भावपूर्ण हृदय से भगवान को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार

પુરુષ કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞાને સર્વત્ર ઉદ્‌ઘોષિત (જાહેર) કરે છે અને શહેરમાં સર્વત્ર ઉદ્‌ઘોષણા કર્યા પછી તેની સૂચના શ્રી કૃષ્ણ વાસુદેવને આપે છે. (સૂ૦ ૭)

ત્યાર પછી તે પદ્માવતી દેવી અર્હત્ અરિષ્ટનેમિની પાસે ધર્મ સાંભળીને તે પોતાના હૃદયમાં ધારણ કરી હૃષ્ટતુષ્ટ ભાવપૂર્ણ હૃદયથી ભગવાનને વંદના તથા

वन्दते नमस्यति; 'वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्- 'सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं' श्रद्दधामि खलु भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, 'से जहेयं तुब्भे वदह' तद्यथैतद् यूयं वदथ, 'जं नवरं' यो विशेषः, स तु एवम्-'देवाणुप्पिया' हे देवानुप्रिय !=हे भदन्त ! 'कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि' कृष्णं वासुदेवमापृच्छामि 'तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि' ततः खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डा यावत् प्रव्रजामि-पश्चात् कृष्णा-नुमत्याऽहं भवत्समीपे दीक्षिता भूत्वा प्रव्रजिष्यामि। भगवानाह-'अहासुहं देवाणुप्पिया' यथासुखं देवानुप्रिये ! 'मा पडिबंधं करेह' मा प्रतिबन्धं कुरु।- हे देवानुप्रिये ! यथा ते स्वात्मसुखकरं भवेत् तथा कुरु। अत्र शुभकार्ये यथा प्रतिबन्धो नो भवेत्तथा प्रयतनीयमिति भावः ॥ सू० ८ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं सा पउमावई देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवा-च्छित्ता करयल० जाव कट्टु कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि, अहासुहं

बोली-हे भदन्त ! निर्ग्रन्थ प्रवचन पर मेरी श्रद्धा है। आपका सभी उपदेश यथार्थ है। उसके श्रवण से मेरी आँखें खुल गई हैं। इसलिये मैं श्रीकृष्ण वासुदेव से पूछकर आपके समीप प्रव्रजित होना चाहती हूँ। भगवानने कहा-हे देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुम्हारी आत्मा को सुख हो वैसा करो। शुभ कार्य में प्रमाद न करो ॥ सू० ८ ॥

નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે બોલી:- હે ભદન્ત ! નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પર મને શ્રદ્ધા છે. આપનો બધો ઉપદેશ યથાર્થ છે. તેના શ્રવણથી મારી આંખ ઉઘડી ગઇ છે, તેથી હું શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવને પૂછીને આપની પાસે દીક્ષા લેવા ચાહું છું. ભગવાને કહ્યું - હે દેવાનુપ્રિયે ! જેમ તમારા આત્માને સુખ થાય તેમ કરો. શુભ કાર્યમાં પ્રમાદ ન કરવો (સૂ૦ ૮)

देवाणुप्पिए!। तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! पउमावईए देवीए महत्थं निक्खणाभिसेयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता एयं आणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबिया जाव पच्चप्पिणंति ॥ सू० ९ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं सा पउमावई देवी' ततः खलु सा पद्मावती देवी 'धम्मियं जाणप्पवरं' धार्मिकं यानप्रवरं=धार्मिकं रथम्; यो हि रथः केवलं धर्माचरणायैव रक्षितो भवति स धार्मिको रथ उच्यते; 'दुरूहइ' दूरोहति, 'दुरूहित्ता जेणेव बारवई णयरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ' दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरुहइ' उपागत्य धार्मिकाद् यानात् प्रत्यवरोहति=अवतरति, 'पच्चोरुहित्ता' प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य 'जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव कट्टु' यत्रैव कृष्णो वासुदेवः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य करतल० यावत्–कृत्वा=करतलपरिगृहीतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'कण्हं वासुदेवं' कृष्णं वासुदेवम् 'एवं वयासी' एवमवदत्- 'इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अरहो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए' इच्छामि खलु हे देवानुप्रिया! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती अर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके 'मुंडा जाव पव्वयामि' मुण्डा यावत् प्रव्रजामि। हे स्वामिन्! भवदनुज्ञाता सती भगवतोऽर्हतोऽरिष्टनेमेरन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामीति भावः। 'तए णं से कण्हे

उसके बाद वह पद्मावती देवी धार्मिक रथ पर चढकर द्वारका नगरी की ओर लौटी और अपने महल में आकर धार्मिक रथ से उतरी, तथा जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ गयी। वहाँ जाकर उनके समीप हाथ जोडकर इस प्रकार बोली–हे देवानुप्रिय! मैं भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप प्रव्रजित होना चाहती हूँ, इसलिये

ત્યાર પછી તે પદ્માવતી દેવી ધાર્મિક રથ ઉપર ચઢીને દ્વારકા નગરી તરફ પાછી ગઇ અને પોતાના મહેલમાં આવીને ધાર્મિક રથ ઉપરથી ઉતરી, અને જ્યાં કૃષ્ણ વાસુદેવ હતા ત્યાં જઇ તેમની સમીપે હાથ જોડીને આ પ્રકારે બોલી-હે દેવાનુપ્રિય! હું ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિની પાસે દીક્ષા લેવા ચાહું છું, તે માટે મારી પ્રાર્થના

वासुदेवे कोडुंबिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पउमावईए देवीए' क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! पद्मावत्या देव्या 'महत्थं निक्खमणाभिसेयं' महार्थं निष्क्रमणाभिषेकं=विशालं दीक्षामहोत्सवम् 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत=सज्जयत। हे देवानुप्रियाः ! देवी पद्मावती भगवतोऽरिष्टनेमेः समीपे प्रव्रजितुमिच्छति; यूयं तस्या दीक्षाऽभिषेकसामग्रीरुपकल्पयतेत्यर्थः, अनन्तरम् 'एयं आणत्तियं पच्चप्पिणह' एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत=निवेदयत। 'तए णं ते कोडुंबिया जाव पच्चप्पिणंति' ततः खलु ते कौटुम्बिका यावत् प्रत्यर्पयन्ति। श्रीमतामाज्ञाऽस्माभिः सम्यक् संपादितेति ते कौटुम्बिकपुरुषाः कृष्णं निवेदयन्तीत्यर्थः ॥ सू० ९ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावइं देविं पट्टयं दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठसएणं सोवन्नकलस० जाव निक्खमणाभिसएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीं सिवियं दुरुहावेइ, दुरुहावित्ता बारवई-णयरीमज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवयए

मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे इस पवित्र कार्य के लिये आज्ञा दें।

पद्मावती द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर कृष्ण वासुदेवने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ! शीघ्रातिशीघ्र पद्मावती देवी के लिये विशाल दीक्षा महोत्सव की तैयारी करो। तैयारी होजाने के बाद मुझे सूचना करो। तदनुसार उन कौटुम्बिक पुरुषोंने दीक्षामहोत्सव की तैयारी करके पुनः उसकी सूचना कृष्ण वासुदेव को दी ॥ सू० ९ ॥

છે કે આપ આ પવિત્ર કાર્ય માટે આજ્ઞા આપો.

પદ્માવતી દ્વારા આ પ્રકારે કહેવામાં આવતાં કૃષ્ણ વાસુદેવે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને આમ કહ્યું:– હે દેવાનુપ્રિયો ! એકદમ ઉતાવળથી પદ્માવતી દેવીને માટે મહાન્ દીક્ષામહોત્સવની તૈયારી કરો. તૈયારી કરીને મને સૂચના કરો. એ પ્રમાણે તે કૌટુંબિક પુરુષોએ દીક્ષામહોત્સવની તૈયારી કરી અને તેની સૂચના કૃષ્ણ વાસુદેવને આપી. (સૂ૦ ૯)

पव्वए जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सीयं ठवेइ, पउमावई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ। तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावइं देविं पुरओ कट्टु जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता, वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–एस णं भंते! मम अग्गमहिसी पउमावई नामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुन्ना मणामा अभिरामा जीविय-ऊसासा हिययाणंदजणिया उंबरपुप्फं पिव दुल्लभा सवणयाए, किमंग! पुण पासणयाए? तन्नं अहं देवाणुप्पिया! सिस्सिणी-भिक्खं दलयामि, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सणी-भिक्खं। अहासुहं। तए णं सा पउमावई देवी उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–आलित्ते जाव धम्ममाइक्खियं ॥ सू० १० ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावइं देविं' ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मावतीं देवीं 'पट्टयं' पट्टकं=पट्टकफलकं 'दुरूहइ' दूरोहयति, 'दुरूहित्ता अट्ठसएणं सोवन्नकलस० जाव निक्खमणाभिसेएणं' दूरोह्य अष्टशतैः सौवर्णकलशैर्यावत् निष्क्रमणाभिषेकम् 'अभिसिंचइ' अभिषिञ्चति=करोति। कृष्णो वासुदेवो देवीं पद्मावतीं फलके समारोह्य अष्टशतसुवर्णमयकलशैर्यावत् स्नपयतीति भावः। 'अभिसिंचित्ता' अभिषिच्य 'सव्वालंकारविभूसियं' सर्वालङ्का-

---

उसके बाद स्वयं कृष्ण वासुदेवने पद्मावती को पाट पर बैठाकर एक सौ आठ स्वर्ण कलशों से स्नान करवाया यावत्

ત્યાર પછી સ્વયં કૃષ્ણ વાસુદેવે પદ્માવતીને પાટ ઉપર બેસાડીને એકસો આઠ સુવર્ણ કલશોથી સ્નાન કરાવ્યું અને દીક્ષાનો અભિષેક કર્યો, તથા બધા અલંકારોથી

रविभूषितां=सर्वालङ्कारैरलंकृतां 'करेइ' करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'पुरिससहस्स-वाहिणिं सिवियं दुरूहावेइ' पुरुषसहस्रवाहिनीं शिविकां दूरोहयति। अभिषे-कानन्तरं कृष्णो वासुदेवः पद्मावतीं देवीं सहस्रपुरुषैरुह्यमानायां शिविकाया-मारोहयतीत्यर्थः; 'दुरूहावित्ता बारवईणयरीमज्झमज्झेणं निग्गच्छइ' दूरोह्य द्वारावतीनगरीमध्यमध्येन निर्गच्छति, 'निग्गच्छित्ता जेणेव' निर्गत्य यत्रैव 'रेवयए पव्वए जेणेव सहस्संववणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवियं ठवेइ' रैवतकः पर्वतो यत्रैव सहस्राम्रवनम् उद्यानं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य शिविकां स्थापयति, 'पउमावई देवी सीयाओ' पद्मावती देवी शिविकायाः 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति-अवतरतीत्यर्थः। 'तए णं' ततः खलु 'से कण्हे वासुदेवे पउमावइं देविं पुरओ कट्टु जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' स कृष्णो वासुदेवः पद्मावतीं देवीं पुरतः कृत्वा यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य अर्हन्तमरिष्टनेमिं त्रिकृत्व आद-क्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-'एस णं भंते ! मम अग्गमहिसी पउमावई नामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुन्ना

दीक्षा का अभिषेक किया और सभी अलङ्कारों से अलङ्कृत करके हजार पुरुषों से वाहित शिबिका पर उसे बैठाकर द्वारका नगरी के बीचोबीच होते हुए धामधूम से जहाँ रैवतक पर्वत था और जहाँ सहस्राम्रवन उद्यान था वहाँ लाकर शिबिका उतरवायी, उस समय पद्मावती देवी के शिबिका से उतर जाने के अनन्तर कृष्ण वासुदेवने पद्मावती देवी को आगे करके जहाँ अर्हत् अरिष्टनेमि थे वहाँ गये। वहाँ जाकर उन्हों ने तीन बार आदक्षिण-प्रदक्षिण करके वन्दन नमस्कार किया और इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! यह पद्मावती देवी मेरी पट्टरानी है, तथा मेरे लिये इष्ट है, कान्त है, प्रिय है,

---

વિભૂષિત કરીને હજાર પુરુષોથી ઉપાડેલી પાલખીમાં બેસાડી દ્વારકા નગરી વચ્ચોવચ્ચ થઇને ધામધૂમથી જ્યાં રૈવતક પર્વત હતો અને જ્યાં સહસ્રામ્રવન ઉદ્યાન હતું ત્યાં લઈ આવી પાલખી ઉતારી, તે સમયે પદ્માવતી દેવીના પાલખીમાંથી ઉતર્યા પછી કૃષ્ણ વાસુદેવ પદ્માવતી દેવીને આગળ કરીને જ્યાં અર્હત અરિષ્ટનેમિ હતા ત્યાં ગયા. ત્યાં જઇને ત્રણવાર આદક્ષિણપ્રદક્ષિણ કરી વંદન નમસ્કાર કર્યા અને આ પ્રકારે કહ્યું:-હે ભદન્ત ! આ પદ્માવતી દેવી મારી પટ્ટરાણી છે, તથા મારે માટે ઇષ્ટ છે, કાન્ત છે, પ્રિય છે,

मणामा अभिरामा' एषा खलुभदन्त! मम अग्रमहिषी पद्मावती नाम देवी इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा अभिरामा, 'जीवियउस्सासा' जीवितोच्छ्वासा=प्राणसमाना, पुनः 'हिययाणंदजणिया' हृदयानन्दजनिका; तथा 'उंबरपुष्कं पिव' उदुम्बरपुष्पमिव 'दुल्लहा' दुर्लभा, 'सवणयाए' श्रवणतायै-श्रवणाय 'किमंग पुण पासणयाए' किमङ्ग! पुनर्दर्शनतायै=दर्शनाय-हे भदन्त! एतादृशी पुण्यवती उदुम्बरपुष्पवत् श्रवणायापि दुर्लभा, किं पुनर्द्रष्टुमित्यर्थः। 'तन्नं अहं देवाणुप्पिया' तां खलु अहं हे देवानुप्रिय! 'सिस्सिणीभिक्खं' शिष्याभिक्षाम्=शिष्यारूपां भिक्षां 'दलयामि' ददामि, 'पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु हे देवानुप्रियाः! 'सिस्सिणीभिक्खं' शिष्याभिक्षाम्। कृष्णस्य वचनं श्रुत्वा भगवानाह-'अहासुहं' यथासुखम्=हे कृष्ण! यथा तुभ्यं रोचते इति। 'तए णं सा पउमावई देवी' ततः खलु सा पद्मावती देवी

मनोज्ञ है, मनामा (मन के अनुकूल कार्य करने वाली) है एवं गुण आदि से सुन्दर है। हे भगवन्! यह मेरे जीवन में श्वासउच्छ्वास के समान प्रिय है, एवं मेरे हृदय को आनन्दित करने वाली है। इस प्रकार का स्त्रीरत्न गूलर के फूल के समान सुनने के लिये भी दुर्लभ है तो फिर देखना तो बडा ही असंभव है। हे देवानुप्रिय! मैं आपको इस पद्मावती को शिष्यारूप से भिक्षा देता हूँ, आप कृपा करके इस शिष्यारूप भिक्षा को स्वीकार करें। कृष्ण की प्रार्थना सुनकर भगवान्ने कहा- हे कृष्ण! जैसी तुम्हारी इच्छा।

उसके बाद पद्मावती देवीने ईशानकोण में जाकर अपने

મનોજ્ઞ છે, મનામા – મનને અનુકૂળ કાર્ય કરવાવાળી છે અને ગુણ આદિથી સુંદર છે. હે ભગવન્! આ મારા જીવનમાં શ્વાસઉચ્છ્વાસની પેઠે પ્રિય છે અર્થાત્ મારા હૃદયને આનંદ આપવા વાળી છે. આવા પ્રકારનું સ્ત્રીરત્ન ઉંબરાના ફૂલની પેઠે સાંભળવું પણ દુર્લભ છે તો પછી તે નજરે જોવું તો બહુજ અસંભવ છે. હે દેવાનુપ્રિય! હું આપને આ પદ્માવતીને શિષ્યારૂપે ભિક્ષા આપું છું તો આપ કૃપા કરીને આ શિષ્યારૂપ ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો, કૃષ્ણની પ્રાર્થના સાંભળી ભગવાને કહ્યું- હે કૃષ્ણ! જેવી તમારી ઇચ્છા.

ત્યાર પછી તે પદ્માવતી દેવીએ ઇશાનકોણમાં જઇને સ્વહસ્તે પોતાનાં શરીર

'उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं' उत्तरपौरस्त्यम् दिग्भागम् 'अवक्कमइ' अपक्राम्यति=गच्छति, 'अवक्कमित्ता' अपक्रम्य 'सयमेव आभरणालंकारं' स्वयमेव आभरणालङ्कारम् 'ओमुयइ' अवमुञ्चति=शरीरादवतारयति, 'ओमुइत्ता' अवमुच्य=अवतार्य्य 'सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ' स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, 'करित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ' कृत्वा यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'अरहं अरिट्ठनेमिं' अर्हन्तमरिष्टनेमिं 'वंदइ णमंसइ' वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्–'आलित्ते जाव धम्ममाइक्खियं' आलिप्तो यावद् धर्म आख्यातः । हे भदन्त ! एष संसार आदीप्तो=जन्मजरामरणादिदुःखादिभिरग्निभिरनवरतं ज्वलितः, तस्मादिच्छामि देवानुप्रियैः स्वयमेव प्रव्राजितां यावद्धर्म आख्यातः ॥ सू० १० ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं अरहा अरिट्ठनेमी पउमावइं देविं सयमेव पव्वावेइ, पव्वावित्ता सयमेव मुंडावेइ, जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणीं दलयइ । तए णं सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं देविं सयं पव्वावेइ जाव संजमियव्वं । तए णं सा पउमावई जाव संजमइ । तए णं सा पउमावई अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी ॥ सू० ११ ॥

हाथों से अपने शरीर ऊपर के सभी आभरण उतारे और स्वयं केशों का पञ्चमुष्टिक लुञ्चन (लोच) करके जहाँ भगवान् अरिष्टनेमि थे वहाँ आकर वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार बोली–हे भदन्त ! यह संसार जन्म, जरा, मरण आदि दुःखरूप अग्नि से प्रज्वलित हो रहा है, अतः इस दुःखसमूह से अलग होने के लिये मैं आपके समीप मुण्डित होकर प्रव्रजित होना चाहती हूँ; एतदर्थ आप कृपा करके मुझको चारित्र धर्म सुनाइये ॥ सू० १० ॥

ઉપરના સર્વે આભરણ ઉતાર્યાં. અને પોતેજ કેશોનું પંચમુષ્ટિક લુંચન (લોચ) કરીને જ્યાં ભગવાન અરિષ્ટનેમિ હતા ત્યાં આવીને વંદન નમસ્કાર કરી આ પ્રકારે બોલી, હે ભદન્ત ! આ સંસાર જન્મ, જરા, મરણ આદિ દુઃખરૂપ અગ્નિથી પ્રજ્વલિત થઈ રહ્યો છે, તેથી હું આ દુઃખસમૂહથી પૃથક થવા માટે આપની પાસે મુંડિત થઈને દીક્ષા લેવા ચાહું છું. માટે આપ કૃપા કરીને ચારિત્ર ધર્મ સંભળાવો (સૂ૦ ૧૦)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं अरहा अरिट्ठनेमी पउमावइं देविं' ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः पद्मावतीं देवीं 'सयमेव पव्वावेइ' स्वयमेव प्रव्राजयति=प्रव्रज्यां ददाति, 'पव्वावित्ता' प्रव्राज्य 'सयमेव मुंडावेइ' स्वयमेव मुण्डयति=भावतो मुण्डितां करोति । अनन्तरं भगवानर्हदरिष्टनेमिः 'सयमेव जक्खिणीए अज्जाए सिस्सिणिं दलयइ' स्वयमेव यक्षिण्यै आर्यायै शिष्यां ददाति= स्वयमेव भगवान् तां पद्मावतीं यक्षिण्यै आर्यायै शिष्यारूपेण ददाति । 'तए णं सा जक्खिणी अज्जा' ततः खलु सा यक्षिणी आर्या 'पउमावइं देविं' पद्मावतीं देवीं, 'सयं पव्वावेइ' स्वयं प्रव्राजयति=केशलुञ्चनादिरूपां प्रव्रज्यां ददाति, 'जाव संजमियव्वं' यावत् संयन्तव्यम्=संयमे यतितव्यम् इत्युपदिशति । 'तए णं' ततः खलु, 'सा पउमावई जाव संजमइ' सा पद्मावती यावत् संयच्छते= संयमे यत्नं करोति । 'तए णं सा पउमावई अज्जा जाया' ततः खलु सा पद्मावती आर्या जाता, पुनश्च 'ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी' ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी=ईर्यासमित्यादिभिः पञ्चभिः समितिभिर्युक्ता सती यावद् गुप्तब्रह्मचारिणी जाता ॥ सू० ११ ॥

उसके बाद भगवान् अर्हत् अरिष्टनेमिने पद्मावती देवी को स्वयमेव प्रव्रजित और मुण्डित करके यक्षिणी आर्या के सुपुर्द करदी। अनन्तर यक्षिणी आर्याने पद्मावती को प्रव्रजित किया, और संयम क्रिया में सावधान रहने के लिये शिक्षा दी कि–हे पद्मावती ! तुम संयम में सदा सावधान रहना ! पद्मावती आर्या भी यक्षिणी आर्या के कथनानुसार संयम में यत्न करने लगी और वह पद्मावती आर्या बन करके तथा ईर्यासमिति आदि पाँचों समितियों से युक्त हो यावत् ब्रह्मचारिणी होगयी ॥ सू० ११ ॥

ત્યાર પછી ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિએ પદ્માવતી દેવીને પોતેજ પ્રવ્રજિત તથા મુંડિત કરાવીને યક્ષિણી આર્યાને સુપ્રત કરી દીધી. અનન્તર તે યક્ષિણી આર્યાએ પદ્માવતીને પ્રવ્રજિત કરીને સંયમ ક્રિયામાં સાવધાન રહેવા શિખામણ આપી કે હે પદ્માવતી ! 'તમારે સંયમમાં સદા સાવધાન રહેવું'. પદ્માવતી આર્યા પણ યક્ષિણી આર્યાના કહેવા પ્રમાણે સંયમમાં યત્ન કરવા લાગી, અને તે પદ્માવતી આર્યા થઇને તથા ઇર્યાસમિતિ આદિ–પાંચે સમિતિઓથી યુકત થઇ યાવત્ બ્રહ્મચારિણી થઈ ગઇ. (સૂ૦ ૧૧).

॥ मूलम् ॥

तए णं सा पउमावई अज्जा जक्खिणीए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासार्द्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरइ। तए णं सा पउमावई अज्जा बहुपडिपुन्नाइं वीसं वासाइं सामन्नपरियायं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेइ, झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरई नग्गभावे जाव तमट्ठं आराहेइ, चरिमुस्सासेहिं सिद्धा ॥ सू० १२ ॥

इय पंचमवग्गस्स पढममज्झयणं समत्तं।

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं पउमावई अज्जा' ततः खलु सा पद्मावती आर्या 'जक्खिणीए अज्जाए' यक्षिण्या आर्याया 'अंतिए' अन्तिके 'सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं' सामायिकादीनि एकादश अङ्गानि, 'अहिज्जइ' अधीते 'बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं' बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशभिः 'मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं' मासार्द्धमासक्षपणैर्विविधैस्तपः-कर्मभिः 'अप्पाणं भावेमाणा विहरइ' आत्मानं भावयन्ती विहरति। 'तए णं' ततः खलु 'सा पउमावई अज्जा' सा पद्मावती आर्या 'बहुपडिपुन्नाइं वीसं वासाइं' बहुप्रतिपूर्णानि विंशतिं वर्षाणि 'सामन्नपरियायं पाउणित्ता' श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा 'मासियाए संलेहणाए' मासिक्या संलेखनया,

---

अनन्तर पद्मावती आर्याने यक्षिणी आर्या के समीप सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और साथ ही साथ उपवास, बेला, तेला, चोला, पचोला, पन्द्रह २ और महीने २ तक की विविध तपस्या करती हुई विचरने लगी। पद्मावती आर्याने पूरे बीस वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला। अन्त में जब दुर्बल होगयी

તે પછી પદ્માવતી આર્યાએ યક્ષિણી આર્યા પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને તેની સાથેજ ઉપવાસ, છઠ, અષ્ટમ, ચાર, પાંચ, પંદર પંદર દિવસ અને મહિના મહિના સુધીની વિવિધ તપસ્યા કરતી કરતી વિચરવા લાગી. પદ્માવતી આર્યાએ પુરાં વીશ વર્ષ સુધી ચારિત્ર પર્યાયનું પાલન કર્યું. અંતમાં જ્યારે દુર્બલ થઇ ગઈ ત્યારે તેણે એક માસની સંલેખનાનો આરંભ કર્યો. અને સંલેખના દ્વારા

'अप्पाणं झोसेइ' आत्मानं जोषयति=सेवते, 'झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं' जोषयित्वा=सेवित्वा षष्टिं भक्तानि, 'अणसणाए छेदेइ' अनशनेन छिनत्ति, 'छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरई नग्गभावे जाव तमट्ठं आराहेइ' छित्त्वा यस्यार्थाय क्रियते नग्नभावः यावत्तमर्थम् आराधयति । पुनः सा पद्मावती आर्या विंशतिं वर्षाणि यावत् निरन्तरं श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा मासिक्या संलेखनया आत्मानं भावयित्वा षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्वा, यमर्थमुद्दिश्य संयमं स्वीकृतवती तमर्थं प्राप्तवती । तदनु 'चरमुस्सासेहिं सिद्धा' चरमोच्छ्वासैः सिद्धा=अन्तिममुच्छ्वासमुत्सृज्य सा सिद्धिं गता ॥ सू० १२ ॥

इति पञ्चमवर्गस्य प्रथमाध्ययनं सम्पूर्णम् ।

॥ मूलम् ॥

उक्खेवओ य अज्झयणस्स । तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णयरी, रेवयए, उज्जाणे नंदनवणे, तत्थ णं बारवईए णयरीए कण्हे वासुदेवे राया होत्था । तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स गोरी देवी, वण्णओ, अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे, कण्हे णिग्गए, गोरी जहा पउमावई तहा णिग्गया, धम्मकहा, परिसा पडिगया, कण्हे वि पडिगए । तए णं सा गोरी जहा पउमावई तहा णिक्खंता जाव सिद्धा २, एवं गंधारी ३, लक्खणा ४, सुसीमा ५, जंबवई ६, सच्चभामा ७, रुप्पिणी ८, अट्ठ वि पउमावईसरिसयाओ अट्ठ अज्झयणा ॥ सू० १३ ॥

तो उनने एक मास की संलेखना प्रारम्भ की, और संलेखना द्वारा साठ भक्तों को अनशन से छेदित कर अर्थात् एक महिने का संथारा करके जिस मोक्षप्राप्ति के लिये संयम लिया उसका आराधन कर अन्तिम श्वास के बाद सिद्ध पद को प्राप्त किया ॥ सू० १२ ॥

प्रथम अध्ययन संपूर्ण

સાઠ ભકતોનું અનશનથી છેદન કરી અર્થાત્ એક મહિનાનો સંથારો કરી જે મોક્ષ પ્રાપ્તિ માટે સંયમ લીધો હતો તેનું આરાધન કરતાં અંતિમ શ્વાસ પછી સિદ્ધ પદને પ્રાપ્ત કર્યું.

પ્રથમ અધ્યયન સંપૂર્ણ.

॥ टीका ॥

'उक्खेवओ' इत्यादि। 'उक्खेवओ य अज्झयणस्स' उत्क्षेपकश्च अध्ययनस्य=अस्याध्ययनस्य प्रारम्भवाक्यं पूर्वस्याध्ययनस्य प्रारम्भवाक्यवद् विज्ञेयम्। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवई णयरी' तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावती नगरी, तत्र 'रेवयए' रैवतकः पर्वतः, 'उज्जाणे नंदनवणे' उद्यानं नन्दनवनम्=नन्दनवननामकमुद्यानम्। 'तत्थ णं' तत्र खलु 'बारवईए णयरीए कण्हे वासुदेवे राया होत्था' द्वारावत्यां नगर्यां कृष्णो वासुदेवः राजा आसीत्। 'तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स गोरी देवी' तस्य खलु कृष्णस्य वासुदेवस्य गौरी देवी आसीत्। 'वण्णओ' वर्णकः-अस्या वर्णनं पूर्ववद् विज्ञेयम्। 'अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे' अर्हन् अरिष्टनेमिः समवसृतः। भगवद्दर्शनार्थं 'कण्हे णिग्गए' कृष्णो निर्गतः। 'गोरी जहा पउमावई

द्वितीय अध्ययन का प्रारम्भवाक्य इस प्रकार जानना चाहिए, श्री जम्बूस्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं-हे भदन्त! भगवान महावीर के द्वारा निरूपित प्रथम अध्ययन का भाव मैंने सुना, परन्तु इसके बाद भगवान ने द्वितीय अध्ययन में किस भाव का निरूपण किया है? सो कृपा कर सुनाइये। श्री सुधर्मास्वामी ने कहा-हे जम्बू! उस काल उस समय में द्वारका नामक नगरी थी। उस नगरी के समीप में ही रैवतक नामक पर्वत था। उस पर्वत पर नन्दवन नामक एक मनोहर तथा विशाल उद्यान था। उस द्वारावती नगरी के राजा कृष्ण वासुदेव थे। उस कृष्ण वासुदेव की पट्टरानी का नाम गौरी था। एक समय नन्दनवन उद्यान में भगवान अर्हत् अरिष्टनेमि पधारे। कृष्ण वासुदेव भगवान के दर्शन

આ બીજા અધ્યયનનું પ્રારંભ વાક્ય આ પ્રકારે જાણવું જોઇએ.

શ્રી જમ્બૂસ્વામી શ્રી સુધર્માસ્વામીને પૂછે છે :-હે ભદન્ત! ભગવાન મહાવીર દ્વારા નિરૂપિત પ્રથમ અધ્યયનનો ભાવ મેં સાંભળ્યો પણ તેના પછી ભગવાને દ્વિતીય અધ્યયનમાં કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે તે કૃપા કરીને સંભળાવો. શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું-હે જંબૂ! તે કાલ તે સમયે દ્વારકા નામની નગરી હતી, તે નગરીની પાસેજ રૈવતક નામે પર્વત હતો. તે પર્વત ઉપર નંદનવન નામે એક મનોહર તથા વિશાળ ઉદ્યાન હતું. તે દ્વારકા નગરીના રાજા કૃષ્ણ વાસુદેવ હતા. તે કૃષ્ણ વાસુદેવની પટ્ટરાણીનું નામ ગૌરી હતું. એક સમય નંદનવન ઉદ્યાનમાં ભગવાન અર્હત્ અરિષ્ટનેમિ

तहा निग्गया' गौरी यथा पद्मावती तथा निर्गता। भगवता 'धम्मकहा' धर्मकथा कथिता। धर्मकथां श्रुत्वा 'परिसा पडिगया' परिषत्प्रतिगता। अनन्तरं 'कण्हे वि पडिगए' कृष्णोऽपि प्रतिगतः। 'तए णं सा गोरी जहा पउमावई' ततः खलु सा गौरी यथा पद्मावती 'तहा णिक्खंता जाव सिद्धा' तथा निष्क्रान्ता यावत् सिद्धा॥ इति द्वितीयमध्ययनम्॥ २॥

'एवं गंधारी ३, लक्खणा ४, सुसीमा ५, जंबवई ६, सच्चभामा ७, रुप्पिणी ८, अट्ठवि पउमावईसरिसाओ। एवं गान्धारी ३, लक्ष्मणा ४, सुसीमा ५, जाम्बवती ६, सत्यभामा ७, रुक्मिणी ८, अष्टावपि पद्मावतीसदृशाः पद्मावतीमारभ्य रुक्मण्यन्ता अष्टावपि कृष्णपट्टमहिष्यः समानचरिताः। एवं 'अट्ठ अज्झयणा=अष्ट अध्ययनानि समाप्तानि॥ सू० १३॥

के लिये भगवान के समीप पहुँचे। गौरी देवी भी पद्मावती देवी के समान भगवान के दर्शन के लिये गयी। भगवान ने धर्मकथा कही। धर्मकथा सुनकर परिषद् अपने२ घर लौट गयी। कृष्ण भी भगवान के दर्शन कर अपने महल में पहुँचे। उसके बाद वह गौरी देवी पद्मावती के समान प्रव्रजित हुई और यावत् सिद्ध होगयी॥ २॥

इसी प्रकार गान्धारी, लक्ष्मणा, सुसीमा, जाम्बवती, सत्यभामा और रुक्मिणी का वृत्तान्त समानरूपसे जानना चाहिये। पद्मावती आदि आठों रानियां एक समान प्रव्रजित हो सिद्ध होगयीं। ये आठों रानियां कृष्ण वासुदेव की पट्टरानियां थीं। इस प्रकार ये आठ अध्ययन समाप्त हुए॥ सू० १३॥

પધાર્યા. કૃષ્ણ વાસુદેવ ભગવાનનાં દર્શન માટે ભગવાનની પાસે પહોંચ્યા ગૌરી દેવી પણ પદ્માવતી દેવીની પેઠે ભગવાનનાં દર્શન માટે ગઈ. ભગવાને ધર્મકથા કહી. ધર્મકથા સાંભળી પરિષદ્ પોતપોતાને ઘેર પાછી ગઇ, કૃષ્ણ પણ ભગવાનનાં દર્શન કરી પોતાના મહેલમાં ગયા. ત્યાર પછી તે ગૌરી દેવી પદ્માવતીની પેઠે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરીને સિદ્ધ થઇ ગઇ. (૨)

આ પ્રકારે ગાન્ધારી, લક્ષ્મણા, સુસીમા, જાંબવતી, સત્યભામા તથા રૂકિમણીનું વૃત્તાન્ત સમાનરૂપે જાણવું જોઇએ. પદ્માવતી આદિ આઠે રાણીઓ એકજ સરખી રીતે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરીને સિદ્ધ થઇ ગઇ. એ આઠે રાણીઓ કૃષ્ણ વાસુદેવની પટ્ટરાણીઓ હતી. આ પ્રકારે આઠ અધ્યયન સમાપ્ત થયાં (સૂ૦ ૧૩)

॥ मूलम् ॥

उक्खेवओ य नवमस्स। तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए णयरीए रेवयए पव्वए, नंदणवणे उज्जाणे, कण्हे राया, तत्थ णं बारवईए णयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्तए जंववईए देवीए अत्तए संबे नामं कुमारे होत्था। अहीण०। तस्स णं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था, वण्णओ, अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे। कण्हे णिग्गए, मूलसिरी वि णिग्गया, जहा पउमावई, नवरं देवाणुप्पिया! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, जाव सिद्धा। एवं मूलदत्ता वि ॥ सू० १४ ॥

॥ टीका ॥

'उक्खेवओ' इत्यादि। 'उक्खेवओ य नवमस्स' उत्क्षेपकश्च नवमस्य, नवमस्याध्ययनस्य प्रारम्भवाक्यं पूर्ववदेव ज्ञेयम्। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवईए णयरीए रेवयए पव्वए' तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावत्यां नगर्यां रैवतकः पर्वतः 'नंदणवणे उज्जाणे' नन्दनवनमुद्यानम्, 'कण्हे राया' कृष्णो राजा। 'तत्थ णं बारवईए णयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्तए

नवम अध्ययन का प्रारम्भवाक्य भी इसी प्रकार जानना कि जम्बूस्वामी ने पूछा–हे भदन्त! भगवान से प्ररूपित आठवें अध्ययन का भाव आपके द्वारा मैंने सुना, परन्तु हे भगवन्! अब मैं चाहता हूँ कि आप मुझे भगवान महावीर प्रभु–कथित नवमें अध्ययन के भावों को सुनावें। श्री सुधर्मास्वामी ने कहा–हे जम्बू! उस काल उस समय में द्वारका नामक नगरी थी, उस नगरी के समीप रैवतक नामक पर्वत था। वहाँ पर नन्दनवन नामक उद्यान था। उस नगरी के राजा कृष्ण वासुदेव थे। उस द्वारका नगरी

નવમા અધ્યયનનું પ્રારંભ વાકય પણ એજ રીતે જાણવું કે શ્રી જંબૂસ્વામીએ પૂછયું–હે ભદન્ત! ભગવાન દ્વારા પ્રરૂપિત ઉક્ત આઠમા અધ્યયનનો ભાવ આપના દ્વારા મેં સાંભળ્યો, પરંતુ હે ભગવાન્! હવે હું ચાહું છું કે આપ મને નવમા અધ્યયનના જે ભાવો ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ કહ્યા હોય તે સંભળાવો. શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું–હે જંબૂ! તે કાલ તે સમયે દ્વારકા નામે નગરી હતી. તે નગરીની પાસે રૈવતક નામે પર્વત હતો અને ત્યાં નંદનવન નામે ઉદ્યાન હતું. એ નગરીના રાજા કૃષ્ણ

जंववईए देवीए अत्तए' तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां कृष्णस्य वासुदेवस्य पुत्रो जाम्बवत्या देव्या आत्मजः=अङ्गजातः, 'संबे नामं कुमारे होत्था' साम्बो नाम कुमार आसीत्। यो हि कुमारः 'अहीण०' अहीन०=अहीन-पञ्चेन्द्रियशरीर आसीत्। 'तस्स णं संवस्स कुमारस्स' तस्य खलु साम्बस्य कुमारस्य 'मूलसिरी नामं भारिया होत्था' मूलश्रीर्नाम भार्याऽसीत्, 'वण्णओ०' वर्णकः- अस्या वर्णनं पूर्ववद्विज्ञेयम्। तत्र द्वारावत्याम् 'अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे' अर्हन् अरिष्टनेमिः समवसृतः, 'कण्हे णिग्गए' कृष्णो निर्गतः, 'मूलसिरी वि णिग्गया' मूलश्रीरपि निर्गता, 'जहा पउमावई' यथा पद्मावती 'नवरं' विशेषः, 'देवाणुप्पिया! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि' हे देवानुप्रिय! कृष्णं वासुदेवमापृच्छामि। साम्बकुमारः पूर्वमेव प्रव्रजितस्तस्मादियं

में कृष्ण वासुदेव के पुत्र जाम्बवती देवी के आत्मज साम्ब नामक कुमार थे, जो सर्वाङ्गसुन्दर थे। उस साम्बकुमार की पत्नी का नाम मूलश्री था। जो अत्यन्त सुन्दरी और कोमलाङ्गी थी। उस नगर में अर्हत् अरिष्टनेमी पधारे। कृष्ण उनके दर्शन के लिये गये। मूलश्री भी भगवान के दर्शन के निमित्त पद्मावती के समान गयी। भगवान ने धर्मकथा कही। धर्मकथा सुनकर परिषद् अपने-अपने घर लौट गयी। कृष्ण भी भगवान को वन्दन नमस्कार कर लौट गये। उसके बाद मूलश्रीने भगवान से कहा-हे भदन्त! कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर आपके समीप प्रव्रजित होना चाहती हूँ। साम्बकुमार पहले ही प्रव्रजित होगये इसलिये मूलश्रीने कृष्ण

વાસુદેવ હતા. તે દ્વારકા નગરીમાં કૃષ્ણ વાસુદેવના પુત્ર અને જાંબવતી દેવીના આત્મજ સાંબ નામે કુમાર હતા, જે સર્વાંગસુંદર હતા. તે સાંબ કુમારની પત્નીનું નામ મૂલશ્રી હતું, જે અત્યંત સુંદર તથા કોમલાંગી હતી. તે નગરીમાં અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પધાર્યા. કૃષ્ણ તેમનાં દર્શન માટે ગયા. મૂલશ્રી પણ ભગવાનનાં દર્શનનાં નિમિત્તે પદ્માવતીની પેઠે ગઇ. ભગવાને ધર્મકથા કહી. ધર્મકથા સાંભળી પરિષદ્ પોતપોતાને ઘેર પાછી ગઇ. કૃષ્ણ પણ ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરી પાછા ગયા. ત્યાર પછી મૂલશ્રીએ ભગવાનને કહ્યું-હે ભદન્ત! કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા લઇને આપની પાસે હું પ્રવ્રજિત થવા ચાહું છું. સાંબકુમાર પહેલાંજ પ્રવ્રજિત થઇ ગયા હતા તેથી

स्वश्वशुरं कृष्णं वासुदेवं पृच्छति स्मेति विशेषः । 'जाव सिद्धा' यावत्सिद्धा । 'एवं मूलदत्ता वि' एवं मूलदत्ताऽपि, मूलश्रीरिव मूलदत्ताऽपि-साम्बकुमारस्य द्वितीयभार्याऽपि विज्ञेया । सर्वमस्याश्चरितं पूर्ववदेव विज्ञेयमित्यर्थः ॥सू० १४॥

इति श्रीविश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापाऽऽलापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहू-छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य'-पदभूषित-कोल्हापुर-राजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायाम् अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिकायां टीकायां पञ्चमो वर्गः संपूर्णः ॥५॥



वासुदेव से आज्ञा लेकर पद्मावती के समान अर्हत् अरिष्टनेमि के समीप प्रव्रजित होकर तप संयम की आराधना करके सिद्ध पद को प्राप्त किया ॥ ९ ॥

मूलश्री के समान मूलदत्ता का भी सारा वृत्तान्त जानना चाहिये । यह साम्बकुमार की दूसरी पत्नी थी ॥ १० ॥ (सू० १४)

॥ पाँचवाँ वर्ग संपूर्ण ॥



મૂલશ્રી કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા લઇને પદ્માવતીની પેઠે અર્હત્ અરિષ્ટનેમિની પાસે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી તપસંયમની આરાધના કરી સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કર્યું. (૯)

મૂલશ્રીના જેવુંજ મૂલદત્તાનું બધું વૃત્તાન્ત જાણવું જોઇએ. આ સાંબકુમારની બીજી પત્ની હતી. ॥ ૧૦ ॥ (સૂ. ૧૪)

પાંચમો વર્ગ સંપૂર્ણ



अथ षष्ठो वर्गः

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते! छट्ठमस्स उक्खेवओ। नवरं सोलस अज्झयणा पण्णत्ता; तं जहा –

मंकाई किंकमे चेव, मोग्गरपाणी य कासवे।
खेमए धितिधरे चेव, केलासे हरिचंदणे ॥ १ ॥
वारत्त–सुदंसण–पुन्नभद्द–सुमणभद्द–सुपइट्ठे मेहे।
अइमुत्ते अ अलक्खे अज्झयणाणं तु सोलसयं ॥ २ ॥

जइ सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ सू० १ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं' इत्यादि। 'जइ णं भंते!' यदि खलु भदन्त! इत्यादि 'छट्ठमस्स उक्खेवओ' षष्ठस्य उत्क्षेपकः=प्रारम्भवाक्यं पूर्वसदृशमेव, 'नवरम्' अयं विशेषः–हे जम्बूः! अत्र षष्ठवर्गे 'सोलस अज्झयणा पण्णत्ता' षोडश अध्यययानि प्रज्ञप्तानि;

अब छठा वर्ग प्रारम्भ करते हैं:–

छठे वर्ग का प्रारम्भ वाक्य इस प्रकार जानना चाहिये, श्री जम्बूस्वामीने कहा–हे भदन्त! भगवान महावीर प्रभु के द्वारा कथित पंचमवर्ग के भाव को आपके मुख से मैंने सुना, अब इसके बाद भगवान के द्वारा निरूपित छठे वर्ग के भाव को मैं सुनना चाहता हूँ। श्री सुधर्मास्वामीने कहा–हे जम्बू! भगवान महावीरने छठे वर्ग में सोलह अध्ययनों का निरूपण किया है, उनके नाम

હવે છઠ્ઠા વર્ગનો પ્રારંભ કરીએ છીએ:—

છઠ્ઠા વર્ગનું પ્રારંભવાકય આ પ્રકારે જાણવું જોઇએ. શ્રી જંબૂસ્વામીએ કહ્યું–હે ભદન્ત! ભગવાન મહાવીર પ્રભુના દ્વારા કહેવાયેલ પંચમ વર્ગના ભાવને આપના મુખથી મેં સાંભળ્યા, હવે ત્યાર પછી ભગવાને નિરૂપણ કરેલા છઠ્ઠા વર્ગના ભાવને હું સાંભળવા ચાહું છું. શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું–હે જંબૂ! ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા

'तंजहा- 'मंकाई किंकमे चेव, मोग्गरपाणी य कासवे।
खेमए थितिधरे चेव, केलासे हरिचंदणे ॥ १ ॥
वारत्त-सुदंसण--पुन्नभद्द-सुमणभद्द-सुपइट्ठे मेहे ।
अइमुत्ते अ अलक्खे अज्झयणाणं तु सोलसयं ॥ २ ॥'

तद्यथा-मङ्काइः किङ्कमश्चैव मुद्गरपाणिश्च काश्यपः ।
क्षेमको धृतिधरश्चैव कैलासो हरिचन्दनः ॥ १ ॥
वारत्त-सुदर्शन--पुण्यभद्र-सुमनोभद्र-सुप्रतिष्ठाः मेघः ।
अतिमुक्तश्च अलक्षोऽध्ययनानां तु षोडशकम् ॥ 'मङ्काई' इत्यारभ्यालक्षपर्यन्तानि अध्ययनानि षोडशसंख्यकानि सन्ति । 'जइ सोलस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते' यदि षोडश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य अध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? अयं भावः-जम्बूस्वामी पृच्छति-हे भदन्त ! षष्ठवर्गस्य षोडशाध्ययनेषु प्रथमाध्ययनस्य भगवता कोऽर्थः प्ररूपितः ॥ सू० १ ॥

॥ मूलम् ॥

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया । तत्थ णं मंकाई-गाहावई णामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए ।

इस प्रकार हैं-(१) मंकाई (२) किंकम (३) मुद्गरपाणि (४) काश्यप (५) क्षेमक (६) धृतिधर (७) कैलास (८) हरिचन्दन (९) वारत्त (१०) सुदर्शन (११) पूर्णभद्र (१२) सुमनोभद्र (१३) सुप्रतिष्ठ (१४) मेघ (१५) अतिमुक्त और (१६) अलक्ष्य !

हे भदन्त ! भगवान् महावीरने अन्तकृत सूत्र के छठे वर्ग में सोलह अध्ययनों का निरूपण किया है तो इसके प्रथम अध्ययन में किस भाव का निरूपण किया है? ॥ सू० १ ॥

વર્ગમાં સોળ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે, તેનાં નામ આ પ્રકારે છે, (૧) મંકાઈ (૨) કિંકમ (૩) મુદ્ગરપાણિ (૪) કાશ્યપ (૫) ક્ષેમક (૬) ધૃતિધર (૭) કૈલાસ (૮) હરિચંદન (૯) વારત્ત (૧૦) સુદર્શન (૧૧) પૂર્ણભદ્ર (૧૨) સુમનોભદ્ર (૧૩) સુપ્રતિષ્ઠ (૧૪) મેઘ (૧૫) અતિમુક્ત તથા (૧૬) અલક્ષ્ય.

હે ભદન્ત! ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃત સૂત્રના છઠ્ઠા વર્ગમાં સોળ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે તો તેના પ્રથમ અધ્યયનમાં કયા ભાવોનું નિરૂપણ કર્યું છે ? (સૂ૦ ૧)

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे गुणसिलए जाव विहरइ, परिसा निग्गया। तए णं से मंकाई गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पन्नत्तीए गंगदत्ते तहेव, इमोवि जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए णिक्खंते जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी। तए णं से मंकाई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, सेसं जहा खंदगस्स, गुणरयणं तवोकम्मं, सोलस वासाइं परियाओ, तहेव विपुले सिद्धे ।१। दोच्चस्स उक्खेवओ०, किंकमे वि एवं चेव जाव विपुले सिद्धे ।२। ॥सू० २॥

॥ टीका ॥

'एवं खलु' इत्यादि। 'एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे' एवं खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्, तत्र 'गुणसिलए चेइए' गुणशिलकं चैत्यम्, तस्मिन् नगरे 'सेणिए राया' श्रेणिको राजाऽसीत्। 'तत्थ णं' तत्र खलु राजगृहे नगरे, 'मंकाई-गाहावई णामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए' मङ्काईगाथापतिर्नाम गाथापतिः परिवसति आढ्यो यावदपरिभूतः, आढ्यः = समृद्धः अपरिभूतः = पराभवरहितः। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये, 'समणे भगवं महावीरे आइगरे गुणसिलए जाव विहरइ' श्रमणो भगवान् महावीर आदिकरो गुणशिलके यावद् विहरति। 'परिसा निग्गया' परिषत्

हे जम्बू! उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था! उसमें गुणशिलक नामक एक चैत्य था। उस नगर में श्रेणिक नामक राजा थे। उस राजगृह नगर में मङ्काई नामक गाथापति रहते थे। जो अत्यन्त समृद्ध एवं दूसरों से अपराभवित थे।

હે જમ્બૂ! તે કાલ તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તેમાં ગુણશિલક નામે એક ચૈત્ય હતું. તે નગરમાં શ્રેણિક નામે રાજા હતા. તે રાજગૃહ નગરમાં મંકાઇ નામે ગાથાપતિ રહેતા હતા, જે બહુજ સમૃદ્ધ અને બીજાથી અપરાભવિત (કોઇથી પરાભવ નહિ થાય તેવા) હતા.

निर्गता भगवद्दर्शनाय। 'तए णं से मंकाई गाहावई' ततः खलु स मङ्काई-गाथापतिः, 'इमीसे कहाए' अस्याः कथाया 'लद्धट्ठे' लब्धार्थः=ज्ञात-भगवदागमनवृत्तान्तः 'जहा पण्णत्तीए गंगदत्ते' यथाप्रज्ञप्त्यां गङ्गदत्तः-यथा प्रज्ञप्त्यां=भगवतीसूत्रे गङ्गदत्तः, 'तहेव इमो वि जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए णिक्खंते' तथैव अयमपि ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा पुरुषसहस्रवाहिन्या शिबिकया निष्क्रान्तः 'जाव अणगारे जाए'

उस काल उस समय में धर्म के आदिकर श्रमण भगवान महावीर गुणशिलक उद्यान में पधारे, जिससे परिषद् भगवान के दर्शन निमित्त अपने २ घर से निकली। अनन्तर भगवान के आनेका वृत्तान्त सुनकर मङ्काई गाथापति भी, भगवतीसूत्र में वर्णित गङ्गदत्त के समान, भगवान के दर्शन के लिये अपने घर से निकले और भगवान के समीप पहुँच कर वन्दना की, एवं भगवान के द्वारा उपदिष्ट धर्मकथा सुनकर उनके हृदय में गङ्गदत्त के समान वैराग्य उत्पन्न होगया, और उन्होंने हाथ जोड कर भगवान से अर्ज की कि-हे भदन्त! आपके द्वारा उपदिष्ट धर्मकथा सुनकर हमारे हृदय में वैराग्य उत्पन्न होगया है, अतः मैं अपने बडे पुत्र को कुटुम्बभार देकर आपके समीप दीक्षा लेना चाहता हूँ। भगवान ने कहा-हे देवानुप्रिय! जैसी तुम्हारी इच्छा हो। उसके बाद वह मङ्काई गाथापति अपने घर गये और अपने पुत्र को गङ्गदत्त के समान ही कुटुम्बभार सौंप कर हजार मनुष्यों से उठाई जाने

તે કાલ તે સમયે ધર્મના આદિકર શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં પધાર્યા. પરિષદ્ ભગવાનનાં દર્શનનિમિત્તે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળી. પછી ભગવાનના પધાર્યાનું વૃત્તાંત સાંભળી મંકાઇ ગાથાપતિ પણ ભગવતીસૂત્રમાં કહેલ ગંગદત્તની પેઠે ભગવાનનાં દર્શન માટે પોતાને ઘેરથી નીકળી ભગવાન પાસે પહોંચીને વન્દના કરી, એવં ભગવાન દ્વારા ઉપદેશાયેલી ધર્મકથા સાંભળી તેમના હૃદયમાં ગંગદત્તની પેઠે વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો અને તેમણે હાથ જોડીને ભગવાનને અર્જ કરી કે-હે ભદન્ત! આપનાથી ઉપદેશાયેલી ધર્મકથા સાંભળવાથી મારા હૃદયમાં વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો છે. તેથી હું મારા મોટા પુત્રને કુટુંબનો ભાર સોંપીને આપની પાસે દીક્ષા લેવા ઇચ્છું છું. ભગવાને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય! જેવી તમારી ઇચ્છા. ત્યાર પછી તે મંકાઇ ગાથાપતિ પોતાને ઘેર ગયા. ગંગદત્તની પેઠે તેમણે પોતાના પુત્રને કુટુંબનો ભાર સોંપી દઈ હજાર મનુષ્યોએ ઉપાડેલી પાલખીમાં બેસી પ્રવ્રજ્યા લેવા માટે નીકળ્યા અને યાવત્ અનગાર

यावदनगारो जातः, कीदृशोऽनगारो जातः? इत्याह- 'इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी' ईर्यासमितो यावद् गुप्तब्रह्मचारी।

'तए णं से मंकाई अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए' ततः खलु स मङ्काईरनगारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके 'सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ' सामायिकादीनि एकादश अङ्गानि अधीते, 'सेसं' शेषम्=अवशिष्टमेवं विज्ञेयम्, 'जहा खंदगस्स' यथा स्कन्दकस्य, गुणरयणं तवोकम्मं' गुणरत्नं तपःकर्म= अयं स्कन्दकवत्तपःकर्म कृतवान्; 'सोलस वासाइं परियाओ' षोडश वर्षाणि पर्यायः=दीक्षापर्यायः; 'तहेव विपुले सिद्धे' तथैव विपुले सिद्धः=स्कन्दकवदेव विपुलगिरौ सिद्धः। इति प्रथममध्ययनम् ॥ १ ॥

'दोच्चस्स उक्खेवओ' द्वितीयस्य उत्क्षेपकः=द्वितीयस्याध्ययनस्य प्रारम्भवाक्यं प्रथमाध्ययनवदेव ज्ञातव्यम्। 'किंकमे वि एवं चेव' किंकमोऽपि

वाली शिविका पर चढकर प्रव्रज्या लेने के लिये निकले और यावत् अनगार होगये। उसके बाद वह मङ्काई अनगार श्रमण भगवान महावीर के तथारूप स्थविरों के समीप सामयिक आदि ग्यारह अङ्गों का अध्ययन किया, और स्कन्दक के समान गुणरत्न तप का आराधन किया, एवं सोलह वर्ष पर्यन्त दीक्षापर्याय का पालन करके अन्तमें स्कन्दक के समान ही विपुलपर्वत पर सिद्धपद को प्राप्त हो गये।

प्रथम अध्ययन समाप्त।

द्वितीय अध्ययन का प्रारम्भ वाक्य भी प्रथम अध्ययन के समान जानना चाहिये। इस अध्ययन में किङ्कम गाथापति का

થઈ ગયા. ત્યાર પછી તે મંકાઈ અનગારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના તથારૂપ સ્થવિરોની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું, અને સ્કન્દકની પેઠે ગુણરત્ન તપનું આરાધન કર્યું, તથા સોળ વર્ષ પર્યન્ત દીક્ષા પર્યાયનું પાલન કરી અંતમાં સ્કન્દકની પેઠે જ વિપુલ પર્વત પર સિદ્ધ પદને પ્રાપ્ત થયા.

પ્રથમ અધ્યયન સંપૂર્ણ.

એજ રીતે દ્વિતીય અધ્યયનનાં પ્રારંભવાકયને પણ પ્રથમ અધ્યયનની સમાન જાણી લેવું જોઈએ. આ અધ્યયનમાં કિંકમ ગાથાપતિનું વર્ણન છે. કિંકમ ગાથાપતિ

एवमेव, 'जाव विपुले सिद्धे' यावद् विपुले सिद्धः=किंकमस्य सिद्धिपर्यन्तं सर्वं चरितं मङ्काईवदेव विज्ञेयम् ॥ सू० २ ॥ इति द्वितीयमध्ययनम् ॥ २ ॥

॥ मूलम् ॥

तच्चस्स उक्खेवओ ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, चेल्लणा देवी। तत्थ णं रायगिहे णयरे अज्जुणए णामं मालागारे परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स बंधुमई णामं भारिया होत्था, सूमालपाणिपाया। तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स रायगिहस्स नयरस्स बहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था कण्हे जाव निकुरंबभूए दसद्धवन्नकुसुमकुसुमिए पासाईए ४। तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते तत्थ णं अज्जुणयस्स मालागारस्स अज्जयपज्जयपिइपज्जयागए अणेगकुलपुरिसपरंपरागए मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था, पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे। तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठइ ॥ सू० ३ ॥

॥ टीका ॥

'तच्चस्स' इत्यादि। 'तच्चस्स उक्खेवओ' तृतीयस्य उत्क्षेपकः पूर्ववदेव ज्ञेयः। 'एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, चेल्लणा देवी' एवं खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले

वर्णन है। किङ्कम गाथापति मङ्काई के समान ही प्रव्रजित हुए तथा उसी प्रकार विपुल गिरि पर सिद्ध हुए ॥ सू० २ ॥

द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

॥ अथ तृतीय अध्ययन ॥

तृतीय अध्ययन का आरम्भ इस प्रकार करते हैं—श्री जम्बू-

પણ મંકાઇની સમાન જ પ્રવ્રજિત થયા, તેજ પ્રકારે વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થયા (સૂ૦ ૨)

દ્વિતીય અધ્યયન સમાપ્ત.

અથ તૃતીય અધ્યયન.

તૃતીય અધ્યયનનો આરંભ આ પ્રકારે કરીએ છીએ, શ્રી જંબૂસ્વામીએ શ્રી

तस्मिन् समये, राजगृहं नगरम्, तत्र गुणशिलकं चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी । 'तत्थ णं रायगिहे णयरे अज्जुणए णामं मालागारे परिवसइ' तत्र खलु राजगृहे नगरे अर्जुनको नाम मालाकारः परिवसति 'अड्ढे जाव अपरिभूए' आढ्यो यावदपरिभूतः । 'तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स' तस्य खलु अर्जुनकस्य मालाकारस्य 'बंधुमई णामं भारिया होत्था' बन्धुमती नाम भार्या आसीत् 'सूमालपाणिपाया' सुकुमालपाणिपादा-कोमलाङ्गीत्यर्थः; 'तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स रायगिहस्स नयरस्स बहिया' तस्य खलु अर्जुनकस्य मालाकारस्य राजगृहाद् नगराद् बहिः, 'एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था' अत्र खलु महान् एकः पुष्पाराम आसीत्, 'कण्हे जाव निकुरंबभूए' कृष्णो यावन्निकुरम्बभूतः, यो हि आरामः कृष्णः कृष्णावभासो यावद्

स्वामी ने श्री सुधर्मास्वामीसे पूछा-हे भदन्त ! भगवान से निरूपित अन्तकृत के छठे वर्ग के द्वितीय अध्ययन का भाव आपके द्वारा ज्ञात हुआ, अब इसके आगे भगवान के द्वारा निरूपित तृतीय अध्ययन का भाव जानना चाहता हूँ । श्री सुधर्मा स्वामीने कहा- हे जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था । उस नगर में गुणशिलक नामक चैत्य था । उस नगर के राजा श्रेणिक थे । उनकी रानी का नाम चेलना था । उस राजगृह नगर में अर्जुन नामका माली रहता था । उस माली की पत्नी का नाम बन्धुमती था जो अत्यन्त सुकुमार थी । अर्जुन माली के अधीन में राजगृह नगर के बाहर एक विशाल पुष्पाराम (फूलों का बगीचा) था । वह पुष्पाराम नीले पत्तों से आच्छादित होने के कारण

સુધર્માસ્વામીને પૂછયું - હે ભદન્ત! ભગવાને નિરૂપણ કરેલા અંતકૃત સૂત્રના છઠ્ઠા વર્ગના દ્વિતીય અધ્યયનના ભાવ આપના દ્વારા જાણ્યા, હવે તેથી આગળ ભગવાને નિરૂપણ કરેલા તૃતીય અધ્યયનના ભાવ જાણવા ચાહું છું. શ્રી સુધર્માસ્વામીએ કહ્યું- હે જંબૂ! તે કાલ તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તે નગરમાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતું. તે નગરના રાજા શ્રેણિક હતા. તેમની રાણીનું નામ ચેલના હતું. તે રાજગૃહ નગરમાં અર્જુન નામે માલી રહેતો હતો. તે માલીની પત્નીનું નામ બંધુમતી હતું, જે અત્યંત સુકુમાર હતી. અર્જુન માલીની માલિકીનો એક વિશાળ પુષ્પારામ (ફૂલનો બગીચો) રાજગૃહ નગરની બહાર હતો. જે પુષ્પારામ લીલાં પાંદડાંથી આચ્છાદિત હોવાને કારણે આકાશમાં

निकुरम्बभूतः=महामेघसदृशश्यामकान्तियुक्तः 'दसद्धवन्नकुसुमकुसुमिए' दशार्द्ध-वर्णकुसुमकुसुमितः-दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णानि यानि कुसुमानि तैः कुसुमितः=पुष्पितः 'पासाईए' प्रासादीयः=मनःप्रसादजनकः, तथा दर्शनीयः अभिरूपः प्रतिरूपश्चासीत् । 'तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते' तस्य खलु पुष्पारामस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिनिकटे, 'तत्थ णं अज्जुणयस्स मालागारस्स' तत्र खलु अर्जुनकस्य मालाकारस्य 'अज्जयपज्जयपिइपज्जयागए' आर्यकप्रार्यक-पितृपर्ययागतम्-आर्यकः=पितामहः प्रार्यकः=प्रपितामहः, आर्यकश्च प्रार्यकश्च पिता च आर्यकप्रार्यकपितरः; तेषां पर्ययः=पर्यायः-क्रमस्तेन आगतम् 'अणेगकुलपुरिसपरंपरागए' अनेककुलपुरुषपरम्परागतम्=अनेकपूर्वपुरुषपरम्परया समागतं 'मोग्गरपाणिस्स'मुद्गरपाणेर्यक्षस्य 'जक्खाययणे'यक्षायतनमासीत्। तत्कीदृशमासीत्? इत्याह-'पोराणे' पुराणम्=प्राचीनम्, 'दिव्वे' दिव्यम्=मनोहरम्, 'सच्चे' सत्य-मिति। किमिव? 'जहा पुण्णभद्दे' यथा पूर्णभद्रं=पूर्णभद्रयक्षायतनमिव, 'तत्थ णं मुग्गरपाणिस्स पडिमा' तत्र खलु मुद्गरपाणेः प्रतिमा=प्रतिकृतिः 'एगं महं' एकं महान्तं 'पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मुग्गरं गहाय चिट्ठइ' पलसहस्रनिष्पन्नमयोमयं मुद्गरं गृहीत्वा तिष्ठति ॥ सू० ३ ॥

आकाश में चढे हुए बादल की घनघोर घटा के समान श्याम कान्ति से युक्त दीखता था, एवं पाँच प्रकार के फूलों से सुशोभित और मन को प्रसन्न करने वाला था, तथा सभी प्रकार से मनको आकृष्ट करता था। उस पुष्पाराम के समीप पिता-पितामह (दादा)-प्रपितामह आदि कुलपरम्परा से आया हुआ मुद्गरपाणि यक्ष का यक्षायतन था। जो पूर्णभद्र के समान पुराना दिव्य एवं सत्य था। उसमें मुद्गरपाणि यक्ष की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी। उस मुद्गरपाणि के हाथ में एक हजार पल परिणाम (माप) वाला लोहेका मुद्गर था ॥ सू० ३ ॥

ચઢેલા વાદલાની ઘનઘોર ઘટા જેવો શ્યામકાંતિ-યુક્ત દેખાતો હતો. વળી તે પાંચ પ્રકારના ફૂલોથી સુશોભિત અને મનને આનંદ આપે તેવો હતો, તથા દરેક રીતે મનને આકર્ષણ કરતો હતો. તે પુષ્પારામની પાસે પિતા-પિતામહ-પ્રપિતામહ આદિ કુલ-પરંપરાથી મળેલું મુદ્ગરપાણિ યક્ષનું યક્ષાયતન હતું. જે પૂર્ણભદ્રના સમાન પુરાણું દિવ્ય અને સત્ય હતું. તેમાં મુદ્ગરપાણિ યક્ષની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા કરેલી હતી, તે મુદ્ગરપાણિના હાથમાં એક હજાર પલ પરિમાણ (માપ) વાળું લોઢાનું મુદ્ગર હતું. (સૂ૦ ૩)

॥ मूलम् ॥

तए णं से अज्जुणए मालागारे बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणिजक्खस्स भत्ते यावि होत्था। कल्लाकल्लिं पच्छिपिडगाइं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ, करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाइ, गहित्ता जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणयं करेइ, करित्ता जाणुपायपडिए पणामं करेइ, करित्ता तओ पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पमाणे विहरइ ॥ सू० ४ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं से अज्जुणए मालागारे' ततः खलु सोऽर्जुनको मालाकारो 'बालप्पभिइं चेव' बालप्रभृत्येव=बाल्यावस्थामारभ्यैव, 'मोग्गरपाणिजक्खस्स भत्ते यावि होत्था' मुद्गरपाणियक्षस्य भक्तश्चाप्यभवत्, स च 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्यि=प्रतिदिनं 'पच्छिपिडगाइं' पच्छिपिटकान्=वेत्रविनिर्मितपिटकान्-'छावडी' इति प्रसिद्धान्, 'गेण्हइ' गृह्णाति, 'गेण्हित्ता' गृहीत्वा 'रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ' राजगृहान्नगरात् प्रतिनिष्क्राम्यति, 'पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुप्फारामे' प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव पुष्पारामः 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य, 'पुप्फुच्चयं' पुष्पोच्चयं=पुष्पराशिं 'करेइ' करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'अग्गाइं' अग्र्याणि=अग्रभवानि-विकसितानि 'वराइं' वराणि=श्रेष्ठानि, 'पुप्फाइं' पुष्पाणि=कुसुमानि,

---

वह अर्जुन माली बाल्यकाल से ही मुद्गरपाणि यक्ष का भक्त था और प्रतिदिन बेंत की बनी हुई छाबडी लेकर राजगृह नगर से बाहर निकल कर जहाँ वह पुष्पाराम था वहाँ जाता था और वहां फूलों को बीन २ कर एकट्ठा करता था, बाद में वह माली

તે અર્જુન માલી બાલ્યકાળથી જ મુદ્ગરપાણિ યક્ષનો ભક્ત હતો અને હમેશાં નેતરની બનાવેલી છાબડી લઈને રાજગૃહ નગરથી નીકળી જ્યાં તે પુષ્પારામ હતો ત્યાં જાતો અને ફૂલો વીણી વીણીને ભેગાં કરતો હતો. પછી તે માલી ખિલેલાં શ્રેષ્ઠ ફૂલોને

'गहाइ' गृह्णाति, 'गहित्ता' गृहीत्वा 'जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स' यत्रैव मुद्गरपाणेर्यक्षायतनं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य मुद्गरपाणेर्यक्षस्य, 'महरिहं पुप्फच्चणयं करेइ' महार्हं पुष्पार्चनकं करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'जाणुपायपडिए' जानुपादपतितः-भूमौ उभे जानुनी पादौ च पातयित्वा प्रणतः सन् 'पणामं करेइ' प्रणामं करोति। 'तओ पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पमाणे विहरइ' ततः पश्चाद् राजमार्गे वृत्तिं=जीविकां कल्पयन्=जीविकार्थं पुष्पविक्रयं कुर्वाणो विहरति ॥ सू० ४ ॥

॥ मूलम् ॥

तत्थ णं रायगिहे णयरे ललिया नामं गोट्ठी परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया जंकयसुकया यावि होत्था। तए णं रायगिहे नगरे अण्णया कयाइं पमोए घुट्ठे यावि होत्था। तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लं पभूयतरएहिं पुप्फेहिं कज्जमिति कट्टु पच्चूसकालसमयंसि बंधुमईए भारियाए सद्धिं पच्छिपिडयाइं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ ॥ सू० ५ ॥

॥ टीका ॥

'तत्थ णं' इत्यादि। 'तत्थ णं रायगिहे णयरे ललिया नामं' तत्र खलु राजगृहे नगरे ललिता नाम 'गोट्ठी' गोष्ठी=समानवयस्कमित्रमण्डली

फूले हुए श्रेष्ठ फूलों को लेकर जहाँ मुद्गरपाणि यक्ष का यक्षायतन था वहाँ आकर उस मुद्गरपाणि यक्ष की अच्छी तरह से अर्चना करता था और पृथ्वी पर दोनों जानु तथा पैर को नमाकर प्रणाम करता था। उसके बाद राजमार्ग के किनारे बैठकर आजीविका के लिये फूल बेचता था, और सुखपूर्वक अपना जीवन बिताता था ॥ सू० ४ ॥

લઈને જ્યાં મુદ્ગરપાણિ યક્ષનું યક્ષાયતન હતું ત્યાં જતો અને મુદ્ગરપાણિ યક્ષની સારી રીતે અર્ચના કરતો. પછી પૃથ્વી પર જાનુ તથા પગ બેઉને નીચા નમાવી પ્રણામ કરતો હતો. ત્યાર પછી રાજમાર્ગને કિનારે (બાજુએ) બેસીને આજીવિકા માટે ફૂલ વેચતો હતો તથા સુખપૂર્વક પોતાનું જીવન પસાર કરતો હતો (સૂ૦ ૪)

'परिवसइ' परिवसति, 'अड्ढा' आढ्या=समृद्धा 'जाव अपरिभूया' यावत् अपरिभूता=अन्यकृतपराभवरहिता, 'जंकयसुकया' यत्कृतसुकृता-यत्कृतं तदेव सुकृतं=श्रेष्ठं यस्याः सा यत्कृतसुकृता, राजाज्ञावशात्स्वविचारानुकूलाचरणपरायणेत्यर्थः, 'यावि' चापि 'होत्था' आसीत्। 'तए णं रायगिहे णयरे अण्णया कयाइं' ततः खलु राजगृहे नगरे अन्यदा कदाचित् 'पमोए घुट्ठे यावि होत्था' प्रमोदो घुष्टश्चापि अभवत्-उत्सवस्योद्घोषणा जातेत्यर्थः; 'तए णं से अज्जुणए मालागारे' ततः खलु सोऽर्जुनको मालाकारः 'कल्लं प्रभूयतरएहिं पुप्फेहिं कज्जमिति कट्टु' कल्ये प्रभूतरकैः पुष्पैः कार्यमिति कृत्वा=उत्सवार्थं प्रातरधिकपुष्पस्यावश्यकता भविष्यतीति मनसि कृत्वा, 'पच्चूसकालसमयंसि' प्रत्यूषकालसमये=प्रातःकाले 'बंधुमईए भारियाए सद्धिं' बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धं 'पच्छिपिडयाइं' पच्छिपिटकान्=वेत्रविनिर्मितपात्रविशेषान् 'गेण्हइ' गृह्णाति, 'गेण्हित्ता' गृहीत्वा 'सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ' स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, 'पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नयरं' प्रतिनिष्क्रम्य राजगृहं नगरं 'मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ' मध्यमध्येन निर्गच्छति, 'णिग्गच्छित्ता, जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ' निर्गत्य, यत्रैव पुष्पारामः तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता'

उस राजगृह नगरीमें ललिता नामकी एक गोष्ठी (मित्रमण्डली) रहती थी जो अत्यन्त समृद्ध एवं अन्यकृत पराभवों से रहित थी। राजा के अनुग्रह प्राप्त होने के कारण अपने मनमाने काम करने में वह मित्रमण्डली स्वच्छन्द थी। एक दिन राजगृह नगर में एक उत्सव की घोषणा हुई। जिससे उस माली ने विचार किया कि कल उत्सव में अधिक फूलों की आवश्यकता होगी। इसलिये वह सवेरे ही उठा और अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ बेंतकी बनी हुई छाबडी लेकर घर से निकला और राजगृह नगर के मध्यमार्ग से होता हुआ जहाँ उसका बगीचा था वहाँ गया और अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ फूलों को

તે રાજગૃહ નગરીમાં લલિતા નામની એક ગોષ્ઠી (મિત્રમંડળી) રહેતી હતી. જે ઘણીજ સમૃદ્ધ અને બીજાથી પરાભવરહિત હતી. તથા રાજાના અનુગ્રહ પ્રાપ્ત હોવાથી પોતાનાં મનનાં ધારેલાં કામ કરવામાં તે મિત્રમંડળી સ્વચ્છંદ હતી. એક દિવસ રાજગૃહ નગરમાં એક ઉત્સવની ઘોષણા થઈ. તેથી તે માલીએ વિચાર કર્યો કે કાલે ઉત્સવમાં અધિક ફૂલોની જરૂર પડશે માટે તે વહેલો ઉઠયો, અને

उपागत्य 'वंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं' बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धं पुष्पोच्चयम्=एकत्रस्थले पुष्पपुञ्जं 'करेइ' करोति ॥ सू० ५ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागया अभिरममाणा चिट्ठंति। तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ, करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ। तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बंधुमईए भारियाए सद्धिं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं इहं हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवओडयबंधणयं करेत्ता बंधुमईए भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाणं विहरित्तए त्ति कट्टु एयमट्ठं अन्नमन्नस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कवाडंतरेसु निलुक्कंति, निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति ॥ सू० ६ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स' ततः खलु तस्या ललिताया गोष्ठ्याः षड् गौष्ठिकाः पुरुषा यत्रैव मुद्गरपाणेर्यक्षस्य 'जक्खाययणे' यक्षायतनं 'तेणेव' तत्रैव=यक्षायतने 'उवागया' उपागताः=समागताः 'अभिरममाणा चिट्ठंति' अभिरमणमाणाः=क्रीडन्तस्तिष्ठन्ति। 'तए णं से अज्जुणए मालागारे' ततः खलु

चुनकर एकत्रित करने लगा ॥ सू० ५ ॥

उस समय पूर्वोक्त ललिता गोष्ठी के छ गौष्ठिक पुरुष मुद्गरपाणि के यक्षायतन में घूम रहे थे, अर्जुन माली भी बन्धुमती के

પોતાની પત્ની બન્ધુમતીની સાથે ફૂલો વીણીને એકઠાં કરવા લાગ્યો. (સૂ૦ ૫)

તે સમયે પૂર્વોકત લલિતા ગોષ્ઠીના છ માણસો મુદ્દગરપાણિના યક્ષાયતનમાં ફરતા

सोऽर्जुनको मालाकारो 'वंधुमईए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेइ' वन्धुमत्या भार्यया सार्धं पुष्पोच्चयं करोति, 'करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ' कृत्वा अग्र्याणि वराणि पुष्पाणि गृहीत्वा यत्रैव मुद्गरपाणेर्यक्षस्य यक्षायतनं तत्रैव उपागच्छति। 'तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं वंधुमईए भारियाए सद्धिं' ततः खलु ते षड् गौष्ठिकाः पुरुषा अर्जुनकं मालाकारं वन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम् 'एज्जमाणं' एजमानम्=आगच्छन्तं 'पासइ' पश्यति, 'पासित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी' दृष्ट्वा अन्योऽन्यम् एवमवदत्-'एस णं देवाणुप्पिया!' एष खलु हे देवानुप्रियाः! 'अज्जुणए मालागारे' अर्जुनको मालाकारो 'वंधुमईए भारियाए सद्धिं' वन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्, 'इहं' इह 'हव्वमागच्छइ' शीघ्रमागच्छति, 'तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अज्जुणयं मालागारं' तच्छ्रेयः खलु हे देवानुप्रियाः! अस्माकम् अर्जुनकं मालाकारम् 'अवओडयवंधणयं' अवकोटक-वन्धनकं=गले रज्जुं कृत्वा बाहू पृष्ठदेशे आनीय यद्वन्धनं तदवकोटकम् उच्यते, तादृशं वन्धनं यस्य स तथा तं 'करेत्ता' कृत्वा, अर्जुनकं मालाकारमवकोटक-वन्धनेन वद्ध्वा इत्यर्थः; 'वंधुमईए भारियाए सद्धिं' वन्धुमत्या भार्यया सार्द्धं 'विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाणं विहरित्तए' विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानानां विहर्तुम्=अर्जुनकं मालाकारमवकोटकवन्धनेनोद्बध्य तद्भार्यया सह

साथ पुष्पसंग्रह करके उत्तम २ फूलों को लेकर मुद्गरपाणि यक्ष की पूजा के लिये यक्षायतन की ओर जा रहा था। बन्धुमती भार्या के साथ आते हुए अर्जुनमाली को देखकर उन छहों गौष्ठिक पुरुषों ने परस्पर विचार किया-हे मित्रों! यह अर्जुन माली अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ यहाँ आरहा है, इसलिये हम लोगों को उचित है कि इस माली को औंधी-मुश्कियों से बलपूर्वक बांधकर इसकी भार्या बन्धुमती के साथ विपुल भोगों को भोगें। इस प्रकार

હતા. અર્જુન માલી પણ બન્ધુમતીની સાથે એકઠાં કરેલા પુષ્પોમાંથી સારામાં સારાં પુષ્પો લઇને મુદ્ગરપાણિ યક્ષની પૂજા માટે યક્ષાયતન તરફ જતો હતો. બન્ધુમતી ભાર્યા સાથે આવતા અર્જુનમાલીને જોઇને તે છએ ગૌષ્ઠિક પુરુષોએ પરસ્પર વિચાર કર્યો કે હે મિત્રો! આ અર્જુન માલી પોતાની પત્ની બન્ધુમતીની સાથે અહીં આવે છે. તેથી આપણા માટે ઉચિત છે કે આ માલીને અવળા હાથે બાંધી બલપૂર્વક તેની ભાર્યા બન્ધુમતીની સાથે વિપુલભોગો ભોગવીએ. આ પ્રકારે પરસ્પર વિચાર કરી

विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जानैरस्माभिर्विहर्तव्यम्-'त्ति कट्टु' इति कृत्वा 'एयमट्ठं अन्नमन्नस्स' एतमर्थम् अन्योऽन्यस्य 'पडिसुणेंति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य 'कवाडंतरेसु' कपाटान्तरेषु=यक्षायतनकपाटपृष्ठभाग इत्यर्थः; 'निलुक्कंति' निलीयन्ते=तिरोहिता भवन्ति; 'निचला' निश्चलाः= शरीरव्यापाररहिताः, 'निप्फंदा' निष्पन्दाः=स्पन्दनरहिताः=अवरुद्धश्वासोच्छ्वासाः; 'तुसिणीया' तूष्णीकाः=मौनाः 'पच्छण्णा' प्रच्छन्नाः=कपाटान्तर्हिताः 'चिट्ठंति' तिष्ठन्ति ॥ सू० ६ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए भारियाए सद्धिं जेणेव मोग्गरपाणिजक्खायणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, आलोए पणामं करेइ, करित्ता महरिहं पुप्फच्चणियं करेइ, करित्ता जाणुपायवडिए पणामं करेइ। तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा द्वद्वस्स कवाडंतरेहिंतो णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता, अज्जुणयं मालागारं गेण्हंति, गेण्हित्ता, अवओडगबंधणं करेंति, करित्ता बंधुमईए मालागारीए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। तए णं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्झत्थिए ५ समुप्पण्णे, एवं खलु अहं बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लिं जाव वित्तिं कप्पेमाणे विहरामि, तं जइ णं मोग्गरपाणिजक्खे इह संनिहिए होंते से णं किं ममं एवारूवं आवत्तिं पावेज्जमाणं पासंते? तं नत्थि णं मोग्गरपाणिजक्खे इह संनिहिए, सुव्वत्ते तं एस कट्ठे ॥ सू० ७ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमईए

परस्पर विचार करके वे किवाडों के पीछे छिप जाते हैं और निश्चल एवं सांस रोककर चुपचाप बैठ जाते हैं ॥ सू० ६ ॥

तेओ कमाड पछवाडे छुपाई जाय छे अने निश्चल थई श्वास रोकीने चुपचाप बेसी जाय छे. (सू० ६)

भारियाए सद्धिं' ततः खलु सोऽर्जुनको मालाकारो बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धं 'जेणेव मोग्गरपाणिजक्खायथणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आलोए' यत्रैव मुद्गरपाणियक्षायतनं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य आलोकयन्=मुद्गरपाणिं यक्षं पश्यन् 'पणामं करेइ' प्रणामं करोति, 'करित्ता महरिहं पुप्फचणियं करेइ' कृत्वा महार्हां पुष्पार्चनिकां करोति, 'करित्ता जाणुपायवडिए पणामं करेइ' कृत्वा जानुपादपतितः प्रणामं करोति। 'तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा' ततः खलु ते षड् गौष्ठिकाः पुरुषाः 'दवदवस्स' द्रुतद्रुतेन = अतित्वरया गत्या 'कवाडंतरेहिंतो' कपाटान्तरात्=कपाटपृष्ठप्रदेशाद् 'णिग्गच्छंति' निर्गच्छन्ति=निस्सरन्ति, 'णिग्गच्छित्ता' निर्गत्य 'अज्जुणयं मालागारं गेण्हंति' अर्जुनकं मालाकारं गृह्णन्ति, 'गेण्हित्ता अवओडयबंधणं करेंति' गृहीत्वा अवकोटकबन्धनं कुर्वन्ति, 'करित्ता बंधुमईए मालागारीए' कृत्वा बन्धुमत्या मालाकार्या=अर्जुनमालाकारस्त्रिया 'सद्धिं' सार्द्धं 'विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति' विपुलान् भोगभोगान् भुञ्जाना विहरन्ति। 'तए णं तस्स अज्जुणयस्स' ततः खलु तस्य अर्जुनकस्य 'मालागारस्स' मालाकारस्य' 'अयमज्झ-

---

उसके बाद वह अर्जुनमाली बन्धुमती भार्या के साथ जहाँ मुद्गरपाणियक्ष का यक्षायतन था वहाँ आया, आकर भक्तिभाव से प्रफुल्ल लोचनों (नेत्रों) के द्वारा मुद्गरपाणि यक्ष की तरफ देखता हुआ प्रणाम करने लगा और प्रणाम करके उचित पुष्पार्चना करने के बाद घुटनें और पैरों के बल नीचे झुक कर प्रणाम करने लगा। उसी समय उन छहों गौष्ठिक पुरुषोंने जल्दी २ किवाडों के पीछे से निकल कर अर्जुनमालीको पकड लिया और औंधी मुश्की बाँधकर उसे एक तरफ गुडका दिया। अनन्तर उसके सामने उसकी पत्नी बन्धुमती के साथ विविध भोगों को भोगते हुए वे विचरने

ત્યાર પછી તે અર્જુન માલી બન્ધુમતી ભાર્યાની સાથે જ્યાં મુદ્‌ગરપાણિ યક્ષનું યક્ષાયતન હતું ત્યાં આવીને ભક્તિભાવે પ્રફુલ્લ નેત્રવડે મુદ્‌ગરપાણિ યક્ષની તરફ જોતો થકો પ્રણામ કરવા લાગ્યો, અને પ્રણામ કરીને ઉચિત પુષ્પાર્ચના કરી લીધા પછી ઘુંટણ અને પગના બલ ઉપર નીચો નમી પ્રણામ કરવા લાગ્યો. તે સમયે તે છએ ગૌષ્ઠિક પુરુષો જલદી જલદી કમાડની પાછળથી નીકળીને અર્જુન માલીને પકડી લીધો અને અવળા હાથે બાંધીને તેને એક બાજુએ ગબડાવી દીધો પછી તેની સામે તેની પત્ની બન્ધુમતીની સાથે વિવિધ ભોગો ભોગવતા વિચરવા લાગ્યા આ જોઇને અર્જુન માલીના

त्थिए ५' अयमाध्यात्मिकः ५--प्रार्थितश्चिन्तितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः 'समुप्पण्णे' समुत्पन्नः, 'एवं खलु अहं बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ' एवं खलु अहं बालप्रभृत्येव मुद्गरपाणेर्भगवतः=इष्टरूपस्य, 'कल्लाकल्लिं जाव वित्तिं' कल्याकल्यि यावद् वृत्तिं 'कप्पेमाणे' कल्पयन्=प्रतिदिनं तत्सेवां विधाय जीविकार्थं राजमार्गे पुष्पविक्रयं कुर्वाणो विहरामि। 'तं जइ णं मोग्गरपाणिजक्खे इह' तद् यदि खलु मुद्गरपाणियक्ष इह 'संनिहिए होंते' संनिहितो भवेत्, 'से णं किं ममं एयारूवं आवत्तिं पावेज्जमाणं' स खलु किं माम् एतद्रूपामापत्तिं प्राप्नुवन्तं 'पासंते' पश्येत्, 'तं नत्थि णं मोग्गरपाणिजक्खे' तन्नास्ति खलु मुद्गरपाणियक्षः 'इह संनिहिए' इह संनिहितः=समीपस्थः, 'सुव्वत्तं तं एस कट्ठे' सुव्यक्तं तदेषः=तस्मादेष यक्षः काष्ठमेव न तु यक्षः ॥ सू० ७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से मोग्गरपाणिजक्खे अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरयं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तडतडस्स

लगे। यह देख कर अर्जुनमाली के हृदय में इस प्रकारका विचार उत्पन्न हुआ कि मैं बाल्यकाल से ही प्रत्येक दिन अपने इष्ट मुद्गरपाणि यक्षकी पूजा करता आ रहा हूँ। इनकी पूजा कर लेने के बाद ही आजीविका के लिये सडक के किनारे फूल बेचने के लिये जाता हूं और फूल बेचकर निर्वाह करता हूँ। आज मुझे ऐसा सन्देह होता है कि यदि मुद्गरपाणि यक्ष यहाँ होते तो क्या वे इस प्रकार की आपत्ति में पडे हुए मुझको देख सकते थे? इसलिये यही निश्चय होता है कि यहाँ मुद्गरपाणि यक्ष संनिहित नहीं हैं, अपितु यह काष्ठमात्र है ॥ सू० ७ ॥

હૃદયમાં એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે હું બાલ્યકાળથીજ હમેશાં મ્હારા ઇષ્ટ મુદ્ગરપાણિ યક્ષની પૂજા કરતો રહું છું. તેની પૂજા કરી લીધા પછી જ આજીવિકા માટે સડકની બાજુએ ફૂલ વેચવા માટે જાઉં છું અને ફૂલ વેચીને નિર્વાહ કરૂં છું. આજ મને એવો સંદેહ થાય છે કે જો મુદ્ગરપાણિ યક્ષ અહીં હોત તો શું આ પ્રકારની આપત્તિમાં પડેલો મને તે જોઇ શકત? માટે એ નિશ્ચય થાય છે કે અહીં મુદ્ગરપાણિ યક્ષ હાજર નથી, પરંતુ આ તો ફક્ત કાષ્ઠજ છે. (સૂ૦ ૭)

बंधाइं छिंदइ, तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं मोग्गरं गेण्हइ, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे पुरिसे घाएइ। तए णं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नयरस्स परिपेरंते णं कल्लाकल्लिं छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घाएमाणे विहरइ॥ सू० ८॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से मोग्गरपाणिजक्खे' ततः खलु स मुद्गरपाणियक्षः, 'अज्जुणयस्स मालागारस्स' अर्जुनकस्य मालाकारस्य, 'अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव वियाणेत्ता' इममेतद्रूपमाध्यात्मिकं यावद् विज्ञाय=अत्र मुद्गरपाणिर्यक्षो नास्ति, इदं तु काष्ठमेवेत्यादिरूपं पूर्वोक्तं मनसि गतं विचारं ज्ञात्वा, 'अज्जुणयस्य मालागारस्स सरीरयं' अर्जुनकस्य मालाकारस्य शरीरकम् 'अणुप्पविसइ' अनुप्रविशति=शरीरे प्रवेशं करोतीत्यर्थः; 'अणुप्पविसित्ता' अनुप्रविश्य 'तडतडस्स' 'तडतड' इति शब्देन 'बंधाइं' बन्धान् 'छिंदइ' छिनत्ति, अनन्तरं मुद्गरपाणियक्षाविष्टः सोऽर्जुनको मालाकारः 'तं पलसहस्सणिप्फण्णं' तं पलसहस्रनिष्पन्नं-पलानां सहस्रं पलसहस्रं, पलं च-आधुनिकरूप्यपञ्चकपरिमितं भवति, षोडशभिः पलैरेकः शेटको भवति, एवं पलसहस्रं सार्द्धद्विषष्टिशेटकपरिमितं भवति, तेन पलसहस्रेण निष्पन्नं=निर्मितम् 'अओमयं' अयोमयं=लोहमयं 'मोग्गरं गेण्हइ' मुद्गरं गृह्णाति, 'गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे पुरिसे घाएइ' गृहीत्वा तान् स्त्रीसप्तमान् पुरुषान् घातयति=

उस समय वह मुद्गरपाणि यक्ष अर्जुनमाली के मनमें अपने अस्तित्व के विषय में आये हुए सन्देह को जानकर उसके शरीर में प्रविष्ट हुआ और तडतड करके उसके बन्धनों को तोड दिया। अनन्तर मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट वह अर्जुनमाली एक हजार पलका लोहमय मुद्गर लेकर बन्धुमती-सहित उन छहों गौष्ठिक पुरुषों

તેજ સમયે તે મુદ્દગરપાણિ યક્ષે અર્જુન માલીના મનમાં પોતાના અસ્તિત્વ વિષે સંદેહ થયો છે એમ જાણીને તેના શરીરમાં પ્રવેશ કર્યો અને તડ-તડ કરીને તેનાં બંધનોને તોડી નાખ્યાં. પછી મુદ્દગરપાણિ યક્ષથી આવિષ્ટ તે અર્જુન માલીએ એક હજાર પલનો લોઢાનો મુદ્દગર લઈને બન્ધુમતી સાથે તે છએ ગૌષ્ઠિક પુરુષોને મારી નાખ્યા. આ

स्त्री सप्तसंख्यायाः पूरणी येषां तान् स्त्रीसप्तमान् पुरुषान्, अर्थात् षड् गौष्ठिकपुरुषान् एकां बन्धुमतीं स्त्रियं च 'घाएइ' घातयति। 'तए णं से अज्जुणए मालागारे' ततः खलु सोऽर्जुनको मालाकारो 'मोग्गरपाणिणा जक्खेणं' मुद्गरपाणिना यक्षेण 'अण्णाइट्ठे समाणे' अन्वाविष्टः=अधिष्ठितः सन्, 'रायगिहस्स णयरस्स' राजगृहस्य नगरस्य 'परिपेरंते णं' परिपर्यन्ते खलु=प्रान्तभागे बहिर्भागे इत्यर्थः; 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्यि=प्रतिदिनं 'छ इत्थिसत्तमे पुरिसे' षट् स्त्रीसप्तमान् पुरुषान्=षट् पुरुषान् एकां स्त्रियं च 'घाएमाणे विहरइ' घातयन् विहरति ॥ सू० ८ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव महापहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ ४–एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहे छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घाएमाणे विहरइ। तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ,सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे जाव घाएमाणे विहरइ। तं मा णं तुब्भे केइ तणस्स वा कट्ठस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सइ निगच्छउ, मा णं तस्स सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ–त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणं घोसेह, घोसित्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥ सू० ९ ॥

को मारडाला। इस प्रकार इन सातों को मारकर मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट वह अर्जुनमाली राजगृह नगर की बाहरी सीमा में प्रतिदिन छ पुरुष और एक स्त्री, इस प्रकार सात मनुष्यों को मारता हुआ विचरने लगा ॥ सू० ८ ॥

પ્રકારે એ સાતેયને મારીને મુદ્‌ગરપાણિ યક્ષથી આવિષ્ટ તે અર્જુનમાલી રાજગૃહ નગરની બહારની હદમાં હંમેશાં છ પુરુષ અને એક સ્ત્રી, એમ કુલ સાત મનુષ્યને મારતો વિચરવા લાગ્યો. (સૂ૦ ૮)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव महापहेसु' ततः खलु राजगृहे नगरे शृङ्गाटक यावद् महापथेषु=चतुष्पथादिषु सर्वत्र स्थलेषु–इति भावः; 'बहुजणो अण्णमंण्णस्स' बहुजनः अन्योऽन्यस्य 'एवमाइक्खइ४' एवमाख्याति४–'एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे' एवं खलु हे देवानुप्रियाः! अर्जुनको मालाकारः 'मोग्गरपाणिणा' मुद्गरपाणिना 'अण्णाइट्ठे' अन्वाविष्टः=अधिष्ठितः 'समाणे' सन् 'रायगिहे बहिया' राजगृहान्नगराद् बहिः 'छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घाएमाणे विहरइ' षट् स्त्रीसप्तमान् पुरुषान् घातयन् विहरति। 'तए णं से सेणिए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी' ततः खलु स श्रेणिको राजा अस्याः कथाया लब्धार्थः सन् कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्– 'एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे जाव घाएमाणे विहरइ' एवं खलु हे देवानुप्रियाः! अर्जुनको मालाकारः यावद् घातयन् विहरति, 'तं' तस्माद् 'मा णं' मा खलु 'तुब्भे' यूयं

उस समय राजगृह नगर के राजमार्ग आदि सभी स्थलों में बहुत से व्यक्ति एक दूसरों से इस प्रकार कहने लगे–हे देवानुप्रिय! अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट हो राजगृह नगर के आसपास में एक स्त्री छ पुरुष, इस प्रकार सात व्यक्तियों को प्रतिदिन मारता हुआ विचर रहा है। इस समाचार को राजा श्रेणिकने सुनकर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलवाया और इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय! अर्जुनमाली राजगृह नगर के बाहर सीमान्त प्रदेश में प्रतिदिन छ पुरुष एक स्त्री, इस प्रकार सात व्यक्तियों को मारता हुआ विचर रहा है। इसलिये तुम लोग मेरी आज्ञा को सारे नगर

તે સમયે રાજગૃહ નગરના રાજમાર્ગ આદિ બધે સ્થળે ઘણા લોકો એક બીજાને આ પ્રકારે કહેવા લાગ્યા–હે દેવાનુપ્રિય! અર્જુનમાલી મુદ્‌ગરપાણિ યક્ષથી આવિષ્ટ થઈને રાજગૃહ નગરની આસપાસમાં એક સ્ત્રી અને છ પુરુષ એમ સાત વ્યક્તિઓને હમેશાં મારતો વિચરી રહ્યો છે. આ સમાચારને રાજા શ્રેણિકે સાંભળી કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા, અને આ પ્રકારે કહ્યું–હે દેવાનુપ્રિય! અર્જુનમાલી રાજગૃહ નગરની બહાર સીમાંત પ્રદેશમાં હમેશાં છ પુરુષ અને એક સ્ત્રી એમ સાત વ્યક્તિઓને મારતો વિચરી રહ્યો છે, માટે તમે લોકો મારી આજ્ઞાને આખા નગરમાં આવી રીતે

'के वि' केऽपि 'तणस्स वा' तृणस्य वा 'कट्ठस्स वा' काष्ठस्य वा 'पाणियस्स वा' पानीयस्य वा 'पुप्फफलाणं वा' पुष्पफलानां वा 'अट्ठाए' अर्थाय 'सइ' सकृत्=एकवारमपि 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छन्तु, राजगृहनगराद्बहिः केनापि न गन्तव्यमित्यर्थः; अतः 'मा णं' मा खलु–न खलु 'तस्स सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु' तस्य शरीरस्य व्यापत्तिः=कष्टं भविष्यतीति कृत्वा 'दोच्चंपि' द्वितीयमपि 'तच्चंपि' तृतीयमपि वारं 'घोसणं घोसेह' घोषणां घोषयत, 'घोसित्ता' घोषयित्वा 'खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह' क्षिप्रमेव ममैतामाज्ञां प्रत्यर्पयत=घोषणानन्तरं शीघ्रमेव मां निवेदयत। 'तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति' ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः यावत्प्रत्यर्पयन्ति=घोषणां कृत्वा राज्ञे निवेदयन्तीत्यर्थः ॥ सू० ९ ॥

॥ मूलम् ॥

तत्थ णं रायगिहे णयरे सुदंसणे णामं सेट्ठी परिवसइ अड्ढे०। तए णं से सुदंसणे समणोवासए यावि होत्था।

में इस प्रकार घोषित करो कि यदि जीवित रहने की इच्छा तुम लोगों को हो तो, तुम लोग घास के लिये, काठ के लिये, पानी के लिये और फूलफल के लिये एक वार भी राजगृह नगर से बाहर मत निकलो! यदि तुम लोग वाहर नहीं निकलोगे तो तुम्हारे शरीर की किसी भी प्रकार से हानि नहीं होगी।

हे देवानुप्रिय! इस प्रकार की इस घोषणा को दुबारा–तिवारा घोषित करो, और वाद में मुझे सूचित करो। इस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर वे कौटुम्बिक पुरुष राजगृह नगर में घूम २ कर राजा की आज्ञा की घोषणा की और बाद में इसकी सूचना राजा को दी ॥ सू० ९ ॥

જાહેર ઘોષણા કરીને કહો કે જો તમારે જીવવાની ઇચ્છા હોય તો તમે લોકો ઘાસ માટે, લાકડાં માટે, પાણી માટે, અને ફળફૂલને માટે એકવાર પણ રાજગૃહ નગરની બહાર નીકળવું નહિ. જો તમે લોકો બહાર નહિ નીકળો તો તમારા શરીરની જરાય હાનિ થશે નહિ.

હે દેવાનુપ્રિય! આ પ્રકારની એ ઘોષણા બેવાર–ત્રણવાર જાહેર કરો અને પછી મને સૂચિત કરો. આ જાતની રાજાની આજ્ઞા મળવાથી તે કૌટુંબિક પુરુષોએ રાજગૃહ નગરમાં ફરતા ફરતા રાજાની આજ્ઞાની ઘોષણા કરી અને પછી તેની સૂચના (ખબર) રાજાને આપી. (સૂ૦ ૯)

अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे जाव विहरइ। तए णं रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव महापहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तए णं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने–एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी–एवं खलु अम्मताओ! समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि जाव पज्जुवासामि ॥ सू० १० ॥

'तत्थ णं' इत्यादि। 'तत्थ णं' तत्र खलु, 'रायगिहे णयरे' राजगृहे नगरे 'सुदंसणे णामं सेट्ठी' सुदर्शनो नाम श्रेष्ठी 'परिवसइ' परिवसति 'अड्ढे०' आढ्यः०= समृद्धिसम्पन्नः यावदपरिभूतः=पराभवरहितः। 'तए णं से सुदंसणे समणोवासए यावि होत्था' ततः खलु स सुदर्शनः श्रमणोपासकश्चाप्यभवत्। 'अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ' अभिगतजीवाजीवो यावद् विहरति=जीवाजीवसकलतत्त्वज्ञो भूत्वा विहरति। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'समणे भगवं महावीरे समोसढे जाव विहरइ' श्रमणो भगवान् महावीरः समवसृतो यावद् विहरति। 'तए णं' ततः=भगवदागमनान-

---

उस राजगृह नगर में सुदर्शन नामक सेठ रहते थे, वे पूर्ण ऋद्धिसंपन्न और अपराभूत थे, वे श्रमणोपासक श्रावक थे तथा जीवादि नौ तत्त्व और पचीस क्रिया के ज्ञाता थे। उस काल उस समय में श्रमण भगवान महावीर धर्मोपदेश करते हुए राजगृह नगरी के बाहर पधारे। उनके पधारने के समाचार जानकर राजगृह

એ રાજગૃહ નગરમાં સુદર્શન નામના શેઠ રહેતા હતા. તે પૂર્ણ ઋદ્ધિસંપન્ન અને અપરાભૂત હતા. તે શ્રમણોપાસક શ્રાવક હતા તથા જીવાદિ નવતત્ત્વ અને પચીશ ક્રિયાના જ્ઞાતા હતા તે કાળે તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ધર્મોપદેશ કરતા

न्तरं खलु 'रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव महापहेसु' राजगृहे नगरे शृङ्गाटक-यावन्महापथेषु 'वहुजणो' वहुजनः = वहुसंख्यको जनः, 'अन्नमन्नस्स' अन्योऽन्यस्मै 'एवमाइक्खइ' एवमाख्याति 'जाव किमंग! पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए' यावत् किमङ्ग! पुनर्विपुलस्य अर्थस्य ग्रहणेन=हे देवानुप्रियाः! यस्य नामगोत्रश्रवणेनापि महाफलं भवति, किं पुनरभिगमनादिना तदुपदिष्ट-धर्मसम्बन्धिविपुलस्यार्थस्य ग्रहणेन वेति।

'तए णं तस्स सुदंसणस्स वहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयं अज्झत्थिए जाव समुप्पण्णे–एवं णं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ' ततः खलु तस्य सुदर्शनस्य वहुजनस्य अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य अयमाध्यात्मिको यावत् समुत्पन्नः–एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीरो यावद् विहरति, 'तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि' तद् गच्छामि खलु श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दे नमस्यामि। 'एवं संपेहेइ'

नगर के राजमार्ग आदि स्थलों में बहुत से मनुष्य एक दूसरे को इस प्रकार कह रहे थे–हे देवानुप्रिय! भगवान् महावीर प्रभु इस नगर के बाहर पधारे हैं। जिनके नाम गोत्र श्रवण से भी महाफल होता है तो फिर उनके दर्शन करने से तथा उनसे प्ररूपित धर्म का विपुल अर्थ ग्रहण करने से जो फल होता है वह तो अवर्णनीय ही है। इस प्रकार बहुत से मनुष्यों के मुख से भगवान के आने का वृत्तान्त सुनकर सुदर्शन सेठ के हृदय में इस प्रकार आध्यात्मिक विचार यावत् मन में संकल्प उत्पन्न हुआ कि श्रमण भगवान महावीर इस राजगृह नगर के बाहर गुणशिलक चैत्य में पधारे हैं, इसलिये मुझे उचित है कि मैं भगवान के दर्शन के लिये जाऊँ।

થકા રાજગૃહ નગરીમાં પધાર્યા. તેમના પધારવાના સમાચાર જાણી રાજગૃહ નગરના રાજમાર્ગ આદિ સ્થળોમાં ઘણાં મનુષ્યો એક બીજાને આ પ્રકારે કહેતાં હતાં, હે દેવાનુપ્રિય! ભગવાન મહાવીર પ્રભુ આ નગરમાં પધાર્યા છે. તેમનાં નામ–ગોત્ર સાંભળવાથી પણ મહાફળ થાય છે તો પછી તેમનાં દર્શન કરવાથી તથા તેમનાથી ઉપદેશાતા ધર્મના વિપુળ અર્થને ગ્રહણ કરવાથી જે ફળ થાય છે તે તો અવર્ણનીયજ છે. આ પ્રકારે ઘણા મનુષ્યોના મુખથી ભગવાનના આવવાના વૃત્તાંત સાંભળીને સુદર્શન શેઠના હૃદયમાં એવો આધ્યાત્મિક વિચાર એટલે મનમાં સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર આ રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ચૈત્યમાં પધાર્યા છે. માટે મને ઉચિત છે કે

एवं संप्रेक्षते=विचारयति, 'संपेहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' संप्रेक्ष्य यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी' करतलपरिगृहीतं यावत् एवमवादीत्- 'एवं खलु अम्मताओ! समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि जाव पज्जुवासामि' एवं खलु अम्बातातौ = हे मातापितरौ! श्रमणो भगवान् महावीरो यावद् विहरति, तद् गच्छामि खलु श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दे नमस्यामि यावत् पर्युपासे ॥ सू० १० ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो एवं वयासी- एवं खलु पुत्ता! अज्जुणे मालागारे जाव घाएमाणे विहरइ, तं मा णं तुमं पुत्ता! समणं भगवं महावीरं वंदए णिग्गच्छाहि, मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ। तुमण्णं इह गए चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि णमंसाहि। तए णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी-किण्णं अहं अम्मयाओ! समणं भगवं महावीरं इहमागयं इह पत्तं इह समोसढं इह गए चेव वंदिस्सामि णमंसिस्सामि? तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि ॥ सू० ११ ॥

इस प्रकार विचार कर अपने मातापिता के समीप आये और हाथ जोडकर इस प्रकार कहा-हे मातापिता! श्रमण भगवान महावीर प्रभु राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में समवसृत हुए हैं, इस लिये मैं चाहता हूँ कि श्रमण भगवान महावीर के पास जाऊँ और उन्हें वन्दन नमस्कार कर यावत् सेवा करूँ। ॥ सू० १० ॥

હું ભગવાનનાં દર્શન માટે જાઉં. એ પ્રકારે વિચાર કરી તે પોતાનાં માતાપિતા પાસે આવ્યો અને હાથ જોડીને આમ કહ્યું - હે માતાપિતા! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં સમવસૃત થયા છે. માટે હું ચાહું છું કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસે જાઉં અને તેમને વંદન નમસ્કાર કરી સેવા કરૂં. (સૂ૦ ૧૦)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो एवं वयासी' ततः खलु तं सुदर्शनं श्रेष्ठिनम् अम्बापितरौ एवमवदताम्-'एवं खलु पुत्ता! अज्जुणे मालागारे जाव घाएमाणे विहरइ' एवं खलु हे पुत्र! अर्जुनो मालाकारो यावद् घातयन् विहरति, 'तं मा णं तुमं पुत्ता! समणं भगवं महावीरं वंदए णिग्गच्छाहि' तन्मा खलु त्वं हे पुत्र! श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दको निर्गच्छ=हे पुत्र! तस्मात् श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दितुं नगराद्बहिर्मा गच्छ, 'मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सइ' मा खलु तव शरीरकस्य व्यापत्तिर्भविष्यति। वहिरगमनेन तव शरीरस्य न कोऽपि व्याघातो भविष्यतीत्यर्थः। हे पुत्र! 'तुमण्णं इह गए चेव समणं भगवं महावीरं वंदाहि णमंसाहि' त्वं खलु इह गत एव श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दस्व नमस्य। 'तए णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी' ततः खलु सुदर्शनः श्रेष्ठी अम्बापितरौ एवमवदत्-'किण्णं अहं अम्मयाओ! समणं भगवं महावीरं' किं खलु अहमम्बातातौ! श्रमणं भगवन्तं महावीरम् 'इहमागयं' इहागतम् 'इह पत्तं' 'इह प्राप्तम् 'इह समोसढं' इह समवसृतम्

सुदर्शन के द्वारा इस प्रकार निवेदन करने पर मातापिता ने उनसे कहा-हे पुत्र! अर्जुनमाली नगर के बाहर मनुष्यों को मारता हुआ घूम रहा है, इस हेतु हे पुत्र! भगवान महावीर प्रभु को वन्दना करने मत जाओ। वहाँ जाने से न जाने तुम्हारे शरीर पर कोई आपत्ति हो! इसलिये तुम यहीं से भगवान महावीर प्रभु को वन्दन नमस्कार करो, वे सर्वज्ञ हैं, यहींसे की हुई तुम्हारी भक्ति को स्वीकार कर लेंगे। मातापिता के ऐसे वचन सुनकर वे सुदर्शन सेठ इस प्रकार बोले-हे मातापिता! भगवान महावीर प्रभु इस राजगृह नगर के बाहर जब पधारे हैं, जब यहां विराजित हैं और

સુદર્શન દ્વારા આ પ્રકારે નિવેદન સાંભળી માતાપિતાએ તેને કહ્યું - હે પુત્ર! અર્જુનમાલી નગરની બહાર મનુષ્યોને મારતો ફરે છે, માટે હે પુત્ર! ભગવાન મહાવીર પ્રભુને વંદના કરવા ન જાઓ. ત્યાં જવાથી ખબર નથી કે તમારા શરીરને કોઈ આપત્તિ થાય! માટે તમે અહીંથીજ ભગવાન મહાવીર પ્રભુને વંદન નમસ્કાર કરો. તેઓ સર્વજ્ઞ છે અહીંથી કરાયેલી તમારી ભકિતનો સ્વીકાર કરશે. માતાપિતનાં આવા વચન સાંભળી તે સુદર્શન શેઠે આ પ્રકારે કહ્યું - હે માતાપિતા! ભગવાન મહાવીર

'इह गए चेव' इह गत एव-गृहस्थित एव 'वंदिस्सामि णमंसिस्सामि' वन्दिष्ये नमस्यिष्यामि। हे मातापितरौ! भगवान् महावीर इह समागतोऽस्ति, भगवत्समीपमगत्वा इह स्थित एव भगवन्तं वन्दिष्ये नमस्यिष्यामि इति किं युक्तम्? न कदापीत्यर्थः; 'तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ!' तद् गच्छामि खलु अहम् हे अम्बातातौ! 'तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे' युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् समीपं गत्वैव 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरं 'वंदामि जाव पज्जुवासामि' वन्दे यावत्पर्युपासे ॥ सू० ११ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचायंति, बहूहिं आघवणाहिं जाव परूवित्तए। तए णं से अम्मापियरो ताहे अकामया चेव सुदंसणं सेट्ठिं एवं वयासी-अहासुहं देवाणुप्पिया!। तए णं से सुदंसणे सेट्ठी अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेण जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं २ पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते तं पलसहस्सणिप्फन्नं अयोमयं मोग्ग' उल्लालेमाणे २

समवसृत हैं तो भी मैं उनको यहीं से वन्दन-नमस्कार करूँ, उनके पास न जाऊँ, यह कैसे हो सकता है! मैं भगवान के दर्शन के लिये जाना चाहता हूँ। इसलिये आप मुझे आज्ञा दें कि मैं वहाँ जाकर भगवान को वन्दन-नमस्कार कर सेवा करूँ ॥ सू० ११ ॥

પ્રભુ આ રાજગૃહ નગરમાં જ્યારે અહીં પધારેલ છે, જ્યારે અહીં વિરાજેલ છે અને સમવસૃત છે તો પણ હું તેમને અહીંથી વંદન નમસ્કાર કરૂં, તેમની પાસે નહીં જાઉં આ કેમ બની શકે? હું ભગવાનનાં દર્શન માટે જવાની ઇચ્છા રાખું છું, માટે આપ મને આજ્ઞા આપો કે હું ત્યાં જઇને ભગવાનને વંદન નમસ્કાર કરી સેવા કરૂં (સૂ૦ ૧૧)

जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १२ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तं सुदंसणं सेट्ठिं' ततः खलु तं सुदर्शनं श्रेष्ठिनम् 'अम्मापियरो' अम्बापितरौ 'जाहे नो संचाएंति' यदा नो शक्नुतो 'वहूहिं आघणवाहिं' वहुभिराख्यापनाभिः=सामान्यतः कथनैः, 'जाव' यावत्–यावत्पदेन 'पण्णवणाहिं परूवणाहिं आघवित्तए पण्णवित्तए' इति सङ्ग्रहः, 'पण्णवणाहिं' प्रज्ञापनाभिः=विशेषतः कथनैः, 'परूवणाहिं' प्ररूपणाभिः=युक्तिप्रयुक्तिरूपाभिः, 'आघवित्तए' आख्यापयितुं=सामान्यतया 'वोधयितुं, 'पण्णवित्तए' प्रज्ञापयितुं=विशेपतो वोधयितुं, 'परूवित्तए' प्ररूपयितुं=युक्तिप्रयुक्तिभिः प्रतिवोधयितुम्। यदाऽनेकप्रकाराभिर्युक्तिप्रयुक्तिभिस्तं 'गृहस्थित एव वन्दस्व' इति स्वीकारयितुं न शक्नुतः स्मेति भावः। 'ताहे' तदा पुत्रस्य परमोत्कृष्टभगवद्दर्शनश्रद्धां विज्ञाय 'अकामया चेव' अकामेनैव= इच्छां विनैव 'सुदंसणं सेट्ठिं' सुदर्शनं श्रेष्ठिनम् 'एवं वयासी' एवमवदताम्–'अहासुहं देवाणुप्पिया!' यथासुखं देवानुप्रिय!=हे देवानुप्रिय! यथा तव सुखं भवेत्तथा कुरुष्व। भद्रं भवतु तव। 'तए णं से सुदंसणे सेट्ठी अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाए समाणे' ततः खलु स सुदर्शनः श्रेष्ठी अम्वापितृभ्यामभ्यनुज्ञातः सन् 'ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे' स्नातः शुद्धप्रावेश्यानि यावच्छरीरः=पवित्राणि वस्त्राणि परिदधानः सर्वालङ्कारविभूपितशरीरश्च, 'सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ' स्व-

उसके बाद सुदर्शन सेठ को मातापिता जब अनेक प्रकार की युक्तियों से नहीं समझा सके तो उन्होंने अनिच्छापूर्वक उनको आज्ञा दी–हे देवानुप्रिय! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो उसी प्रकार करो। इसके बाद सुदर्शन सेठ मातापिता से आज्ञा प्राप्त करके शुद्ध वस्त्र धारण किये, एवं अलंकारों से अलंकृत हो भगवान के दर्शनार्थ अपने घरसे निकले और पैदल ही राजगृह नगर के बीचो-

ત્યાર પછી સુદર્શન શેઠને માતાપિતા જ્યારે અનેક પ્રકારની યુક્તિઓથી સમજાવી ન શક્યા ત્યારે તેમણે અનિચ્છાપૂર્વક તેને આજ્ઞા આપી – હે દેવાનુપ્રિય! જેમ તમને સુખ થાય તેમ કરો. ત્યાર પછી સુદર્શન શેઠ માતાપિતાની આજ્ઞા મેળવી શુદ્ધ વસ્ત્ર પહેરી, અલંકારોથી વિભૂષિત થઇ ભગવાનનાં દર્શનાર્થે પોતાને ઘેરથી નીકળ્યા અને પગે ચાલીને રાજગૃહ નગરની વચ્ચોવચ્ચ થઇને મુદ્દગરપાણિ યક્ષના યક્ષાયતનની

काद् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, 'पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण' प्रतिनिष्क्रम्य पादविहारचारेण 'रायगिहं नगरं' राजगृहं नगरं=राजगृहस्य नगरस्य 'मज्झं-मज्झेणं' मध्यमध्येन 'णिगच्छइ' निर्गच्छति, 'णिग्गच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स' निर्गत्य मुद्गरपाणेर्यक्षस्य यक्षायतनस्य 'अदूर-सामंतेणं' अदूरसामन्तेन 'जेणेव गुणसिलए चेइए' यत्रैव गुणशिलकं चैत्यं 'जणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः 'तेणेव पहारेत्थ गमणाए' तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=मुद्गरपाणेर्यक्षस्य यक्षायतन-संनिहितेन पथा गुणशिलके उद्याने गन्तुं निश्चयमकरोत् । 'तए णं से मोग्ग-रपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं' ततः खलु स मुद्गरपाणिर्यक्षः सुदर्शनं श्रमणोपासकम् 'अदूरसामंतेणं' अदूरसामन्तेन=नातिदूरेण नातिनिकटेन च 'वीईवय-माणं २' व्यतिव्रजन्तम् २ 'पासइ' पश्यति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'आसुरुत्ते' आशुरुष्टः= क्रोधाग्निना प्रज्वलन् 'तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २' तं पलसहस्रनिष्पन्नम् अयोमयं मुद्गरमुल्लालयन् २=वारंवारमूर्ध्वाध उच्छालयन् २, 'जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए' यत्रैव सुदर्शनः श्रमणोपासकः तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुमुद्यतः ॥ सू० १२ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खु-भिए अचलिए असंभंते वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता, करयल एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थु णं समणस्स जाव संपाविउकामस्स, पुव्विं च णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइ-वाए पच्चक्खाए जावजीवाए, थूलए मुसावाए, थूलए अदि-

---

बीच से होते हुए मुद्गरपाणि यक्ष के यक्षायतन के समीप से जाने का उन्होंने निश्चय किया और उधर से ही जाने लगे। उन्हें जाते हुए देखकर वह मुद्गरपाणि यक्ष क्रोध से विस्फुरित होकर एक हजार पलके लोहमुद्गर को घुमाता हुआ सुदर्शन सेठ की ओर जानेका उपक्रम किया ॥ सू० १२ ॥

પાસે થઇને જવાનો તેમણે નિશ્ચય કર્યો અને ત્યાંથી જવા લાગ્યા. ત્યારે તેને જતા જોઇને તે મુદ્ગરપાણિ યક્ષ ક્રોધથી વિકરાળ બની એક હજાર પલનું લોઢાનું મુદ્ગર ફેરવતો સુદર્શન શેઠની તરફ જવા લાગ્યો. (સૂ૦ ૧૨)

न्नादाणे, सदारसंतोसे कए जावजीवाए, इच्छापरिमाणे कए जावजीवाए, तं इयाणिं पि णं तस्सेव अंतियं सव्वं पाणाइ-वायं पच्चक्खामि जावजीवाए, सव्वं मुसावायं सव्वं अदिन्ना-दाणं सव्वं मेहुणं सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवाए, सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावजीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावजीवाए, जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए, अह णं एत्तो उवसग्गाओ न मुच्चिस्सामि तओ मे तहा पच्चक्खाए चेव त्तिकट्टु सागारं पडिमं पडि-वज्जइ ॥ सू० १३ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गर-पाणिं जक्खं' ततः खलु स सुदर्शनः श्रमणोपासको मुद्गरपाणिं यक्षम्, 'एज्जमाणं' एजमानं=सन्मुखमागच्छन्तं 'पासइ' पश्यति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा, 'अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असंभंते' अभीतोऽत्र-स्तोऽनुद्विग्नोऽक्षुब्धोऽचलितः, किमपि भयजनकं वस्तु दृष्ट्वा जनः पूर्वं भीतो भवति, अनन्तरं त्रस्तः, तदनु उद्विग्नः, पश्चात् क्षुब्धः, पुनश्चलितो भवति; अयं सुदर्शनः कृतान्तसदृशं तं दृष्ट्वाऽपि भयादिरहित एव तस्थौ। एतादृशः स सुदर्शनः 'वत्थंतेणं' वस्त्रान्तेन=वस्त्राग्रभागेन 'भूमिं पमज्जइ' भूमिं प्रमार्जयति, 'पमज्जित्ता

उस समय वे सुदर्शन सेठ उस मुद्गरपाणि यक्ष को अपनी और उछलता हुआ आता देखकर भी भय, त्रास, उद्वेग और क्षोभ से दूर ही रहे। उनका हृदय तनिक भी विचलित और सम्भ्रान्त नहीं हुआ। उनने निर्भय होकर अपने वस्त्र के अंचल से भूमि को प्रमार्जित किया और मुखपर उत्तरासङ्ग धारण करके

ત્યાર પછી તે સુદર્શન શેઠ તે મુદ્દગરપાણિ યક્ષને પોતાની તરફ ઉછળતો આવતો જોઇને પણ ભય, ત્રાસ, ઉદ્વેગ અને ક્ષોભથી દૂરજ રહ્યા તેમનું હૃદય જરા પણ વિચલિત અને સંભ્રાન્ત ન થયું. તેમણે નિર્ભય થઇને પોતાના વસ્ત્રના છેડાથી ભૂમિને પ્રમાર્જિત કરી (વાળી) અને મુખ પર ઉત્તરાસંગ ધારણ કર્યું તથા પૂર્વદિશા તરફ મોઢું

करयल० एवं वयासी ' प्रमार्ज्य करतल० एवमवदत्=करतलपरिगृहीतं शिरआवर्त्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा वक्ष्यमाणप्रकारेणावदत् – 'नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं' नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत् मोक्षं संप्राप्तेभ्यः 'नमोत्थु णं समणस्स जाव संपाविउकामस्स' नमोऽस्तु खलु श्रमणाय यावत्संप्राप्तुकामाय, ये भगवन्तोऽर्हन्तो मोक्षं गतास्तेभ्यो नमोऽस्तु, यश्च भगवान् महावीरो मोक्षगामी तस्मै नमोऽस्तु–इत्यर्थः। 'पुव्विं च णं मए' पूर्वं च खलु मया 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'अंतिए' अन्तिके 'थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावजीवाए' स्थूलकः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवम्, एवं 'थूलए मुसावाए' स्थूलको मृषावादः प्रत्याख्यातः, 'थूलए अदिन्नादाणे' स्थूलकमदत्तादानम्–अदत्तस्यादानं=ग्रहणं–चौर्यं प्रत्याख्यातम्, 'सदारसंतोसे कए जावजीवाए' स्वदारसन्तोषः कृतो यावज्जीवम्, 'इच्छापरिणामे कए जावजीवाए' इच्छापरिमाणः कृतो यावज्जीवम्, परिग्रहविषये इच्छाया अवधिः कृत इति भावः। 'तं' तत्=तस्मात् 'इयाणिं पि णं' इदानीमपि खलु 'तस्सेव' तस्यैव भगवतः श्रीमहावीरस्य 'अंतियं' अन्तिकम्, भगवन्तं साक्षी-

---

पूर्वदिशा की ओर मुंह कर बैठ गये और वामजानु (दाहिने घुटने) को ऊँचा करके दोनों हाथ जोड कर मस्तक पर अंजलिपुट रख कर बोले–नमस्कार है उन अर्हन्तों को जो मोक्ष में पधार गये हैं। और वर्तमान अर्हन्तों को भी नमस्कार है जो मोक्ष में पधारने वाले हैं। पहले मैंने भगवान महावीर के समीप स्थूल प्राणातिपात पचखा था, एवं स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान, स्वदारसन्तोष और इच्छापरिमाण इन स्थूलपरिग्रहरूप अणुव्रतों को धारण किया था। अब इस समय उन्हीं प्रभुकी साक्षी से याव-ज्जीव सर्व प्राणातिपात का त्याग करता हूँ, इसी प्रकार मृषावाद,

---

રાખી બેસી ગયા, અને ડાબા પગને ઉંચો કરી બેઉ હાથ જોડી મસ્તક ઉપર અંજ-લિપુટ રાખી બોલ્યા – નમસ્કાર છે તે અર્હન્તોને કે જે મોક્ષમાં પધારી ગયા છે, અને વર્તમાન અર્હન્તોને પણ નમસ્કાર છે જે મોક્ષમાં પધારવાના છે. પહેલાં મેં ભગવાન મહાવીરની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું પચ્ચક્ખાણ લીધેલું, એટલે સ્થૂલ મૃષાવાદ, સ્થૂલ અદત્તાદાન, સ્વદારસંતોષ, અને ઇચ્છાપરિમાણ આ સ્થૂલપરિગ્રહરૂપ અણુવ્રતોને ધારણ કર્યાં હતાં. હવે આ સમયે તે પ્રભુની સાક્ષીથી યાવજ્જીવ સર્વપ્રાણાતિપાતનો ત્યાગ કરૂં છું. આ પ્રકારે મૃષાવાદ, અદત્તાદાન, મૈથુન, પરિગ્રહનો જીવનભર માટે પચ્ચક્ખાણ

कृत्येत्यर्थः; 'सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए' सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्, 'सव्वं मुसावायं सव्वं अदिन्नादाणं सव्वं मेहुणं सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए' सर्वं मृषावादं सर्वमदत्तादानं सर्वं मैथुनं सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्, तथा च 'सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए' सर्वं क्रोधं यावन्मिथ्यादर्शनशल्यं प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्, सर्वप्रकारकं क्रोधादिकं यावन्मिथ्यादर्शनरूपं शल्यं च जीवितावधि परित्यजामि, 'सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए' सर्वमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं चतुर्विधमपि आहारं प्रत्याख्यामि यावज्जीवम्। 'जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुंचिस्सामि' यदि खलु एतस्मादुपसर्गान्मोक्ष्यामि–अस्मान्मुद्गरपाणिरूपान्महोपसर्गाद् यदि मुक्तो भविष्यामि, 'तो मे' ततो मम एतत्सर्वं पूर्वप्रतिज्ञातं 'कप्पइ पारेत्तए' कल्पते पारयितुम्, 'अह णं एत्तो उवसग्गाओ न मुचिस्सामि' अथ खलु एतस्मादुपसर्गान्न मोक्ष्यामि=यदि च एतस्माद् महोपसर्गान्न मुक्तो भविष्यामि, 'तओ मे तहा पच्चक्खाए चेव' ततो मे तथा प्रत्याख्यातमेव सर्वं पूर्वोक्तम् 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि निश्चित्य, 'सागारं पडिमं' साकारां प्रतिमां=संस्तारकरूपां प्रतिज्ञां 'पडिवज्जइ' प्रतिपद्यते=स्वीकरोति ॥ सू० १३ ॥

अदत्तादान मैथुन, परिग्रह का जीवन भरके लिये पच्चक्खाण करता हूँ और क्रोध, मान, माया, लोभ यावत् मिथ्यादर्शनशल्य तक अठारह पापों का यावज्जीवन के लिये प्रत्याख्यान करता हूँ। इसके अतिरिक्त सर्वथा चार प्रकार के आहार का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ।

यदि मैं इस उपसर्ग से बचूँगा तो मेरे आगार है और यदि नहीं बच सका तो सभी प्रकार का प्रत्याख्यान मैंने कर ही लिया है सो जावजीव रहेगा ही। ऐसा मनमें निश्चय कर सुदर्शन सेठ सागारी अनशन धारण करके कायोत्सर्ग कर बैठ गये ॥ सू० १३ ॥

કરું છું, અને ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્ય સુધીનાં અઢાર પાપોના યાવજ્જીવન પ્રત્યાખ્યાન કરું છું. આ ઉપરાંત સર્વથા ચાર પ્રકારના આહારનો યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરું છું.

જો હું આ ઉપસર્ગથી બચું તો મારે આગાર છે, અને જો હું ન બચી શકું

॥ मूलम् ॥

तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे २ जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नो चेव णं संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए। तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासयं सवओ समंताओ परिघोलेमाणे २ जाहे नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स पुरओ सपक्खिं सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दिट्ठीए सुचिरं णिरिक्खइ, णिरिक्खित्ता, अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहाइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सणिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू० १४ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे तं पलसहस्सणिप्फन्नं' ततः खलु स मुद्गरपाणिर्यक्षः तं पलसहस्रनिष्पन्नम् 'अयोमयं मोग्गरं' अयोमयं मुद्गरम् 'उल्लालेमाणे'२ उल्लालयन् २=पुनः पुनरुच्छालयन् 'जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव' यत्रैव सुदर्शनः श्रमणोपासकस्तत्रैव 'उवागच्छइ' उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता नो चेव णं संचाएइ' उपागत्य नो चैव खलु शक्नोति 'सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए' सुदर्शनं श्रमणोपासकं तेजसा समभिपतितुं=समाक्रमितुम्। 'तए णं से मुग्गरपाणी

उसके बाद वह मुद्गरपाणि यक्ष एक हजार पलका भारी लोहे का मुद्गर घुमाता हुआ जहाँ सुदर्शन श्रमणोपासक थे वहां आया, आकर वह सुदर्शन सेठ को किसी भी प्रकार अपने परा-

---

તો સર્વ પ્રકારના પ્રત્યાખ્યાન મેં કરીજ લીધા છે તે જાવજીવ રહેશેજ. એમ મનમાં નિશ્ચય કરીને સુદર્શન શેઠ સાગારી અનશન ધારણ કરી કાયોત્સર્ગ કરીને બેસી ગયા (સૂ૦ ૧૩)

ત્યારપછી તે મુદ્ગરપાણિયક્ષ એક હજાર પલનો ભારી લોઢાનું મુદ્ગર ફેરવતો થકો જ્યાં સુદર્શન શ્રમણોપાસક હતા ત્યાં આવ્યો. આવીને તે સુદર્શન શેઠને કોઇપણ

जक्खे सुदंसणं समणोवासयं' ततः खलु स मुद्गरपाणिर्यक्षः सुदर्शनं श्रमणोपासकं 'सव्वओ' सर्वतः= सर्वप्रकारेण 'समंता' समन्तात्=सर्वदिक्षु 'परिघोलेमाणे २' परिघूर्णन् २ = परिभ्राम्यन् २, 'जाहे' यदा, 'नो चेव णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपडित्तए' नो चैव खलु शक्नोति सुदर्शनं श्रमणोपासकं तेजसा समभिपतितुम्, 'ताहे' तदा 'सुदंसणस्स समणोवासयस्स' सुदर्शनस्य श्रमणोपासकस्य 'पुरओ' पुरतः = अग्रे, 'सपक्खिं' सपक्षं-समानौ पक्षौ=वामदक्षिणपार्श्वौ यस्य आगमनस्य तत्सपक्षम् 'सपडिदिसिं' सप्रतिदिक्-समानाः प्रतिदिशो यस्य तत् सप्रतिदिक् - अभिमुखं यथा स्यात्तथा 'ठिच्चा' स्थित्वा 'सुदंसणं समणोवासयं' सुदर्शनं श्रमणोपासकम् 'अणिमिसाए दिट्ठीए' अनिमिषया दृष्ट्या, 'सुचिरं णिरिक्खइ' सुचिरं निरीक्षते = बहुकालपर्यन्तं पश्यति, 'णिरिक्खित्ता' निरीक्ष्य 'अज्जुणयस्स मालागारस्स' अर्जुनकस्य मालाकारस्य 'सरीरं' शरीरं 'विप्पजहाइ' विप्रजहाति = मुञ्चति, 'विप्पजहित्ता' विप्रहाय = मुक्त्वा, 'तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं' तं पलसहस्रनिष्पन्नमयोमयं मुद्गरं 'गहाय' गृहीत्वा 'जामेव दिसं पाउब्भूए' यस्या दिशः प्रादुर्भूतः 'तामेव दिसं पडिगए' तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० १४ ॥

क्रम से कष्ट नहीं पहुँचा सका। वह मुद्गरपाणि यक्ष सुदर्शन श्रमणोपासक के चारों ओर घूमता हुआ जब किसी भी प्रकार उनके ऊपर अपना बल नहीं चला सका तब वह यक्ष सुदर्शन श्रमणोपासक के आगे आकर खडा होगया और अनिमेष दृष्टि से उनकी ओर बहुत देर तक देखता रहा। इसके बाद वह यक्ष अर्जुनमाली के शरीर को छोडकर हजार पलका लोहमय मुद्गर को लेकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा में चला गया ॥ सू० १४ ॥

પ્રકારે પોતાના પરાક્રમથી કષ્ટ આપી શકયો નહિ. તે મુદ્ગરપાણિયક્ષ સુદર્શન શ્રમણોપાસકની ચારે બાજુ ફરતો થકો જ્યારે કોઈપણ પ્રકારે તેના ઉપર પોતાનું બળ ચલાવી ન શકયો ત્યારે તે યક્ષ સુદર્શન શ્રમણોપાસકની પાસે આવીને ઉભો રહી ગયો અને અનિમેષ દૃષ્ટિથી તેની સામે ઘણા વખત સુધી જોઈ રહ્યો. ત્યારપછી તે યક્ષ અર્જુનમાલીના શરીરને છોડી હજારપલના લોઢાના મુદ્ગરને લઈ જે દિશામાંથી તે આવ્યો હતો તે દિશામાં ચાલ્યો ગયો (સૂ૦ ૧૪)

॥ मूलम् ॥

तए णं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं विप्पमुक्के समाणे धसत्ति धरणितलंसि सव्वंगेहिं निवडिए। तए णं से सुदंसणे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ। तए णं से अज्जुणए मालागारे तओ मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे उट्ठेइ, उट्ठित्ता सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! के? कहिं वा संपत्थिया?। तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! अहं सुदंसणे णामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणसिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिउं संपत्थिए ॥ सू० १५ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अज्जुणए मालागारे' ततः खलु सोऽर्जुनको मालाकारः 'मोग्गरपाणिणा जक्खेणं' मुद्गरपाणिना यक्षेण 'विप्पमुक्के समाणे' विप्रमुक्तः सन्, 'धसत्ति' धस–इति शब्देन सह 'धरणितलंसि' धरणितले 'सव्वंगेहिं' सर्वाङ्गैः 'निवडिए' निपतितः। 'तए णं से सुदंसणे समणोवासए' ततः खलु स सुदर्शनः श्रमणोपासकः, 'णिरुवसग्गं' निरुपसर्गम् = उपसर्गाभावः 'इति कट्टु' इति कृत्वा = इति ज्ञात्वा, 'पडिमं पारेइ' प्रतिमां पारयति=पालयति। 'तए णं' ततः खलु 'से अज्जुणए मालागारे' सोऽर्जुनको मालाकारः 'तओ मुहुत्तंतरेण' ततः मुहूर्त्तान्तरेण = स्तोक-

---

अर्जुनमाली उस यक्ष के उपसर्ग से मुक्त होते ही 'धस्' इस प्रकार के शब्द के साथ पृथ्वी के ऊपर गिर पडा। उस समय सुदर्शन सेठने अपने को उपसर्गरहित जानकर अपनी प्रतिज्ञा को पाला और उस पडे हुए अर्जुनमाली को सचेष्ट करने के लिये प्रयत्नशील हुए, जिससे वह अर्जुनमाली कुछ समय के बाद स्वस्थ

અર્જુનમાલીએ યક્ષના ઉપસર્ગથી મુક્ત થતાં જ 'ધસ્' એવા અવાજની સાથે પૃથ્વી ઉપર પડી ગયો. તે સમયે સુદર્શન શેઠે પોતાને ઉપસર્ગ રહિત જાણીને પોતાની પ્રતિજ્ઞાને પાળી અને તે પડેલા અર્જુનમાલીને સચેષ્ટ કરવા માટે પ્રયત્નશીલ

कालेन 'आसत्थे समाणे' आस्वस्थः=सचेष्टः सन् 'उट्ठेइ' उत्तिष्ठति, 'उट्ठित्ता' उत्थाय 'सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी' सुदर्शनं श्रमणोपासकम् एवमवदत्–'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! के ?' यूयं खलु देवानुप्रियाः ! के ? 'कहिं वा संपत्थिया' क्व वा संप्रस्थिताः ?=कुत्र गन्तुमुद्यताः ? 'तए णं' ततः खलु 'से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी' स सुदर्शनः श्रमणोपासकः अर्जुनकं मालाकारम् एवमवदत्–'एवं खलु देवाणुप्पिया !' एवं खलु हे देवानुप्रिय ! 'अहं सुदंसणे णामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे' अहं सुदर्शनो नाम श्रमणोपासकोऽभिगतजीवाजीवः 'गुणसिलए चेइए' गुणशिलके चैत्ये 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरं 'वंदिउं' वन्दितुं 'संपट्ठिए' संप्रस्थितः=प्रचलितः ॥ सू० १५ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी–तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अहमवि तुमए सद्धिं समणं भगवं महावीरं वंदित्तए जाव पज्जुवासित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! । तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव

होकर खडा हुआ और सुदर्शन श्रमणोपासक से इस प्रकार बोला–हे देवानुप्रिय ! आप कौन हैं ? और कहाँ जा रहे हैं ? यह सुनकर सुदर्शन श्रमणोपासक ने अर्जुनमाली से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ! मैं जीवादि नौ तत्त्वों को जाननेवाला सुदर्शन–नामक श्रमणोपासक हूँ और मैं गुणशिलक उद्यान में पधारे हुए श्रमण भगवान महावीर को वन्दना–नमस्कार करने के लिये जा रहा हूँ ॥ सू० १५ ॥

થયા, જેથી તે અર્જુનમાલી થોડા સમય પછી સ્વસ્થ થઈને ઉભો થયો અને સુદર્શન શ્રમણોપાસકને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય ! આપ કોણ છો ? અને કયાં જઈ રહ્યા છો ? આ સાંભળી સુદર્શન શ્રમણોપાસકે અર્જુનમાલીને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય ! હું જીવાદિ નવ તત્ત્વોને જાણવાવાળો સુદર્શન નામે શ્રમણોપાસક છું, અને હું ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં પધારેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદના નમસ્કાર કરવા જઈ રહ્યો છું. (સૂ૦ ૧૫)

पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोवासयस्स अज्जुयणस्स मालागारस्स तीसे य० धम्मकहा। सुदंसणे पडिगए ॥ सू० १६ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी' ततः खलु सोऽर्जुनको मालाकारः सुदर्शनं श्रमणोपासकम् एवमवादीत् – 'तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया!' तदिच्छामि खलु हे देवानुप्रिय! 'अहमवि' अहमपि 'तुमए सद्धिं' त्वया सार्द्धं 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरं 'वंदित्तए जाव पज्जुवासित्तए' वन्दितुं यावत्पर्युपासितुं=सेवां कर्त्तुम्। ततः स सुदर्शनः प्राह – 'अहासुहं देवाणुप्पिया' यथासुखं देवानुप्रिय!= हे देवानुप्रिय! यथा ते सुखकरं भवेत् तथा कुरु। 'तए णं से सुदंसणे समणोवासए' ततः खलु स सुदर्शनः श्रमणोपासकः 'अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं' अर्जुनकेन मालाकारेण सार्द्धं 'जेणेव' यत्रैव 'गुणसिलए चेइए' गुणशिलकं चैत्यं 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं' उपागत्य अर्जुनकेन मालाकारेण सार्द्धं 'समणं भगवं महावीरं' श्रमणं भगवन्तं महावीरं 'तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासइ' त्रिकृत्वो यावत्पर्युपास्ते=त्रिकृत्व

यह सुनकर वह अर्जुनमाली, सुदर्शन श्रमणोपासक से इस प्रकार बोला–हे देवानुप्रिय! मैं भी तुम्हारे साथ श्रमण भगवान महावीर को वन्दन नमस्कार और उनकी सेवा करने के लिये आना चाहता हूँ। सुदर्शनने कहा–हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो। उसके बाद वह सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली के साथ गुणशिलक उद्यान में श्रमण भगवान महावीर के पास आये और तीन बार आदक्षिणप्रदक्षिणपूर्वक वन्दन–नमस्कार कर सेवा करने लगे। भगवान महावीर ने उन दोनों को धर्मकथा

આ સાંભળીને તે અર્જુનમાલીએ સુદર્શન શ્રમણોપાસકને આ પ્રકારે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય! હું પણ તમારી સાથે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદના-નમસ્કાર કરવા માટે આવવા ચાહું છું. સુદર્શને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય! જેમ તમને સુખ હોય તેમ કરો. ત્યારપછી તે સુદર્શન શ્રમણોપાસક અર્જુનમાલીની સાથે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસે આવ્યા, અને ત્રણ વાર આદક્ષિણપ્રદક્ષિણપૂર્વક વંદન-નમ-

आदक्षिणप्रदक्षिणं कृत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा भगवतः पर्युपासनां करोति। 'तए णं समणे भगवं महावीरे' ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरः 'सुदंसणस्स समणोवासयस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स य' सुदर्शनाय श्रमणोपासकाय अर्जुनकाय मालाकाराय च 'तीसे य० धम्मकहा' तस्यां च० धर्मकथा=तस्यां च महातिमहत्याम्=अतिविशालायां परिषदि भगवान् उभाभ्यामपि धर्मकथामवोचत्। धर्मकथाश्रवणानन्तरं 'सुदंसणे पडिगए' सुदर्शनः प्रतिगतः ॥सू० १६॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठ० एवं वयासी–सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि। अहासुहं देवाणुप्पिया!। तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ करित्ता जाव अणगारे जाए, जाव विहरइ। तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइए, तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं उग्गिण्हइ–कप्पइ मे जावजीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तएत्ति कट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता जावजीवाए जाव विहरइ ॥ सू० १७ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म' ततः खलु सोऽर्जुनको

सुनायी। धर्मकथा सुनकर सुदर्शन श्रमणोपासक अपने घर चले गये ॥ सू० १६ ॥

उसके बाद वह अर्जुनमाली श्रमण भगवान महावीर के

સ્કાર કરી સેવા કરવા લાગ્યા. ભગવાન મહાવીરે તે બન્નેને ધર્મકથા સંભળાવી. ધર્મકથા સાંભળીને સુદર્શન શ્રમણોપાસક પોતાને ઘેર ચાલ્યા ગયા. (સૂ૦ ૧૬)

ત્યારપછી તે અર્જુનમાલીએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની પાસે ધર્મકથા સાંભળીને

मालाकारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य 'हट्ठतुट्ठ०' हृष्टतुष्ट० = हृष्टतुष्टहृदय 'एवं वयासी' एवमवदत् – 'सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्टेमि' श्रद्दधामि खलु भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनं यावदभ्युत्तिष्ठामि, हे भदन्त ! भवत्प्रोक्तं नैर्ग्रन्थं प्रवचनं श्रुत्वा मम तत्र श्रद्धा समुत्पन्ना, अतो यावत् संयमं ग्रहीतुमुद्यतोऽस्मीत्यर्थः। भगवानाह–'अहासुहं देवाणुप्पिया !' यथासुखं देवानुप्रिय ! हे देवानुप्रिय ! यथा ते सुखावहं तथा कुरु। 'तए णं से अज्जुणए मालागारे' ततः खलु सोऽर्जुनको मालाकारः 'उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए अवक्कमइ' उत्तरपौरस्त्यं दिग्भागम् अपक्राम्यति = गच्छति, 'अवक्कमित्ता' अपक्रम्य 'सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ' स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, 'करित्ता जाव अणगारे जाए, जाव विहरइ' कृत्वा यावदनगारो जातः, यावद् विहरति। 'तए णं से अज्जुणए अणगारे' ततः खलु सोऽर्जुनकोऽनगारः 'जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइए' यस्मिन्नेव दिवसे मुण्डो यावत् प्रव्रजितः 'तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं' तस्मिन्नेव दिवसे श्रमणं भगवन्तं महावीरं 'वंदइ णमंसइ' वन्दते नमस्यति 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'इमं एयारूवं अभिग्गहं' इममेतद्रूपमभिग्रहम् 'उग्गिण्हइ' अवगृह्णाति = स्वीकरोति

निकट धर्मकथा सुनकर और उसे अच्छी तरह हृदयङ्गम कर हृष्ट–तुष्ट–हृदय से इस प्रकार बोले–हे भदन्त ! आपके द्वारा उपदिष्ट धर्मकथा को सुनकर मुझे उसमें श्रद्धा उत्पन्न होगयी है, इसलिये मैं आपके समीप संयम ग्रहण करना चाहता हूँ। भगवानने कहा–हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो। भगवान का ऐसा वचन सुनकर वह अर्जुनमाली ईशान कोण में गये और स्वयमेव पंचमुष्टिक लुञ्चन करके अनगार बन गये। वे अर्जुन अनगार जिसदिन प्रव्रजित हुए उसी दिन से श्रमण भगवान महावीर को वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार का उन्होंने अभिग्रह

અને તેને સારી રીતે હૃદયંગમ કરી હૃષ્ટતુષ્ટહૃદયથી આ પ્રકારે બોલ્યો–હે ભદન્ત ! આપ દ્વારા ઉપદિષ્ટ ધર્મકથા સાંભળીને મને તેમાં શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થઇ છે. માટે હું આપની પાસે સંયમ ગ્રહણ કરવા ચાહું છું. ભગવાને કહ્યું–હે દેવાનુપ્રિય ! જે પ્રકારે તમને સુખ થાય તેમ કરો. ભગવાનનાં એવાં વચન સાંભળી તે અર્જુનમાલી ઇશાન કોણમાં ગયા અને પોતાની મેળે પંચમુષ્ટિક લુંચન કરી અનગાર થઇ ગયા. તે અર્જુન અનગાર જે દિવસે પ્રવ્રજિત થયા તેજ દિવસથી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન નમસ્કાર

यत् 'कप्पइ मे' कल्पते मम 'जावजीवाए' यावज्जीवं 'छटुंछट्टेणं' षष्ठषष्ठेन 'अणिक्खित्तेन' अनिक्षिप्तेन=अन्तररहितेन 'तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए' तपःकर्मणा आत्मानं भावयतो विहर्तुम् 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा = इति मनसि कृत्वा 'अयमेयारूवं अभिग्गहं ओगिण्हइ' इममेतद्रूपमभिग्रहमवगृह्णाति, 'ओगिण्हित्ता जावजीवाए जाव विहरइ' अवगृह्य यावज्जीवं यावद् विहरति = जीवनपर्यन्तं प्रतिज्ञाक्रमेण विहरति ॥ सू० १७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमपोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी जाव अडइ। तए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे णयरे उच्च जाव अडमाणं बहवे इत्थीओ य पुरिसा य डहरा महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी–इमेणं मे पिया मारिए, इमेणं मे माया मारिया, भाया मारिए, भगिणी मारिया, भज्जा मारिया, पुत्ते मारिए, धूया मारिया, सुण्हा मारिया, इमेणं मे अण्णयरे सयणसंबंधिपरियणे मारिए त्ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पेगइया हीलंति, निंदंति, खिंसंति, गरिहंति, तज्जेंति, तालेंति ॥ सू० १८ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमपोरिसीए सज्झायं करेइ' ततः खलु सोऽर्जुनकोऽनगारः षष्ठक्षपणपारणके प्रथमपौरुष्यां स्वाध्यायं करोति, 'जहा गोयमसामी' यथा गौतमस्वामी =

लिया कि–मैं यावज्जीव अन्तररहित बेले २ पारणारूप तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करता हुआ विचरूँगा, ऐसा अभिग्रह लेकर विचरने लगे ॥ सू० १७ ॥

उसके बाद अर्जुन अनगारने बेले के पारणे के दिन प्रथम प्रहर में स्वाध्याय किया और गौतमस्वामी के समान गोचरी

करी आ प्रकारनुं तेमणे अभिग्रह लीधुं के हुं यावज्जीव अन्तररहित छट्ठ छट्ठ पारणां रूप तपस्याथी मारी आत्माने भावित करतो विचरीश. एम अभिग्रह लईने विचरवा लाग्या. (सू० १७)

त्यारपछी अर्जुन अनगारे छट्ठना पारणाने दिवसे पहेला पहोरमां स्वाध्याय कर्यो अने गौतम स्वामीनी पेठे गोचरी गया. राजगृह नगरना ऊच्च, नीच, मध्यम

गौतमस्वामिवत्सर्वां क्रियां करोतीत्यर्थः, 'जाव अडइ' यावदटति = स्वाध्यायानन्तरं गौतमस्वामिवद्भिक्षार्थं परिभ्रमति। 'तए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे णयरे' ततः खलु तमर्जुनकमनगारं राजगृहे नगरे 'उच्च जाव अडमाणं' उच्चयावदटन्तम् = उच्चनीचमध्यमकुलानि भिक्षार्थं परिभ्रमन्तं 'बहवे इत्थीओ य पुरिसा य' बहवः स्त्रियश्च, पुरुषाश्च 'डहरा य' दहराश्च-दहराः=बालाः, 'महल्ला य' महान्तश्च-महान्तः = वृद्धाः, 'जुवाणा य' युवानश्च 'एवं वयासी' एवमवदन्- 'इमेणं मे पिया मारिए' अनेन मम पिता मारितः, 'इमेणं मे माया मारिया' अनेन मम माता मारिता, 'भाया मारिए' भ्राता मारितः, 'भगिणी मारिया' भगिनी मारिता, 'भज्जा मारिया' भार्या मारिता, 'पुत्ते मारिए' पुत्रो मारितः, 'धूया मारिया' दुहिता मारिता, 'सुण्हा मारिया' स्नुषा मारिता, स्नुषा= पुत्रवधूः; 'इमेणं मे अण्णयरे सयणसंबंधिपरियणे मारिए' अनेन मेऽन्यतरः स्वजनसंबन्धिपरिजनो मारितः, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा 'अप्पेगइया अक्कोसंति' अप्येकके आक्रोशन्ति = कटुवचनैर्भर्त्सयन्ति, 'अप्पेगइया हीलंति निंदंति खिंसंति गरिहंति तज्जेंति तालेंति' अप्येकके हेलयन्ति निन्दन्ति खिंसन्ति गर्हन्ते तर्जयन्ति ताडयन्ति; हेलयन्ति = अनादरं कुर्वन्ति; निन्दन्ति = निन्दां कुर्वन्ति;

गये। राजगृह नगर के उच्च-नीच-मध्यम कुलों में गृह सामुदानिक भिक्षा के लिये फिरते हुए उन अर्जुन अनगार को देखा तो स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढे, और जवान सभी इस प्रकार कहने लगे-इसने मेरे पिता को मारा, इसने मेरी माता को मारा, इसने मेरे भाई को मारा, इसने मेरी बहिन को मारा, इसने मेरी पत्नी को मारा, इसने मेरे पुत्र को मारा, इसने मेरी पुत्री को मारा, इसने मेरी पुत्रवधू को मारा, इसने मेरे दूसरे स्वजन सम्बन्धी परिजनों को मार डाला। ऐसा कह कर कोई कटुवचनों से उनकी भर्त्सना (तिरस्कार) करने लगे, कोई अनादर करने लगे, कोई निन्दा करने

કુળોમાં ગૃહસામુદાનિક ભિક્ષા માટે ફરતા ફરતા તે અર્જુન અનગારને જોઇને સ્ત્રી, પુરુષ, બાળકો, વૃદ્ધો, તથા જુવાનો બધા એમ કહેવા લાગ્યા કે એણે મારા બાપને માર્યો, એણે મારી માતાને મારી, એણે મારા ભાઇને માર્યો, એણે મારી બહેનને મારી, એણે મારી પત્નીને મારી, એણે મારા પુત્રને માર્યો, એણે મારી પુત્રીને મારી, એણે મારી પુત્રવધૂને મારી, એણે મારા બીજા સ્વજન સંબંધી પરિજનોને મારી નાખ્યા. એવું કહી કોઇ કટુ વચનોથી તેની ભર્ત્સના (તિરસ્કાર) કરવા લાગ્યા, કોઈ

खिंसंति=दुर्वचनैः कृत्वा तस्मिन् क्रोधमावेशयितुं प्रयतन्ते, गर्हन्ते=दोषमाविष्कुर्वन्ति, तर्जयन्ति=तर्जनां कुर्वन्ति-तर्जनीप्रभृत्यङ्गुल्यादिभिर्भीतिमुत्पादयितुं प्रयतन्ते, ताडयन्ति=यष्ट्यादिना ताडनां कुर्वन्ति ॥ सू० १८ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अज्जुणए अणगारे तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आओसेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अप्पउस्समाणे सम्मं सहइ, सम्मं खमइ, सम्मं तितिक्खइ, सम्मं अहियासेइ, सम्मं सहमाणे खममाणे तितिक्खमाणे अहियासमाणे रायगिहे णयरे उच्चनीयमज्झिमकुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ, जइ पाणं लभइ तो भत्तं न लभइ। तए णं से अज्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसाई अपरितंतजोगी अडइ, अडित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए अमुच्छिए बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं आहारेइ ॥ सू० १९ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अज्जुणए अणगारे' ततः खलु

लगे, कोई उनको खिजाने की कोशिश करने लगे, कोई उनके दोषों का उद्घाटन करने लगे, कोई तर्जना करने लगे और कोई उन्हें लाठी ईंटे आदिसे मारने लगे ॥ सू० १८ ॥

उन बहुत सी स्त्रियों से, पुरुषों से, बच्चों से, वृद्धों से,

અનાદર કરવા લાગ્યા, કોઈ નિંદા કરવા લાગ્યા, કોઈ તેમને ખીજવવાની કોશિશ કરવા લાગ્યા, કોઈ તેમના દોષોનું ઉદ્ઘાટન કરવા લાગ્યા, કોઈ તર્જના કરવા લાગ્યા અને કોઈ લાકડી ઇંટ આદિથી મારવા લાગ્યા. (સૂ૦ ૧૮)

અનેક સ્ત્રીઓથી, પુરુષોથી, બાળકોથી, વૃદ્ધોથી અને યુવકોથી તિરસ્કૃત અને

सोऽर्जुनकोऽनगारः 'तेहिं बहूहिं' तैर्बहुभिः 'इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य' स्त्रीभिश्च पुरुषैश्च दहरैश्च महद्भिश्च युवभिश्च 'आओसेज्जमाणे जाव तालिज्जमाणे' आक्रुश्यमानो यावत् ताड्यमानः 'तेसिं मणसा वि' तेभ्यो मनसाऽपि 'अप्पउस्समाणे' अप्रद्विषन्=द्वेषभावमकुर्वन् 'सम्मं सहइ' सम्यक् सहते=मुखाद्यविकारकरणेन मर्षति, 'सम्मं खमइ' सम्यक् क्षमते–क्रोधाभावेन, 'सम्मं तितिक्खइ' सम्यक् तितिक्षते–अदीनभावेन, 'सम्मं अहियासेइ' सम्यक् अधिसहते=निर्जराभावनया शुद्धान्तःकरणेन सहते, इत्थं 'सम्मं सहमाणे खममाणे तितिक्खमाणे अहियासेमाणे' सम्यक् सहमानः क्षममाणः तितिक्षमाणः अधिसहमानः 'रायगिहे णयरे उच्चनीयमज्झिमकुलाइं' राजगृहे नगरे उच्चनीचमध्यमकुलानि 'अडमाणे' अटन्=भिक्षार्थं परिभ्रमन् 'जइ भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ' यदि भक्तं लभते तदा पानं न लभते, पानं=पानीयम्, 'जइ पाणं लभइ तो भत्तं ण लभइ' यदि पानं लभते तदा

और तरुणों से तिरस्कृत यावत् ताडित वे अर्जुन अनगार उन लोगों के ऊपर मन से भी द्वेष नहीं करते, परन्तु उनके दिये हुए आक्रोश आदि परिषहों को समभावसे सहन करने लगे ! अर्थात् वे उन परिषह उपसर्ग देनेवालों के प्रति जरा भी क्रोध नहीं करके क्षमाभाव को धारण कर एवं दीनभावसे रहित मध्यस्थ भावना में विचरने लगे। तथा निर्जरा की भावना से पवित्र अन्तःकरण होने के कारण सभी परीषहों को अनायास ही सहन करने लगे। इस प्रकार सभी प्रकार के परीषहों को सहन करते हुए उच्चनीच-मध्यम कुलों में गृहसामुदानिक भिक्षा के लिये विचरते हुए उन अर्जुन अनगार को यदि कहीं आहार मिलता था तो पानी नहीं,

---

તાડિત થતા તે અર્જુન અનગાર તે લોકોના ઉપર મનથી પણ દ્વેષ નહી કરતા, પરન્તુ તેઓના આપેલા આક્રોશ આદિ પરીષહોને સમભાવે સહન કરવા લાગ્યા, અર્થાત્ તે પરીષહ–ઉપસર્ગ દેવાવાળા પ્રત્યે જરા પણ ક્રોધ લાવ્યા વગર ક્ષમા–ભાવને ધારણ કરી અને દીનભાવથી રહિત મધ્યસ્થ ભાવનામાં વિચરવા લાગ્યા, તથા નિર્જરાની ભાવનાથી પવિત્ર અંતઃકરણ હોવાને કારણે બધા પરીષહોને અનાયાસેજ સહન કરવા લાગ્યા. આ પ્રકારે બધા પ્રકારના પરીષહોને સહન કરતા થકા ઉચ્ચ, નીચ, મધ્યમ કુલોમાં ગૃહસામુદાનિક ભિક્ષાને માટે વિચરતા તે અર્જુન અનગારને જો ક્યાંક આહાર મળતો તો પાણી ન મળતું, પાણી મળતું તો આહાર ન મળતો.

भक्तं न लभते। 'तए णं' ततः खलु=तदनन्तरम् एतादृशे घोरपरीषहे समुपस्थितेऽपि 'स अज्जुणए अणगारे' सोऽर्जुनकोऽनगारः 'अदीणे' अदीनः=दीनतामप्राप्तः, 'अविमणे' अविमनाः=वैमनस्यमप्राप्तः, 'अकलुसे' अकलुषः=कलुषभावरहितः 'अणाइले' अनाविलः=स्वच्छान्तःकरणः 'अविसाई' अविषादी=विषादरहितः, पुनः 'अपरितंतजोगी' अपरितान्तयोगी-अपरितान्तश्चासौ योगश्च अपरितान्तयोगः सोऽस्यास्तीति तथाभूतश्च सन् 'अडइ' अटति, 'अडित्ता' अटित्वा 'रायगिहाओ नयराओ पडिनिक्खमइ' राजगृहान्नगरात् प्रतिनिष्क्राम्यति, 'पडिनिक्खमित्ता जेणेव' प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव 'गुणसिलयं चेइयं' गुणशिलकं चैत्यं 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः 'जहा गोयमसामी जाव पडिदंसेइ' यथा गौतमस्वामी यावत् प्रतिदर्शयति=सोऽर्जुनकोऽनगारो राजगृहनगरान्निष्क्रम्य भगवत्समीपे समागत्य गौतमस्वामिवद् भगवन्तं भिक्षायां प्राप्तमशनादिकं प्रतिदर्शयति, 'पडिदंसित्ता' प्रतिदर्श्य 'समणेणं भगवया महावीरेणं' श्रमणेन भगवता महावीरेण 'अब्भणुण्णाए' अभ्यनुज्ञातः सन् 'अमुच्छिए' अमूर्च्छितः=आहारासक्तिरहितो 'बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं' बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना 'तमाहारं आहारेइ' तमाहारमाहारयति-यथा भुजङ्गो बिलस्य पार्श्वभागद्वयमसंस्पृशन् मध्यभागत एवात्मानं बिले प्रवेशयति तथा मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहितमाहारं कण्ठनालाभिमुखं प्रवेश्याऽऽहारयतीति भावः ॥ सू० १९ ॥

यदि पानी मिलता था तो आहार नहीं। इस प्रकार समय पर रूखा-सूखा जैसा-तैसा भी भोजन मिल जाता, उसे ही अदीन, अविमना, अकलुष, अक्षोभित, अविषादी, तनतनाट आदि विक्षेप भावों से बिलकुल असङ्ग रह कर ले लेते। फिर राजगृह से निकल कर वे गुणशिलक उद्यान में आते और लाये हुए भोजन को श्रद्धापूर्वक भगवान को दिखलाते। बाद में उनकी आज्ञा प्राप्त कर गृद्धि से रहित अर्थात् जिस प्रकार साँप बिलमें प्रवेश करता है उसी प्रकार

આ પ્રકારે સમય પર સૂકું લુખું જેવું તેવું પણ ભોજન મળી જતું તેને અદીન, અવિમના, અકલુષ, અક્ષોભિત, અવિષાદી, તનમનાટ આદિ વિક્ષેપ ભાવોથી તદ્દન અસંગ રહીને લઇ લેતા. પછી રાજગૃહથી નીકળી તેઓ ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવતા અને લઇ આવેલ ભોજનને શ્રદ્ધાપૂર્વક ભગવાનને દેખાડતા. બાદમાં તેમની આજ્ઞા મેળવી ગૃદ્ધિથી રહિત, એટલે જેમ સાપ દરમાં પ્રવેશ કરે તેમ રાગદ્વેષથી રહિત થઇને

॥ मूलम् ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं रायगिहाओ णयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिं जणवयविहारं विहरइ। तए णं से अज्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणइ, अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेइ, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव सिद्धे ॥ सू० २० ॥

॥ टीका ॥

'तए णं इत्यादि। 'तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं रायगिहाओ णयराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिं जणवयविहारं विहरइ' ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरः अन्यदा कदाचिद् राजगृहान्नगरात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरति। 'तए णं से अज्जुणए अणगारे' ततः खलु सोऽर्जुनकोऽनगारः 'तेणं तेन=प्रसिद्धेन 'ओरालेणं' उदारेण=प्रधानेन 'विउलेणं' विपुलेन=विशालेन, 'पयत्तेणं' प्रदत्तेन=भगवता दत्तेन 'पग्गहिएणं' प्रगृहीतेन=उत्कृष्टभावतः स्वीकृतेन 'महाणुभागेणं' महानुभागेन=महान् अनुभागः=प्रभावो यस्य तत्तेन, 'तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे'

रागद्वेष से रहित हो उस भोजन का सेवन कर संयम-निर्वाह करने में लगे रहते ॥ सू० १९ ॥

अनन्तर किसी समय भगवान महावीर राजगृह नगर से बाहर निकल कर जनपद में विचर रहे थे। उस अवधि में उन महाभागी अर्जुन अनगारने भगवान के द्वारा दिये हुए, तथा उत्कृष्ट भावना से स्वीकृत, अत्यन्त प्रभावशाली उस उदार विपुल तपःकर्म से आत्मा को भावित करते हुए छ मास तक चारित्र-

---

ते भोजननु सेवन करी संयम-निर्वाह करवामां तत्पर रहेता (सू० १९)

पछी कोई समये भगवान महावीर राजगृहनगरथी बहार नीकळी जनपदमां विचरी रह्या हता, ए अवधिमां ते महाभागी अर्जुन अनगारे ते उदार, विपुल, भगवाने आपेल तथा उत्कृष्ट भावनाथी स्वीकारेल अत्यंत प्रभावशाली तपथी

तपःकर्मणा आत्मानं भावयन्, 'बहुपुण्णे' बहुपूर्णान् 'छम्मासे' षण्मासान् 'सामण्णपरियागं' श्रामण्यपर्यायम्=चारित्रपर्यायम् 'पाउणइ' पालयति, तथा 'अद्धमासियाए' अर्धमासिक्या 'संलेहणाए' संलेखनया 'अप्पाणं झूसेइ' आत्मानं जोषयति, 'तीसं भत्ताइं' त्रिंशतं भक्तानि 'अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव सिद्धे' अनशनेन छिनत्ति, छित्त्वा यस्यार्थाय क्रियते यावत् सिद्धः= यदर्थं स्वीक्रियते नग्गभावः तमर्थमधिगम्य यावत् सिद्धिं प्राप्तः ॥ सू० २० ॥

॥ इति तृतीयमध्ययनम् ॥

॥ मूलम् ॥

उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, तत्थ णं सेणिए राया, कासवे णामं गाहावई पडिवसइ, जहा मंकाई, सोलस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ॥४॥ एवं खेमए वि गाहावई, णवरं कागंदी णयरी, सोलस वासा परियाओ, विपुले पव्वए सिद्धे ॥५॥ एवं धितिहरे वि गाहावई, कागंदी णयरी, सोलस वासा परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥६॥ एवं केलासे वि गाहावई, णवरं सागेए णयरे, बारस वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ॥७॥ एवं हरिचंदणे वि गाहावई, सागेए णयरे, बारस वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥८॥ एवं वारत्तए वि गाहावई, णवरं रायगिहे णयरे, बारस वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥९॥ एवं

पर्याय का पालन किया, तथा अर्धमासिकी संलेखना से आत्मा को सेवित कर तथा तीस भक्त को अनशन से छेदित कर अपने सभी घनघाती कर्मों को क्षय कर सिद्ध होगये ॥ सू० २० ॥

इति तृतीय अध्ययन संपूर्ण

આત્માને ભાવિત કરતાં, છ માસ સુધી ચારિત્રપર્યાયનું પાલન કર્યું, તથા અર્ધમાસિકી સંલેખનાથી આત્માને સેવિત કરી તથા ત્રીસ ભક્તોનું અનશનથી છેદિત કરીને પોતાનાં સર્વ ઘનઘાતી કર્મોનો નાશ કરીને સિદ્ધ થઇ ગયા (સૂ૦ ૨૦)

ઇતિ તૃતીય અધ્યયન સંપૂર્ણ.

सुदंसणे वि गाहावई, णवरं वाणियगामे णयरे, दुइपलासए चेइए, पंच वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ १० ॥ एवं पुण्णभद्दे वि गाहावई, वाणियगामे णयरे, पंच वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ ११ ॥ एवं सुमणभद्दे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, बहुवासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ १२ ॥ एवं सुपइट्ठे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, सत्तावीसं वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ १३ ॥ एवं मेहे वि गाहावई, रायगिहे णयरे, बहूइं वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ १४ ॥ ॥ सू० २१ ॥

॥ टीका ॥

'उक्खेवओ' इत्यादि । 'उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स' उत्क्षेपकश्चतुर्थस्य अध्ययनस्य, चतुर्थस्याध्ययनस्य प्रारम्भवाक्यं 'यदि खलु भदन्त !' इत्यादिरूपं पूर्ववदेव विज्ञेयम् । सुधर्मा स्वामी प्राह – 'एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे' एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्, तत्र 'गुणसिलए चेइए' गुणशिलकं चैत्यमासीत्, 'तत्थ णं सेणिए राया' तत्र खलु श्रेणिको राजा राज्यं करोति स्म । तत्रैव

अब चतुर्थ अध्ययन का प्रारम्भ इस प्रकार करते हैं–

जम्बूस्वामीने श्रीसुधर्मा से इस प्रकार पूछा–हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीरने छठे वर्ग के तृतीय अध्ययन में जो भाव बताया है वह मैंने सुना, अब उसके बाद चतुर्थ अध्ययन के भावों को सुनना चाहता हूँ ।

श्री सुधर्मास्वामीने कहा–हे जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था। उस नगर में गुणशिलक नामक चैत्य था। उस नगर के राजा श्रेणिक थे। उस नगर में काश्यप

હવે ચતુર્થ અધ્યયનનો પ્રારંભ આ પ્રકારે કરીએ છીએ–

જંબૂસ્વામીએ શ્રી સુધર્માસ્વામીને આ પ્રકારે પૂછયું–હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા વર્ગના તૃતીય અધ્યયનમાં જે ભાવ બતાવ્યા છે તે મેં સાંભળ્યા. હવે ત્યારપછી ચતુર્થ વર્ગના ભાવો સાંભળવા ઈચ્છું છું.

શ્રીસુધર્માસ્વામીએ કહ્યું – હે જંબૂ ! તે કાલ તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું. તે નગરમાં ગુણશિલક નામે ચૈત્ય હતો. તે નગરના રાજા શ્રેણિક હતા. તે નગરમાં

नगरे 'कासवे णामं गाहावई पडिवसइ' काश्यपो नाम गाथापतिः प्रतिवसति, 'जहा मंकाई' यथा मङ्काई:=मङ्काईनामा गाथापतिः, तथैव 'सोलस वासा' षोडश वर्षाणि 'परियाओ' पर्यायः=षोडशवर्षावधिश्चारित्रपर्यायः, अनन्तरं मासिक्या संलेखनया 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः=विपुलगिरौ सिद्धः ॥४॥ 'एवं खेमए वि गाहावई' एवं क्षेमकोऽपि गाथापतिः, 'णवरं' अयं विशेषः, 'कागंदी णयरी' काकन्दी नगरी, 'सोलस वासा परियाओ' षोडश वर्षाणि पर्यायः, यावद् विपुले सिद्धे' विपुले पर्वते सिद्धः ॥५॥ 'एवं धितिहरे वि गाहावई' एवं धृतिधरोऽपि गाथापतिः, 'कागंदी णयरी' काकन्दी नगरी, तस्य धृतिधरस्य गाथापतेर्निवासः काकन्द्यां नगर्यामासीत् । एषोऽपि भगवत्समीपे प्रव्रजितः, अस्य 'सोलस वासा परियाओ' षोडश वर्षाणि पर्यायः=षोडश-वर्षपर्यन्तं चारित्रपर्यायोऽभूत्, 'जाव विपुले सिद्धे' यावद् विपुले सिद्धः ॥६॥ 'एवं केलासे वि गाहावई' एवं कैलासोऽपि गाथापतिः, 'णवरं विशेषः,

नामक एक गाथापति रहते थे, उस गाथापतिने मङ्काई के समान भगवान महावीर प्रभु के समीप प्रव्रज्या ग्रहण की और बाद में सोलह वर्ष तक चारित्र पर्याय पाला और अन्त में वे विपुलगिरि पर सिद्ध होगये, इस प्रकार चौथा अध्ययन समाप्त हुआ ॥ ४ ॥ इसी प्रकार क्षेमक गाथापति का भी चरित्र जानना। ये काकन्दी नगरी के रहने वाले थे। इन्होंने सोलह वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला और विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ ५ ॥ इसी प्रकार धृतिधर गाथापति का भी वर्णन है। ये काकन्दी नगरी के रहने वाले थे। इनका भी चारित्रपर्याय सोलह वर्ष का था। अन्त में यह भी विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ ६ ॥ इसी प्रकार कैलास गाथापति

કાશ્યપ નામે એક ગાથાપતિ રહેતા હતા. તે ગાથાપતિએ મંકાઈની જેમ ભગવાન મહાવીર પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી, અને સોળ વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો, તથા અંતમાં વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા. આ પ્રકારે ચોથું અધ્યયન સમાપ્ત થયું (૪). એવીજ રીતે ક્ષેમક ગાથાપતિનું પણ ચરિત જાણવું, તે કાકંદી નગરીના રહેવાશી હતા. તેમણે સોળ વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો અને વિપુલ ગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા (૫). એજ પ્રકારે ધૃતિધર ગાથાપતિનું પણ વર્ણન છે. એ કાકંદી નગરીના રહેવાશી હતા, તેમનું પણ ચારિત્રપર્યાય સોળ વર્ષનો હતો. અંતમાં એ પણ વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા (૬). એજ પ્રકારે કૈલાસ

'सागेए णयरे' साकेतं नगरम्=अयोध्या नगरी, 'वारस वासाइं परियाओ' द्वादश वर्षाणि पर्यायः, 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः ॥ ७॥ 'एवं हरिचंदणे वि गाहावई' एवं हरिचन्दनोऽपि गाथापतिः, 'सागेए णयरे' साकेतं नगरम्, 'वारस वासा परियाओ' द्वादश वर्षाणि पर्यायः, 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः । 'एवं वारत्तए वि गाहावई' एवं वारत्तकोऽपि गाथापतिः, 'णवरं' विशेषः, 'रायगिहे णयरे' राजगृहं नगरम्, 'वारस वासा परियाओ' द्वादश वर्षाणि पर्यायः, 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः ॥ ९ ॥ 'एवं सुदंसणे वि गाहावई' एवं सुदर्शनोऽपि गाथापतिः, 'णवरं' विशेषः 'वाणियगामे णयरे' वाणिजकग्रामो नगरम्, 'दुइपलासए चेइए' दूतिपलाशकं चैत्यम्, 'पंच वासा परियाओ' पञ्च वर्षाणि पर्यायः 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः ॥ १० ॥ 'एवं

का भी चरित्र जानना। ये साकेत (अयोध्या) नगरी के रहने वाले थे। इन्होंने बारह वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला और विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ ७ ॥ हरिचन्दन गाथापति भी इसी प्रकार अनगार होगये, वे भी साकेत नगरी के रहने वाले थे, उन्होंने बारह वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला और अन्त में वे विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ ८ ॥

इसी प्रकार वारत्तक गाथापति का भी चरित्र है। ये राजगृह नगर के रहने वाले थे। बारह वर्ष तक श्रामण्यपर्याय पालकर ये विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ ९ ॥

सुदर्शन गाथापति भी भगवान के समीप प्रव्रजित हुए। ये वाणिज ग्राम के रहने वाले थे। उस गाम में दूतिपलाश नामक

ગાથાપતિનું પણ ચરિત જાણવું. એ સાકેત (અયોધ્યા) નગરીના રહેવાશી હતા. તેમણે બાર વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો અને વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા. (૭) હરિચંદન ગાથાપતિ પણ એજ રીતે અનગાર થઇ ગયા. તે પણ સાકેત નગરીના રહેવાશી હતા. તેમણે બાર વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો અને અંતમાં વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા. (૮)

આ પ્રકારે વારત્તક ગાથાપતિનું ચરિત્ર છે. તે રાજગૃહ નગરના રહેવાશી હતા. બાર વર્ષ સુધી શ્રામણ્યપર્યાય પાળ્યો અને વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા. (૯)

સુદર્શન ગાથાપતિ પણ ભગવાનની પાસે પ્રવ્રજિત થયા તે. વાણિજ ગામના રહેવાશી હતા. તેમણે પાંચ વર્ષ સુધી શ્રામણ્યપર્યાય પાળ્યો અને વિપુલગિરિ પર

पुण्णभद्दे वि गाहावई, वाणियगामे णयरे' एवं पूर्णभद्रोऽपि गाथापतिः, वाणिजग्रामो नगरम्, 'पंच वासा परियाओ' पञ्च वर्षाणि पर्यायः, 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः ॥ ११ ॥ 'एवं सुमणभद्दे, वि गाहावई' एवं सुमनोभद्रोऽपि गाथापतिः, 'सावत्थी णयरी' श्रावस्ती नगरी, 'बहुवासा परियाओ' बहुवर्षाणि पर्यायः 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः ॥ १२ ॥ 'एवं सुपइट्ठे वि गाहावई' एवं सुप्रतिष्ठोऽपि गाथापतिः 'सावत्थी णयरी' श्रावस्ती नगरी, 'सत्तावीसं वासाइं परियाओ' सप्तविंशतिं वर्षाणि पर्यायः, 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः ॥ १३ ॥ 'एवं मेहे वि गाहावई' एवं मेघोऽपि गाथापतिः, 'रायगिहे णयरे'

उद्यान था। इनका चारित्रपर्याय पाँच वर्ष का था और ये विपुल पर्वत पर सिद्ध हुये ॥ १० ॥

इसी प्रकार पूर्णभद्र गाथापति का भी चरित्र जानना चाहिये। ये वाणिजग्राम के रहने वाले थे। इन्होंने पाँच वर्ष तक श्रामण्य पर्याय पाला और विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ ११ ॥

सुमनभद्र गाथापति का चरित्र भी इसी प्रकार समझना चाहिये। ये श्रावस्ती नगरी के रहने वाले थे। इन्होंने बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्याय पाला और विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ १२ ॥

इसी प्रकार सुप्रतिष्ठ गाथापति का भी चरित्र जानना। ये श्रावस्ती नगरी के रहने वाले थे। इन्होंने सत्ताइस वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला अन्तमें विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ १३ ॥

इसी प्रकार मेघगाथापति का भी चरित्र जानना। ये राज-

સિદ્ધ થઇ ગયા. (૧૦)

એજ પ્રકારે પૂર્ણભદ્ર ગાથાપતિનું પણ ચરિત્ર જાણવું જોઇએ. તે વાણિજ ગામના રહેવાશી હતા. તેમણે પાંચ વર્ષ સુધી શ્રામણ્યપર્યાય પાળ્યો અને વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા. (૧૧)

સુમનભદ્ર ગાથાપતિનું ચરિત્ર પણ એજ પ્રકારનું સમજવું જોઇએ. તે શ્રાવસ્તી નગરીના રહેવાશી હતા. તેમણે બહુ વર્ષો સુધી શ્રામણ્યપર્યાય પાળ્યો અને વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા. (૧૨)

એજ પ્રકારે સુપ્રતિષ્ઠ ગાથાપતિનું ચરિત્ર જાણવું. તે શ્રાવસ્તી નગરીના રહેવાશી હતા. તેમણે સત્તાવીશ વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો. અંતમાં વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા (૧૩)

તેવીજ રીતે મેઘ ગાથાપતિનું પણ ચરિત્ર જાણવું. તે રાજગૃહ નગરના રહેવાશી

राजगृहं नगरम्, 'वहूइं वासाइं परियाओ' वहूनि वर्षाणि पर्यायः; 'विपुले सिद्धे' विपुले सिद्धः ॥ १४ ॥ सू० २१ ॥

॥ मूलम् ॥

उक्खेवओ पन्नरसमस्स अज्झयणस्स। एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं पोलासपुरे नयरे, सिरीवणे उज्जाणे, तत्थ णं पोलासपुरे णयरे विजए णामं राया होत्था। तस्स णं विजयस्स रन्नो सिरी नामं देवी होत्था, वण्णओ०। तस्स णं विजयस्स रन्नो पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अइमुत्ते नामं कुमारे होत्था, सुकुमाले। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव सिरीवणे विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जहा पण्णत्तीए जाव पोलासपुरे नयरे उच्च जाव अडइ ॥ सू० २२ ॥

॥ टीका ॥

'उक्खेवओ' इत्यादि। 'उक्खेवओ पन्नरसमस्स अज्झयणस्स' उत्क्षेपकः पञ्चदशस्याध्ययनस्य=पञ्चदशस्याध्ययनस्य-'यदि खलु भदन्त! इत्यादि रूपं प्रारम्भवाक्यं पूर्ववदेव विज्ञेयम्। जम्बूप्रश्नानन्तरं सुधर्मा स्वामी प्राह-'एवं

गृह नगर के रहने वाले थे। बहुत वर्षों का इन्होंने श्रामण्यपर्याय पाला और विपुलगिरि पर सिद्ध होगये ॥ १४ ॥ सू० २१ ॥

॥ चौदहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

श्री जम्बूस्वामीने श्री सुधर्मा स्वामी से पूछा-हे भदन्त! भगवान महावीर के द्वारा प्ररूपित चौदहवें अध्ययन का भाव मैंने आपके मुख से सुना अब उसके बाद पन्द्रहवें अध्ययन के

હતા. ઘણાં વર્ષો સુધી તેમણે શ્રામણ્યપર્યાય પાળ્યો અને વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઈ ગયા. (૧૪) (સૂ૦ ૨૧)

ચૌદમું અધ્યયન સમાપ્ત.

શ્રી જંબૂસ્વામીએ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછયું-હે ભદન્ત! ભગવાન મહાવીર દ્વારા પ્રરૂપિત ચૌદમા અધ્યયનનો ભાવ મેં આપના મુખથી સાંભળ્યો. હવે ત્યારપછી

खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं पोलासपुरे नयरे' एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये पोलासपुरं नगरम्; तत्र 'सिरीवणे उज्जाणे' श्रीवनमुद्यानम् आसीत्, 'तत्थ णं पोलासपुरे णयरे' तत्र खलु पोलासपुरे नगरे 'विजए णामं राया होत्था' विजयो नाम राजाऽऽसीत्। 'तस्स णं विजयस्य रन्नो सिरी नामं देवी होत्था' तस्य खलु विजयस्य राज्ञः श्रीर्नाम देवी आसीत्। 'वण्णओ०' वर्णकः=श्रियो देव्या वर्णनम् अन्यदेवीवद्विज्ञेयम्। 'तस्स णं विजयस्स रण्णो पुत्ते' तस्य खलु विजयस्य राज्ञः पुत्रः, 'सिरीए देवीए अत्तए' श्रियो देव्या आत्मजः 'अइमुत्ते नामं कुमारे होत्था' अतिमुक्तो नाम कुमार आसीत्, 'सुकुमाले' सुकुमारः=यो हि सुकुमारसर्वावयव आसीत्। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे' तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरो 'जाव सिरीवणे विहरइ' यावच्छ्रीवने विहरति। 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स' तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य

भाव कृपा करके सुनाइये। श्री सुधर्मा स्वामीने कहा–हे जम्बू ! उस काल उस समय में पोलासपुर नामक नगर था। उस नगर में श्रीवन नामक उद्यान था। उस पोलासपुर नगर में विजय नामक राजा थे। उस विजय राजा की रानी का नाम श्रीदेवी था। वह रानी प्रथम वर्णित महारानियों के समान शोभायुक्त थी। उन विजय राजा के पुत्र तथा श्रीदेवी रानी के आत्मज अतिमुक्तक (एवंता) नामक कुमार थे। जो अत्यन्त सुकुमार थे।

उसकाल उस समय में श्रमण भगवान महावीर श्रीवन उद्यान में पधारे। उस समय भगवान महावीर प्रभु के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति, भगवान को पूछकर व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती) के

પંદરમા અધ્યયનનો ભાવ કૃપા કરીને સંભળાવો. સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું–હે જંબૂ! તે કાલ તે સમયે પોલાસપુર નામનું નગર હતું. તે નગરમાં શ્રીવન નામનું ઉદ્યાન હતું. તે પોલાસપુર નગરમાં વિજય નામે રાજા હતા. તે વિજયરાજાની રાણીનું નામ શ્રીદેવી હતું. તે રાણી પ્રથમવર્ણિત મહારાણીઓને સમાન શોભાયુક્ત હતી. શ્રીદેવી રાણીના આત્મજ અતિમુક્તક (એવંતા) નામે કુમાર હતા, જે અત્યંત સુકુમાર હતા.

તે કાલ તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર શ્રીવન ઉદ્યાનમાં પધાર્યા. તે સમયે ભગવાન મહાવીર પ્રભુના જયેષ્ઠ શિષ્ય ઇંદ્રભૂતિ, ભગવાનને પૂછીને વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞપ્તિનાં

'जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई' ज्येष्ठोऽन्तेवासी इन्द्रभूतिः, 'जहा पण्णत्तीए' यथा प्रज्ञप्त्याम्=यथा व्याख्याप्रज्ञप्त्यां-भगवतीसूत्रे तथा 'जाव पोलासपुरे नयरे उच्च जाव अडइ' यावत् पोलासपुरे नगरे उच्च यावद् अटति=उच्चनीचमध्यमानि कुलानि भिक्षार्थं भ्रमति ॥ सू० २२ ॥

॥ मूलम् ॥

इमं च णं अइमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव विभूसिए बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमार-एहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे सयाओ गिहाओ पडि-निक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव उवागए, तेहिं बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरममाणे २ विहरइ। तए णं भगवं गोयमे पोलासपुरे णयरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ। तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए, भगवं गोयमं एवं वयासी-के णं भंते! तुब्भे! किं वा अडह? ॥ सू० २३ ॥

॥ टीका ॥

'इमं च णं' इत्यादि। 'इमं च णं' अस्मिंश्च खलु समये 'अइमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव विभूसिए' अतिमुक्तः कुमारः स्नातो यावद् विभूषितः 'बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि

वर्णन के अनुसार पोलासपुर नगर के उच्चनीच मध्यम कुलों में गृहसामुदानिक भिक्षा के लिये भ्रमण करने लगे ॥ २२ ॥

इसी समय अतिमुक्तक कुमार स्नान कर अलकारों से अलंकृत हो बहुत से लडके लडकियों और बालक बालिकाओं

(ભગવતી)નાં વર્ણન પ્રમાણે પોલાસપુર નગરના ઉચ્ચ નીચ મધ્યમ કુલોમાં ગૃહસામુદાનિક ભિક્ષાને માટે ભ્રમણ કરવા લાગ્યા. (સૂ૦ ૨૨)

એ સમયે અતિમુકતક કુમાર સ્નાન કરી અલંકારોથી વિભૂષિત થઈ ઘણા છોકરા-છોકરીઓ અને બાળક બાળકીઓ તથા કુમાર-કુમારિકાઓની સાથે પોતાના ઘરથી નિકળી

य कुमारएहि य कुमारियाहि य ' वहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारकैश्च कुमारिकाभिश्च; तत्र दारकैः=वहुकालिकैः; डिम्भैः= अल्पकालिकैः; कुमारैः=वहुतरकालिकैः ' सद्धिं ' सार्द्धं ' संपरिवुडे ' सम्परिवृतः, 'सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ ' स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, ' पडिणिक्खमित्ता जेणेव ' प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव ' इंदट्ठाणे ' इन्द्रस्थानं=वाल- क्रीडास्थानं ' तेणेव उवागए ' तत्रैव उपागतः, ' तेहिं वहूहिं दारएहिं य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारेहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरममाणे२ विहरइ ' तैर्वहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारकैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धं सम्परिवृतः अभिरममाणः २ विहरति । ' तए णं भगवं गोयमे पोलासपुरे णयरे उच्चनीय जाव अडमाणे ' ततः खलु भगवान् गौतमः पोलासपुरे नगरे उच्चनीच यावदटन्=पोलासपुरनगरे उच्च- नीचमध्यमकुलानि भिक्षार्थं परिभ्रमन् 'इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ' इन्द्रस्थानस्य अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजति, इन्द्रस्थानस्य=वालक्रीडास्थानस्य समीपस्थमार्गेण गच्छति । ' तए णं से अइमुत्ते कुमारे' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारो ' भगवं गोयमं ' भगवन्तं गौतमम् ' अदूरसामंतेणं ' अदूरसामन्ते= समीपमार्गेण 'वीईवयमाणं' व्यतिव्रजन्तं=गच्छन्तं 'पासइ' पश्यति 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागए भगवं गोयमं एवं वयासी' यत्रैव भगवान् गौतमः तत्रैव उपागतो भगवन्तं गौतममेवमवदत्–' के णं भंते! तुब्भे ?, किं वा अडह ?' के खलु हे भदन्त ! यूयम् ? किं वा अटथ=केन कारणेन भ्राम्यथ? ॥ सू० २३ ॥

एवं कुमार कुमारिकाओं के साथ अपने घरसे निकल कर जहां इन्द्रस्थान–बालकों के खेलने का स्थान था वहां आये और सभी के साथ खेलने लगे। उसी समय भगवान गौतम पोलासपुर नगर के उच्चनीच मध्यम कुलों में गृहसामुदानिक भिक्षा के लिये पर्यटन करते हुए उस कुमार के इन्द्रस्थान के समीप से निकले। उसके बाद वह अतिमुक्तक कुमार भगवान गौतम को आते हुए देखकर

જ્યાં ઇન્દ્રસ્થાન–બાળકોને રમવાના સ્થાન હતું ત્યાં આવ્યા અને સહુની સાથે રમવા લાગ્યા તેજ સમયમાં ભગવાન ગૌતમ પોલાસપુર નગરના ઉચ્ચનીચ મધ્યમ કુળોમાં ગૃહ સામુદાનિક ભિક્ષાને માટે પર્યટન કરતા કરતા, તે કુમારના ઇંદ્રસ્થાનની પાસેથી નીકળ્યા. ત્યારપછી તે અતિમુક્તક કુમાર ભગવાન ગૌતમને આવતા જોઇને તેમની પાસે ગયા અને

॥ मूलम् ॥

तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा णिग्गंथा इरियासमिया जाव बंभयारी उच्चनीय जाव अडामो । तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी–एह णं भंते ! तुब्भे जण्णं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमित्ति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए गेण्हइ, गेण्हित्ता, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए । तए णं सा सिरी देवी भगवं गोयमं एज्जमानं पासइ, पासित्ता हट्टतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया, भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता विउलेणं असणपाण-खाइमसाइमेणं पडिलाभेइ जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २४ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी' ततः खलु भगवान् गौतमः अतिमुक्तं कुमारमेवमवदत्–'अम्हे णं देवाणुप्पिया ! समणा णिग्गंथा इरियासमिया जाव बंभयारी' वयं खलु हे देवानुप्रिय ! श्रमणा निर्ग्रन्था ईर्यासमिता यावद् ब्रह्मचारिणः=वयम् ईर्या-समित्यादिपञ्चसमितियुक्ता यावद् गुप्तब्रह्मचारिणः 'उच्चनीय जाव अडामो'

उनके पास गये और इस प्रकार बोले–हे भदन्त ! आप कौन हैं ? और किस कारण से घूम रहे हैं ? ॥ सू० २३ ॥

अतिमुक्तक कुमार का इस प्रकार प्रश्न सुनकर भगवान गौतम अतिमुक्तक कुमार से इस प्रकार बोले–हे देवानुप्रिय ! हम श्रमण निर्ग्रन्थ हैं, हम लोग ईर्यासमिति आदि पाँच समितियों से युक्त यावद् गुप्तब्रह्मचारी होते हैं । तथा हमलोग उच्चनीच मध्यम

આ પ્રકારે બોલ્યા–હે ભદન્ત ! આપ કોણ છો ? અને શું કારણથી ફરી રહ્યા છો ? (સૂ૦ ૨૩)

અતિમુક્તક કુમારનો આ જાતનો પ્રશ્ન સાંભળી ભગવાન ગૌતમે અતિમુક્તક કુમારને આ પ્રમાણે કહ્યું–હે દેવાનુપ્રિય ! હું શ્રમણ નિર્ગ્રન્થ છું. અમે લોકો ઈર્યાદિ પાંચ સમિતિઓથી યુક્ત એવા ગુપ્તબ્રહ્મચારી છીએ તથા અમે ગોચરીને માટે ઉચ્ચ

उच्चनीच यावदटामः=भिक्षार्थमुच्चनीचमध्यमकुलेषु परिभ्रमामः। 'तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी' ततः खलु अतिमुक्तः कुमारो भगवन्तं गौतममेवमवादीत्-'एह णं भंते!' एत खलु भदन्त! = आगच्छत खलु भदन्त! 'तुब्भे' यूयम् 'जण्णं' यत्खलु 'अहं तुब्भं भिक्खं' अहम् तुभ्यं भिक्षां 'दवावेमि' दापयामि, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा 'भगवं गोयमं अंगुलीए' भगवन्तं गौतमम् अङ्गुल्यां=स्वहस्तेन गौतमस्याङ्गुलिं 'गेण्हइ' गृह्णाति, 'गेण्हित्ता' गृहीत्वा 'जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए' यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागतः। 'तए णं सा सिरी देवी' ततः खलु सा श्रीदेवी = अतिमुक्तमाता 'भगवं गोयमं एज्जमानं' भगवन्तं गौतममेजमानम्=आगच्छन्तं 'पासइ' पश्यति, 'पासित्ता' दृष्ट्वा 'हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ' हृष्टतुष्ट यावत् आसनादभ्युत्तिष्ठति, 'अब्भुट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव' अभ्युत्थाय यत्रैव भगवान् गौतमः तत्रैव 'उवागया' उपागता 'भगवं गोयमं' भगवन्तं गौतमं 'तिक्खुत्तो' त्रिकृत्वः = वारत्रयम् 'आयाहिणपयाहिणं करेइ' आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, 'करित्ता वंदइ णमंसइ' कृत्वा वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ' विपुलेन अशन-पान-खाद्य-स्वाद्येन प्रतिलम्भयति=प्रचुराशन-पान-खाद्य-स्वाद्यानि भगवते गौतमस्वामिने ददाति 'जाव पडिविसज्जेइ' यावत् प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २४ ॥

कुलों में गोचरी के लिये जाते हैं। यह सुनकर अतिमुक्तक कुमारने भगवान गौतम से इस प्रकार कहा-हे भदन्त! आप मेरे साथ पधारें। मैं आपको भिक्षा दिलाता हूँ। ऐसा कह कर गौतम स्वामी की अंगुली पकड ली और उन्हें अपने महल में ले गये। उन्हें आते देखकर श्रीदेवी रानी अत्यन्त हृष्टतुष्ट हो आसन से उठी, उठ कर जहाँ भगवान गौतम थे वहाँ आयी और भगवान गौतम को तीनबार विधिसहित वन्दन-नमस्कार किया। और फिर उच्चभाव से विपुल अशनपान खाद्यस्वाद्य चारों ही प्रकार का

નીચ મધ્યમ કુલોમાં જઈએ છીએ. આ સાંભળીને અતિમુક્તક કુમારે ભગવાન ગૌતમને આમ કહ્યું-હે ભદન્ત! આપ મારી સાથે પધારો. હું આપને ભિક્ષા અપાવું છું. એમ કહી ગૌતમસ્વામીની આંગળી પકડી લીધી અને તેમને પોતાના મહેલમાં લઈ ગયા. તેમને આવતા જોઈને શ્રીદેવી અત્યંત હૃષ્ટતુષ્ટ થઈ આસનથી ઉઠીને જ્યાં ભગવાન ગૌતમ હતા ત્યાં આવ્યાં. અને ભગવાન ગૌતમને ત્રણવાર વિધિસહિત વંદન નમસ્કાર કર્યા. ત્યાર પછી ઉચ્ચ ભાવથી વિપુલ અશનપાન ખાદ્ય સ્વાદ્ય ચારેય પ્રકારના આહાર તેમને વહોરાવ્યા,

॥ मूलम् ॥

तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी–कहिं णं भंते! तुब्भे परिवसह? तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए भगवं महावीरे आइगरे जाव संपाविउकामे, इहेव पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिग्गहं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तत्थ णं अम्हे परिवसामो। तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी–गच्छामि णं भंते! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदए। अहासुहं देवाणुप्पिया! ॥ सू० २५ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारो भगवन्तं गौतममेवमवदत्–'कहिं णं भंते! तुब्भे परिवसह' क्व खलु भदन्त!=कस्मिन् स्थाने हे भगवन्! यूयं परिवसथ? 'तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी' ततः खलु भगवान् गौतमोऽतिमुक्तं कुमारमेवमवदत्–'एवं खलु देवाणुप्पिया!' एवं खलु हे देवानुप्रिय! 'मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए भगवं महावीरे आइगरे जाव संपाविउकामे' मम धर्माचार्यो धर्मोपदेशको भगवान् महावीर आदिकरो

आहार उनको बहराया तथा विसर्जित किया, अर्थात् भवनद्वारतक श्रीदेवी रानी पहुँचाने गई ॥ सू० २४ ॥

उसके बाद वह अतिमुक्तक कुमार भगवान गौतम से इस प्रकार बोले–हे भदन्त! आप कहाँ रहते हैं! गौतम स्वामी ने उनसे कहा–हे देवानुप्रिय! मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक धर्म के

અને વિસર્જન કર્યું, અર્થાત્ ભવનદ્વાર સુધી શ્રીદેવી રાણી તેમને પહુંચાડવા ગયાં (સૂ૦ ૨૪)

ત્યારપછી તે અતિમુક્તક કુમારે ભગવાન ગૌતમને આ પ્રકારે કહ્યું–હે ભદન્ત! આપ ક્યાં રહો છો? ગૌતમ સ્વામીએ તેને કહ્યું–હે દેવાનુપ્રિય! મારા ધર્માચાર્ય ધર્મોપદેશક ધર્મના આદિકર મોક્ષગામી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ આ પોલાસપુર નગરની

यावत् संप्राप्तुकामः, यो हि 'इहेव पोलासपुरस्स णयरस्स बहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिग्गहं उग्गहं' इहैव पोलासपुराद् नगराद् बहिः श्रीवने उद्याने यथाप्रतिग्रहम्=यथाकल्पम् अवग्रहम्=वसतिवासार्थं वनपालस्याज्ञाम् 'उग्गिण्हित्ता' अवगृह्य=स्वीकृत्य 'संजमेणं जाव अप्पाणं भावेमाणे' संयमेन यावदात्मानं भावयन् 'विहरइ' विहरति । 'तत्थ णं अम्हे परिवसामो' तत्र खलु वयं परिवसामः, भगवत्समीपे वयं निवसाम इति भावः । 'तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी-गच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदए' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारो भगवन्तं गौतममेवमवदत्-गच्छामि खलु भदन्त ! अहम् युष्माभिः सार्द्धं श्रमणं भगवन्तं महावीरं पादवन्दकः=हे भदन्त ! भवद्भिः सह गत्वा श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य चरणवन्दको भवितुमहमिच्छामि । गौतमस्वामी प्राह- 'अहासुहं देवाणुप्पिया !' यथासुखं हे देवानुप्रिय ! इति ॥ सू० २५ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवया गोयमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ जाव पज्जुवासइ। तए णं भगवं गोयमे

आदिकर यावत् मोक्षगामी भगवान महावीर प्रभु इस पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन उद्यान में यथाकल्प अवग्रह लेकर विराजते हुए तप संयम से आत्मा को भावित करते हुए विचर रहे हैं, हम वहीं पर रहते हैं। उसके बाद अतिमुक्तक कुमारने भगवान गौतम से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! मैं भी आपके साथ भगवान के दर्शन के लिये चलूँ। भगवान गौतमने कहा-हे देवानुप्रिय ! जैसा सुख हो वैसा करो, परन्तु धर्मकार्य में प्रमाद मत करो ॥ सू० २५ ॥

આદિકર શ્રીવન ઉદ્યાનમાં યથાકલ્પ અવગ્રહ લઈને બિરાજે છે અને તપસંયમથી આત્માને ભાવિત કરતા વિચરે છે, ત્યાં હું રહું છું. ત્યારપછી અતિમુકતક કુમારે ભગવાન ગૌતમને કહ્યું-હે ભદન્ત ! હું આપની સાથે ભગવાનનાં દર્શન માટે ચાલું છું. ભગવાન ગૌતમે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય ! જેમ તમને સુખ થાય તેમ કરો. પરન્તુ ધર્મ કાર્યમાં પ્રમાદ ન કરો. (સૂ૦ ૨૫)

जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स धम्मकहा। तए णं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ० जं णवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि। तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया? मा पडिबंधं करेह ॥ सू० २६ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवया गोयमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारो भगवता गौतमेन सार्द्धं यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरः तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता' उपागत्य 'समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ,' श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिकृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति 'करित्ता वंदइ जाव पज्जुवासइ' कृत्वा वन्दते यावत् पर्युपास्ते। 'तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए' ततः खलु भगवान् गौतमो यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैव उपागतो 'जाव पडिदंसेइ' यावत् प्रतिदर्शयति=अहारं दर्शयति, 'पडिदंसित्ता' प्रतिदर्श्य असौ

तब वे अतिमुक्तक कुमार गौतमस्वामी के साथ जहाँ भगवान महावीर प्रभु थे वहाँ गये। वहाँ जाकर श्रमण भगवान महावीर को तीनबार विधिपूर्वक वन्दन नमस्कार किया और उपासना करने लगे। उस समय भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीर के पास आये और आहार को दिखाया, दिखा कर आहारपानी कर लेने के बाद यावत् वे गौतमस्वामी संयम और तपस्या से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। उधर

त्यारे ते अतिमुकतक कुमार गौतमस्वामीनी साथे ज्यां भगवान महावीर प्रभु हता त्यां गया. त्यां जईने श्रमण भगवान महावीरने त्रणवार विधिपूर्वक वंदन नमस्कार कर्या अने उपासना करवा लाग्या. ते समये भगवान गौतम श्रमण भगवान महावीरनी पासे आव्या अने आहार देखाडयो. देखाडी आहार पाणी करी लीधा पछी यावत् ते गौतमस्वामी संयम तथा तपस्याथी आत्माने भावित करता विचरवा लाग्या. ते बाजु

गौतमः 'संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति 'तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स' ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरोऽतिमुक्ताय कुमाराय 'धम्मकहा' धर्मकथा=धर्मकथां कथितवानित्यर्थः। अतिमुक्तं कुमारमुद्दिश्य भगवता धर्मोपदेशः कृत इति भावः। 'तए णं से अइमुत्ते कुमारे' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारः 'समणस्स भगवओ महावीरस्स' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म' अन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य 'हट्टतुट्ट०' हृष्टतुष्ट० एवमवादीत्-हे भदन्त! भवदन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामि। 'जं णवरं' यो विशेषः सोऽयम्; 'देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि' हे देवानुप्रियाः! अम्बापितरौ आपृच्छामि 'तए णं' ततः खलु=मातापित्रोरनुमतिप्राप्त्यनन्तरं खलु 'अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि' अहं देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि। 'अहासुहं देवाणुप्पिया! 'यथासुखं देवानुप्रिय!=हे देवानुप्रिय! यथा ते सुखकरं तथा कुरु। अस्मिन् कार्ये 'मा पडिबंधं करेह' मा प्रतिबन्धं कुरु= प्रमादं मा कुरु ॥ सू० २६ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए जाव पव्वइत्तए, अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी-बाले सि ताव तुमं पुत्ता! असंबुद्धेसि तुमं पुत्ता! किण्णं तुमं जाणासि धम्मं? तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी-एवं खलु अहं अम्मयाओ! जं

श्रमण भगवान महावीर ने अतिमुक्तक कुमार को उद्देश करके उनके योग्य धर्मकथा कही। धर्मकथा सुनकर वे अतिमुक्तक कुमार अत्यन्त हृष्टतुष्ट हो इस प्रकार बोले-हे भदन्त! मैं अपने मातापिता की आज्ञा लेकर आपके समीप प्रव्रजित होना चाहता हूँ। भगवानने कहा-हे देवानुप्रिय! जो तुम्हारे लिये सुखकर हो वैसा करो, प्रमाद मत करना ॥ सू० २६ ॥

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અતિમુકતક કુમારને ઉદ્દેશીને તેનાં યોગ્ય ધર્મકથા કહી. ધર્મકથા સાંભળીને અતિમુકતક કુમાર હૃષ્ટતુષ્ટ થયા અને કહ્યું-હે ભદન્ત! હું મારાં માતાપિતાની આજ્ઞા લઇને આપની પાસે પ્રવ્રજિત થવા ચાહું છું. ભગવાને કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિય! જેમ તમને સુખકર થાય તેમ કરો, પ્રમાદ ન કરો (સૂ૦ ૨૬)

चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि। तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–कहं णं तुमं पुत्ता! जं चेव जाणासि तं चेव न जाणासि, जं चेव न जाणासि तं चेव जाणासि ॥सू० २७॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए जाव पव्वइत्तए' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारो यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव उपागतो यावत्प्रव्रजितुम्=मातापित्रोरन्तिके समुपागत एवमवादीत्–यदहं हे अम्बापितरौ! भगवतो महावीरस्य समीपे प्रव्रजितुमिच्छामि। इति तद्वचो निशम्य तम् 'अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी' अतिमुक्तं कुमारम् अम्बापितरौ एवमवादिष्टाम्–'बाले सि ताव तुमं पुत्ता!' बालोऽसि तावत्त्वं पुत्र? 'असंबुद्धेसि तुमं पुत्ता!' असंबुद्धोऽसि त्वं पुत्र! – असंबुद्धोऽसि=अज्ञाततत्त्वोऽसि; 'किण्णं तुमं जाणासि धम्मं' किं खलु त्वं जानासि धर्मम्? 'तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारोऽम्बापितरौ एवमवादीत्–'एवं खलु अहं अम्मयाओ!' एवं खलु अहं हे अम्बातातौ! 'जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि' यदेव जानामि तदेव न जानामि यदेव न जानामि तदेव जानामि=हे मातापितरौ! अहं किं जानामि

उसके बाद वह अतिमुक्तक कुमार जहाँ मातापिता थे वहाँ आये और उन्होंने मातापिता से प्रव्रज्या के लिये आज्ञा माँगी, अपने पुत्र की यह बात सुनकर मातापिता को हंसी आई और इस प्रकार बोले – हे पुत्र! तुम अभी बच्चे हो, अभीतक तुमने तत्त्वों को नहीं जाना है। हे पुत्र! क्या तुम धर्म के ज्ञाता हो? यह सुनकर अतिमुक्तक कुमार ने कहा – हे मातापिता! मैं 'जो जानता हूँ उसको नहीं जानता, जिसको नहीं जानता उसको जानता

त्यारपछी ते अतिमुकतक कुमार ज्यां मातापिता हतां त्यां आव्या अने तेमणे मातापिता पासेथी प्रव्रज्या माटे आज्ञा मागी. पोताना पुत्रनी आ वात सांभळी मातापिताने हसवुं आव्युं अने कह्युं-हे पुत्र! तुं हजी बाळक छो, हजी तें तत्त्वोने जाण्यां नथी. हे पुत्र! तुं शुं धर्म समजे छे? आ सांभळी अतिमुकतक कुमारे कह्युं हे मातापिता! 'हुं जे जाणुं छुं ते नथी जाणतो, जे नथी जाणतो ते जाणुं छुं'. मातापिता अतिमुकतक

किं न जानामि इति वक्तुमसमर्थः, यतोऽहं यद् जानामि तदेव नो जानामि यन्न जानामि तदेव जानामि। 'तए णं' ततः खलु 'तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–कहं णं तुमं पुत्ता ! जं चेव जाणासि तं चेव न जाणासि, जं चेव न जाणासि तं चेव जाणासि ?' तमतिमुक्तं कुमारम् अम्बापितरौ एवमवादिष्टाम्–कथं खलु त्वं पुत्र ! यदेव जानासि यावत् तदेव न जानासि यदेव न जानासि तदेव जानासि ॥ सू० २७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी–जाणामि अहं अम्मताओ ! जहा जाएणं अवस्सं मरियव्वं न जाणामि अहं अम्मताओ ! काहे वा कहिं वा कहं वा केच्चिरेण वा ?, न जाणामि अहं अम्मताओ ! केहिं कम्मायणेहिं जीवा नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मताओ ! जहा सएहिं कम्मायणेहिं जीवा नेरइय जाव उववज्जंति। एवं खलु अहं अम्मताओ ! जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि, जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि । इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए। तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं जाव तं इच्छामि ते जाया एगदिवसमवि रायसिरिं पासेत्तए। तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, अभिसेओ जहा महाबलस्स निक्खमणं जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूइं वासाइं सामण्णपरियाओ, गुणरयणं जाव विपुले सिद्धे ॥ सू० २८ ॥

हूँ'। मातापिता अतिमुक्तक कुमार के इस प्रकार के वचन सुनकर बोले – हे पुत्र ! यह क्या कह रहे हो–जो जानता हूँ उसको नहीं जानता, जिसको नहीं जनता हूँ उसको जानता हूँ ॥ सू० २७॥

કુમારનાં આ પ્રકારનાં વચન સાંભળીને બોલ્યાં–હે પુત્ર ! આ શું કહે છે કે જે જાણું છું તે નથી જાણુતો, જે નથી જાણુતો તે જાણું છું (સૂ૦ ૨૭).

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं' ततः=मातापित्रोः प्रश्नानन्तरं खलु 'से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी, सोऽतिमुक्तः कुमारः अम्बापितरौ ! एवमवादीत्–'जाणामि अहं अम्मताओ' जानामि अहं हे अम्बातातौ ! सामान्येन, 'जहा जाएणं अवस्सं मरियव्वं' यथा जातेन अवश्यं मर्तव्यम्=यो जायते सोऽवश्यं म्रियते इति; किन्तु विशेषेण 'न जाणामि अहं अम्मताओ !' न जानामि अहं हे अम्बातातौ ! 'काहे' कदा=कस्मिन् काले, वा, 'कहिं'=कुत्र स्थाने वा, 'कहं' कथं=केन प्रकारेण वा, 'केच्चिरेण' कियच्चिरेण=कियता कालेन वा प्राणी मरिष्यतीति । पुनश्च 'न जाणामि अहं अम्मताओ !' न जानामि अहं हे अम्बातातौ ! 'केहिं' कैः 'कम्माययणेहिं' कर्मायतनैः=कर्मबन्धस्थानहेतुभिः 'जीवा नेरइय–तिरिक्खजोणिय–मणुस्स–देवेसु' जीवा नैरयिक-तिर्यग्योनिक-मनुष्य-देवेषु 'उववज्जंति' उपपद्यन्ते । परन्तु 'जाणामि णं' जानामि खलु 'अम्मताओ !' हे अम्बातातौ ! 'जहा सएहिं' यथा स्वकैः 'कम्मायणेहिं' कर्मायतनैः=कर्मबन्धकारणैः 'जीवा नेरइय जाव' जीवा नैरयिक यावत् 'उववज्जंति' उपपद्यन्ते । हे मातापितरौ ! जानामि यदुत्पन्नस्य अवश्यमेव प्राणवियोगः, परमेतन्न जानामि कस्मिन् समये, कस्मिन् स्थाने,

---

मातापिता के ऐसे वचन सुनकर अतिमुक्तक कुमार इस प्रकार बोले–हे मातापिता ! मैं इतना जानता हूँ, जिसने जन्म लिया वह अवश्य मरेगा । परन्तु यह नहीं जानता कि वह किस कालमें, किस स्थान में, किस प्रकार और कितने समय के बाद मरेगा । इसी प्रकार हे मातापिता ! यह नहीं जानता कि किन कर्मों द्वारा जीव नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवयोनि में उत्पन्न होते हैं, परन्तु इतना अवश्य जानता हूँ कि जीव अपने ही कर्मद्वारा इन योनियों में उत्पन्न होते हैं । हे मातापिता ! मैंने इसीलिये कहा कि जिसको नहीं जानता हूँ उसको जानता हूँ, जिसको जानता हूँ

માતાપિતાનાં એવાં વચન સાંભળીને અતિમુક્તક કુમારે આ પ્રમાણે કહ્યું–હે માતાપિતા! હું એટલું જાણું છું–જેણે જન્મ લીધો તે અવશ્ય મરશે. પણ તે નથી જાણતો તે કયા કાલમાં, કયા સ્થાનમાં, કયા પ્રકારે અને કેટલા સમય પછી મરશે. તેવીજ રીતે હે માતાપિતા! એ નથી જાણતો કે કયાં કર્મદ્વારા જીવ નરક, તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવયોનિમાં ઉત્પન્ન થાય છે, પણ એટલું અવશ્ય જાણું છું કે જીવ પોતાનાંજ કર્મદ્વારા એ યોનિયોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. હે માતાપિતા! મેં એટલા માટેજ કહ્યું કે જેને નથી

केन प्रकारेण, कियता कालेन वा एष प्राणवियोगः प्राणिनां भवति । तथा इदमपि न जानामि केन कर्मबन्धकारणेन जीवा नरकगामिनस्तिर्यञ्चो मनुष्या देवाश्च भवन्ति, परमेतज्जानामि यत् स्वकृतकर्मणैव एतासु योनिषु उत्पद्यन्ते इति भावः । 'एवं खलु अहं अम्मताओ !' एवं खलु अहम् हे अम्बातातौ!=अस्मादेव कारणात् हे मातापितरौ! अहं कथयामि 'जं चेव जाणामि तं चेव न जाणामि' यदेव जानामि तदेव नो जानामि, 'जं चेव न जाणामि तं चेव जाणामि' यदेव न जानामि तदेव जानामि । 'इच्छामि णं अम्मताओ!' इच्छामि खलु हे अम्बातातौ ! 'तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए' युवाभ्यामभ्यनुज्ञातो यावत्प्रव्रजितुम्=युवाभ्यां प्राप्तानुमतिरहं भगवत्समीपे प्रव्रजितुमिच्छामीति । 'तए णं तं अइमुत्तं कुमारं' ततः खलु तमतिमुक्तं कुमारम्, 'अम्मापियरो' अम्बापितरौ, 'जाहे' यदा 'नो संचाएंति' नो शक्नुतः 'बहूहिं आघवणाहिं जाव' बहुभिराख्यापनाभिर्यावत्=यदा अम्बापितरौ तमतिमुक्तं कुमारं बहुभिराख्यापनादिभिर्गृहे स्थापयितुं नाशक्नुताम्, तदा तौ अनिच्छयैव तद्वचः स्वीकृत्य एवमुक्तवन्तौ 'तं' तद् यदि ते प्रव्रज्येच्छा वर्त्तते तर्हि 'इच्छामो ते जाया!' इच्छावस्ते जात !=हे पुत्र! 'एगदिवसमपि रायसिरिं पासित्तए' एकदिवसमपि राज्यश्रियं द्रष्टुम् । 'तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे' ततः खलु सोऽतिमुक्तः कुमारोऽम्बापितृवचनमनुवर्तमानः=मन्यमानः 'तुसिणीए' तुष्णीकः=समौनः 'संचिट्ठइ' संतिष्ठते ।

उसको नहीं जानता हूँ । इसलिये मेरी इच्छा है कि आप दोनों की आज्ञा लेकर भगवान महावीर प्रभु के समीप प्रव्रजित होजाऊँ । उसके बाद मातापिता अतिमुक्तक कुमार को अनेक प्रकार की युक्ति-प्रयुक्तियों के द्वारा संयमके दृढभाव से नहीं हटा सके तब उन्होंने इस प्रकार कहा – हे पुत्र! हम लोग एक दिन के लिये भी तुम्हारी राज्यश्री को देखना चाहते हैं अर्थात् एक दिन के लिये ही तुम राजा बनो ऐसा चाहते हैं। यह सुनकर अतिमुक्तक कुमार मौन

જાણતો તે જાણું છું, જે જાણું છું તેને નથી જાણતો, એથી મારી ઇચ્છા છે કે આપ બેઉની આજ્ઞા લઇને ભગવાન મહાવીર પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ જાઉં. ત્યારપછી માતા-પિતાએ તે અતિમુક્તક કુમારને અનેક પ્રકારની યુક્તિપ્રયુક્તિથી સમજાવ્યા, પણ સંયમના દૃઢભાવથી તેને ચલિત ન કરી શક્યા. ત્યારે તેમણે કહ્યું-હે પુત્ર! અમે લોકો એક દિવસમાત્રજ તમારાં રાજ્યશ્રીને જોવા ચાહીએ છીએ, અર્થાત્ ફક્ત એક દિવસ પુરતા તમો રાજા બનો એમ ઇચ્છીએ છીએ. આ સાંભળી અતિમુક્તક કુમાર મૌન થઇ

अनन्तरमस्य कुमारस्य 'अभिसेओ' अभिषेकः 'जहा महब्बलस्स' यथा महाबलस्य=महाबलदेव अतिमुक्तकुमारस्य अभिषेको ज्ञातव्यः, 'निक्खमणं जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ' निष्क्रमणं यावत् सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते, महाबलस्येव अस्यापि दीक्षाग्रहणं यावत् सामायिकाद्येकादशाङ्गाध्ययनं विज्ञेयम् । तथा तस्य 'वहूइं वासाइं सामण्णपरियाओ' वहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायः, तथा स 'गुणरयणं जाव विपुले सिद्धे' गुणरत्नं यावद् विपुले सिद्धः-गुणरत्ननामकं तपः कृतवान् यावद् विपुले गिरौ सिद्धिं गतः ॥ सू० २८ ॥

॥ इति पञ्चदशमध्ययनं सम्पूर्णम् ॥

॥ मूलम् ॥

उक्खेवओ सोलसमस्स अज्झयणस्स । एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीए णयरीए काममहावणे चेइए, तत्थ णं वाणारसीए अलक्खे णामं राया होत्था । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ । परिसा णिग्गया । तए णं अलक्खे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ जहा कूणिए जाव पज्जुवासइ, धम्मकहा । तए णं से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उदायणे तहा णिक्खंते, णवरं जेट्ठं

होगये । तब मातापिता ने उनका राज्याभिषेक महाबल के समान किया और फिर वे अतिमुक्तक कुमार भगवान के समीप दीक्षा ग्रहण कर सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किये तथा बहुत वर्षों तक श्रामण्यपर्यायका पालन किये और गुणरत्न संवत्सर आदि तपश्चर्यायें करते हुए अन्त में वे विपुलगिरि पर सिद्ध हो गये ॥ सू० २८ ॥

॥ पन्द्रहवाँ अध्ययन समाप्त हुआ ॥

ગયા. ત્યારે માતાપિતાએ તેમનો રાજ્યાભિષેક મહાબલની પેઠે કર્યો. પછી તે અતિમુક્તક કુમારે ભગવાનની પાસે દીક્ષા લીધી અને સામાયિક આદિ અગીયાર અંગો ભણ્યા તથા ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્યપર્યાયનું પાલન કર્યું અને ગુણરત્ન સંવત્સર આદિ તપસ્યાઓ કરતા થકા અંતમાં વિપુલગિરિપર સિદ્ધ થઇ ગયા. (સૂ૦ ૨૮)

પંદરમું અધ્યયન સમાપ્ત થયું.

पुत्ते रज्जे अहिसिंचइ, एक्कारस अंगाइं, बहुवासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे। एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव छट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० २९ ॥

॥ टीका ॥

'उक्खेवओ' इत्यादि । 'उक्खेवओ सोलसमस्स अज्झयणस्स' उत्क्षेपकः षोडशस्य अध्ययनस्य=षोडशस्य अध्ययनस्य प्रारम्भवाक्यं 'जइ णं भंते !' 'यदि खलु भदन्त !' इत्यादिरूपं पूर्ववदेव बोध्यम्। सुधर्मा स्वामी प्राह- 'एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं' एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये, 'वाणारसीए णयरीए' वाराणस्यां नगर्यां 'काममहावणे चेइए' काममहावनं चैत्यम् आसीत् । 'तत्थ णं वाणारसीए अलक्खे णामं राया होत्था' तत्र खलु वाराणस्याम् अलक्षो नाम राजाऽऽसीत् । 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ' तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरो यावद् विहरति । भगवद्दर्शनार्थं

अब सोलहवाँ अध्ययन प्रारम्भ करते हैं। जिसका प्रारम्भ इस प्रकार होता है। जम्बूस्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं-हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीर प्रभु के द्वारा प्ररूपित छठे वर्ग के पन्द्रहवें अध्ययन का भाव मैंने आपके मुँह से सुना। अब कृपा करके सोलहवें अध्ययन का भाव सुनाइये। सुधर्मा स्वामीने कहा-हे जम्बू ! उसकाल उस समय वाराणसी नामकी नगरी थी। उस नगरी में काममहावन नामक एक चैत्य था। उस नगरी के राजा अलक्ष्य थे। उस काल उस समयमें श्रमण भगवान महावीर प्रभु वाराणसी नगरी के काममहावन उद्यान

હવે સોળમા અધ્યયનનો પ્રારંભ કરીએ છીએ. જેનો પ્રારંભ આ પ્રકારે થાય છે. જંબૂસ્વામી સુધર્માસ્વામીને પૂછે છે-હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દ્વારા પ્રરૂપિત છઠ્ઠા વર્ગના પંદરમા અધ્યયનનો ભાવ મેં આપના મુખેથી સાંભળ્યો. હવે કૃપા કરીને સોળમા અધ્યયનનો ભાવ સંભળાવો. સુધર્માસ્વામી કહે છે-હે જંબૂ! તે કાલ તે સમયે વારાણસી નામની નગરી હતી. તે નગરીમાં કામમહાવન નામે એક ચૈત્ય હતું. તે નગરીના રાજા અલક્ષ્ય હતા. તે કાલ તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પ્રભુ વારાણસી

'परिसा णिग्गया' परिषन्निर्गता । 'तए णं अलक्खे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' ततः खलु अलक्षो राजा अस्याः कथाया लब्धार्थः सन्, 'हट्ठतुट्ठ०' हृष्टतुष्ट०=हृष्टतुष्ट यावद्हृदयो 'जहा कूणिए जाव पज्जुवासइ' यथा कूणिको यावत्पर्युपास्ते, ज्ञातभगवदागमनवृत्तान्तोऽलक्षो राजा हृष्टतुष्ट-यावद्धृदयः कूणिकवद् भगवदन्तिके गतः, तं पर्युपास्ते चेति समुदितोऽर्थः। भगवता अलक्षमुद्दिश्य 'धम्मकहा' धर्मकथा कथिता । 'तए णं से अलक्खे राया' ततः खलु सोऽलक्षो राजा 'समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए' श्रमणस्य भगवतो महावीरस्याऽन्तिके 'जहा उदायणे' यथा उदायनः=उदायन-भूपः, 'तहा णिक्खंते' तथा निष्क्रान्तः=प्रव्रजितः, 'णवरं' विशेषः, 'जेट्ठं पुत्तं रज्जे अभिसिंचइ' ज्येष्ठं पुत्रं राज्ये अभिषिञ्चति, 'एक्कारस अंगाइं'

में पधारे। परिषद् उनके दर्शन के लिये निकली। भगवान के आनेका वृत्तान्त सुन महाराज कूणिक के समान महाराजा अलक्ष्य अत्यन्त हर्ष के साथ भगवान महावीर प्रभु के दर्शन के लिये गये। वहाँ जाकर वन्दन नमस्कार कर भगवानकी सेवा करने लगे। भगवानने धर्मकथा कही। धर्मकथा सुनकर महाराजा अलक्ष्य के हृदय में वैराग्यभाव उत्पन्न हुआ। अनन्तर वे अलक्ष्य राजा, भगवान महावीर के समीप उदायन के समान प्रव्रजित होगये। उदायन की प्रव्रज्या से इनकी प्रव्रज्या में विशेषता इतनी ही है कि इन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर प्रव्रज्या ली। प्रव्रज्या लेने के बाद इन्होंने ग्यारह अंगों का

નગરીના કામમહાવન ઉદ્યાનમાં પધાર્યા. પરિષદ્ તેમનાં દર્શન માટે નીકળી. ભગવાનના આવવાના વૃત્તાન્ત સાંભળીને મહારાજ કૂણિકની પેઠે મહારાજા અલક્ષ્ય અત્યંત હર્ષની સાથે ભગવાન મહાવીર પ્રભુનાં દર્શન માટે ગયા. ત્યાં જઈને વંદનનમસ્કાર કરી ભગવાનની સેવા કરવા લાગ્યા. ભગવાને ધર્મકથા કહી. ધર્મકથા સાંભળીને મહારાજ અલક્ષ્યના હૃદયમાં વૈરાગ્યભાવ પ્રગટ થયો પછી તે અલક્ષ્ય રાજા, ભગવાન મહાવીરની પાસે ઉદાયનની પેઠે પ્રવ્રજિત થઈ ગયા.

ઉદાયનની પ્રવ્રજ્યાથી એમની પ્રવ્રજ્યામાં વિશેષતા એટલીજ છે કે તેમણે પોતાના જ્યેષ્ઠ પુત્રને રાજ્ય આપીને પ્રવ્રજ્યા લીધી. પ્રવ્રજ્યા લીધા પછી એમણે અગીયાર

एकादश अङ्गानि अधीते, 'वहुवासा परियाओ' वहुवर्षाणि पर्यायः, 'जाव विपुले सिद्धे' यावद् विपुले सिद्धः । 'एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव छट्ठमस्स वग्गस्स' एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत्षष्ठस्य वर्गस्य= श्रमणेन भगवता महावीरेण मोक्षं संप्राप्तेन षष्ठस्य वर्गस्य 'अयमट्ठे' अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपोऽर्थः 'पण्णत्ते प्रज्ञप्तः=प्रतिपादितः ॥ सू० २९ ॥

॥ इति अलक्षनामकं षोडशमध्ययनं सम्पूर्णम् ॥

इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललित-
कलापाऽऽलापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहू-
छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य'–पदभूषित–कोल्हापुर-
राजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री-
घासीलाल–व्रतिविरचितायाम् अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य
मुनिकुमुदचन्द्रिकायां टीकायां
षष्ठो वर्गः संपूर्णः ॥ ६ ॥



अध्ययन किया तथा बहुत वर्षों तक चारित्रपर्याय पाला । अन्त में विपुलगिरि पर सिद्ध होगये । हे जम्बू ! इस प्रकार श्रमण भगवान महावीरने छठे वर्ग के भावों को निरूपित किया है ॥ सू० २९ ॥

॥ सोलहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

॥ छठा वर्ग समाप्त ॥



અંગોનું અધ્યયન કર્યું તથા ઘણાં વર્ષો સુધી ચારિત્રપર્યાયનું પાલન કર્યું. અંતમાં વિપુલગિરિ પર સિદ્ધ થઇ ગયા.

હે જંબૂ! આ પ્રકારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા વર્ગના ભાવોને નિરૂપણ કર્યા છે (સૂ૦ ૨૯)

સોળમું અધ્યયન સમાપ્ત

છઠ્ઠો વર્ગ સમાપ્ત



॥ अथ सप्तमो वर्गः ॥

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-

नंदा तह नंदवइ नंदोत्तर नंदसेणिया चेव ।
मरुया सुमरुया महमरुया मरुदेवा य अट्ठमा ॥ १ ॥
भद्दा य सुभद्दा य, सुजाया सुमणातिया ।
भूयदिन्ना य बोद्धव्वा, सेणियभज्जाण नामाइं ॥ २ ॥

जइ णं भंते ! तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, वण्णओ० । तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था, वण्णओ० । सामी समोसढे । परिसा निग्गया । तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी जाव हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता जाणं जहा पउमावई जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा । एवं तेरस वि णंदागमेण णेयव्वाओ । णिक्खेवओ ॥ सू० १ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं भंते' इत्यादि । 'जइ णं भंते !' यदि खलु भदन्त !-

॥ सातवाँ वर्ग ॥

हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीर ने अन्तकृत के छठे वर्ग के भावों का जो निरूपण किया है, वह आपके मुख से सुना, अब इसके बाद सातवें वर्ग का कौनसा भाव भगवानने कहा ?

સાતમો વર્ગ

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃતના છઠ્ઠા વર્ગના ભાવોનું જે નિરૂપણ કર્યું છે તે આપના મુખેથી સાંભળ્યું. હવે ત્યારપછી સાતમા વર્ગમાં કયા ભાવ ભગવાને કહ્યા છે ?

इत्यादि 'सत्तमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ जाव' सप्तमस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः=प्रारम्भवाक्यं यावत्, 'तेरस अज्झयणा पण्णत्ता' त्रयोदश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि-इत्यन्तं विज्ञेयम्। 'तं जहा' तद्यथा=तेषामध्ययनानां नामानि अधोनिर्दिष्ट-प्रकारेण बोद्धव्यानि—

'नंदा तह नंदवइ नंदोत्तर नंदसेणिया चेव।
मरुया सुमरुया महमरुया मरुदेवा य अट्ठमा ॥ १ ॥
भद्दा य सुभद्दा य सुजाया सुमणातिया।
भूयदिन्ना य बोद्धव्वा सेणियभज्जाण नामाइं ॥ २ ॥'

नन्दा तथा नन्दवती नन्दोत्तरा नन्दश्रेणिका चैव।
मरुता सुमरुता महामरुता मरुद्देवा च अष्टमी ॥ १ ॥
भद्रा च सुभद्रा च सुजाता सुमनातिका।
भूतदत्ता च बोद्धव्या श्रेणिकभार्याणां नामानि ॥ २ ॥ इति।

जम्बूस्वामी पृच्छति-'जइ णं भंते!' यदि खलु भदन्त! अस्मिन् सप्तमे वर्गे 'तेरस अज्झयणा' त्रयोदश अध्ययनानि 'पण्णत्ता' प्रज्ञप्तानि, 'पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?' प्रथमस्य

सुधर्मा स्वामीने कहा-हे जम्बू! भगवान ने अन्तकृत के सातवें वर्ग में तेरह अध्ययनों का निरूपण किया है, उनके नाम ये हैं-(१) नन्दा (२) नन्दवती (३) नन्दोत्तरा (४) नन्दश्रेणिका (५) मरुता (६) सुमरुता (७) महामरुता (८) मरुद्देवा (९) भद्रा (१०) सुभद्रा (११) सुजाता (१२) सुमनातिका और (१३) भूतदत्ता। ये जो तेरह नाम है वे श्रेणिक महाराज की रानियों के हैं। सातवें वर्ग के अध्ययन इन्हीं के नाम के हैं।

जम्बू स्वामीने फिर पूछा-हे भदन्त! भगवान महावीर प्रभुने सातवें वर्ग के तेरहों अध्ययनों में प्रथम अध्ययन के भाव का

સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું-હે જંબૂ! ભગવાને અંતકૃતના સાતમાં વર્ગમાં તેર અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે. તેનાં નામ આ પ્રમાણે છે:-(૧) નન્દા (૨) નન્દવતી (૩) નન્દોત્તરા (૪) નન્દશ્રેણિકા (૫) મરુતા (૬) સુમરુતા (૭) મહામરુતા (૮) મરુદ્દેવા (૯) ભદ્રા (૧૦) સુભદ્રા (૧૧) સુજાતા (૧૨) સુમનાતિકા અને (૧૩) ભૂતદત્તા. આ જે તેર નામ છે તે શ્રેણિક મહારાજની રાણીઓનાં છે. સાતમા વર્ગનાં અધ્યયન એમનાં નામનાં છે?

જંબૂસ્વામીએ ફરીને પૂછ્યું:-હે ભદન્ત! ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ સાતમા

खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मा स्वामी प्राह-'एवं खलु जंबू !' एवं खलु हे जम्बूः ! 'तेणं कालेणं तेणं समएणं' तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'रायगिहे णयरे' राजगृहे नगरे 'गुणसिलए चेइए' गुणशिलकं चैत्यम् आसीत् । तस्मिन्नगरे 'सेणिए राया' श्रेणिको राजा प्रतिवसति स्म । 'वण्णओ' वर्णकः= राज्ञो वर्णनं पूर्ववद्विज्ञेयम् । 'तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था' तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञो नन्दा नाम देवी आसीत् । 'वण्णओ' वर्णकः=देवीवर्णनं पूर्ववत् । तत्र नगरे 'सामी समोसढे' स्वामी समवसृतः=भगवान् महावीरस्वामी समुपागतः । भगवद्दर्शनार्थं 'परिसा निग्गया' परिषन्निर्गता । 'तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी' ततः खलु सा नन्दा देवी अस्याः कथाया लब्धार्था सती 'जाव हट्ठतुट्ठा' यावद् हृष्टतुष्टा=ज्ञातभगवदागमनवृत्तान्ता सती यावत्संजातहर्षप्रकर्षा 'कोडुंबियपुरिसे' कौटुम्बिकपुरुषान् 'सद्दावेइ' शब्दयति, 'सद्दावित्ता' शब्दयित्वा 'जाणं

किस प्रकार निरूपण किया है ?

सुधर्मा स्वामी ने कहा-हे जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर था। उस नगर में गुणशिलक नामक चैत्य था। उस नगर के राजा श्रेणिक थे। उनकी रानी का नाम नन्दा था। किसी एक समय भगवान महावीर प्रभु उस नगरी में पधारे। परिषद् उनके दर्शनके लिये निकली। भगवान के आनेका वृत्तान्त सुनकर महारानी नन्दा ने अत्यन्त हृष्टतुष्टचित्त से अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलवाया, और अपने धार्मिक यान को सजाकर लाने की आज्ञा दी।

वर्गना तेर अध्ययनोमां प्रथम अध्ययनना भावनुं कया प्रकारे निरूपण कर्युं छे ?

सुधर्मा स्वामीओ कह्युं:-हे जंबू! ते काल ते समये राजगृह नामनुं नगर हतुं. ते नगरमां गुणशिलक नामे चैत्य हतुं. ते नगरना राजा श्रेणिक हता. तेमनी राणीनुं नाम नन्दा हतुं. कोईओक समये भगवान महावीर प्रभु ते नगरीमां पधार्या. परिषद् तेमना दर्शन माटे नीकळी. भगवानना आववाना वृत्तान्त सांभळी महाराणी नन्दाओ अत्यंत हृष्टतुष्ट चित्तथी पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने पोताना धार्मिक यान (रथ) ने सज्ज करी लई आववानी आज्ञा आपी.

जहा पउमावई जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता' यानं यथा पद्मावती यावत् एकादश अङ्गानि अधीत्य 'वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा' विंशतिं वर्षाणि पर्यायो यावत्सिद्धा=तदाज्ञया कौटुम्बिकपुरुषा यानं समुपस्थायन्ति, यथा पद्मावती तथैव भगवत्समीपे प्रव्रज्य एकादशाङ्गानि अधीते, विंशतिं वर्षाणि दीक्षापर्यायं पालयति, अन्ते पद्मावतीवत् सिद्धा । 'एवं तेरस वि णंदा-गमेणं णेयव्वाओ' एवं त्रयोदशापि देव्यो नन्दागमेन नेतव्याः= यथा नन्दाध्ययनं तथैव सर्वाण्यध्ययनानि विज्ञेयानि । 'णिक्खेवओ' निक्षेपकः= सप्तमस्य वर्गस्य समाप्तिवाक्यम् 'एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्संप्राप्तेन अन्तकृतदशानां सप्तमस्य वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः' इत्यादिरूपं विज्ञेयम् ॥ सू० १ ॥

इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापाऽऽलापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहू-छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य'–पदभूषित–कोल्हापुर-राजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री-घासीलाल–व्रतिविरचितायाम् अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिकायां टीकायां सप्तमो वर्गः संपूर्णः ॥ ७ ॥

महारानी नन्दा की आज्ञानुसार वे कौटुम्बिक पुरुष अत्यन्त शीघ्रता से धार्मिक रथ सज्जित करके ले आये । महारानी नन्दा उसपर चढकर पद्मावती के समान भगवान के दर्शन करने के लिये गयी । वहाँ भगवान के मुख से धर्मकथा सुनकर संसारत्याग की भावना से भावित होगयी और महाराजा श्रेणिक की आज्ञा से भगवान महावीर प्रभु के समीप दीक्षा लेकर प्रव्रजित होगयी । तथा ग्यारह अंगोंका अध्ययन कर बीस वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला और सिद्ध होगयी ॥ १ ॥ इसी प्रकार नन्दवती आदि

મહારાણી નન્દાની આજ્ઞાનુસાર તે કૌટુંબિક પુરુષો અત્યંત શીઘ્રતાથી ધાર્મિક રથને સજ્જિત કરીને લઈ આવ્યા. મહારાણી નન્દા તેના ઉપર ચડીને પદ્માવતીની પેઠે ભગવાનના દર્શન કરવા માટે ગઇ. ત્યાં ભગવાનના મુખથી ધર્મકથા સાંભળી સંસારત્યાગની ભાવનાથી ભાવિત થઇ ગઇ, અને મહારાજા શ્રેણિકની આજ્ઞા લઈ ભગવાન મહાવીર પ્રભુની પાસે દીક્ષા લઈ પ્રવ્રજિત થઇ ગઇ. તથા અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કરી વીશ વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાયનું પાલન કરી સિદ્ધ થઇ ગઇ (૧). આ પ્રકારે નન્દવતી આદિ

अष्टमो वर्गः

॥ मूलम् ॥

जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—काली सुकाली महाकाली कण्हा सुकण्हा महाकण्हा वीरकण्हा य बोद्धव्वा रामकण्हा तहेव य। पिउसेणकण्हा नवमी, दसमी महासेणकण्हा य ॥ १ ॥ जइ णं भंते! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥ सू० १ ॥

॥ टीका ॥

'जइ णं भंते' इत्यादि । 'जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं सत्तमस्स अंगस्स अयमट्ठे पण्णत्ते' यदि खलु

अध्ययनों को जानना चाहिये ॥ सू० १३ ॥

हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीर ने अन्तकृतदशा के सातवें वर्ग के भाव को इस प्रकार निरूपण किया है ॥

॥ सातवाँ वर्ग समाप्त ॥

आठवाँ वर्ग

जम्बूस्वामीने पूछा—हे भदन्त! श्रमण भगवान महावीर

અધ્યયનોને જાણવાં જોઈએ. (૧૩)

હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃતદશાના સાતમા વર્ગના ભાવને એ પ્રમાણે નિરૂપણ કર્યું છે. (સૂ૦ ૧)

સાતમો વર્ગ સમાપ્ત.

આઠમો વર્ગ

જંબૂસ્વામીએ પૂછ્યું—હે ભદન્ત! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃતદશા

भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृतदशानां सप्तमस्य वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः, पुनः 'अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?' अष्टमस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य अन्तकृतदशानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? इति जम्बूस्वामिनः प्रश्नः, अनन्तरं सुधर्मास्वामी प्राह-'एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठमस्स वग्गस दस अज्झयणा पण्णत्ता' एवं खलु हे जम्बूः ? श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन अष्टमस्य अङ्गस्य अन्तकृत-दशानाम् अष्टमस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,

'तं जहा-काली सुकाली महाकाली कण्हा सुकण्हा महाकण्हा वीर-कण्हा तहेव य। पिउसेणकण्हा नवमी, दसमी महासेणकण्हा य ॥ १ ॥

तद्यथा-काली सुकाली महाकाली कृष्णा सुकृष्णा महाकृष्णा वीर-कृष्णा च बोद्धव्या रामकृष्णा तथैव च। पितृसेनकृष्णा नवमी दशमी महासेनकृष्णा च ॥ १ ॥ इति।

अस्मिन् वर्गे कालीप्रभृतीनि दश अध्ययनानि विज्ञेयानि । 'जइ णं भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता,

---

ने अन्तकृतदशा-नामक आठवें अंग के सातवें वर्ग में जो कहा उसे मैंने आपके मुखसे सुना, अब इसके बाद भगवान ने अन्तकृतदशा के आठवें वर्ग में किन भावों कहा है ?

सुधर्मा स्वामीने कहा-हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीर ने अन्तकृतदशा के आठवें वर्ग में दस अध्ययनों का निरूपण किया है। उनके नाम ये हैं-(१) काली (२) सुकाली (३) महाकाली (४) कृष्णा (५) सुकृष्णा (६) महाकृष्णा (७) वीरकृष्णा (८) रामकृष्णा (९) पितृसेनकृष्णा और (१०) महासेनकृष्णा।

जम्बूस्वामीने फिर पूछा-हे भदन्त ! भगवान महावीर प्रभु

નામના આઠમા અંગના સાતમા વર્ગમાં જે કહ્યું તે મેં આપના મુખથી સાંભળ્યું. હવે ત્યારપછી ભગવાને અન્તકૃતદશાના આઠમા વર્ગમાં કયા ભાવોને કહ્યા છે ?

સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું-હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અન્તકૃતદશાના આઠમા વર્ગમાં દશ અધ્યયનોનું નિરૂપણ કર્યું છે. તેમના નામો આ પ્રમાણે છે-(૧) કાલી (૨) સુકાલી (૩) મહાકાલી (૪) કૃષ્ણા (૫) સુકૃષ્ણા (૬) મહાકૃષ્ણા (૭) વીરકૃષ્ણા (૮) રામકૃષ્ણા (૯) પિતૃસેનકૃષ્ણા અને (૧૦) મહાસેનકૃષ્ણા.

જંબૂસ્વામીએ ફરીથી પૂછ્યું-હે ભદન્ત ! ભગવાન મહાવીર પ્રભુએ આઠમા

पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ।
यदि खलु भदन्त ! अष्टमस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?॥ सू० १ ॥

॥ मूलम् ॥

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए। तत्थ णं चंपाए णयरीए कोणिए राया, वण्णओ० । तत्थ णं चंपाए णयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, वण्णओ० । जहा नंदा जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमेहिं जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥ सू० २ ॥

॥ टीका ॥

'एवं खलु' इत्यादि । 'एवं खलु जंबू ? तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए' एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, तस्यां नगर्यां पूर्णभद्रं चैत्यमासीत् । 'तत्थ णं चंपाए णयरीए कोणिए राया' तत्र खलु चम्पायां नगर्यां कोणिको राजा आसीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=कोणिकराजवर्णनमन्यत्रोक्तराजवर्णनवद् विज्ञेयम् । 'तत्थ णं चंपाए णयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था' तत्र खलु चम्पायां नगर्यां श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या कूणिकस्य राज्ञः क्षुल्लमाता = लघुमातेत्यर्थः;

ने आठवें वर्ग के दस अध्ययनों में प्रथम अध्ययन के भावका निरूपण किस प्रकार किया है ? ॥ सू० १ ॥

सुधर्मा स्वामी ने कहा-हे जम्बू ! उस काल उस समय में चम्पा नामकी नगरी थी। उस नगरी में पूर्णभद्र नामक उद्यान था। उस चम्पानगरी का राजा कूणिक था। उस चम्पानगरी में महाराजा श्रेणिक की भार्या और राजा कूणिक की लघुमाता

वर्गना दश अध्ययनोमां प्रथम अध्ययनना भावनुं निरूपण कया प्रकारे कर्युं छे ? (सू०१)

सुधर्मा स्वामीए कह्युं-हे जंबू ! ते काल ते समये चम्पा नामे नगरी हती. ते नगरीमां पूर्णभद्र नामनुं उद्यान हतुं. ते चम्पानगरीनो राजा कूणिक हतो. ते चंपा नगरीमां महाराज श्रेणिकनी भार्या तथा राजा कूणिकनी लघुमाता कालीदेवी हती. ते

काली नाम देवी आसीत्, 'वण्णओ' वर्णकः, अस्या वर्णनमन्यदेवीवद् विज्ञेयम्। 'जहा नंदा जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ' यथा नन्दा यावत् सामायिकादीनि एकादश अङ्गानि अधीते=यथा नन्दा तथैवेयमपि ज्ञातभगवदागमनवृत्तान्ता भगवत्समीपे गत्वा धर्मं श्रुत्वा धर्मश्रवणसंजातवैराग्या भगवत्समीपे प्रव्रजिता। अनन्तरं सामायिकादीनि एकादश अङ्गानि अधीतवती। तथा च 'बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमेहिं जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ' बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमैर्यावदात्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू० २ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाइं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलितवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥ सू० ३ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाई जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता एवं वयासी' ततः खलु सा काली आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव आर्यचन्दना आर्या तत्रैव उपागता,

कालीदेवी थी। वह कालीदेवी नन्दा के समान भगवान महावीर प्रभु के समीप में प्रव्रजित हो सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन करने लगी और बहुत सी चतुर्थ–षष्ठ–अष्टमादि तपस्या से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ॥ सू० २ ॥

एक दिन वह काली आर्या आर्यचन्दनबाला आर्या के समीप गयी और हाथ जोड वन्दन कर विनय के साथ इस

કાલીદેવી નન્દાની પેઠે ભગવાન મહાવીર પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કરવા લાગી અને ઘણાં ચતુર્થ, ષષ્ઠ અષ્ટમભક્ત આદિ તપસ્યાથી આત્માને ભાવિત કરતી વિચરવા લાગી (સૂ૦ ૨)

એક દિવસ તે કાલી આર્યા આર્યચન્દનબાલા આર્યાની પાસે ગઇ અને હાથ જોડી, વંદન નમસ્કાર કરી વિનયપૂર્વક આ પ્રકારે બોલી–હે મહાભાગા! આપની આજ્ઞા

उपागत्य एवमवदत्–'इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' इच्छामि खलु हे आर्याः! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती रत्नावलीं तपः=रत्नावलीनामकं तप उपसंपद्य विहर्तुम्। चन्दनबालाऽऽर्या प्राह–'अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह' यथासुखं हे देवानुप्रिये! मा प्रतिबन्धं कुरुष्व। 'तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलितवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ' ततः खलु सा काली आर्याऽऽर्यचन्दनयाऽभ्यनुज्ञाता सती रत्नावलीतपःकर्मोपसंपद्य खलु विहरति ॥ सू० ३॥

॥ मूलम् ॥

तं जहा – चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठछट्ठाइं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करि त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

प्रकार बोली – हे महाभागा! आपकी आज्ञा लेकर रत्नावली तपस्या के द्वारा आत्मा को भावित करती हुई विचरना चाहती हूँ। तब आर्या चन्दनबाला ने उत्तर दिया–हे देवानुप्रिये! जो तुम्हारे लिये सुखकर हो सो करो, किसी भी प्रकार का प्रमाद मत करो। आर्या चन्दनबाला की आज्ञा पाकर काली आर्या रत्नावली तपस्या करती हुई विचरने लगी ॥ सू० ३॥

લઈને રત્નાવલી તપસ્યા દ્વારા આત્માને ભાવિત કરતી થકી વિચરવા ચાહું છું. ત્યારે આર્યા ચન્દનબાળાએ ઉત્તર આપ્યો–હે દેવાનુપ્રિયે! જેમ તમને સુખ થાય તેમ કરો, કોઈ પ્રકારે પ્રમાદ ન કરો. આર્યા ચંદનબાળાની આજ્ઞા મેળવીને કાલી આર્યા રત્નાવલી તપસ્યા કરતી થકી વિચરવા લાગી (સૂ૦ ૩)

सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउवीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छव्वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोत्तीसं छट्ठाइं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता तीसं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छव्वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउवीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठछट्ठाइं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी, एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ ॥ सू० ४ ॥

॥ टीका ॥

'तं जहा' इत्यादि। 'तं जहा' तद्यथा—रत्नावलीतपःप्रकारमाह—'चउत्थं करेइ' चतुर्थं करोति, 'करित्ता' कृत्वा, 'सव्वकामगुणियं' सर्वकाम-गुणितं—सर्वे च ते कामगुणाः सर्वकामगुणाः=अभिलाषविषयीभूता दधिदुग्ध-घृततैलमधुरलक्षणा रसाः, ते संजाता यत्र तत्तथा 'पारेइ' पारयति=दधिदुग्धा-दिना पारणां करोतीत्यर्थः, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठछट्ठाइं करेइ' पारयित्वा अष्ट-षष्ठानि करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकाम-गुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता

वह रत्नावली तप उन्होंने इस प्रकार किया, पहले काली आर्याने उपवास किया और पारणा किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके तेला किया। पारणा करके आठ बेले किये। पारणा करके उपवास किया। पारणा करके बेला किया। पारणा

તે રત્નાવલી તપ તેમણે આ પ્રકારે કર્યું—પહેલાં કાલી આર્યાએ ઉપવાસ કર્યો અને પારણું કર્યું. પારણું કરી છઠ કર્યો, પારણું કરી અઠમ કર્યો. પારણું કરી આઠ છઠ કર્યાં. પારણું કરી ઉપવાસ કર્યો. પારણું કરી છઠ કર્યો. પારણું કરી અઠમ કર્યો. આવી

सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणियं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता' पारयित्वा 'चोदसमं करेइ' चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'सव्वकामगुणियं पारेइ' सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता' पारयित्वा 'बावीसइमं करेइ' द्वाविंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउवीसइमं करेइ' पारयित्वा चतुर्विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छव्वीसइमं करेइ' पारयित्वा षड्विंशतितमं करोति, 'करित्ता' कृत्वा 'सव्वकामगुणियं पारेइ' सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठावीसइमं करेइ' पारयित्वा अष्टाविंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता तीसइमं करेइ' पारयित्वा त्रिंशत्तमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता बत्तीसइमं करेइ' पारयित्वा द्वात्रिंशत्तमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोत्तीसइमं करेइ' पारयित्वा चतुस्त्रिंशत्तमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोत्तीसं छट्ठाइं करेइ' पारयित्वा चतुस्त्रिंशत्षष्ठानि करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति' पारित्ता

करके तेला किया, यों अन्तररहित चोला किया, पाँच किये, छह किये, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह चौदह, पन्द्रह, सोलह किये। फिर चौंतीस बेले किये। पारणा करके सोलह दिन की तपश्चर्या की। पारणा करके पन्द्रह दिनकी की तपश्चर्या की।

રીતે અંતરરહિત ચાર કર્યા, પાંચ કર્યા, છ કર્યા, સાત, આઠ, નવ, દસ, અગીયાર, બાર, તેર, ચૌદ પંદર, સોળ કર્યા. પછી ચોંત્રીસ છઠ કર્યા. પારણું કરી સોળ દિવસની તપશ્ચર્યા કરી. પારણું કરી પંદર દિવસની તપશ્ચર્યા કરી એવી રીતે ચૌદ, તેર, બાર,

वत्तीसइम करेइ' पारयित्वा द्वात्रिंशत्तमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता तीसइमं करेइ' पारयित्वा त्रिंशत्तमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठावीसइमं करेइ' पारयित्वा अष्टाविंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छव्वीसइमं करेइ' पारयित्वा षड्विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउवीसइमं करेइ' पारयित्वा चतुर्विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वावीसइमं करेइ' पारयित्वा द्वाविंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणियं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता' पारयित्वा 'सोलसमं करेइ' षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वारसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'परित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठछट्ठाइं करेइ' पारयित्वा

इस प्रकार क्रमसे पारणा करती हुई चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह, दस, नौ, आठ, सात, छ, पाँच, चार, तीन, दो, और एक उपवास किये। पारणा करके फिर आठ बेले किये। पारणा करके तेला किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके उपवास किया,

---

અગીયાર, દશ, નવ, આઠ, સાત, છ, પાંચ ચાર, ત્રણુ, બે અને એક ઉપવાસ કર્યા. પારણું કરી આઠ છઠ કર્યા, પારણું કરી અઠમ કર્યો, પારણું કરી ઉપવાસ કર્યો, પછી

अट्टपष्ठानि करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्टं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी' एवं खलु एषा रत्नावल्यास्तपःकर्मणः प्रथमा परिपाटी='लडी'–इति भाषाप्रसिद्धा, 'एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ' एकेन संवत्सरेण त्रिभिर्मासैः द्वाविंशत्याहोरात्रैर्यथासूत्रं यावदाराधिता भवति। एषा रत्नावल्याः प्रथमा परिपाटी द्वाविंशत्यहोरात्रसहितमासत्रयानुगतेनैकेन वर्षेण सूत्रोक्तानुसारेण समाराधिता भवति ॥ सू० ४ ॥

॥ मूलम् ॥

तयाणंतरं च णं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता, एवं जहा पढमाए वि, णवरं सव्वपारणए विगइवज्जं पारेइ जाव आराहिया भवइ। तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करित्ता अलेवाडं पारेइ, सेसं तहेव।

फिर पारणा किया। इस प्रकार उन्होंने 'रत्नावली तप' की एक परिपाटी (लडी) की आराधना की। रत्नावली की यह एक परिपाटी (लडी) एक वर्ष तीन महिना बाईस अहोरात्र में पूर्ण होती है। इस एक परिपाटी में तीन सौ चौरासी दिन तपस्या के और अठासी दिन पारणा के होते हैं, इस प्रकार सब चार सौ बहत्तर दिन होते हैं ॥ सू० ४ ॥

પારણું કર્યું. એ પ્રકારે તેમણે 'રત્નાવલી તપ'ની એક પરિપાટી (લડી)ની આરાધના કરી. રત્નાવલીની આ એક પરિપાટી (લડી) એક વર્ષ ત્રણ માસ અને બાવીસ રાત્રિ-દિવસમાં પૂર્ણ થાય છે. આવી એક પરિપાટીમાં ત્રણસો ચોર્યાસી દિવસ તપસ્યાના અને અઠયાસી દિવસ પારણાના થાય છે. એ પ્રકારે બધા મળીને ચારસો બઉતેર દિવસ થાય છે. (સૂ૦ ૪)

एवं चउत्था परिवाडी, नवरं सव्वपारणए आयंबिलं पारेइ, सेसं तंचेव।

पढमम्मि सव्वकामपारणयं बिइयए विगइवज्जं।
तइयंमि अलेवाडं, आयंबिलओ चउत्थम्मि॥

तए णं सा काली अज्जा रयणावलीतवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं, अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता, जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥ सू० ५ ॥

॥ टीका ॥

'तयाणंतरं' इत्यादि। 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरं च खलु=प्रथमपरिपाटीसमाप्त्यनन्तरमित्यर्थः, 'दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता विगइवज्जं पारेइ' द्वितीयस्यां परिपाट्यां चतुर्थं करोति, कृत्वा विकृतिवर्जं पारयति, पारयित्वा षष्ठं करोति कृत्वा

तदनन्तर उस काली आर्या ने 'रत्नावली-तपस्या' की दूसरी परिपाटी (लडी) प्रारम्भ की। उन्होंने पहले उपवास किया। उपवास के पारणे में विगय-दूध, दहीं, घी, तेल, मीठा इन पाँच वस्तुओं का लेना एकदम बन्द कर दिया। इस प्रकार उपवास का पारणा कर उनने बेला किया। पारणा में विगय छोड दिया। इसी तरह तेला किया। पारणा करके आठ बेले किये। पारणा करके उपवास किया। बेला किया, तेला किया, यों सोलह उपवास तक किये। फिर चौंतीस बेले किये। पारणा करके सोलह किये। फिर

ત્યારપછી તે કાલી આર્યાએ 'રત્નાવલી-તપસ્યા'ની બીજી પરિપાટી (લડી) નો પ્રારંભ કર્યો. તેમણે પહેલાં ઉપવાસ કર્યો. ઉપવાસના પારણામાં વિગય-દૂધ, દહીં, ઘી, તેલ અને મિષ્ટાન્ન એ પાંચ વસ્તુઓનું લેવું એકદમ બંધ કરી દીધું. એ પ્રકારે ઉપવાસનું પારણું કરી તેમણે છઠ કર્યું. પારણામાં વિગય છોડી દીધું. તેજ રીતે અઠમ કર્યો. પારણું કરીને આઠ છઠ કર્યા. પારણું કરી ઉપવાસ કર્યો, છઠ કર્યો, અઠમ કર્યો, એમ સોળ ઉપવાસ સુધી કર્યાં. પછી ચોંત્રીસ છઠ કર્યાં. પારણું કરીને સોળ કર્યાં.

विकृतिवर्जं पारयति, 'पारित्ता' पारयित्वा, 'एवं जहा पढमाए वि' एवं यथा प्रथमायामपि 'णवरं सव्वपारणए विगइवज्जं पारेइ' नवरं सर्वपारणायां विकृतिवर्जं पारयति= द्वितीयपरिपाट्यामपि प्रथमपरिपाटीवदेव सर्वं करोति, विशेषस्तु द्वितीयस्यां परिपाट्यां विकृतिवर्जां पारणां करोति, 'जाव आराहिया भवइ' यावद् द्वितीया परिपाटी आराधिता भवति। 'तयाणंतरं च णं' तदनन्तरं=द्वितीयपरिपाट्यनन्तरं च खलु 'तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ' तृतीयायां परिपाट्यां चतुर्थं करोति, 'करित्ता अलेवाडं पारेइ' कृत्वा अलेपकृतं पारयति=विकृतिलेपरहितं पारयति, पारणके विकृतेर्लेपमात्रमपि वर्जयतीत्यर्थः। 'सेसं तहेव' शेषं तथैव। 'एवं चउत्था परिवाडी' एवं चतुर्थ्यपि परिपाटी, 'नवरं' विशेषस्त्वयं यत् 'सव्वपारणए आयंबिलं पारेइ' सर्वपारणके आचामाम्लं पारयति=सर्वेषु पारणादिवसेषु आचामाम्लं करोतीत्यर्थः, 'सेसं तं चेव' शेषं तदेव=अवशिष्टं पूर्ववदेव ज्ञातव्यम्। अत्र गाथा।

'पढमम्मि सव्वकामपारणयं, बिइयए विगइवज्जं।
तइयम्मि अलेवाडं, आयंबिलओ चउत्थम्मि॥'
प्रथमायां सर्वकामपारणकं, द्वितीयायां विकृतिवर्जम्।
तृतीयायामलेपकृतम्, आचामाम्लं च चतुर्थ्याम्॥ इति।

पन्द्रह, चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह, दस, नौ, आठ, सात, छह, पाँच, चार, तीन, दो और एक उपवास किया। पारणा करके आठ बेले किये। पारणा करके तेला किया, बेला किया और उपवास किया। सभी पारणों में विगय छोड दिया। जिस प्रकार प्रथम परिपाटी की, उसी प्रकार दूसरी परिपाटी भी की। परन्तु इसमें सभी विगयवर्जित पारणे किये। इसी प्रकार तीसरी लडी पूरी की, इसमें पारणे के दिन विगय का लेप मात्र भी छोड दिया। चौथी लडी भी इसी प्रकार से की; परन्तु इसके पारणे में आम्बिल

પછી પંદર, ચૌદ, તેર, બાર, અગીયાર, દશ, નવ, આઠ, સાત, છ, પાંચ, ચાર, ત્રણ, બે અને એક ઉપવાસ કર્યા. પારણું કરીને આઠ છઠ કર્યા. પારણું કરીને અઠમ કર્યો, છઠ કર્યો અને ઉપવાસ કર્યો. બધાં પારણામાં વિગય છોડી દીધો. જે પ્રકારે પ્રથમ પરિપાટી કરી તેજ પ્રકારે બીજી પરિપાટી પણ કરી. પરન્તુ આમાં સર્વ-વિગય-વર્જિત પારણાં કર્યાં. એજ રીતે ત્રીજી પરિપાટી પૂર્ણ કરી, એમાં પારણાંને દિવસે વિગયનો લેપમાત્ર પણ છોડી દીધો. ચોથી પરિપાટી પણ એજ પ્રકારે કરી, પરંતુ તેના

सा काली आर्या परिपाटीचतुष्टयसहितं रत्नावलीनामकं तपः कृतवती-त्यर्थः। 'तए णं सा काली अज्जा' ततः खलु सा काली आर्या 'रयणावलीतवो-कम्मं' रत्नावलीतपःकर्म= चतुःपरिपाटीयुक्तं रत्नावलीनामकं तपः, 'पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं' पञ्चभिः संवत्सरैर्द्वाभ्यां च मासाभ्याम् 'अट्ठावीसाए य दिवसेहिं' अष्टाविंशत्या च दिवसैः, 'अहासुत्तं जाव आराहित्ता' यथासूत्रं यावदाराध्य=सूत्रानुसारेण यावदाराधनां कृत्वा 'जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया' यत्रैव आर्यचन्दना आर्या तत्रैव उपागता, 'उवागच्छित्ता अज्जचंदणं वंदइ णमंसइ' उपागत्य आर्यचन्दनां वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता' वन्दित्वा नमस्यित्वा 'बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ' बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशभिस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन्ती विहरति ॥ सू० ५॥

॥ मूलम् ॥

तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं जाव धमणिसंतया जाया यावि होत्था, से जहा इंगालसगडी वा जाव सुहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा, तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव उवसोभेमाणी चिट्ठइ ॥ सू० ६॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं जाव धमणिसंतया जाया यावि होत्था' ततः खलु सा काली आर्या तेन उदारेण

किया। इस प्रकार काली आर्या रत्नावली की चारों परिपाटी को पाँच वर्ष छह मास और अट्ठावीस दिन में समाप्त कर जहाँ चन्दन-बाला आर्या थी, वहाँ गयी और उन्हें वन्दन नमस्कार किया। बाद में बहुत सी चतुर्थभक्त आदि तपस्याओं से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ॥ सू० ५ ॥

उसके बाद उस काली आर्या का शरीर इस प्रकार की

પારણામાં આંબિલ કર્યાં. આ પ્રકારે કાલી આર્યા રત્નાવલીની ચારેય પરિપાટી પાંચ વર્ષ છ માસ અને અઠ્ઠાવીશ દિવસમાં સમાપ્ત કરી જ્યાં ચંદનબાલા આર્યા હતી ત્યાં ગઇ અને તેમને વંદન નમસ્કાર કર્યાં પછી ઘણાં ચતુર્થભકત આદિ તપસ્યાઓથી આત્માને ભાવિત કરતી વિચરવા લાગી. (સૂ૦ ૫)

ત્યારપછી તે કાલી આર્યાનું શરીર આ પ્રકારની પ્રધાન તપસ્યા કરવાથી એકદમ

यावद् धमनिसंतता जाता चाऽऽप्यभवत्=महोग्रेण तेन रत्नावलीतपःकर्मणा सा काली आर्या शुष्कमांसशोणिततया शिरासंलक्षिताङ्गोपाङ्गाऽभवत्, 'तं जहा' तद्यथा 'इंगालसगडी वा' अङ्गारशकटी वा, अङ्गाराः='कोयला' इति प्रसिद्धाः, तैर्भृता शकटी=गन्त्री अङ्गारशकटी तद्वत् 'जाव सुहुयहुयासणे इव' यावत्सुहुतहुताशन इव, 'भासरासिपलिच्छण्णा' भस्मराशिप्रतिच्छन्ना, यथा अङ्गारशकटिका शुष्कपत्रशकटिका एरण्डकाष्ठशकटिका गमनकाले 'किट्किट्' शब्दं करोति, तथैव अस्याः काल्या आर्यायाः शरीरम् उत्थानादिक्रियायामस्थिसंघर्षवशात् 'किट्किट्' शब्दं करोति, पुनः सा काली आर्या भस्मसमूहान्तर्हितो घृतादितर्पितवह्निरिव 'तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव उवसोभेमाणी चिट्ठइ' तपसा तेजसा तपस्तेजःश्रिया च अतीव उपशोभमाना तिष्ठति ॥ सू० ६ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले अयमज्झत्थिए जहा खंदयस्स चिंता जाव

प्रधान तपस्या करने से प्रायः मांस और लोही (खून) से रहित होगया। उनके शरीर की धमनियाँ प्रत्यक्ष दिखाई दे रही थीं। वह सूखकर अस्थिपंजरमात्र से अवशिष्ट होगयी थी। उठते-बैठते चलते-फिरते उसके शरीर की हड्डियों से कड-कड आवाज होती थी, जिस प्रकार सूखे काष्ठ, सूखे पत्ते या कोयले से भरी हुई चलती गाडीसे आवाज होती है। यद्यपि काली आर्या का शरीर मांस-लोही के सूख जाने के कारण रूक्ष होगया था, तथापि भस्म से आच्छादित अग्नि के समान तपतेज की शोभा से अत्यन्त शोभित होरहा था ॥ सू० ६ ॥

લોહી-માંસ વગરનું થઇ ગયું. તેમના શરીરની ધમનિઓ (નસો) પ્રત્યક્ષ દેખાતી હતી. તેમનું શરીર સૂકાઇને માત્ર હાડકાનું પાંજરૂં બાકી રહી ગયું હતું. ઉઠતાં, બેસતાં, ચાલતાં, ફરતાં તેમના શરીરનાં હાડકાંનો કડ-કડ અવાજ થતો હતો. તે અવાજ સૂકાં લાકડાં, સૂકા પાંદડાં અથવા કોયલાથી ભરેલી ગાડી ચાલતી હોય ત્યારે જેમ અવાજ થાય તેવો હતો. જો કે કાલી આર્યાનું શરીર લોહી માંસ સુકાઇ જવાથી (દુર્બલ) રૂક્ષ થઇ ગયું હતું, છતાં ભસ્મથી ઢંકાએલ અગ્નિની પેઠે તપના તેજની શોભાથી અત્યંત શોભી રહ્યું હતું. (સૂ૦ ૬)

अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे वा ताव मे सेयं कल्लं जाव जलंते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुन्नायाए समाणीए संलेहणाझूसणाझूसियाए भत्तपाणपडियाइक्खियाए कालं अणवकंखमाणीए विहरेत्तएत्ति कट्टु एवं संपेहित्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं अज्जाओ तुब्भेहिं अब्भणुण्णायाए समाणीए संलेहणा जाव विहरेत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणाझूसणाझूसिया जाव विहरइ। सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा ॥ सू० ७ ॥

[कालीणामं पढमज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तीसे कालीए अज्जाए अण्णया कयाइ' ततः खलु तस्याः काल्या आर्याया अन्यदा कदाचित् 'पुव्वरत्तावरत्ताकाले' पूर्वरात्रापररात्रकाले=रात्रेः पश्चिमे भागे 'अयमज्झत्थिए' अयमाध्यात्मिको= वक्ष्यमाणप्रकारक आत्मिकसंकल्पः संजातः, 'जहा खंदयस्स' यथा स्कन्दकस्य= स्कन्दकऋषिवत्, 'चिंता' चिन्ता=चिन्तनं; चिन्तास्वरूपमाह–'जाव अत्थि

तदनन्तर उन काली आर्या के हृदय में एकदिन पीछली रात को खन्दक के समान इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि मेरा

પછી તે કાલી આર્યાના હૃદયમાં એક દિવસ પાછલી રાત્રે ખંદકની પેઠે એવો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે–મારૂં શરીર તપસ્યાના કારણથી અત્યંત સૂકાઇ ગયું છે, છતાં

उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकारपरक्कमे सद्धा धिई संवेगे' यावदस्ति उत्थानं कर्म बलं वीर्यं पुरुषकारपराक्रमः श्रद्धा धृतिः संवेगः=यावत्कालपर्यन्तं मयि उत्थानादिशक्तिरस्तीति भावः, 'ताव मे सेयं' तावन्मे श्रेयः=तावदेव ममैतदुचितं यत् 'कल्लं जाव जलंते' कल्ये यावज्ज्वलति=आगामिनि दिवसे यावज्ज्वलति=सूर्योदये सति 'अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता' आर्यचन्दनामार्यामापृच्छ्य, 'अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भुणुन्नायाए समाणीए संलेहणाझूसणाझूसियाए' आर्यचन्दनया आर्यया अभ्यनुज्ञातायाः सत्याः संलेखनाजोषणाजुष्टायाः 'भत्तपाणपडियाइक्खियाए कालं अणवकंखमाणीए विहरेत्तए' भक्तपानप्रत्याख्यातायाः कालमनवकाङ्क्षन्त्या विहर्तुम्, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा 'एवं संपेहेइ' एवं संप्रेक्षते=उक्तरूपेण विचारयति, 'संपेहित्ता' संप्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्लं' कल्ये द्वितीयदिवसे 'जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ' यत्रैवार्यचन्दनाऽऽर्या तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' उपागत्याऽऽर्यचन्दनामार्यां वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-'इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणीए संलेहणा जाव विहरेत्तए' इच्छामि खलु हे आर्याः! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती संलेखना यावद् विहर्तुम्। आर्यचन्दनाऽऽर्या प्राह-'अहासुहं देवाणुप्पिया!

शरीर तपस्या के कारण अत्यन्त कृश होगया, तो भी मुझमें उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पौरुष, पराक्रम, श्रद्धा, धृति और संवेग आदि विद्यमान है। इसलिये मुझे उचित है कि कल सूर्योदय होते ही आर्यचन्दनबाला आर्या को पूछकर उनकी आज्ञा से संलेखना-जोषणा को सेवित करती हुई, भक्तपान का प्रत्याख्यान कर, मृत्यु को न चाहती हुई विचरण करूँ। ऐसा विचार कर सूर्योदय होते ही आर्यचन्दनबाला आर्या के समीप आयी और वन्दन-नमस्कार कर हाथ जोड इस प्रकार बोली-हे आर्ये! आपकी आज्ञा प्राप्त कर संलेखना आदि करती हुई विचरना चाहती हूँ! आर्यचन्दनबाला

મારામાં ઉત્થાન, કર્મ, બલ, વીર્ય, પૌરૂષ, પરાક્રમ, શ્રદ્ધા, ધૃતિ અને સંવેગ આદિ વિદ્યમાન છે. તેથી મારે માટે એ ઉચિત છે કે કાલે સૂર્યોદય થતાંજ આર્યચંદનબાળા આર્યાને પૂછીને તેમની આજ્ઞાથી સંલેખના-જોષણાનું સેવન કરતી, ભકતપાનનું પ્રત્યાખ્યાન કરી, મૃત્યુની ચાહના વગર વિચરણ કરૂં. એવો વિચાર કરી સૂર્યોદય થતાંજ આર્યચન્દનબાળા આર્યાની પાસે આવી અને વંદન-નમસ્કાર કરી હાથ જોડી આ પ્રકારે બોલી-હે આર્યે! આપની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને સંલેખના આદિ કરતી થકી

मा पडिबंधं करेह' यथासुखं हे देवानुप्रिये ! मा प्रतिबन्धं कुरु। 'तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी' ततः काली आर्या आर्यचन्दनया अभ्यनुज्ञाता सती=आज्ञप्ता सती, 'संलेहणाझूसणाझूसिया जाव विहरइ' संलेखनाजोषणाजुष्टा यावद् विहरति। 'सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अंतिए' सा काली आर्या आर्यचन्दनाया अन्तिके 'सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं अट्ठ संवच्छराइं' सामायिकादीनि एकादश अङ्गानि अधीत्य बहुप्रतिपूर्णान् अष्ट संवत्सरान् 'सामण्णपरियागं पाउणित्ता' श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा 'मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता' मासिक्या संलेखनया आत्मानं जोषित्वा 'सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ' षष्टिं भक्तानि अनशनया छित्त्वा यस्यार्थाय क्रियते 'नग्गभावे' नग्नभावः = नग्नभाव इति स्थविरकल्पित्वं, 'जाव चरिमुस्सासणीसासेहिं सिद्धा' यावच्चरमोच्छ्वासनिःश्वासैः सिद्धा ॥ सू० ७ ॥

[कालीनामकं प्रथममध्ययनं संपूर्णम्]

आर्या ने इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुम्हें सुख हो वैसा करो। आर्यचन्दनबाला आर्या से आज्ञा पायी हुई वह काली आर्या अपने पूर्वोक्त विचार के अनुसार विचरने लगी। काली आर्याने आर्यचन्दनबाला आर्या के समीप सामायिकादिक ग्यारह अंगों का अध्ययन कर पूरे आठ वर्ष तक श्रामण्यपर्याय का पालन किया। अन्त में मासिक संलेखना से आत्मा को सेवित कर साठ भक्तों को अनशन से छेदित कर जिसलिये संयम ग्रहण किया उस अर्थ को अपने अन्तिम उच्छ्वास-निःश्वासों के द्वारा प्राप्त कर सिद्ध होगयी ॥ सू० ७ ॥

[प्रथम अध्ययन समाप्त]

વિચરણ કરવા ચાહું છું. આર્યચંદનબાળા આર્યાએ આ પ્રકારે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયે ! જેમ તમને સુખ થાય તેમ કરો. આર્યચંદનબાળા આર્યાની આજ્ઞા મેળવી તે કાલી આર્યા પોતાના પૂર્વોક્ત વિચાર પ્રમાણે વિચરવા લાગી. કાલી આર્યાએ આર્યચંદનબાળા આર્યા પાસે સામાયિકાદિક અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કરી પૂરાં આઠ વર્ષ સુધી શ્રામણ્યપર્યાયનું પાલન કર્યું. અંતમાં માસિક સંલેખનાથી આત્માને સેવિત કરી સાઠ ભક્તોને અનશનથી છેદિત કરી જે માટે સંયમ ગ્રહણ કર્યો હતો તે અર્થને પોતાના અંતિમ ઉચ્છ્વાસનિઃશ્વાસો દ્વારા પ્રાપ્ત કરી સિદ્ધ થઇ ગઇ. (સૂ૦ ૭)

[પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત]

॥ मूलम् ॥

उक्खेवओ बीयस्स अज्झयणस्स। एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं णयरी, पुण्णभद्दे चेइए, कोणिए राया। तत्थ णं सेणियस्स रण्णो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था। जहा काली तहा सुकाली वि णिक्खंता जाव बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तए णं सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा जाव इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। एवं जहा रयणावली तहा कणगावलीवि, णवरं तिसु ठाणेसु अट्ठमाइं करेइ, जहा रयणावलीए छट्ठाइं, एक्काए परिवाडीए संवच्छरो पंच मासा अट्ठारस दिवसा, सेसं तहेव। नव वासा परियाओ जाव सिद्धा ॥ सू० ८ ॥

[सुकालीणामं बीयमज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'उक्खेवओ' इत्यादि। 'उक्खेवओ बीयस्स अज्झयणस्स' उत्क्षेपको द्वितीयस्य अध्ययनस्य, उत्क्षेपकः = प्रारम्भवाक्यं, 'यदि खलु भदन्त!'

[द्वितीय अध्ययन]

द्वितीय अध्ययन का आरम्भ करते हैं-जम्बू स्वामीने सुधर्मा स्वामी से पूछा-हे भदन्त! भगवान महावीर के द्वारा प्ररूपित अन्तकृत के आठवें वर्ग के प्रथम अध्ययन का भाव मैंने आपके मुख से सुना, अब इसके बाद भगवानने द्वितीय अध्ययन में किस भावका निरूपण किया है?

[દ્વિતીય અધ્યયન]

દ્વિતીય અધ્યયનનો પ્રારંભ કરીએ છીએ. જંબૂ સ્વામીએ સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યું-હે ભદન્ત! ભગવાન મહાવીર દ્વારા પ્રરૂપિત અન્તકૃતના આઠમા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો ભાવ મેં આપના મુખથી સાંભળ્યો. હવે તે પછી ભગવાને દ્વિતીય અધ્યયનમાં કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે?

इत्यादि बोध्यम्। सुधर्मा स्वामी प्राह- 'एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं णयरी, पुण्णभद्दे चेइए, कोणिए राया' एवं खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी, तत्र पूर्णभद्रं चैत्यं, कूणिको राजाऽऽसीत्। 'तत्थ णं सेणियस्स रण्णो भज्जा' तत्र खलु श्रेणिकस्य राज्ञो भार्या 'कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया' कोणिकस्य राज्ञः क्षुल्लमाता, क्षुल्लमाता= लघुमाता; 'सुकाली नामं देवी होत्था' सुकाली नाम देवी आसीत्। 'जहा काली तहा सुकाली वि णिक्खंता' यथा काली तथा सुकाल्यपि निष्क्रान्ता= कालीवत् सुकाली देव्यपि परिव्रजिता 'जाव बहूहिं चउत्थ जाव' यावद् बहुभिश्चतुर्थ यावत्=चतुर्थभक्तादिभिः 'अप्पाणं भावेमाणी विहरइ' आत्मानं भावयन्ती विहरति। 'तए णं सा सुकाली अज्जा' ततः खलु सा सुकाली आर्या 'अण्णया कयाइं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा जाव' अन्यदा कदाचिद् यत्रैव आर्यचन्दना आर्या यावत्=यत्र आर्यचन्दनाऽऽर्याऽऽसीत् तत्र गत्वा तामवदत्-'इच्छामि णं अज्जाओ!' इच्छामि खलु हे आर्याः! 'तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए' युष्माभिर-

---

सुधर्मा स्वामीने कहा-हे जम्बू! उस काल उस समय में चम्पा नामकी नगरी थी। उसमें पूर्णभद्र नामक चैत्य था। उस नगरी के राजा कोणिक थे। वहाँ पर राजा श्रेणिक की भार्या एवं राजा कूणिक की छोटी माता सुकाली नामकी देवी (रानी) थी। जिस प्रकार काली देवी प्रव्रजित हुई, उसी प्रकार सुकाली देवी भी प्रव्रजित हुई और बहुत सी चतुर्थभक्त आदि तपस्या करती हुई विचरने लगी।

उसके बाद एक समय सुकाली आर्या जहाँ आर्यचन्दनबाला आर्या थी वहाँ गयी और वन्दन नमस्कार कर हाथ जोड इस प्रकार बोली-हे महाभागा! आपकी आज्ञा प्राप्त कर कनकावली

સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું - હે જંબૂ! તે કાલ તે સમયે ચમ્પા નામે નગરી હતી, તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામનું ચૈત્ય હતું. તે નગરીના રાજા કોણિક હતા. ત્યાં રાજા શ્રેણિકની ભાર્યા અને રાજા કૂણિકની નાની માતા સુકાલી નામની દેવી (રાણી) હતી. જેમ કાલી દેવી પ્રવ્રજિત થઇ તેજ પ્રકારે સુકાલી દેવી પણ પ્રવ્રજિત થઇ, અને ચતુર્થભક્ત આદિ ઘણાં પ્રકારની તપસ્યા કરતી વિચરવા લાગી.

ત્યારપછી એક સમય સુકાલી આર્યા જ્યાં આર્યચંદનબાળ આર્યા હતી ત્યાં ગઇ, અને વંદન નમસ્કાર કરી હાથ જોડી બોલી - હે મહાભાગા! આપની આજ્ઞા પ્રાપ્ત

ऽभ्यनुज्ञाता सती कनकावलीतपःकर्म उपसंपद्य विहर्तुम्। 'एवं जहा रयणावली तहा कणगावली वि' एवं यथा रत्नावली तथा कनकावल्यपि = रत्नावली-तपःसदृशं कनकावलीतपोऽपि विज्ञेयम्। रत्नावलीतः 'णवरं' अयं विशेषः, यत् कनकावल्यां 'तिसु ठाणेसु' त्रिषु स्थानेषु 'अट्ठमाइं करेइ' अष्टमानि करोति, 'जहा रयणावलीए छट्ठाइं' यथा रत्नावल्यां षष्ठानि = यथा रत्नावलीतपसि षष्ठानि क्रियन्ते तथैवाऽत्राष्टमानीति भावः। 'एक्काए परिवाडीए संवच्छरो पंच मासा अट्ठारस दिवसा' एकस्यां परिपाट्यां संवत्सरः पञ्च मासाः अष्टादश दिवसाः। 'सेसं तहेव' शेषं तथैव = उक्तादन्यत्सर्वं रत्नावलीतपोवद् विज्ञेयम्। 'नव वासा परियाओ जाव सिद्धा' नव वर्षाणि पर्यायो यावत् सिद्धा = अस्याः सुकाल्या आर्याया दीक्षापर्यायो नव वर्षाणि, अनन्तरं काली-वदेव सिद्धिं गता ॥ सू० ८ ॥

[सुकालीनामकं द्वितीयमध्ययनं सम्पूर्णम्]

तपस्या करती हुई विचरना चाहती हूँ। उत्तर में उन्होंने कहा— जैसे तुम्हें सुख हो वैसे करो। तदनन्तर उन सुकाली आर्याने जिस प्रकार काली आर्या ने 'रत्नावली' तपस्या की आराधना की थी उसी प्रकार 'कनकावली' तपस्या की आराधना की। रत्नावली से कनकावली में विशेषता यह है कि जहाँ रत्नावली में बेला किया जाता है वहाँ कनकावली में तेला किया जाता है। एक परिपाटी में एक वर्ष पाँच मास अठारह दिन लगते हैं। अवशिष्ट प्रथम अध्ययन के समान जानना। इनका चारित्रपर्याय नौ वर्ष का था और उसके बाद उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया ॥ सू० ८ ॥

[द्वितीय अध्ययन समाप्त]

કરી કનકાવલી તપસ્યા કરતી વિચરવા ચાહું છું. જવાબમાં તેમણે કહ્યું-જેમ તમને સુખકર પ્રતીત થાય (લાગે) તેમ કરો. પછી તે સુકાલી આર્યાએ જેવી રીતે કાલી આર્યાએ 'રત્નાવલી' તપસ્યાની આરાધના કરી હતી તેજ રીતે 'કનકાવલી' તપસ્યાની આરાધના કરી. રત્નાવલીથી કનકાવલીમાં વિશેષતા એ છે કે જ્યાં રત્નાવલીમાં છઠ કરાય છે ત્યાં કનકાવલીમાં અઠ્ઠમ કરાય છે. એક પરિપાટીમાં એક વર્ષ પાંચ માસ અઢાર દિવસ લાગે છે. બાકીનું પ્રથમ અધ્યયનના પ્રમાણેજ જાણવું. એમનું ચારિત્ર-પર્યાય નવ વર્ષનો હતો, અને ત્યારપછી તેમણે મોક્ષ પ્રાપ્ત કર્યો (સૂ૦ ૮)

[દ્વિતીય અધ્યયન સમાપ્ત]

॥ मूलम् ॥

एवं महाकाली वि; णवरं खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा-चउत्थं करेइ करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकागगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउद्दसं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुयियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामणिगुयं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ,करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा, चउण्हं दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा ।

[महाकालीणामं तइयं अज्झयणं समत्तं]

एवं कण्हावि, णवरं महालयं सीहणिक्कीलियं तवोकम्मं जहेव खुड्डागं, णवरं चोत्तीसइमं जाव णेयव्वं, तहेव ऊसारेयव्वं, एक्काए वरिसं छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउण्हं छ वरिसा दो मासा बारस य अहोरत्ता, सेसं जहा कालीए जाव सिद्धा ॥ ४ ॥ सू० ९ ॥

[कण्हाणामं चउत्थं अज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'एवं' इत्यादि । 'एवं महाकाली वि' एवं महाकाल्यपि = यथा सुकाली प्रव्रजिता तथैव महाकाल्यपि प्रव्रजिता । अनन्तरं सुकालीवदेव एषाऽपि

अब तीसरा अध्ययन कहते हैं –

जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा—हे भदन्त ! भगवान महावीर प्रभु के द्वारा प्ररूपित अन्तकृतनामक आठवें अंग के

હવે ત્રીજું અધ્યયન કહીએ છીએ :–

જંબૂસ્વામીએ સુધર્મા સ્વામીને પૂછયું-ભદન્ત ! ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દ્વારા પ્રરૂપિત

आर्यचन्दनामापृच्छ्य, तदाज्ञया तपः करोति 'णवरं' पूर्वस्मादयं विशेषो यद् महाकाली 'खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' क्षुल्लकं सिंहनिष्क्रीडितं तपःकर्म उपसम्पद्य विहरति। क्षुल्लकसिंहनिष्क्रीडिततपःप्रकार-माह-'तं जहा' तद्यथा-'चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' चतुर्थं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वका-मगुणियं पारेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्व-कामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा दशमं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, कृत्वा सर्वकामगु-णितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं

द्वितीय अध्ययन संबन्धी भावों को आपके मुख से सुना, अब उसके बाद भगवान महावीर के द्वारा प्ररूपित तृतीय अध्ययन के भावों को सुनना चाहता हूं। सुधर्मा स्वामीने कहा - हे जम्बू! इस वर्ग के तृतीय अध्ययन में महाकाली देवी के चरित का वर्णन है। यह राजा श्रेणिक की पत्नी एवं कूणिक की छोटी माता थीं। इन्होंने भी सुकाली के समान दीक्षा धारण की और 'लघुसिंह-निष्क्रीडित' नामक तप किया। वह इस प्रकार - सर्व प्रथम उपवास किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके उपवास किया। पारणा करके तेला किया, यों बेला, चौला, तेला, चौला, पचौला,

---

અંતકૃત નામના આઠમા અંગના દ્વિતીય અધ્યયન સંબંધી ભાવોનું આપના મુખેથી શ્રવણ કર્યું, હવે ત્યારપછી ભગવાન મહાવીર દ્વારા પ્રરૂપિત તૃતીય અધ્યયનના ભાવોને સાંભળવાની મારી ઇચ્છા છે. સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું - હે જંબૂ! આ વર્ગના ત્રીજા અધ્યયનમાં મહાકાલી દેવીના ચરિતનું વર્ણન છે. એ રાજા શ્રેણિકની પત્ની અને કૂણિકની નાની માતા હતી. તેમણે પણ સુકાલીની પેઠેજ દીક્ષા ધારણ કરી અને 'લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિત' નામનું તપ કર્યું. તે આ પ્રકારે - સર્વથી પહેલાં ઉપવાસ કર્યો, પારણું કરીને છઠ કર્યું, પારણું કરી ઉપવાસ કર્યો, પારણું કરી અઠ્ઠમ કર્યું, એમ

करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्व-कामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, कृत्वा सर्व-कामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्व-कामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, कृत्वा सर्व-कामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठार-समं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोल-समं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणियं पारयति, 'पारित्ता चउद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्व-कामगुणियं पारेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता

छ, पाँच, सात, छ, आठ, सात, नौ, आठ, नौ, सात, आठ, छ, सात, पाँच, छ, चौला, पचौला, तेला, चौला, बेला, तेला, उपवास,

છઠ, ચોલા, અઠ્ઠમ પચોલા, ચૌલા, છ, પાંચ, સાત, છ, આઠ, સાત, નવ, આઠ, નવ, સાત, આઠ, છ, સાત, પાંચ, છ, ચૌલા, પચોલા, અઠમ, ચૌલા, છઠ, અઠમ, ઉપવાસ,

अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा दशमं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता' पारयित्वा, 'तहेव चत्तारि परिवाडीओ' तथैव चतस्रः परिपाट्यः, यथा प्रथमा परिपाटी, तथैव अन्या अपि तिस्रो बोद्धव्याः, 'एक्काए परिवाडीए' एकस्यां परिपाट्यां कालः 'छम्मासा सत्त य दिवसा' षण्मासाः सप्त च दिवसा भवन्ति। 'चउण्हं' चतसृणां परिपाटीनां कालः 'दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा' द्वे वर्षे अष्टाविंशतिश्च दिवसा भवन्ति, 'जाव सिद्धा' यावत् सिद्धा=चतुःपरिपाट्यनन्तरम् आर्यचन्दनार्याज्ञया संलेखनादिकं कृत्वा सिद्धिं गता।

[महाकालीनामकं तृतीयमध्ययनं समाप्तम्]

बेला और उपवास किया। इस प्रकार लघुसिंहनिष्क्रीडित तपकी एक परिपाटी की। जिसमें तेंतीस दिन तो पारणे किये और पूरे पाँच महीने एवं चार दिन की तपस्या हुई। यों चार परिपाटी इनने की। जिसमें दो वर्ष अट्ठाईस दिन लगे।

इस प्रकार लघुसिंहनिष्क्रीडित तप की उन महाकाली आर्या ने सूत्रोक्त विधि से आराधना की। तत्पश्चात् फिर भी उन आर्याजी ने फुटकर कई तपस्यायें की। अन्तिम समय में सन्थारा करके कर्मों का सम्पूर्ण नाश होजाने पर वे मोक्ष में पहुँचीं।

છઠ અને ઉપવાસ કર્યા. આ પ્રકારે 'લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિત તપ'ની એક પરિપાટી કરી. જેમાં તેત્રીસ દિવસ તો પારણા કર્યા અને પૂરા પાંચ મહિના અને ચાર દિવસની તપસ્યા થઈ. એવી ચાર પરિપાટી એમણે કરી જેમાં બે વર્ષ અઠ્ઠાવીસ દિવસ લાગ્યા.

આ પ્રકારે લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિત તપની તે મહાકાલી આર્યાએ સૂત્રોક્તવિધિથી આરાધના કરી. ત્યારપછી ફરી પણ તે આર્યાજીએ પરચુરણ કેટલીક તપસ્યાઓ કરી. અંત સમયમાં સંથારો કરીને કર્મોનો સંપૂર્ણ નાશ થઈ જતાં તે મોક્ષમાં પહોંચી.

'एवं कण्हा वि' एवं कृष्णापि=पूर्ववदेव कृष्णापि परिव्रजिता, 'णवरं' अयं विशेषः; एषा 'महालयं सीहणिक्कीलियं तवोकम्मं' महत् सिंहनिष्क्रीडितं तपःकर्म करोति; 'जहेव खुड्डागं' यथैव क्षुल्लकं सिंहनिष्क्रीडितं तथैवेदमपि बोध्यम्, 'णवरं' अयं विशेषः; 'चोत्तीसइमं जाव णेयव्वं' चतुस्त्रिंशं यावन्नेतव्यम्, 'तहेव' तथैव 'ऊसारेयव्वं' उत्सारयितव्यं=पश्चानुपूर्व्याऽवतारयितव्यम्। अत्र महासिंहनिष्क्रीडिते तपःकर्मणि चतुर्थादारभ्य क्रमेण चतुस्त्रिंशं यावद्

इसी प्रकार कृष्णा का भी चरित जानना चाहिये। यह महाराजा श्रेणिक की पत्नी एवं महाराजा कूणिक की छोटी माता थी।

इन्होंने भी भगवान के समीप दीक्षा ली और आर्य चन्दनबाला आर्या के समीप आकर हाथ जोड इस प्रकार बोली – हे आर्ये! मैं आपकी आज्ञा प्राप्त कर 'महासिंहनिष्क्रीडित तप' करना चाहती हूँ। चन्दनबाला आर्या ने कहा–जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो, किसी प्रकार का प्रमाद मत करना। इसके बाद वह कृष्णा आर्या 'महासिंहनिष्क्रीडित तप' उसी प्रकार करने लगी, जिस प्रकार महाकाली आर्या ने 'लघुसिंहनिष्क्रीडित' तपस्या की थी। इन्होंने 'महासिंहनिष्क्रीडित तप' इस प्रकार किया, सर्व प्रथम उपवास किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके उपवास किया। यों तेला किया। बेला, चौला, तेला, पचोला, चौला, छ, पाँच, सात, छ, आठ, सात, नौ, आठ, दस, नौ, ग्यारह, दस, बारह, ग्यारह,

આ પ્રકારે કૃષ્ણાનું પણ ચરિત જાણવું જોઇએ. એ મહારાજા શ્રેણિકની પત્ની અને મહારાજા કૂણિકની નાની માતા હતી. તેમણે પણ ભગવાનની પાસે દીક્ષા લીધી અને આર્ય ચંદનબાલા આર્યાની પાસે આવીને હાથ જોડી આ પ્રકારે બોલી – હે આર્યે! હું આપની આજ્ઞા મેળવીને 'મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપ' કરવા ચાહું છું. ચંદનબાળા આર્યાએ કહ્યું – જેવી તમારી ઇચ્છા હોય તેમ કરો, કોઇ પ્રકારે પ્રમાદ ન કરશો.

ત્યારપછી તે કૃષ્ણા આર્યા 'મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપ' તેજ પ્રકારે કરવા લાગી કે જે પ્રકારે મહાકાલી આર્યાએ 'લઘુસિંહનિષ્ક્રીડિત તપસ્યા' કરી હતી. એમણે 'મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત તપ' આ પ્રકારે કર્યું. સર્વ પહેલાં ઉપવાસ કર્યો. પારણું કરીને છઠ કર્યું, પારણું કરીને ઉપવાસ કર્યો. એવીજ રીતે અટ્ઠમ કર્યું. છઠ, ચૌલા, અઠમ, પચોલા, ચૌલા, છ, પાંચ, સાત, છ, આઠ, સાત, નવ, આઠ, દશ, નવ, અગીયાર, દશ, બાર, અગીયાર, તેર, બાર, ચૌદ, તેર, પંદર, ચૌદ, સોળ, પંદર, સોળ, ચૌદ, પંદર,

गन्तव्यम्, पुनः पश्चानुपूर्व्या ततश्चतुर्थं आगत्य पारणीयमिति भावः। अस्य तपसः एकस्या पारिपाट्याः कालः 'वरिसं छम्मासा अट्ठारस य अहोरत्ता' वर्षं षण्मासा अष्टादश च अहोरात्राणि, वर्षम्=एकवर्षम्; 'चउण्हं' चतसृणां परिपाटीनां कालः 'छ वरिसा दो मासा बारस य अहोरत्ता' षड्वर्षाणि द्वौ मासौ द्वादश च दिवसाः। 'सेसं' शेषम्=अवशिष्टं 'जहा कालीए जाव सिद्धा' यथा काल्या यावत् सिद्धा। अस्याः कृष्णाया आर्याया वर्णनं काली-वर्णनवदेव विज्ञेयम्। यथा सा सिद्धा तथैवेयमपि ॥ सू० ९ ॥

[कृष्णानामकं चतुर्थमध्ययनं समाप्तम्]

तेरह, बारह, चौदह, तेरह, पन्द्रह, चौदह, सोलह, पन्द्रह, सोलह, चौदह, पन्द्रह, तेरह, चौदह, बारह, तेरह, ग्यारह, बारह, दस, ग्यारह, नौ, दस, आठ, नौ, सात, आठ, छ, सात, पाँच, छ, चौला, पाँच, तेला, चौला, बेला, तेला, उपवास, बेला, और फिर पारणा करके उपवास किया। इस प्रकार एक परिपाटी की। जिसमें उन सतीजीने इकसठ पारणे किये और पूरे २ एक वर्ष चार महीने तथा सत्रह दिन अर्थात् चार सौ सतानवे दिन तपस्या की। ऐसी एक परिपाटी करके साथ ही साथ दूसरी, तीसरी और चौथी परिपाटी भी की। जिसमें छ वर्ष दो महिने और बारह दिन लगे। इस प्रकार कृष्णा आर्याजीने 'महासिंहनिष्क्रीडित' तपस्या विधि-पूर्वक करके फिर भी कई फुटकर तपस्यायें कीं। अन्तिम समय में सन्थारा करके काली आर्या के समान ये भी मोक्ष में पहुँचीं ॥ सू० ९ ॥

તેર, ચૌદ, બાર, તેર, અગીયાર, બાર, દશ, અગીયાર, નવ, દશ, આઠ, નવ, સાત, આઠ, છ, સાત, પાંચ, છ, ચાર, પાંચ, અઠમ, ચાર, છઠ, આઠમ, ઉપવાસ, છઠ અને પછી પારણું કરી ઉપવાસ કર્યો. આ પ્રકારે એક પરિપાટી કરી, જેમાં તે સતીજીએ એકસઠ પારણાં કર્યાં, અને પૂરેપૂરાં એક વર્ષ ચાર મહિના તથા સત્તર દિવસ અર્થાત ચારસો સતાણું દિવસ તપસ્યા કરી. એવી એક પરિપાટી કરી તેની સાથે સાથેજ બીજી ત્રીજી અને ચોથી પરિપાટી પણ કરી. જેમાં છ વર્ષ બે મહિના અને બાર દિવસ લાગ્યા. આ પ્રકારે કૃષ્ણા આર્યાજીએ 'મહાસિંહનિષ્ક્રીડિત' તપસ્યા વિધિપૂર્વક કરીને ફરીપણ કેટલીક પરચુરણ તપસ્યાઓ કરી. અંતિમ સમયે સંથારો કરી કાલી આર્યાની પેઠે તે પણ મોક્ષમાં ગઇ (સૂ૦ ૯)

॥ मूलम् ॥

एवं सुकण्हा वि, णवरं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स, दोच्चे सत्तए-दो दो भोयणस्स दो दो पाणगस्स पडिगाहेइ, तच्चे सत्तए-तिण्णि भोयणस्स तिण्णि पाणगस्स, चउत्थे चउ, पंचमे-पंच, छट्ठे-छ, सत्तमे सत्तए-सत्त दत्तीओ भोयणस्स पडिग्गाहेइ, सत्त पाणगस्स। एवं खलु सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए राइंदिएहिं एगेण य छन्नउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया, अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता विहरित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेह ॥ सू० १० ॥

॥ टीका ॥

एवं इत्यादि। 'एवं सुकण्हा वि' एवम्=अनेन प्रकारेण-पूर्वोक्तप्रकारेण सुकृष्णाऽपि ज्ञातव्या। सुकृष्णाऽपि कालीवदेव प्रव्रजितेति भावः।

हे जम्बू! इसी प्रकार सुकृष्णा का भी चरित जानना चाहिए। यह भी राजा श्रेणिक रानी और महाराजा कूणिक की छोटी माता थी। यह भी भगवान् के समीप धर्मकथा सुनकर प्रव्रजित होगयी और आर्या चन्दनबाला के समीप आकर हाथ जोडकर बोली-हे आर्ये! मैं 'सप्तसप्तमिका भिक्षुप्रतिमा' तप करना चाहती हूँ। आर्या चन्दनबाला ने कहा-हे देवानुप्रिये!

હે જંબૂ! એજ પ્રકારે સુકૃષ્ણાનું પણ ચરિત જાણવું જોઇએ. તે પણ રાજા શ્રેણિકની રાણી અને મહારાજા કૂણિકની નાની માતા હતી. તે પણ ભગવાનની પાસે ધર્મકથા સાંભળીને પ્રવ્રજિત થઇ ગઇ અને આર્યા ચંદનબાળાની પાસે આવીને હાથ જોડી બોલી-હે આર્યે! હું 'સપ્તસપ્તમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા' તપ કરવા ચાહું છું. આર્યા ચંદનબાળાએ કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયે! જેવી તમારી ઇચ્છા હોય તેમ કરો, કોઇ પ્રકારનો

'णवरं' अयं विशेषः-यदेषा 'सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' सप्तसप्तमिकां भिक्षुप्रतिमाम् उपसंपद्य विहरति। 'पढमे सत्तए' प्रथमे सप्तके= सप्तदिवसपरिमिते काले 'एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स' एकैकां भोजनस्य दत्तिं प्रतिगृह्णाति=स्वीकरोति, तथा एकैकां पानकस्य दत्तिं प्रतिगृह्णाति, 'दोच्चे सत्तए' द्वितीये सप्तके-'दो दो भोयणस्स, दो दो पाणगस्स पडिगाहेइ' द्वे द्वे भोजनस्य, द्वे द्वे पानकस्य दत्ती प्रतिगृह्णाति। 'तच्चे सत्तए' तृतीये सप्तके-'तिण्णि भोयणस्स, तिण्णि पाणगस्स' तिस्रो भोजनस्य, तिस्रः पानकस्य दत्तीः प्रतिगृह्णाति। एवं 'चउत्थे चउ' चतुर्थे चतस्रः, 'पंचमे पंच' पञ्चमे पञ्च, 'छट्ठे छ' षष्ठे षट्, 'सत्तमे सत्तए सत्त दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेइ' सप्तमे सप्तके सप्त दत्तीर्भोजनस्य प्रतिगृह्णाति, 'सत्त पाणगस्स' सप्त पानकस्य प्रतिगृह्णाति। 'एवं खलु सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए राइंदिएहिं' एवं खलु सप्तसप्तमिकां भिक्षुप्रतिमामेकोनपञ्चाशता रात्रिन्दिवैः, 'एगेण य छण्णउएणं भिक्खासएणं' एकेन च षण्णवत्यधिकेन भिक्षाशतेन=भोजनपानरूपाया भिक्षायाः षण्णवत्यधिकेन एकेन शतेन, 'अहासुत्तं जाव

जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसा ही करो, किसी प्रकार का प्रमाद मत करना। अनन्तर वह सुकृष्णा आर्या 'सप्तसप्तमिका भिक्षुप्रतिमा' तप करने लगीं। वह इस प्रकार है-वह कृष्णा आर्या प्रथम सप्ताह के प्रत्येक दिन में गृहस्थों के द्वारा दी हुई एक दात अन्नकी और एक दात पानी की ली। इसी प्रकार द्वितीय सप्ताह के प्रत्येक दिनमें दो दात अन्न की और दो दात पानी की, तीसरे सप्ताहमें तीन दात, चौथे सप्ताह में चार दात, पांचवें में पांच, छठे में छह एवं सातवें सप्ताह में सात दात अन्नकी और सात दात पानी की ली। इस प्रकार उन्होंने 'सप्तसप्तमिका भिक्षु-प्रतिमा' तप की उनचास रातदिन में एक सौ छियानवे भिक्षा

પ્રમાદ ન કરો. પછી તે સુકૃષ્ણા આર્યા 'સપ્તસપ્તમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા' તપ કરવા લાગી. તે આ પ્રકારે – તે સુકૃષ્ણા આર્યાએ પ્રથમ સપ્તાહમાં પ્રત્યેક દિવસે ગૃહસ્થો દ્વારા આપવામાં આવેલ એક દાત અન્નની એક દાત પાણીની લીધી. એજ પ્રકારે બીજા સપ્તાહના પ્રત્યેક દિવસમાં બે દાત અન્નની અને બે દાત પાણીની, તથા ત્રીજા સપ્તાહમાં ત્રણ દાત, ચોથા સપ્તાહમાં ચાર દાત, પાંચમામાં પાંચ, છટ્ઠામાં છ અને સાતમા સપ્તાહમાં સાત દાત અન્નની સાત દાત પાણીની લીધી. આ પ્રકારે તેમણે 'સપ્તસપ્તમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા' તપની ઓગણપચાસ રાતદિવસમાં એકસો છન્નું ભિક્ષા

आराहित्ता' यथासूत्रं यावत् आराध्य=पूर्वोक्तक्रमेण एकोनपञ्चाशता रात्रिन्दिवैः षण्णवत्यधिकेन भिक्षाशतेन एषा सप्तसप्तमिका भिक्षुप्रतिमा सूत्रानुसारेण प्रज्ञप्ता, अशनपानयोराहाररूपेणैकत्वात्प्रथमे सप्तके सप्त दत्तयः, द्वितीये चतुर्दश, तृतीये एकविंशतिर्दत्तयः-इत्येवं क्रमेण सप्तसप्तमिकायां संमेलनेन दत्तीनां षण्णवत्यधिकमेकशतं संख्या भवति। एतां सप्तसप्तमिकां भिक्षुप्रतिमां समाराध्य 'जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया' यत्रैव आर्यचन्दनाऽऽर्या तत्रैवोपागता, 'अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी' आर्यचन्दनामार्यां वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-'इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी' इच्छामि खलु हे आर्याः! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती, 'अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं' अष्टाष्टमिकां भिक्षुप्रतिमाम् उपसंपद्य खलु 'विहरेत्तए' विहर्तुम्। चन्दनबालाऽऽर्या प्राह- 'अहासुहं देवाणुप्पिए! मा पडिबंधं करेह' यथासुखं देवानुप्रिये! मा प्रतिबन्धं कुरु ॥ सू० १० ॥

(दात) के आधार पर सूत्रानुसार आराधना की। अशनपान की अभेदविवक्षा से प्रथम सप्ताह में सात दातें हुई, दूसरे में चौदह, तीसरे में इक्कीस, चौथे में अट्ठाईस, पाँचवें में पैंतीस, छठे में ब्यालीस, सातवें में उनचास; इस प्रकार सब मिलाकर एक सौ छियानवे भिक्षायें होती हैं।

अनन्तर सुकृष्णा आर्या आर्यचन्दनबाला आर्या के पास आयी और वन्दन नमस्कार किया बाद में इस प्रकार बोली-हे आर्ये! आपकी आज्ञा प्राप्त कर, 'अष्टअष्टमिका भिक्षुप्रतिमा' करना चाहती हूँ। आर्य चन्दनबाला आर्या ने कहा - हे देवानुप्रिये! जैसे तुम्हें सुख हो वैसा करो, किसी प्रकार का प्रमाद मत करना ॥ सू० १० ॥

(દાત)ના આધાર પર સૂત્રપ્રમાણે આરાધના કરી. અશનપાનની અભેદ વિવક્ષાથી પ્રથમ સપ્તાહમાં સાત દાતો થઈ, બીજામાં ચૌદ, ત્રીજામાં એકવીશ, ચોથામાં અઠ્ઠાવીશ, પાંચમામાં પાંત્રીશ, છઠ્ઠામાં બેતાલીશ, સાતમમાં ઓગણપચાશ. એ પ્રકારે બધી મળીને એકસો છન્નુ ભિક્ષા થાય છે.

તે પછી સુકૃષ્ણા આર્યા આર્યચંદનબાલા આર્યા પાસે આવી અને વંદન-નમસ્કાર કર્યા પછી આ પ્રકારે બોલી - હે આર્યે! આપની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને અષ્ટઅષ્ટમિકા ભિક્ષુ-પ્રતિમા' તપ કરવા ચાહું છું. આર્યચંદનબાલા આર્યાએ કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયે! જેમ તને સુખ થાય તેમ કરો, કોઈ પ્રકારે પ્રમાદ ન કરશો. (સૂ० ૧૦)

॥ मूलम् ॥

तए णं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठअट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ, एक्केक्कं पाणगस्स दत्तिं जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ, अट्ठट्ठ पाणगस्स। एवं खलु अट्ठट्ठमियं भिक्खुप्पडिमं चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता नवनवमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। पढमे नवए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स, जाव नवमे नवए नव नव दत्तिं भोयणस्स पडिगाहेइ नव नव पाणगस्स, एवं खलु नवनवमियं भिक्खु-पडिमं एकासीईराइंदिएहिं चउहिं पंचोत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता दसदसमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। पढमे दसए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स जाव दसमे दसए दस दस भोयणस्स, दस दस पाणगस्स, एवं खलु एयं दसदसमियं भिक्खुपडिमं एक्केणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहेइ, आराहित्ता बहूहिं चउत्थ जाव मासद्धमासविविहतवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तए णं सा सुकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा ॥ सू० ११ ॥

[सुकण्हानामं पंचमं अज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अब्भ-णुण्णाया समाणी' ततः खलु सा सुकृष्णा आर्या आर्यचन्दनया अभ्यनुज्ञाता

उसके बाद सुकृष्णा आर्या अष्टअष्टमिका भिक्षुप्रतिमा स्वीकार

त्यारपछी सुकृष्णा आर्या 'अष्टअष्टमिका भिक्षुप्रतिमा'नो स्वीकार करी विचरवा

सती 'अट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ' अष्टाष्टमिकां भिक्षुप्रतिमाम् उपसम्पद्य खलु विहरति। 'पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स दत्तिं जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठ भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ, अट्ठ पाणगस्स' प्रथमेऽष्टक एकैकां भोजनस्य दत्तिं प्रतिगृह्णाति एकैकां पानकस्य दत्तिम्, यावदष्टमेऽष्टके अष्टाष्ट भोजनस्य दत्तीः प्रतिगृह्णाति; तथा अष्टाष्ट पानकस्य च दत्तीः स्वीकरोति। 'एवं खलु अट्ठमियं भिक्खुपडिमं चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं' एवं खलु अष्टाष्टमिकां भिक्षुप्रतिमां चतुष्पष्ट्या रात्रिन्दिवैः द्वाभ्याम् अष्टाशीत्यधिकाभ्यां भिक्षाशताभ्याम् 'अहासुत्तं जाव आराहित्ता' यथासूत्रं यावदाराध्य=पूर्वोक्तप्रकारेण अष्टाष्टमिकां भिक्षुप्रतिमां चतुष्पष्ट्याऽहोरात्रैरष्टाशीत्यधिकाभ्यां द्वाभ्यां भिक्षाशताभ्यामाराध्य, अत्रापि दत्तीनां गणना पूर्ववत्, एवमग्रेऽपि; 'नवनवमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' नवनवमिकां भिक्षुप्रतिमामुपसंपद्य विहरति। 'पढमे नवए

कर विचरने लगीं। उन्होंने प्रथम अष्टक में एक दात अन्नकी और एक दात पानी की ली। दूसरे अष्टक में दो दात अन्न की और दो दात पानी की ली। और इसी प्रकार क्रम से आठवें में आठ दात अन्न की और आठ दात पानी की ग्रहण कर उनने संयम-यात्रा का निर्वाह किया। इस प्रकार अष्टअष्टमिका भिक्षुप्रतिमारूप तपस्या की चौसठ दिनरात में दो सौ अठासी भिक्षाद्वारा सूत्रोक्त-विधि से आराधना की। भिक्षा की गणना पूर्वोक्त समान ही जानना। इसके बाद वह सुकृष्णा आर्या, आर्यचन्दनबाला आर्या के पास आकर इस प्रकार बोली–हे आर्ये! अब मेरी इच्छा है कि आपकी आज्ञा लेकर 'नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा' स्वीकार कर

લાગી. તેમણે પ્રથમ અષ્ટકમાં એક દાત અન્નની અને એક દાત પાણીની લીધી. બીજા અષ્ટકમાં બે દાત અન્નની અને બે દાત પાણીની લીધી, અને એજ રીતે ક્રમથી આઠમા અષ્ટકમાં આઠ દાત અન્નની અને આઠ દાત પાણીની ગ્રહણ કરી તેઓએ સંયમ યાત્રાનો નિર્વાહ કર્યો. આ પ્રકારે અષ્ટઅષ્ટમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા રૂપ તપસ્યા ચોસઠ દિન–રાતમાં બસો અઠયાસી ભિક્ષા દ્વારા સૂત્રોકત વિધિથી આરાધના કરી. ભિક્ષાની ગણના પૂર્વોકત જેમ જાણવી. ત્યારપછી તે સુકૃષ્ણા આર્યા આર્યચંદનબાળા આર્યાની પાસે આવીને આ પ્રકારે બોલી–હે આર્યે! હવે મારી ઇચ્છા છે કે આપની આજ્ઞા લઇને 'નવનવમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા' સ્વીકાર કરી વિચરૂં. પછી આર્ય ચંદનબાળા આર્યાની આજ્ઞાથી તે આર્યા નવનવમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા સ્વીકાર કરી વિચરવા લાગી. પ્રથમ નવકમાં એક દાત અન્નની અને એક

एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणगस्स' प्रथमे नवके एकैकां भोजनस्य दत्तिं प्रतिगृह्णाति एकैकां पानकस्य, 'जाव नवमे नवए नव नव दत्तिं भोयणस्स पडिगाहेइ नव नव पाणगस्स' यावत् नवमे नवके नव नव दत्तीर्भोजनस्य प्रतिगृह्णाति नव नव पानकस्य, 'एवं खलु नवनवमियं भिक्खुपडिमं' एवं खलु नवनवमिकां भिक्षुप्रतिमाम् 'एकासीईराइंदिएहिं चउहिं पंचोत्तरेहिं भिक्खासएहिं' एकाशीत्या रात्रिन्दिवैश्चतुर्भिः पञ्चोत्तरैर्भिक्षाशतैः= पञ्चाधिकैः चतुश्शतैरित्यर्थः; 'अहासुत्तं जाव आराहित्ता दसदसमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' यथासूत्रं यावद् आराध्य दशदशमिकां भिक्षुप्रतिमामुपसंपद्य विहरति। 'पढमे दसए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं' प्रथमे दशके एकैकां भोजनस्य दत्तिं 'पडिगाहेइ' प्रतिगृह्णाति=स्वीकरोति, 'एक्केक्कं पाणगस्स' एकैकां पानकस्य दत्तिं स्वीकरोति, 'जाव दसमे दसए दस दस भोयणस्स' यावद् दशमे दशके दश दश भोजनस्य दत्तीः प्रतिगृह्णाति, 'दस दस पाणगस्स' दश दश पानकस्य दत्तीः प्रतिगृह्णाति। 'एवं खलु एयं दसदसमियं भिक्खुपडियं एक्केणं

विचरूँ। अनन्तर की चन्दनबाला आज्ञा से वह आर्या नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा को स्वीकार कर विचरने लगी। प्रथम नवक में एक दात अन्न की और एक दात पानी की ली, एवं क्रमसे नवमें नवक में नौ दात अन्न की और नौ दात पानी की ली। यह नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा इक्यासी अहोरात्र में पूरी होती है। इसमें भिक्षाओं की संख्या चार सौ पाँच होती है। इस नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा को समाप्त कर आर्य चन्दनबाला आर्या की आज्ञा से वह सुकृष्णा आर्या 'दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा' स्वीकार कर विचरने लगी। वह दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा इस प्रकार है—उन्होंने दशदशमिका के प्रथम दशक में एक दात अन्न की और एक दात पानी की ली। इसी प्रकार दशम दशक में उन्होंने दस दात अन्न की और दस दात पानी

દાત પાણીની લીધી. એ પ્રમાણે ક્રમથી નવમા નવકમાં નવ દાત અન્નની અને નવ દાત પાણીની લીધી. આ નવનવમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા એકયાસી દિવસરાતમાં પૂરી થાય છે. આમાં ભિક્ષાઓની સંખ્યા ચારસો પાંચ થાય છે. આ નવનવમિકા ભિક્ષુપ્રતિમાને સમાપ્ત કરી આર્ય ચંદનબાળા આર્યાની આજ્ઞાથી તે સુકૃષ્ણા આર્યા દશદશમિકા ભિક્ષુપ્રતિમાનો સ્વીકાર કરી વિચરવા લાગી. તે દશદશમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા આ પ્રકારે છે-તેમણે દશદશમિકાના પ્રથમ દશકમાં એક દાત અન્નની અને એક દાત પાણીની લીધી. એ પ્રકારે દશમ દશકમાં તેમણે દશ દાત અન્નની અને દશ દાત પાણીની ગ્રહણ કરી. આ પ્રકારે

राइंदियसएणं' एवं खलु एतां दशदशमिकां भिक्षुप्रतिमाम् एकेन रात्रिन्दिवशतेन= एकशतरात्रिन्दिवसैः 'अद्धछट्ठेहिं भिक्खासएहिं' अर्धषष्टैर्भिक्षाशतैः=सार्धपञ्च-संख्यकैर्भिक्षाशतैरित्यर्थः; 'अहासुत्तं जाव आराहेइ' यथासूत्रं यावदाराधयति= सूत्रानुसारेण भिक्षुप्रतिमामाराधयतीत्यर्थः; 'आराहित्ता बहूहिं चउत्थ जाव मासद्धमासविविहतवोकम्मेहिं' आराध्य बहुभिश्चतुर्थ यावन्मासार्द्धमासविविधतपः-कर्मभिः=अनेकसंख्यकैश्चतुर्थभक्तप्रभृतिमासार्द्धमासरूपैर्विविधैस्तपःकर्मभिः 'अप्पाणं भावेमाणी विहरइ' आत्मानं भावयन्ती विहरति। 'तए णं सा सुकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा' ततः खलु सा सुकृष्णा आर्या तेन उदारेण यावत् सिद्धा = उदारेण पूर्वोक्तेन तपःकर्मणा शुष्कमांसशोणिततयाऽति-दुर्बलाङ्गी संलेखनादिना सकलकर्मक्षयं कृत्वा सिद्धिं प्राप्ता ॥ सू० ११ ॥

[सुकृष्णानामकं पञ्चममध्ययनं समाप्तम्]

॥ मूलम् ॥

एवं महाकण्हा वि, णवरं खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तं जहा--चउत्थं करेइ, करित्ता सव्व-

---

की ग्रहण की। इस प्रकार यह दशादशमिका भिक्षुप्रतिमा एक सौ दिनरात में पूरी होती है और इसमें भिक्षा की संख्या सब मिलकर साढे पाँच सौ होती है। इस प्रकार पडिमा का आराधन कर बहुत प्रकार के चतुर्थ यावत् मास, अर्द्धमास-रूप विविध तपों से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी। इन उदार और घोर तपस्या के कारण सुकृष्णा आर्या अत्यधिक दुर्बल होगयी और अन्तिम समय में सन्थारा करके, सम्पूर्ण कर्मों का नाश करके मोक्षगति को प्राप्त हुई ॥ सू० ११ ॥

[सुकृष्णानामक पंचम अध्ययन संपूर्ण]

આ દશદશમિકા ભિક્ષુપ્રતિમા એકસો દિવસરાતમાં પૂરી થાય છે, અને આમાં ભિક્ષાની સંખ્યા બધી મળીને સાડા પાંચસો થાય છે. આ પ્રકારે પડિમાનું આરાધન કરી બહુ પ્રકારના ચતુર્થ અને માસ, અર્ધમાસરૂપ વિવિધ તપોથી આત્માને ભાવિત કરતી કરતી વિચરવા લાગી. આ ઉદાર અને ઉગ્ર તપસ્યાના કારણે સુકૃષ્ણા આર્યા અત્યંત દુર્બલ થઈ ગઈ અને અંતિમ સમયે સંથારો કરી સંપૂર્ણ કર્મોનો નાશ કરી મોક્ષગતિને પ્રાપ્ત થઈ (સૂ૦ ૧૧)

[સુકૃષ્ણાનામક પંચમ અધ્યયન સંપૂર્ણ]

कामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सुव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। एवं खलु एयं खुड्डागसव्वओभद्दस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहिं दिवसेहिं अहासुत्तं जाव

आराहेत्ता, दोच्चाए पडिवाडीए चउत्थं करेइ, करित्ता, विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता जहा रयणावलीए तहा एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ, पारणा तहेव। चउण्हं कालो संवच्छरो मासो दस य दिवसा, सेसं तहेव जाव सिद्धा ॥ सू० १२ ॥

[महाकण्हानामगं छट्ठं अज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'एवं' इत्यादि। एवं महाकण्हा वि' एवं महाकृष्णाऽपि = महाकृष्णा-याश्चरितं पूर्ववद् बोध्यम्। 'णवरं' अयं विशेषः, एषा 'खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ' क्षुल्लकां सर्वतोभद्रां प्रतिमाम् उपसंपद्य विहरति, 'तं जहा' तद्यथा-'चउत्थं करेइ' चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्व-कामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्व-कामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता

इसी प्रकार राजा श्रेणिक की रानी और राजा कूणिक की छोटी माता महाकृष्णा रानी भी भगवान महावीर के समीप प्रव्रजित हुई। अनन्तर वह महाकृष्णा आर्या चन्दनबाला की आज्ञा से 'लघु-सर्वतोभद्र' तप करने लगी। वह इस प्रकार है—सर्वप्रथम उन्होंने उपवास किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके तेला किया। इसी प्रकार चोला, पचोला, तेला, चोला, पचोला, उपवास, बेला, पांच, चोला, उपवास, बेला, तेला, चोला, बेला, तेला, चोला,

તેજ પ્રમાણે રાજા શ્રેણિકનાં રાણી અને કૂણિકની નાની માતા મહાકૃષ્ણા રાણી પણ ભગવાન મહાવીરની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ પછી તે મહાકૃષ્ણા આર્યા આર્યચંદનબાળાની આજ્ઞા લઇને 'લઘુસર્વતોભદ્ર' તપ કરવા લાગી. તે આ પ્રકારે છે. સર્વથી પહેલાં તેમણે ઉપવાસ કર્યો. પારણું કરીને છઠ્ઠ કર્યું, પારણું કરીને અઠ્ઠમ કર્યું, એવી રીતે ચાર પાંચ, અઠ્ઠમ, ચાર, પાંચ, ઉપવાસ, છઠ્ઠ, પાંચ, છઠ્ઠ, પાંચ, છઠ્ઠ, અઠ્ઠમ, ચાર, છઠ્ઠ,

सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्व-कामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'परित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकाम-गुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं

पचोला, उपवास, चोला, पचोला, उपवास, बेला और तेला किया। इस प्रकार उन महाकृष्णा आर्या ने 'लघुसर्वतोभद्र' नामक तपकी एक परिपाटी पूरी की। इसमें पचहत्तर दिन तपस्या के और पचीस दिन पारणे के होते हैं। इस परिपाटी को समाप्त कर द्वितीय परिपाटी प्रारम्भ की। पर इसबार पारणा में विगय का

અટ્ઠમ, ચાર, પાંચ, ઉપવાસ, ચાર, પાંચ, ઉપવાસ, છઠ્ઠ અને અટ્ઠમ કર્યાં. આ પ્રમાણે તે મહાકૃષ્ણા આર્યાએ 'લઘુસર્વતોભદ્ર' નામના તપની એક પરિપાટી પૂરી કરી, જેમાં પિંચોત્તેર દિવસ તપસ્યાના અને પચીશ દિવસ પારણાના થાય છે. આ પરિપાટીને સમાપ્ત કરીને દ્વિતીય પરિપાટી પ્રારંભ કરી, પણ એ સમયે પારણામાં વિગયનો ત્યાગ કરી દીધો, એવી રીતે ત્રીજી પરિપાટી કરી. આના પારણામાં વિગયનો લેપમાત્ર પણ

पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। 'एवं' एवम्=पूर्वोक्तप्रकारेण खलु 'एयं खुड्डागसव्वओभद्दस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवाडिं' एतां क्षुल्लकसर्वतोभद्रस्य तपःकर्मणः प्रथमां परिपाटीं 'तिहिं मासेहिं दसहिं दिवसेहिं अहासुत्तं' त्रिभिर्मासैर्दशभिर्दिवसैर्यथासूत्रं=सूत्रोक्तविधिना 'जाव आराहित्ता' यावदाराध्य पुनः 'दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेइ, करित्ता विगइवज्जं पारेइ' द्वितीयस्यां परिपाट्यां चतुर्थं करोति, कृत्वा विकृतिवर्जं पारयति=घृतादिरहितं पारयति, 'पारित्ता जहा रयणावलीए तहा एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ' पारयित्वा यथा रत्नावल्यां तथा अत्राऽपि चतस्रः परिपाट्यः, 'पारणा तहेव' पारणा तथैव=रत्नावलीवदेव पारणा ज्ञातव्या। 'चउण्हं कालो संवच्छरो मासो दस य दिवसा' चतसृणां कालः संवत्सरो मासो दश च दिवसाः=दशदिवसाधिकैकमाससहित एकः संवत्सरः चतसृणामपि परिपाटीनां कालो विज्ञेयः। 'सेसं तहेव' शेषं तथैव=पूर्ववदेवेत्यर्थः। 'जाव सिद्धा' यावत्सिद्धा = सुकृष्णावत्सिद्धिं गता ॥ सू० १२ ॥

[महाकृष्णानामकं षष्ठमध्ययनं समाप्तम्]

त्याग कर दिया। इसी तरह तीसरी परिपाटी की। इसके पारणे में विगय का लेप मात्र भी छोड दिया। इसके बाद चौथी परिपाटी की। इसमें पारणे के दिन आयम्बिल किया। इस प्रकार उन्होंने 'लघुसर्वतोभद्र' की चारों परिपाटी की। इस तप में एक वर्ष एक मास दस दिन लगते हैं। इस प्रकार तप की आराधना करके अन्त में कर्म खपा कर सिद्ध हो गयी ॥ सू० १२ ॥

[महाकृष्णानामका सातवाँ अध्ययन समाप्त]

છોડી દીધો. ત્યારપછી ચોથી પરિપાટી કરી. આમાં પારણાને દિવસે આયંબિલ કર્યા. આ પ્રકારે તેમણે 'લઘુસર્વતોભદ્ર'ની ચારેય પરિપાટી કરી. આ તપમાં એક વર્ષ એક માસ દશ દિવસ લાગે છે. આ પ્રકારે તપની આરાધના કરીને અંતમાં કર્મ ખપાવીને સિદ્ધ થઇ ગઈ. (સૂ૦ ૧૨)

[મહાકૃષ્ણા-નામનું સાતમું અધ્યયન સમાપ્ત]

॥ मूलम् ॥

एवं वीरकण्हा वि, णवरं महालयं सव्वओभदं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तं जहा—चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउदसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पढमा लया ॥ १ ॥

दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउदसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, बीया लया ॥ २ ॥

सोलसं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामकणियं पारेइ, पारित्ता चउद्दसं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, तइया लया ॥ ३ ॥

अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। चउत्थी लया ॥ ४ ॥

चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। पंचमी लया ॥ ५ ॥

छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्व-कामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। छट्ठी लया ॥ ६ ॥

दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं

करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। सत्तमी लया ॥ ७ ॥

एक्काए कालो अट्ठ मासा पंच य दिवसा, चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीसं दिवसा । सेसं तहेव जाव सिद्धा ॥ सू० १३ ॥

[वीरकण्हानामगं सत्तमं अज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'एवं' इत्यादि । 'एवं वीरकण्हा वि' एवं वीरकृष्णाऽपि=वीरकृष्णाया अपि वर्णनमेवमेव विज्ञेयम्, 'णवरं' अयं विशेषः, एषा 'महालयं सव्वओभद्दं

अब सातवाँ अध्ययन कहते हैं-

जम्बूस्वामी ने सुधर्मास्वामी से पूछा-हे भदन्त ! भगवान महावीर के द्वारा प्ररूपित अन्तकृत के छठे अध्ययन का भाव आपके मुख से सुना, अब इसके बाद सातवें अध्ययन में भगवान ने किस भाव का निरूपण किया है ?

सुधर्मा स्वामीने कहा-हे जम्बू ! सातवें अध्ययन में वीरकृष्णा देवी का चरित है। यह श्रेणिक राजा की रानी तथा कूणिक राजा की छोटी माता थीं । इन्होंने भी भगवान महावीर के समीप धर्मकथा सुनकर प्रव्रज्या ली । प्रव्रज्या लेने के बाद वह वीरकृष्णा

હવે સાતમું અધ્યયન કહે છે.

જંબૂ સ્વામીએ સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યું-હે ભદન્ત! ભગવાન મહાવીર દ્વારા પ્રરૂપિત અન્તકૃતના છઠ્ઠા અધ્યયનનો ભાવ આપના મુખથી સાંભળ્યો. હવે પછી સાતમા અધ્યયનમાં ભગવાને કયા ભાવનું નિરૂપણ કર્યું છે?

સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું-હે જંબૂ! સાતમા અધ્યયનમાં વીરકૃષ્ણા દેવીનું ચરિત છે. એ શ્રેણિક રાજાની રાણી તથા કૂણિક રાજાની નાની માતા હતી. તેમણે પણ ભગવાન મહાવીરની પાસે ધર્મકથા સાંભળી પ્રવ્રજ્યા લીધી. પ્રવ્રજ્યા લીધા પછી તે વીરકૃષ્ણા

तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' महत् सर्वतोभद्रं तपःकर्म उपसंपद्य विहरति। 'तं जहा-चउत्थं करेइ' तद्यथा-चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउद्दसमं करेइ 'पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणितं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'पढमा लया' प्रथमा लता ॥ १ ॥

'दसमं करेइ' दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं

आर्या आर्य चन्दनबाला आर्या के पास आयी और हाथ जोड कर बोली-हे आर्ये! मैं आपसे आज्ञा प्राप्त कर 'महासर्वतोभद्र' तप करना चाहती हूँ। अनन्तर चन्दनबाला से आज्ञा प्राप्त कर उन्होंने 'महासर्वतोभद्र' तपस्या प्रारंभ की। सबसे पहले उपवास किया, पारणा करके बेला किया, पारणा करके तेला किया, यों चोला, पचोला, छ, सात किये, यह प्रथम लता हुई। दूसरी लता में उन्होंने चोला, पचोला, छ, सात, उपवास, बेला और तेला किया, यह

આર્યા આર્ય ચંદનબાળા આર્યાની પાસે આવી અને હાથ જોડીને બોલી-હે આર્યે! હું આપની આજ્ઞા મેળવીને 'મહાસર્વતોભદ્ર' તપ કરવા ચાહું છું. પછી ચંદનબાળાની આજ્ઞા મેળવી તેમણે 'મહાસર્વતોભદ્ર' તપસ્યા પ્રારંભ કરી. સૌથી પહેલાં ઉપવાસ કર્યો, પારણું કરીને છટ્ઠ કર્યું, પારણું કરીને અટ્ઠમ કર્યું, એમ ચાર, પાંચ, છ, સાત, કર્યાં આ પ્રથમ લતા થઇ, બીજી લતામાં તેમણે ચાર, પાંચ, છ, સાત, ઉપવાસ,

पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'वीया लया' द्वितीया लता ॥ २ ॥

अनन्तरं 'सोलसं करेइ' षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउद्दसं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'तइया लया' तृतीया लता ॥ ३ ॥

'अट्ठमं करेइ' अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा

दूसरी लता हुई। तीसरी लता में सात किये, सात का पारणा कर उपवास किया, फिर बेला, तेला, चोला, पचोला, छ किया, यह तीसरी लता हुई। फिर चौथी लता में तेला, चोला, पचोला, छ, सात किये, सातके पारणे उपवास, और उपवास के पारणे बेला करके

છટ્ઠ અને અટ્ઠમ કર્યાં. આ બીજી લતા થઇ, ત્રીજી લતામાં સાત કર્યા. સાતનું પારણું કરી ઉપવાસ કર્યો, પછી છટ્ઠ, અટ્ઠમ, ચાર, પાંચ, છ, ઉપવાસ કર્યાં. આ ત્રીજી લતા થઇ. ચોથી લતામાં અટ્ઠમ, ચાર, પાંચ, છ, સાત કર્યાં, સાતને પારણે ઉપવાસ, ઉપ-

चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'चउत्थी लया' चतुर्थी लता ॥ ४ ॥

'चोद्दसमं करेइ' चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'पंचमी लया' पञ्चमी लता ॥५॥

'छट्ठं करेइ' षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं

पारणा किया, यह चौथी लता हुई। पाँचवी लतामें छ, किया छ के पारणे सात किया, सात के पारणे उपवास किया, उपवास के पारणे बेला किया, इसी तरह तेला, चोला और पचोला करके पारणा किया, यह पाँचवीं लता हुई। इसके बाद छठी लता में बेला किया, बेला के पारणे तेला, तेला के पारणे चोला, चोला के पारणे पाँच, इसी तरह छह किया, सात किया, और सात के पारणे के बाद

વાસને પારણે છટ્ઠ કરી પારણું કર્યું. આ ચોથી લતા થઇ. પાંચમી લતામાં છ કર્યા, સાત કર્યા, સાતના પારણે ઉપવાસ કર્યો, ઉપવાસના પારણે છટ્ઠ કર્યો, એવી રીતે અટ્ઠમ, ચોલા અને પચોલા કરી પારણા કર્યા. આ પાંચમી લતા થઈ. ત્યારપછી છટ્ઠી લતામાં છટ્ઠ કર્યો, છટ્ઠના પારણે અટ્ઠમ, અટ્ઠમના પારણે ચૌલા, ચૌલાના પારણે પાંચ,

पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'छट्ठी लया' षष्ठी लता ॥ ६ ॥

'दुवालसमं करेइ' द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'सत्तमी लया' सप्तमी लता ॥ ७ ॥

'एक्केक्काए' एकैकस्याः परिपाट्याः 'कालो अट्ठ मासा पंच य दिवसा' कालोऽष्टमासाः पञ्च च दिवसाः, 'चउण्हं' चतसृणां परिपाटीनां कालो 'दो वासा अट्ठ मासा वीसं दिवसा' द्वे वर्षे अष्ट मासा विंशतिर्दिवसाः।

उपवास करके पारणा किया, यह छटी लता हुई। फिर सातवीं लता में पाँच किया, पाँच के पारणे छ किया, छ के पारणे सात, सात के पारणे उपवास, उपवास के पारणे बेला, एवं तेला, चोला करके पारणा किया, यह सातवीं लता हुई। इस प्रकार सात लता की एक परिपाटी हुई। इसमें आठ मास पांच दिन लगते है। इस तरह इन्होंने चारों परिपाटी की। जिसमें दो वर्ष आठ मास बीस

એવી રીતે છ કર્યા, સાત કર્યા અને સાતના પારણે ઉપવાસ કરીને પારણા કર્યાં. આ છઠ્ઠી લતા થઈ. ફરી સાતમી લતામાં પાંચ કર્યા, પાંચને પારણે છ કર્યા, છનાં પારણે સાત, સાતનાં પારણે ઉપવાસ, ઉપવાસને પારણે છઠ્ઠ, તેમજ અઠ્ઠમ, ચૌલા કરીને પારણા કર્યાં. આ સાતમી લતા પૂરી થઈ. આવી રીતે સાત લતાની પરિપાટી થઈ

'सेसं तहेव जाव सिद्धा' शेषं तथैव यावत् सिद्धा। व्रतानन्तरं सिद्धिप्राप्तिपर्यन्तमस्या अपि वर्णनं कालीवदेव विज्ञेयम् ॥ सू० १३ ॥

[वीरकृष्णानामकं सप्तममध्ययनं समाप्तम्]

॥ मूलम् ॥

अथाष्टममाह—

एवं रामकण्हा वि, णवरं भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तं जहा – दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। पढमा लया ॥ १ ॥

सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। बीया लया ॥ २ ॥

वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं

दिन लगे। उसके बाद वह वीरकृष्णा आर्या काली आर्या के समान सभी कर्मों को खपाकर मोक्ष पद को प्राप्त हुई ॥ सू० १३ ॥

[वीरकृष्णा–नामक सातवाँ अध्ययन समाप्त]

આમાં આઠ માસ પાંચ દિવસ લાગે છે. આ રીતે તેમણે ચારેય પરિપાટી કરી, જેમાં બે વર્ષ આઠ માસ વીશ દિવસ લાગ્યા, તે પછી તે વીરકૃષ્ણા આર્યા કાલી આર્યાની પેઠે સર્વ કર્મોને ખપાવી પરમપદ મોક્ષને પ્રાપ્ત થઈ (સૂ૦ ૧૩)

[વીરકૃષ્ણા નામનું સાતમું અધ્યયન સમાપ્ત.]

करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। तइया लया ॥ ३ ॥

चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। चउत्थी लया ॥ ४ ॥

अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। पंचमी लया ॥ ५ ॥

एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा, चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा सेसं तहेव, जहा काली जाव सिद्धा ॥ सू० १४ ॥

[रामकण्हानामगं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'एवं' इत्यादि। 'एवं रामकण्हा वि' एवं रामकृष्णाऽपि=रामकृष्णाया अपि निष्क्रमणं पूर्वोक्तप्रकारेण विज्ञेयम्। परं 'णवरं' अयं विशेषः, एषा

अब आठवाँ अध्ययन कहते हैं–

जम्बूस्वामीने सुधर्मास्वामी से पूछा–हे आर्य ! अन्तकृत के अष्टम वर्ग के सातवें अध्ययन का भाव आपके मुख से सुना, अब मैं आठवाँ अध्ययन का भाव सुनना चाहता हूँ।

હવે આઠમું અધ્યયન કહે છે–જંબૂસ્વામીએ સુધર્માસ્વામીને પૂછ્યું:–હે આર્ય! અન્તકૃતના આઠમા વર્ગના સાતમા અધ્યયનનો ભાવ આપના મુખથી સાંભળ્યો, હવે હું આઠમા અધ્યયનનો ભાવ સાંભળવા ચાહું છું.

रामकृष्णा 'भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' भद्रोत्तरप्रतिमाम् उपसंपद्य विहरति, 'तं जहा' तद्यथा-'दुवालसमं करेइ' द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'पढमा लया' प्रथमा लता ॥ १ ॥

'सोलसमं करेइ' षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति,

सुधर्मास्वामीने कहा-हे जम्बू ! आठवें अध्ययन में रामकृष्णा देवी का चरित वर्णित है। वे राजा श्रेणिक की रानी और महाराजा कूणिक की छोटी माता थीं। उन्होंने 'भद्रोत्तरप्रतिमा' नामक तपस्या की, उस तपस्या का वर्णन इस प्रकार है-सर्वप्रथम उन्होंने पचोला करके पारणा किया, पारणा करके छ किया, पारणा करके सात किया। इस प्रकार पारणासहित आठ और नौ किया। यह प्रथम लता हुई।

द्वितीय लता में उन्होंने पारणासहित सात, आठ, नौ,

સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું :- હે જંબૂ! આઠમા અધ્યયનમાં રામકૃષ્ણાદેવીનું ચરિત્ર વર્ણિત છે. તે રાજા શ્રેણિકની રાણી અને કૂણિક મહારાજાની નાની માતા હતી. તેમણે "ભદ્રોત્તરપ્રતિમા" નામની તપસ્યા કરી. તે તપસ્યાનું વર્ણન આવી રીતે છે:- સર્વપ્રથમ તેમણે પાંચ કરી પારણું કર્યું. પારણું કરી છ કર્યા, પારણું કરી સાત કર્યા, એવી રીતે પારણાસહિત આઠ અને નવ કર્યા. આ પ્રથમ લતા થઇ.

બીજી લતામાં તેમણે પારણાસહિત, સાત, આઠ, નવ, પાંચ અને છ કર્યા. આ

'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'बीया लया' द्वितीया लता ॥ २ ॥

'वीसइमं करेइ' विंशतितमं करोति 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'तइया लया' तृतीया लता ॥ ३ ॥

'चोद्दसमं करेइ' चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठा-रसमं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'चउत्थी लया' चतुर्थी लता ॥ ४ ॥

'अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' अष्टादशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोद्दसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं

पांच, और छ किया। इति द्वितीय लता।

तृतीय लता में पारणासहित नौ, पाँच, छ, सात और आठ किया। चतुर्थलता में छ, सात, आठ, नौ और पांच किया। इसी प्रकार पाँचवी लता में भी उन्होंने पारणासहित आठ, नौ,

---

બીજી લતા થઈ.

ત્રીજી લતામાં પારણા સહિત નવ, પાંચ, છ, સાત અને આઠ કર્યા. ચોથી લતામાં છ, સાત, આઠ, નવ અને પાંચ કર્યા. એજ રીતે પાંચમી લતામાં પણ તેમણે પારણા

करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति। इति 'पंचमी लया' पञ्चमी लता ॥ ५ ॥

'एक्काए' एकस्या पञ्चलतात्मिकायाः परिपाट्याः 'कालो' कालः 'छम्मासा वीस य दिवसा' षण्मासा विंशतिर्दिवसाः, 'चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा' चतसृणां कालो द्वे वर्षे द्वौ मासौ विंशतिर्दिवसाः। 'सेसं तहेव' शेषं तथैव, 'जहा काली जाव सिद्धा' यथा काली यावत् सिद्धा ॥ सू० १४ ॥

[रामकृष्णानामकमष्टममध्ययनं समाप्तम्]

॥ मूलम् ॥

एवं पिउसेणकण्हा वि, णवरं मुत्तावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ता विहरइ, तं जहा--चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छट्ठं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दसमं

पाँच, छ और सात किया। इस प्रकार यह एक परिपाटी हुई। इस एक परिपाटी में उनको छ मास वीस दिन लगे, और इस प्रकार चार परिपाटी में दो वर्ष दो मास और बीस दिन लगे। अन्त में रामकृष्णा आर्या भी काली आर्या के समान सभी कर्मों को खपाकर सिद्ध पदको प्राप्त हुई ॥ १४ ॥

[आठवाँ अध्ययन समाप्त]

સહિત આઠ, નવ, પાંચ, છ અને સાત કર્યાં.

આવી રીતે આ એક પરિપાટી થઇ. આ એક પરિપાટીમાં તેઓને છ મહિના વીસ દિવસ લાગ્યા અને આવી રીતે ચાર પરિપાટીમાં બે વર્ષ બે માસ અને વીસ દિવસ લાગ્યા. અંતમાં રામકૃષ્ણા આર્યા પણ કાલી આર્યાની પેઠે સર્વ કર્મોને ખપાવી સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત થઇ (સૂ૦ ૧૪).

[આઠમું અધ્યયન સમાપ્ત]

करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता दुवालसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोद्दसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता सोलसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठारसमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउवीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता छव्वीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चोत्तीसइमं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं

पारेइ, पारित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता बत्तीसइमं करेइ, करित्ता एवं तहेव ओसारेइ जाव चउत्थं करेइ, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ। एक्काए काला एक्कारस मासा पनरस य दिवसा। चउण्हं तिण्णि वरिसा दस य मासा। सेसं तहेव जाव सिद्धा ॥ सू० १५ ॥

[पिउसेणकण्हानामगं नवमं अज्झयणं समत्तं]

॥ टीका ॥

'एवं' इत्यादि। 'एवं पिउसेणकण्हा वि' एवं पितृसेनकृष्णाऽपि= पितृसेनकृष्णाया अपि वर्णनं पूर्ववदेवावसेयम्। 'णवरं' अयं विशेषः, एषा 'मुत्तावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ता' मुक्तावलीतपःकर्म उपसंपद्य 'विहरइ' विहरति, 'तं जहा' तद्यथा-'चउत्थं करेइ' चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छट्ठं करेइ' पारयित्वा षष्ठं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकाम-

---

जम्बूस्वामी ने सुधर्मास्वामी से पूछा-हे भदन्त! अन्तगड सूत्र के आठवें अध्ययन का भाव आपके मुख से सुना, अब इसके बाद नवमें अध्ययन का भाव सुनना चाहता हूं, कृपाकर उसे सुनावें। सुधर्मा स्वामीने कहा-हे जम्बू! नवमें अध्ययनमें पितृसेनकृष्णा का वर्णन है। वह राजा श्रेणिक की रानी और महाराज कूणिक की छोटी माता थीं। इन्होंने भगवान के समीप प्रव्रज्या ग्रहण कर के मुक्तावली तपस्या की। वह इस प्रकार है-सर्व प्रथम इन्हों ने उपवास किया,

---

જંબૂસ્વામીએ સુધર્માસ્વામીને પૂછયું-હે ભદન્ત! અન્તગડ-સૂત્રના આઠમા વર્ગના આઠમા અધ્યયનના ભાવ આપના મુખેથી સાંભળ્યા, હવે તે પછી નવમા અધ્યયનના ભાવ સાંભળવા ઇચ્છું છું, કૃપા કરી સંભળાવો. સુધર્માસ્વામીએ કહ્યું-હે જંબૂ! નવમા અધ્યયનમાં પિતૃસેનકૃષ્ણાનું વર્ણન છે, તે રાજા શ્રેણિકની રાણી અને મહારાજ કૂણિકની નાની માતા હતી. તેમણે ભગવાન મહાવીર સમીપે પ્રવ્રજ્યા લઈ મુક્તાવલી તપસ્યા કરી. તે આ પ્રકારે-સર્વથી પહેલાં તેમણે ઉપવાસ કર્યો, ઉપવાસને પારણે છઠ કર્યો, છઠને પારણે ઉપવાસ કર્યો, ઉપવાસને પારણે અઠમ કર્યો, એમ એક-એક

गुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठमं करेइ' पारयित्वा अष्टमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दसमं करेइ' पारयित्वा दशमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता दुवालसमं करेइ' पारयित्वा द्वादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउदसमं करेइ' पारयित्वा चतुर्दशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता सोलसमं करेइ करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' पारयित्वा षोडशं करोति, कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठारसमं करेइ' पारयित्वा अष्टादशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता वीसइमं करेइ' पारयित्वा विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता बावीसइमं करेइ' पारयित्वा द्वाविंशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोवीसइमं करेइ' पारयित्वा चतुर्विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ'

उपवास के पारणे बेला किया, बेला के पारणे उपवास किया, उपवास के पारणे तेला किया, यों एक-एक उपवास बीच २ में करती

ઉપવાસ વચ-વચમાં કરતી થકી ક્રમથી પિતૃસેનકૃષ્ણા આર્યાએ સોળ ઉપવાસ સુધી કર્યાં. ફરી એ પ્રકારે પશ્ચાનુપૂર્વીથી વચ-વચમાં ઉપવાસ કરતાં તે જે પ્રકારે ચડી હતી

पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता छव्वीसइमं करेइ' पारयित्वा षड्विंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता अट्ठावीसइमं करेइ' पारयित्वा अष्टाविंशतितमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति,'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता तीसइमं करेइ' पारयित्वा त्रिंशत्तमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता बत्तीसइमं करेइ' पारयित्वा द्वात्रिंशत्तमं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चोत्तीसइमं करेइ' पारयित्वा चतुस्त्रिंशं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता चउत्थं करेइ' पारयित्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति, 'पारित्ता बत्तीसइमं करेइ' पारयित्वा द्वात्रिंशं करोति, 'करित्ता एवं तहेव ओसारेइ' कृत्वा एवं तथैव अवसारयति 'जाव चउत्थं करेइ' यावत् चतुर्थं करोति । सा पितृसेनकृष्णाऽऽर्या पूर्वोक्तक्रमेण चतुर्थसंपुटितं चतुस्त्रिंशत्तमपर्यन्तं तपः कृत्वा पुनः पश्चानुपूर्व्याऽवतारयति यावत् चतुर्थं करोतीति भावः । 'करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ' कृत्वा सर्वकामगुणितं पारयति ।

हुई यह पितृसेनकृष्णा आर्या क्रमसे सोलह उपवास तक बढी (किये)। फिर इसीप्रकार पश्चानुपूर्वी से बीच बीच में उपवास करती हुई वह, जिस प्रकार चढी थी उसी प्रकार सोलह उपवास से एक उपवास तक क्रमसे उतरी। इस प्रकार उसने एक परिपाटी समाप्त की। यों काली रानी की तरह चारों परिपाटियां उसने

तेज प्रकारे सोळ उपवासथी એક ઉપવાસ સુધી ક્રમથી ઉતરી. આ પ્રકારે એક પરિપાટી સમાપ્ત કરી એમ કાલી રાણીની પેઠે ચારેય પરિપાટીઓ તેણે સંપૂર્ણ કરી. આની એક

अनेन प्रकारेण कृतस्य तपःकर्मण 'एकाए' एकस्याः परिपाट्याः 'कालो' कालः 'एक्कारस मासा पनरस य दिवसा' एकादश मासाः पञ्चदश च दिवसाः, 'चउण्हं तिण्णि वरिसा दस य मासा' चतसृणां कालस्त्रीणि वर्षाणि दश च मासाः, 'सेसं तहेव जाव सिद्धा' शेषं तथव यावत् सिद्धाः = अस्याः सिद्धि-पर्यन्तमवशिष्टं वर्णनं कालीवद् विज्ञेयम् ॥ सू० १५ ॥

[पितृसेनकृष्णानामकं नवममध्ययनं समाप्तम्]

॥ मूलम् ॥

एवं महासेणकण्हा वि, णवरं आयंबिलवड्ढमाणं तवो-कम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तं जहा—आयंबिलं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता बे आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता तिण्णि आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता चत्तारि आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता पंच आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता छ आयंबिलाइं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता एकोत्तरियाए वुड्ढीए आयंबिलाइं वड्ढंति चउत्थंतरियाइं, जाव आयंबिलसयं करेइ, करित्ता चउत्थं करेइ ॥ सू० १६ ॥

॥ टीका ॥

'एवं' इत्यादि । 'एवं महासेणकण्हा वि' एवं महासेनकृष्णाऽपि=

सम्पूर्ण की। इसकी एक परिपाटी में ग्यारह महीना पन्द्रह दिन लगे, चारों परिपाटियों में कुल तीन वर्ष दस महीने लगे। इस प्रकार तप करके अन्तसमय सिद्धपद को प्राप्त हुई ॥ सू० १५ ॥

[पितृसेनकृष्णानामक नवम अध्ययन समाप्त]

दसवें अध्ययन में जम्बूस्वामी के प्रश्न करने पर सुधर्मा

પરિપાટીમાં અગીયાર મહિના પંદર દિવસ લાગ્યા. ચારેય પરિપાટીઓમાં કુલ ત્રણ વર્ષ દશ મહિના લાગ્યા. આ પ્રકારે તપ કરીને અંતસમયે સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત થઈ (સૂ૦ ૧૫)

[પિતૃસેનકૃષ્ણાનામનું નવમ અધ્યયન સમાપ્ત]

દશમા અધ્યયનમાં જંબૂસ્વામીએ પ્રશ્ન કરવાથી સુધર્માસ્વામીએ કહ્યું-કે

यथा काल्यादयो निष्क्रान्तास्तथैवेयमपि। परमस्या वर्णने 'णवरं' विशेषः अयम्- यदियम् 'आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ' आचामाम्लवर्द्धमानम्=आचामाम्लं वर्द्धमानं यस्मिन् तपःकर्मणि तद् आचामाम्लवर्द्धमानम्, तपःकर्म उपसंपद्य विहरति, 'तं जहा' तद्यथा=तदेव दर्शयति- 'आयंबिलं' इत्यादिना। 'आयंबिलं करेइ' आचामाम्लं करोति, 'करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता बे आयंबिलाइं करेइ' कृत्वा चतुर्थं करोति, कृत्वा द्वे आचामाम्ले करोति, 'करित्ता चउत्थं करेइ, करित्ता तिण्णि आयंबिलाइं करेइ' कृत्वा चतुर्थं करोति, कृत्वा त्रीणि आचामाम्लानि करोति, 'करित्ता चउत्थं करेइ' कृत्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता चत्तारि आयंबिलाइं करेइ' कृत्वा चत्वारि आचामाम्लानि करोति, 'करित्ता चउत्थं करेइ' कृत्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता पंच आयंबिलाइं करेइ' कृत्वा पञ्च आचामाम्लानि करोति, 'करित्ता चउत्थं करेइ' कृत्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता छ आयंबिलाइं करेइ' कृत्वा षडाचामाम्लानि करोति, 'करित्ता चउत्थं करेइ' कृत्वा चतुर्थं करोति, 'करित्ता' कृत्वा, अनेन प्रकारेण क्रमश 'एकोत्तरियाए वुड्ढीए' एकोत्तरिकया वृद्धया 'आयंबिलाइं वड्ढंति चउत्थंतरियाइं' आचामाम्लानि वर्द्धन्ते चतुर्थान्तरितानि।

स्वामीने कहा–हे जम्बू! इस अध्ययन में महासेनकृष्णा का वर्णन है। यह भी महाराज श्रेणिक की रानी और महाराज कूणिक की छोटी माता थी। यह भी भगवान महावीर के समीप उपदेश सुनकर प्रव्रजित हुई, और चन्दनबाला आर्या की आज्ञा से 'आयम्बिल–वर्द्धमान' नामक तप करने लगी। सर्वप्रथम इसने आयम्बिल किया। दूसरे दिन उपवास किया। फिर दो आयम्बिल किये, उपवास किया। तीन आयम्बिल किये, उपवास किया। चार आयम्बिल किये, उपवास किया। पांच आयम्बिल किये, उपवास किया। यों बीच २ में उपवास करती हुई एक सौ आयम्बिल तक किये और

જંબૂ! આ અધ્યયનમાં મહાસેનકૃષ્ણાનું વર્ણન છે. આ પણ મહારાજ શ્રેણિકની રાણી અને મહારાજ કૂણિકની નાની માતા હતી. એ પણ ભગવાન મહાવીરની પાસે ઉપદેશ સાંભળી પ્રવ્રજિત થઇ અને ચંદનબાળા આર્યાની આજ્ઞાથી 'આયંબિલ વર્દ્ધમાન' નામનું તપ કરવા લાગી. સૌથી પહેલાં તેમણે આયંબિલ કર્યું, બીજે દિવસે ઉપવાસ કર્યો, પછી બે આયંબિલ કર્યાં, ઉપવાસ કર્યો, ત્રણ આયંબિલ કર્યાં, ઉપવાસ કર્યો, ચાર આયંબિલ કર્યાં, ઉપવાસ કર્યો; પાંચ આયંબિલ કર્યાં, ઉપવાસ કર્યો, એમ વચવચમાં

इयं महासेनकृष्णा आनुपूर्व्या एकैकवृद्ध्या 'जाव आयंबिलसयं करेइ' यावदाचामाम्लशतं करोति, 'करित्ता चउत्थं करेइ' कृत्वा चतुर्थं करोति ॥ सू० १६ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं चोद्दसहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसेहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी विहरइ । तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव उवसोभेमाणी२ चिट्ठइ ॥ सू० १७ ॥

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि । 'तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं चोद्दसहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसेहि य अहोरत्तेहिं' ततः खलु सा महासेनकृष्णा आर्या आचामाम्लवर्द्धमानं तपःकर्म चतुर्दशभिर्वर्षैस्त्रिभिश्च मासैर्विंशत्या च अहोरात्रैः 'अहासुत्तं जाव सम्मं काएण फासेइ' यथासूत्रं यावत् सम्यक् कायेन स्पृशति, 'जाव आराहित्ता' यावदाराध्य=

उपवास किया। इस प्रकार 'आयम्बिल–वर्द्धमान' नामक तप पूरा किया ॥ सू० १६ ॥

इस प्रकार महासेनकृष्णा आर्या ने आयम्बिल–वर्द्धमान तपस्या का, चौदह वर्ष तीन मास और बीस दिनों में, सूत्रोक्त-विधि से आराधन किया। इसमें आयम्बिल के दिन पाँच हजार पचास और उपवास के दिन एक सौ होते हैं, इसप्रकार सब मिला कर पाँच हजार एक सौ पचास दिन होते हैं। यहाँ पर

ઉપવાસ કરતી થકી એકસો આયંબિલ કર્યાં અને ઉપવાસ કર્યો. આ પ્રકારે 'આયંબિલ–વર્દ્ધમાન નામનું તપ પૂરૂં કર્યું. (સૂ૦ ૧૬)

એ રીતે મહાસેનકૃષ્ણા આર્યાએ આયંબિલવર્દ્ધમાન તપસ્યાનું, ચૌદ વર્ષ ત્રણ માસ અને વીસ દિવસોમાં સૂત્રોક્ત–વિધિથી આરાધન કર્યું. એમાં આયંબિલના દિવસ પાંચ હજાર પચાસ અને ઉપવાસના દિવસ એકસો થાય છે. એ પ્રકારે બધા મળીને પાંચહજાર એકસો પચાસ દિવસ થાય છે. અહીં એક વર્ષના ત્રણસો સાઠ દિવસ

सूत्रानुसारेण सम्यगाराध्येति भावः, 'जेणेव अज्जचंदणा अज्जा' यत्रैव आर्य-चन्दनाऽऽर्या 'तेणेव उवागच्छइ' तत्रैव उपागच्छति, 'उवागच्छित्ता अज्ज-चंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ' उपागत्य आर्यचन्दनामार्यां वन्दते नमस्यति, 'वंदित्ता णमंसित्ता बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी' वन्दित्वा नमस्यित्वा बहुभिश्चतुर्थैर्यावद् भावयन्ती=अनेकविधैश्चतुर्थादिमासार्धमासपर्यन्तैस्तपःकर्मभि-रात्मानं भावयन्ती 'विहरइ' विहरति । 'तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा' ततः खलु सा महासेनकृष्णाऽऽर्या 'तेणं ओरालेणं जाव उवसोभेमाणी २ चिट्ठइ' तेन उदारेण तपसा यावत् उपशोभमाना २ तिष्ठति ॥ सू० १७ ॥

॥ मूलम् ॥

तए णं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता, जहा खंदयस्स जाव अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छइ जाव संलेहणा, कालं अणवकंखमाणी विहरइ । तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुन्नाइं सत्तरस वासाइं परियायं पालइत्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, जस्सट्ठाए कीरइ जाव तमट्ठं आराहेइ, चरिमउस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा ॥ सू० १८ ॥

वर्ष तीन सौ साठ दिन का माना गया है । इस तप में चढना ही है उतरना नहीं है । बाद में वह आर्या जहाँ आर्यचन्दनबाला आर्या थी वहाँ आयी, और उन्हें वन्दन-नमस्कार किया । अनन्तर बहुत सी चतुर्थ आदि तपस्यायें करती हुई विचरने लगी । उन कठिन तपस्याओं के कारण वह आर्या अत्यन्त दुर्बल होगयी, तथापि आन्तरिक तेज के कारण अत्यन्त शोभायमान थी ॥ सू० १७ ॥

માનવામાં આવ્યા છે. આ તપમાં ચઢવું જ છે ઉતરવાનું નથી. પછી જ્યાં આર્યચંદનબાલા આર્યા હતી ત્યાં તે આર્યા આવી અને તેમને વંદન-નમસ્કાર કર્યા. અનન્તર ચતુર્થ આદિ ઘણી તપસ્યાઓ કરતી થકી વિચરવા લાગી. એ કઠિણ તપસ્યાઓને કારણે તે આર્યા અત્યંત દુર્બલ થઇ ગઇ, તથાપિ આંતરિક તેજને કારણે અત્યંત શોભાયમાન હતી. (સૂ૦ ૧૭)

॥ टीका ॥

'तए णं' इत्यादि। 'तए णं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए' ततः खलु तस्या महासेनकृष्णाया आर्यायाः 'अण्णया कयाइं' अन्यदा कदाचित् 'पुव्वरत्तावरत्तकाले' पूर्वरात्रापररात्रकाले=रात्रेः पश्चिमभागे इत्यर्थः; 'चिंता' चिन्ता 'जहा खंदयस्स' यथा स्कन्दकस्य=यथा स्कन्दकस्य चिन्तनं तथैवाऽस्या अपि, 'जाव अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छइ' यावदार्यचन्दनामार्यामापृच्छति 'जाव संलेहणा' यावत् संलेखना, तथा 'कालं अणवकंखमाणी विहरइ' कालमनवकाङ्क्षन्ती विहरति। 'तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा' ततः खलु सा महासेनकृष्णाऽऽर्या 'अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता' आर्यचन्दनाया आर्याया अन्तिके सामायिकादीनि एकादश अङ्गानि अधीत्य 'बहुपडिपुन्नाइं सत्तरस वासाइं परियायं पालइत्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, जस्सट्ठाए कीरइ जाव तमट्ठं आराहेइ' बहुप्रतिपूर्णानि सप्तदश वर्षाणि पर्यायं पालयित्वा, मासिक्या संले-

उसके बाद एक समय पिछली रातमें उस महासेनकृष्णा आर्या ने हृदय में खन्धक के समान चिन्तन किया कि यह मेरा शरीर तपस्या से कृश हो गया है, तथापि मुझमें अभी उत्थान, बल, वीर्य आदि हैं। इसलिये सूर्योदय होते ही आर्यचन्दनबाला आर्या के समीप जाकर उनसे आज्ञा ले सन्थारा करूँ। तदनुसार उन्होंने चन्दनबाला आर्या के समीप जाकर हाथ जोड कर सविनय सन्थारा के लिये आज्ञा माँगी। आज्ञा लेकर मृत्यु को नहीं चाहती हुई सन्थारा करके विचरने लगी। महासेनकृष्णा आर्या आर्य-चन्दनबाला आर्या के समीप सामायिक आदि ग्यारह अङ्गों का अध्ययन किया, और पूरे सत्रह वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला,

ત્યારપછી એક સમયે પાછલી રાતમાં તે મહાસેનકૃષ્ણા આર્યાના હૃદયમાં ખંધકની પેઠે એવું ચિન્તન થયું કે આ મારૂં શરીર તપસ્યાથી કૃશ થઇ ગયું છે, તથાપિ મારામાં હજી ઉત્થાન, બલ, વીર્ય આદિ છે. માટે સૂર્યોદય થતાં જ આર્ય ચંદનબાલાની પાસે જઇને તેમની આજ્ઞા લઇ સંથારો કરીશ. તે પ્રમાણે તેમણે ચંદનબાલા આર્યાની પાસે જઇ હાથ જોડી સવિનયે સંથારા માટે આજ્ઞા માંગી. આજ્ઞા લઇને મૃત્યુને નહી ચાહતી તે સંથારો કરી વિચરવા લાગી. તે મહાસેનકૃષ્ણા આર્યા, ચંદનબાલા આર્યાની પાસે સામાયિક આદિ અગીયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું, અને પૂરા સત્તર વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાયનું પાલન કર્યું, તથા માસિકસંલેખનાથી આત્માને સેવિત કરતી થકી

खनया आत्मानं जोपयित्वा, पष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्वा, यस्यार्थाय क्रियते यावत्तमर्थमाराधयति=यत्प्राप्त्यर्थं मुण्डभावः स्वीक्रियते तमर्थमाराधितवती। तथा 'चरिमुस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा' चरमोच्छ्वासनिःश्वासैः सिद्धा बुद्धा मुक्ता परिनिर्वाता सर्वदुःखानामन्तं करोति स्म ॥ सू० १८ ॥

साम्प्रतं दशानामपि राज्ञीनां दीक्षापर्यायकालमेकगाथया कथयति-

॥ मूलम् ॥

अट्ठ य वासा आदी, एक्कोत्तरियाए जाव सत्तरस ।
एसो खलु परियाओ, सेणियभज्जाण णायव्वो ॥ सू० १९ ॥

॥ टीका ॥

अष्ट च वर्षाणि आदिरेकोत्तरिकया यावत् सप्तदश ।
एप खलु पर्यायः, श्रेणिकभार्याणां ज्ञातव्यः ॥ सू० १६ ॥

अयमर्थः-आदिः काली आर्या अष्ट वर्षाणि दीक्षापर्यायं पालितवती, इत इतरा नव सुकालीमारभ्य महासेनकृष्णपर्यन्ता आर्याः क्रमेण एकोत्तरिकया वृद्ध्या सप्तदश वर्षाणि यावद् दीक्षापर्यायं पालितवत्यः, अर्थाद्-द्वितीया नव वर्षाणि, तृतीया दश वर्षाणि, तुरीया एकादश वर्षाणि, पञ्चमी द्वादश वर्षाणि, पष्ठी त्रयोदश वर्षाणि, सप्तमी चतुर्दश वर्षाणि, अष्टमी पञ्चदश वर्षाणि, नवमी

तथा मासिक संलेखना से आत्मा को सेवित करती हुई साठ भक्तों को अनशन से छेदित कर अन्तिम श्वासोच्छ्वास में अपने सम्पूर्ण कर्मों को नष्ट कर मुक्ति में पहुँची ॥ सू० १८ ॥

इन दशों आर्याओं में प्रथम काली आर्याने आठ वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला। दूसरी सुकाली आर्या ने नौ वर्ष तक चारित्र-पर्याय पाला। इस प्रकार क्रमशः उत्तरोत्तर एक एक रानी के

સાઠ ભકતોનું અનશનથી છેદન કરી અંતિમ શ્વાસોચ્છ્વાસમાં પોતાના સંપૂર્ણ કર્મોને નષ્ટ કરીને મોક્ષમાં ગઈ. (સૂ૦ ૧૮)

આ દશેય આર્યાઓમાં પ્રથમ કાલી આર્યાએ આઠ વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો. બીજી સુકાલી આર્યાએ નવ વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો. એ પ્રકારે ક્રમશઃ ઉત્તરોત્તર એક એક રાણીના ચારિત્રપર્યાયમાં એક એક વર્ષનો વધારો જાણવો. એ પ્રકારે છેલ્લી રાણી મહાસેનકૃષ્ણાએ સત્તર વર્ષ સુધી ચારિત્રપર્યાય પાળ્યો. આ બધી

षोडश वर्षाणि, दशमी सप्तदश वर्षाणि दीक्षापर्यायं पालितवती। एषः = पूर्वोक्तरूपः खलु = निश्चयेन पर्यायः = दीक्षापर्यायः, श्रेणिकभार्याणां काल्यादीनां दशानां महाराज्ञीनां ज्ञातव्यः = विज्ञेयः ॥ सू० १९ ॥

[महासेनकृष्णानामकं दशममध्ययनं समाप्तम्]

॥ मूलम् ॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि। अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयक्खंधो, अट्ठ वग्गा, अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, तत्थ पढमबितियवग्गे दस दस उद्देसगा, तइयवग्गे तेरस उद्देसगा, चउत्थपंचमवग्गे दस दस उद्देसगा, छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा, अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा। सेसं जहा नायाधम्मकहाणं ॥ सू० २० ॥

॥ इय अंतगडदसांगसुत्तं समत्तं ॥

॥ टीका ॥

शास्त्रं समापयन् सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामिनं प्रत्याह-'एवं खलु जंबू !' इत्यादि।

चारित्रपर्याय में एक एक वर्ष की वृद्धि जानना, इस प्रकार अंतिम रानी महासेनकृष्णा ने सत्रह वर्ष तक चारित्रपर्याय पाला। ये सभी महाराज कूणिक की रानियाँ थीं, और महाराज कूणिक की छोटी माताएँ थीं ॥ सू० १९ ॥

[महासेनकृष्णानामक दशम अध्ययन संपूर्ण]

हे जम्बू ! अपने शासन की अपेक्षा से धर्म के आदि करने वाले श्रमण भगवान महावीर जो मोक्ष में पधार गये उन्होंने आठवें अङ्ग 'अन्तकृतसूत्र' का यह भाव प्ररूपित किया है।

મહારાજ શ્રેણિકની રાણીઓ હતી અને મહારાજ કૂણિકની નાની માતાઓ હતી. (સૂ૦ ૧૯)

[મહાસેનકૃષ્ણા નામનું દશમું અધ્યયન સંપૂર્ણ]

હે જંબૂ ! પોતાના શાસનની અપેક્ષાથી ધર્મના આદિ કરવાવાળા શ્રમણ ભગવાન મહાવીર જે મોક્ષમાં પધારી ગયા તેમણે આઠમા અંગ 'અન્તકૃતસૂત્ર'નો આ ભાવ

'एवं खलु जंबू !' एवं खलु जम्बूः !-हे जम्बूः ! एवम् = अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण खलु 'समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं' श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण 'जाव संपत्तेणं' यावत्संप्राप्तेन= यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं गतेन 'अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते' अष्टमस्याङ्गस्य अन्तकृतदशानाम् अयमर्थः प्रज्ञप्तः = अन्तकृतां मुनीनां जन्मप्रभृतिमोक्षपर्यन्तवर्णनरूपोऽर्थ उक्तः, 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि । हे जम्बूः ! यथा भगवत्समीपे मया श्रुतं तथैव त्वां प्रति ब्रवीमि । पुनः सुधर्मा स्वामी कथयति-हे जम्बूः ! 'अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयक्खंधो' अन्तकृतदशानामङ्गस्य एकः श्रुतस्कन्धः, 'अट्ठ वग्गा' अष्ट वर्गाः, 'अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति' अष्टसु एव दिवसेषु उद्दिश्यन्ते = उपदिश्यन्ते । 'तत्थ पढमबितियवग्गे दस दस उद्देसगा' तत्र प्रथमद्वितीयवर्गयोः दश दश उद्देशकाः, 'तइयवग्गे तेरस उद्देसगा' तृतीयवर्गे त्रयोदश उद्देशकाः, 'चउत्थपंचमवग्गे दस दस उद्देसगा' चतुर्थपञ्चमवर्गयोर्दश दश उद्देशकाः, 'छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा' षष्ठवर्गे षोडश उद्देशकाः, 'सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा' सप्तमवर्गे त्रयोदश उद्देशकाः, 'अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा' अष्टमवर्गे दश उद्देशकाः, । 'सेसं जहा नायाधम्मकहाणं' शेषं यथा ज्ञाताधर्मकथानाम्-शेषं=संक्षिप्तोक्तिवशादवशिष्टं

भगवान के समीप जैसा मैंने सुना उसी प्रकार तुम्हें कहा। इस अन्तकृत में एक श्रुतस्कन्ध और आठ वर्ग हैं। इसको पर्युषण के आठ दिनों में बाँचा जाता है। इसके प्रथम और द्वितीय वर्ग में दस-दस उद्देश-अध्ययन हैं, तीसरे वर्ग में तेरह, चौथे और पाँचवें वर्ग में फिर दस-दस अध्ययन हैं, छठे वर्ग में सोलह, सातवें और आठवें में क्रमशः तेरह और दस अध्ययन हैं। इस सूत्र में नगरादि का वर्णन संक्षेप में किया गया है। नगर आदि

પ્રરૂપિત કર્યો છે. ભગવાનની પાસે જે પ્રમાણે સાંભળ્યું તે પ્રકારે મેં તમને સંભળાવ્યું.

આ અન્તકૃતમાં એક શ્રુતસ્કન્ધ અને આઠ વર્ગ છે. આ સૂત્ર પર્યુષણના આઠ દિવસોમાં વંચાય છે. એના પ્રથમ અને દ્વિતીય વર્ગમાં દશ દશ ઉદ્દેશ-અધ્યયન છે. ત્રીજામાં તેર, ચોથા અને પાંચમાં વર્ગમાં દશ દશ અધ્યયન છે. છટ્ઠા વર્ગમાં સોળ, સાતમા અને આઠમામાં ક્રમશઃ તેર અને દશ અધ્યયન છે. આ સૂત્રમાં નગર આદિનું

नगरादिवर्णनादारभ्य बोधिलाभान्तक्रियादि सर्वं सविस्तरं ज्ञाताधर्मकथावद् विज्ञेयम् ॥ सू० २० ॥

॥ इति श्रीमदन्तकृतदशाङ्गसूत्रं समाप्तम् ॥

अथ शास्त्रप्रशस्तिः

पारेख–गोत्र–जातस्य, मोर्वीभूपादृतस्य च ।
श्रेष्ठिनिर्भयरामस्य, राजकोटस्थसद्मनि ॥ १ ॥
नामतः शान्तिसदने, नवम्यां कार्त्तिके सिते ।
त्र्यधिके द्विसहस्रेऽब्दे, टीकेयं पूर्णतां गता ॥ २ ॥

इति श्रीविश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापाऽऽलापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक–वादिमानमर्दक–श्रीशाहू-छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–'जैनशास्त्राचार्य'–पदभूषित–कोल्हापुर-राजगुरु–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री-घासीलाल–व्रतिविरचिता अन्तकृतदशाङ्गसूत्रस्य मुनिकुमुदचन्द्रिका टीका समाप्ता ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

*

से लेकर बोधिलाभ और अन्तक्रियादि का सविस्तर वर्णन ज्ञाता-धर्मकथाङ्ग के समान जानना चाहिये ॥ सू० २० ॥

॥ इति अन्तकृतसूत्र संपूर्ण ॥

*

वर्णन संक्षेपथी करवामां आव्युं छे. नगर आदिथी मांडीने बोधिलाभ अने अंतक्रिया आदिनुं सविस्तार वर्णन ज्ञाताधर्मकथांगनी समान जाणवुं जोईए. (सू० २०)

ઇતિ અન્તકૃતસૂત્ર સંપૂર્ણ.

આજ સુધી પ્રસિદ્ધ થયેલાં સૂત્રો

શાસ્ત્રોનો નં.	શાસ્ત્રનું નામ	ભાગ	કિંમત
૧	ઉપાસક દશાંગ	૧	૮–૮–૦
૨	દશવૈકાલિક	૧ લો	૧૦–૦–૦
	”	૨ જો	૭–૮–૦
૩	આચારંગ	૧ લો	૧૨–૦–૦
	”	૨ જો	૧૦–૦–૦
	”	૩ જો	૧૦–૦–૦
૪	આવશ્યક	૧	૭–૮–૦
૫ થી ૯	નીરયાવલીકા (પાંચ સૂત્ર સાથે)	૧	૭–૮–૦
૧૦	નંદી	૧	૧૨–૦–૦
૧૧	કલ્પ	૧	૨૫–૦–૦

ઉપરનાં ૧૦ સૂત્રો નવા જુના દરેક મેમ્બરોને મોકલી દીધાં છે.

૧૨	અન્તકૃત	૧	૭–૮–૦
૧૩	વિપાક	૧	૧૦–૦–૦
૧૪	અનુત્તરોપપાતીક	૧	૩–૮–૦
૧૫	દશાશ્રુત	૧	૭–૦–૦

આ ચાર સૂત્રો જુના મેમ્બરોને મોકલી દીધાં છે, જ્યારે નવા મેમ્બરોને, બીજી આવૃત્તિ બહાર પડયેથી તુરત મોકલવામાં આવશે.

હાલમાં તુરતમાં બહાર પડે છે.

અન્તકૃત (બીજી આવૃત્તિ) તથા ઉવવાઇ સૂત્ર.

દીવાળી પછી બહાર બહાર પડશે.

કલ્પ સૂત્ર (બીજો ભાગ), ઉત્તરાધ્યયન, વિપાક (બીજી આવૃત્તિ), અનુત્તરોપપાતીક (બીજી આવૃત્તિ), દશાશ્રુત સ્કંધ (બીજી આવૃત્તિ)

રાજકોટ, તા. ૧–૯–૫૮.

દાનવીરોની નામાવલી

*

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ.

*

ગરેડીયા કુવા રોડ – ગ્રીન લોજ પાસે,

રા જ કો ટ.

*

શરૂઆત તા. ૧૮–૧૦–૪૪ થી તા. ૧૫–૮–૫૮ સુધીમાં દાખલ થયેલ મેમ્બરોનાં મુબારક નામો

*

ગામવાર કક્કાવારી લિસ્ટ.

*

(રૂા. ૨૫૦ થી ઓછી રકમ ભરનારનું નામ આ યાદીમાં સામેલ કરેલ નથી.)

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ–૫

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૫૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	શેઠ શાન્તીલાલ મંગળદાસભાઇ જાણીતા મીલમાલીક	અમદાવાદ	૧૦૦૦૦
૨	શેઠ હરખચંદ કાલીદાસભાઈ વારીયા હા. શેઠ લાલચંદભાઇ. જેચંદભાઇ, નગીનભાઇ, વૃજલાલભાઇ તથા વલ્લભદાસભાઇ	ભાણવડ	૬૦૦૦
૩	કોઠારી જેચંદભાઇ અજરામર હા. હરગોવીંદભાઇ જેચંદભાઇ	રાજકોટ	૫૨૫૧
૪	શેઠ ધારશીભાઇ જીવનભાઇ	સોલાપુર	૫૦૦૧
૫	સ્વ. પિતાશ્રી છગનલાલ શામળદાસના સ્મરણાર્થે હ. ભોગીલાલ છગનલાલ ભાવસાર	અમદાવાદ	૫૨૫૧

મુરબ્બીશ્રીઓ–૨૧

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૧૦૦૦ ની રકમ આપનાર)

નંબર	નામ	ગામ	રૂપિયા
૧	વકીલ જીવરાજભાઇ વર્ધમાન કોઠારી હ. કહાનદાસભાઇ તથા વેણીલાલભાઇ	જેતપુર	૩૬૦૫
૨	દોશી પ્રભુદાસ મૂળજીભાઇ	રાજકોટ	૩૬૦૪
૩	મ્હેતા ગુલાબચંદ પાનાચંદ	રાજકોટ	૩૨૮૯ાાા૯
૪	મ્હેતા માણેકલાલ અમુલખરાય	ઘાટકોપર	૩૨૫૦
૫	સંઘવી પીતામ્બરદાસ ગુલાબચંદ	જામનગર	૩૧૦૧
૬	શેઠ શામજીભાઇ વેલજીભાઇ વીરાણી	રાજકોટ	૨૫૦૦
૭	નામદાર ઠાકોર સાહેબ લખધીરસિંહજી બહાદુર	મોરબી	૨૦૦૦
૮	શેઠ લ્હેરચંદ કુંવરજી હા. શેઠ ન્યાલચંદ લ્હેરચંદ	સિદ્ધપુર	૨૦૦૦
૯	શાહ છગનલાલ હેમચંદ વસા હા. મોહનલાલભાઇ તથા મોતીલાલભાઇ	મુંબઇ	૨૦૦૧
૧૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ	મોરબી	૧૯૬૩
૧૧	મ્હેતા સોમચંદ તુલસીદાસ તથા તેમનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. મણીગૌરી મગનલાલ	રતલામ	૧૫૦૦
૧૨	મ્હેતા પોપટલાલ માવજીભાઇ	જામજોધપુર	૧૩૦૧
૧૩	દોશી કપુરચંદ અમરશી હા. દલપતરામભાઇ	જામજોધપુર	૧૦૦૨
૧૪	બગડીઆ જગજીવનદાસ રતનશી	દામનગર	૧૦૦૨
૧૫	શેઠ આત્મારામ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૧૦૦૧
૧૬	શેઠ માણેકલાલ ભાણજીભાઇ	પોરબંદર	૧૦૦૧
૧૭	શ્રીમાન ચાંદ્રસિંહજી મ્હેતા (રેલ્વે મેનેજર સાહેબ)	કલકત્તા	૧૦૦૧
૧૮	મ્હેતા સોમચંદ નેણસીભાઇ (કરાંચીવાલા)	મોરબી	૧૦૦૧

૧૯	શાહ હરીલાલ અનોપચંદભાઇ	ખંભાત	૧૦૦૧
૨૦	કોઠારી છબીલદાસ હરખચંદભાઇ	મુંબઇ	૧૦૦૦
૨૧	કોઠારી રંગીલદાસ હરખચંદભાઇ	શિહોર	૧૦૦૦

સહાયક મેમ્બરો—૪૧

(ઓછામાં ઓછી રૂા. ૫૦૦ ની રકમ આપનાર)

૧	શાહ રંગજીભાઇ મોહનલાલ	અમદાવાદ	૭૫૧
૨	મોદી કેશવલાલ હરીચંદ્ર	સાબરમતી	૭૫૦
૩	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ હા. શેઠ ઝુંઝાભાઇ વેલસીભાઈ	વઢવાણ શહેર	૭૫૦
૪	શેઠ નરોત્તમદાસ ઓઘડભાઇ	શીવ	૭૦૦
૫	શેઠ રતનશી હરજીભાઇ હા. ગોરધનદાસભાઇ	જામજોધપુર	૫૫૫
૬	બાટવીયા ગીરધર પ્રમાણંદ હા. અમીચંદભાઇ	ખાખીજાળીઆ	૫૨૭
૭	મોરબીવાળા સંઘવી દેવચંદ નેણશીભાઇ તથા તેમનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. મણીબાઇ તરફથી હ મુલચંદ દેવચંદ (કરાંચીવાલા)	મલાડ	૫૧૧
૮	વોરા મણીલાલ પોપટલાલ	અમદાવાદ	૫૦૨
૯	ગોસલીયા હરીલાલ લાલચંદ તથા અ. સૌ. ચંપાબેન ગોસલીયા	અમદાવાદ	૫૦૨
૧૦	શાહ પ્રેમચંદ માણેકચંદ તથા અ. સૌ. સમરતબેન (રાજસીતાપુર)	અમદાવાદ	૫૦૨
૧૧	શેઠ ઇશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૨	શેઠ ચંદુલાલ છગનલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૩	શાહ શાન્તીલાલ માણેકલાલ	અમદાવાદ	૫૦૧
૧૪	શેઠ શીવલાલ ડમરભાઇ (કરાંચીવાલા)	લીંમડી	૫૦૧
૧૫	કામદાર તારાચંદ પોપટલાલ ધોરાજીવાળા	રાજકોટ	૫૦૧
૧૬	મ્હેતા મોહનલાલ કપુરચંદ	રાજકોટ	૫૦૦
૧૭	શેઠ ગોવીંદજી પોપટભાઇ	રાજકોટ	૫૦૦
૧૮	શેઠ રામજી શામજી વીરાણી	રાજકોટ	૫૦૧
૧૯	સ્વ. પિતાશ્રી નંદાજીના સ્મરણાર્થે હા. વેણીચંદ શાન્તીલાલ (જાળુઆવાળા)	મેઘનગર	૫૦૧
૨૦	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ હા. શેઠ ઠાકરશી કરસનજી	થાનગઢ	૫૦૦
૨૧	શેઠ તારાચંદજી પુખરાજજી	ઔરંગાબાદ	૫૦૦
૨૨	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ	ઔરંગાબાદ	૫૦૦

૧૫૦ શેઠ શેષમલજી જીવરાજજી

૧૨૫ શેઠ અનરાજજી લાલચંદજી

૧૨૫ ધુકડચંદજી રૂપચંદજી

૧૦૦ દગડુમલજી ચાંદમલજી
―――
૫૦૦

૨૩	મ્હેતા મૂળચંદ રાઘવજી હા. મગનલાલભાઈ તથા દુર્લભજીભાઈ	ધ્રાફા	૭૫૦
૨૪	શેઠ હરખચંદ પુરુષોત્તમ હા. ઈન્દુકુમાર	ચોરવાડ	૫૦૦
૨૫	શેઠ કેસરીમલજી વસતીમલજી ગુગલીયા	રાણાવાસ	૫૦૧
૨૬	સ્થા. જૈનસંઘ હા. ખાટવીઆ અમીચંદ ગીરધરભાઈ	ખાખીજાળીઆ	૫૦૧
૨૭	શેઠ ખીમજીભાઈ બાવાભાઈ હા. ફુલચંદભાઈ, નાગરદાસભાઈ તથા જમનાદાસભાઈ	મુંબઈ	૫૦૧
૨૮	શેઠ મણીલાલ મોહનલાલ ડગલી હા. મુળજીભાઈ મણીલાલ	મુંબઈ	૫૦૧
૨૯	સ્વ. કાંતીલાલભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ બાલચંદ સાકચચંદ	મુંબાઈ	૫૦૧
૩૦	કામદાર રતીલાલ દુર્લભજી (જેતપુરવાળા)	મુંબઈ	૫૦૧
૩૧	શાહ જયંતીલાલ અમૃતલાલ	શીવ	૫૦૧
૩૨	વોરા મણીલાલ લક્ષ્મીચંદ	શીવ	૫૦૧
૩૩	શેઠ ગુલાબચંદ ભુદરભાઈ	બારરોડ	૫૦૧
૩૪	મહાન ત્યાગી બેન ધીરજકુંવર ચુનીલાલ મ્હેતા	ધ્રાફા	૫૦૧
૩૫	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ	ધ્રાફા	૫૦૧
૩૬	શ્રી મગનલાલ છગનલાલ શેઠ	રાજકોટ	૫૦૧
૩૭	શેઠ ચતુરદાસ ઠાકરશી તથા અ. સૌ. નંદકુંવરબેન તરફથી	જામનગર	૫૦૩
૩૮	શેઠ દેવચંદ અમરશી (બેન ધીરજકુંવરની દિક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૩૯	શ્રી સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ (બેન ધીરજકુંવરની દિક્ષા પ્રસંગે ભેટ)	ભાણવડ	૫૦૧
૪૦	વકીલ વાડીલાલ નેમચંદ શાહ	વીરમગામ	૫૦૧
૪૧	મ્હેતા શાંતિલાલ મણીલાલ હા. કમળાબેન મ્હેતા	અમદાવાદ	૫૫૬

૩૫૪ મેમ્બરોનું ગામવાર લીસ્ટ

અમદાવાદ તથા પરાંઓ.

૧	શેઠ ગીરધરલાલ કરમચંદ	૨૫૧
૨	શેઠ છોટાલાલ વખતચંદ હા. ફકીરચંદભાઈ	૨૫૧
૩	શાહ કાન્તીલાલ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૪	શાહ પોચાલાલ પીતામ્બરદાસ	૨૫૧
૫	શાહ પોપટલાલ મોહનલાલ	૨૫૧
૬	શેઠ પ્રેમચંદ સાકરચંદ	૨૫૦
૭	શાહ રતીલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૮	શેઠ લાલભાઈ મંગળદાસ	૨૫૧
૯	સ્વ. અમૃતલાલ વર્ધમાનના સ્મરણાર્થે હા. કાનજીભાઈ અમૃતલાલ	૨૫૧
૧૦	ભાવસાર ભોગીલાલ જમનાદાસ (પાટણવાળા)	૨૫૧

૧૧	શાહ નટવરલાલ ચંદુલાલ	૨૫૧
૧૨	શાહ નરસિંહદાસ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૧૩	શ્રી શાહપુર દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય હા. વહીવટ કર્તા શેઠ ઈશ્વરલાલ પુરુષોત્તમદાસ	૨૫૧
૧૪	શ્રી છીપાપોળ દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા જૈનસંઘ હા. ચંદુલાલ અચરતલાલ	૨૫૧
૧૫	શાહ ચીનુભાઇ બાલાભાઈ C/o શાલ બાલાભાઈ મહાસુખરામભાઇ	૨૫૧
૧૬	શાહ ભાઇલાલ ઉજમશી	૨૫૧
૧૭	શ્રી સુખલાલ ડી. શેઠ હા. ડૉ. કુ. સરસ્વતીબ્હેન શેઠ	૨૫૧
૧૮	શ્રી સૌરાષ્ટ્ર સ્થા. જૈનસંઘ હા. શાહ કાન્તીલાલ જીવણલાલ	૨૫૧
૧૯	મોદી નાથાલાલ મહાદેવદાસ	૨૫૧
૨૦	શાહ મોહનલાલ ત્રીકમદાસ	૨૫૧
૨૧	શ્રી છકોટી સ્થા. જૈનસંઘ હા. પોચાલાલ પીતામ્બરદાસ	૨૫૧
૨૨	શેઠ પોપટલાલ હંસરાજના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ બાબુલાલ પોપટલાલ	૨૫૧
૨૩	દેશાઈ અમૃતલાલ વર્ધમાન બાપોદરાવાળાના સ્મરણાર્થે હા. ભાઇલાલ અમૃતલાલ દેશાઇ	૨૫૧
૨૪	શાહ નવનીતલાલ અમુલખરાય	૨૫૧
૨૫	શાહ મણીલાલ આશારામ	૨૫૧
૨૬	શાહ ચીનુભાઇ સાકરચંદ	૨૫૧
૨૭	શાહ વરજીવનદાસ ઉમેદચંદ	૨૫૧
૨૮	શાહ રજનીકાન્ત કસ્તુરચંદ	૨૫૧
૨૯	સંઘવી જીવણલાલ છગનલાલ (સ્થા. જૈન)	૨૫૧
૩૦	શાહ શાંતિલાલ મોહનલાલ ધ્રાંગધ્રાવાળા	૨૫૨
૩૧	અ. સૌ. બેન રતનબાઇ નાહેચા હા. ધુલાજી ચંપાલાલજી	૨૫૧
૩૨	શાહ હરિલાલ જેઠાલાલ ભાડલાવાલા	૨૫૧
૩૩	શ્રી સરસપુર દરીયાપુરી આઠકોટી સ્થા. જૈન ઉપાશ્રય હા. ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૩૪	શેઠ પુખરાજજી સમતીરામજી સાદડીવાળા	૨૫૧
૩૫	શેઠ લાલચંદ મીશ્રીલાલ	૨૫૧
૩૬	સ્વ. પિતાશ્રી જવાહીરલાલજી તથા પૂજ્ય ચાચાજી હજારીમલજી બારડીયાના સ્મરણાર્થે હા. મૂળચંદ જવાહરલાલ	૨૫૧
૩૭	સ્વ ભાવસાર બબાભાઇ (મંગળદાસ) પાનાચંદના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ પુરીબેન	૨૫૧

૩૮	સ્વ. પિતાશ્રી રવજીભાઈ તથા સ્વ. માતુશ્રી મૂળીબાઇના સ્મરણાર્થે હા. કકલભાઈ કોઠારી	૩૦૧
૩૯	ભાવસાર કેશવલાલ મગનલાલ	૨૫૧
૪૦	શાહ કેશવલાલ નાનચંદ જાખડાવાળા હા. પાર્વતીબેન	૨૫૧
૪૧	શાહ જીતેન્દ્રકુમાર વાડીલાલ માણેકચંદ રાજસીતાપુરવાળા (સાબરમતી)	૨૫૧
૪૨	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ (સાબરમતી)	૨૫૦
૪૩	બીપીનચંદ્ર તથા ઉમાકાંત ચુનીલાલ ગોપાણી (રાણપુરવાળા)	૩૦૧
૪૪	ભાવસાર છોટાલાલ છગનલાલ	૨૫૧
૪૫	ભાવસાર શકરાભાઈ છગનલાલ	૨૫૧
૪૬	અ. સૌ. જીવીબેન રતીલાલ હા. ભાવસાર રતીલાલ હરગોવિંદદાસ	૨૫૧
૪૭	સંઘવી બાલુભાઈ કમળશી તથા તેમનાં ધર્મપત્નિઓ અ. સૌ. ચંપાબેન તથા વસંતબેન તરફથી	૨૫૧
૪૮	અ. સૌ. વિદ્યાબેન વનેચંદ દેશાઈ હા. ભૂપેન્દ્રકુમાર વનેચંદ દેશાઈ	૨૫૧
૪૯	સ્વ. પારેખ નાનચંદ ગોવિંદજી મોરબીવાળાના સ્મરણાર્થે હા. રતીલાલ નાનચંદ પારેખ	૩૦૧
૫૦	શાહ નટવરલાલ ગોકળદાસ	૨૫૧
૫૧	શાહ શામળભાઈ અમરશી	૨૫૧
૫૨	શાહ ત્રીભોવનદાસ મગનલાલના સ્મરણાર્થે હા. તેમના ધર્મપત્નિ શીવકુંવરબેન તરફથી હા. રતીલાલ ત્રીભોવનદાસ	૪૦૨
૫૩	અ. સૌ. કંકુબેન (ભાવસાર ભોગીલાલ છગનલાલના ધર્મપત્નિ)	૩૦૯
૫૪	અ. સૌ. સવિતાબેન (જયંતીલાલ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૫	અ. સૌ શાંતાબેન (દીનુભાઈ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૬	અ. સૌ. સુનંદાબેન (રમણભાઈ ભોગીલાલનાં ધર્મપત્નિ)	૨૫૧
૫૭	શેઠ હીરાજી રૂગનાથજીના સ્મરણાર્થે હા. વાગમલજી રૂગનાથજી	૩૦૧
૫૮	શેઠ મણીલાલ બોઘાભાઇ	૨૫૧
૫૯	પટવા સુમેરમલજી અનોપચંદજી જોધપુરવાળા	૩૦૧
૬૦	સ્વ. માણેકલાલ વનમાળીદાસ શાહના સ્મરણાર્થે હા. રમણલાલ માણેકલાલ	૨૫૧
૬૧	સ્વ. શાહ ધનરાજજી ક્ષેમરાજજીનાં સ્મરણાર્થે હા. શાહ કનૈયાલાલજી ધનરાજજી	૩૦૧

અમરેલી

૧	માસ્તર હકમીચંદ દીપચંદ શેઠ	

અમલનેર

૧	શાહ નાગરદાસ વાઘજીભાઈ	૨૫૧
૨	શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ હા. શાહ ગાંડાલાલ ભીખાલાલ	૨૫૧

આણંદ

૧	શેઠ રમણીકલાલ એ. કપાસી હ. મનસુખલાલભાઈ	૨૫૧

આસનસોલ

૧	બાવીસી મણીલાલ ચત્રભુજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ મણીબાઈ તરફથી હા. રસીકલાલ, અનીલકાંત, વિનોદરાય	૨૫૧

આટકોટ

૧	શાહ ચુનીલાલ નારણજી	૩૦૧

ઉદેપુર

૧	શેઠ મોતીલાલજી રણજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૨	શેઠ મગનલાલજી બાગરેચા	૨૫૧
૩	અ. સૌ. બ્હેન ચંદ્રાવતી તે શ્રીમાન બહોતલાલજી નાહરનાં ધર્મપત્નિ હા. શેઠ રણજીતલાલજી હીંગડ	૨૫૧
૪	સ્વ. શેઠ કાળુલાલજી લોઢાના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ દોલતસિંહજી લોઢા	૨૫૧
૫	સ્વ. શેઠ પ્રતાપમલજી સાખલાના સ્મરણાર્થે હા. પ્રાણુલાલ હીરાલાલ સાખલા	૨૫૧
૬	પૂજ્ય પિતાશ્રી મોતીલાલજી મ્હેતાના સ્મરણાર્થે હા. રણજીતલાલજી મોતીલાલજી મ્હેતા	૨૫૧
૭	શેઠ છગનલાલ બાગરેચા	૨૫૧
૮	શેઠ ભીમરાજ થાવરચંદ બાફણા	૨૫૧

ઉમરગાંવરોડ

૧	શાહ મોહનલાલ પોપટલાલ પાનેલીવાળા	૨૫૧

ઉપલેટા

૧	શેઠ જેઠાલાલ ગોરધનદાસ	૨૫૧
૨	સ્વ. બેન સંતોકબેન કચરા હા. ઓગસચંદભાઈ, છોટાલાલભાઈ તથા અમૃતલાલભાઈ વાલજી (કલ્યાણવાળા)	૨૫૧
૩	શેઠ ખુશાલચંદ કાનજીભાઈ હા. શેઠ પ્રતાપભાઈ	૨૫૧
૪	સંઘાણી મૂળશંકર હરજીવનભાઈના સ્મરણાર્થે હા. તેમના પુત્રો જયંતીલાલભાઈ તથા રમણીકલાલ	૨૫૧
૫	દોશી વિઠ્ઠલજી હરખચંદ (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને)	૨૫૧

એડન કેમ્પ

૧	શાહ ગોકળદાસ શામજી ઉદાણી	૨૫૧

કલકત્તા

૧ શ્રી કલકત્તા જૈન શ્વે. સ્થા. (ગુજરાતી) સંઘ.
હા. શાહ જયસુખલાલ પ્રભુલાલ ૨૫૧

કલોલ

૧ શેઠ મોહનલાલ જેઠાભાઈના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ આત્મરામ મોહનલાલ ૨૫૧
૨ ડો. મયાચંદ મગનલાલ શેઠ હા. ડો. રતનચંદ માયાચંદ ૨૫૧
૩ સ્વ. નાથાલાલ ઊમેદચંદના સ્મરણાર્થે હા. શાહ રતીલાલ નાથાલાલ ૨૫૧
૪ શાહ મણીલાલ તલકચંદના સ્મરણાર્થે હા. મારફતીયા ચંદુલાલ મણીલાલ ૨૫૧
૫ સ્વર્ગસ્થ શ્રીયુત વાડીલાલ પરશોત્તમદાસના સ્મરણાર્થે
હા. ઘેલાભાઇ તથા આત્મારામભાઇ ૨૫૧
૬ શેઠ નાગરદાસ કેશવલાલ ૨૫૧

કડી

૧ શ્રી સ્થા. દરીયાપુરી જૈન સંઘ હા. ભાવસાર દામોદરદાસ ઈશ્વરભાઈ ૨૫૧

કાનપુર

૧ શાહ રમણીકલાલ પ્રેમચંદ (આગળના રૂા. ૧૫૦ મળીને) ૩૦૦
૨ શાહ હરકીશનદાસ ફુલચંદ ૨૫૧

કુંદણીઃ– (આટકોટ)

૧ દોશી રતીલાલ ટોકરશી ૨૫૧

કોલકી

૧ પટેલ ગોવીંદલાલ ભગવાનજી ૨૫૧
૨ પટેલ ખીમજી જેઠાભાઇ વાઘાણી (તેમના સ્વ. સુપુત્ર રામજીભાઈના સ્મરણાર્થે) ૩૦૨

ખાખીજાળીયા

૧ ખાટવીયા ગુલાબચંદ લીલાધર (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) ૨૫૧

ખીચન

૧ શેઠ કીશનલાલ પૃથ્વીરાજ ૩૫૨

ખંભાત

૧ શેઠ માણેકલાલ ભગવાનદાસ ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. પટેલ કાન્તીલાલ અંબાલાલ ૨૫૧
૩ શાહ સાકરચંદ મોહનલાલ ૨૫૧
૪ ચંદુલાલ હરીલાલ ૨૫૧

ગુંદા

૧ સ્વ. મહેતા પુનમચંદ ભવાનભાઈના સ્મરણાર્થે
હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ દીવાળીબેન લીલાધર ૨૫૧

ગોંડળ

૧ સ્વ. બાખડા વચ્છરાજ તુલસીદાસનાં ધર્મપત્નિ કમળબાઇ તરફથી
હ. માણેકચંદભાઈ તથા કપુરચંદભાઇ — ૨૫૧
૨ પીપળીઆ લીલાધર દામોદર તરફથી તેમનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ.
લીલાવતી સાકરચંદ કોઠારીના બીજા વરસીતપની ખુશાલીમાં — ૩૦૧
૩ કામદાર જુઠાલાલ કેશવજીના સ્મરણાર્થે હા. હરીલાલ જુઠાભાઇ — ૩૦૧
૪ સ્વ. કોઠારી કૃપાશંકર માણેકચંદના સ્મરણાર્થે
હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ પ્રભાકુંવરબેન — ૨૫૧

ગોધરા

૧ શાહ ત્રીભોવનદાસ છગનલાલ — ૩૦૧

ઘટકોણ

૧ શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ — ૨૫૧

ઘોલવાડ (થાણા)

૧ મહેતા ગુલાબચંદજી ગંભીરમલજી — ૩૦૦

ચુડા (ઝાલાવાડ)

૧ શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ હા. રતીલાલ ગાંધી પ્રમુખ — ૨૫૧

જલેસર (બાલાસોર)

૧ સંઘવી નાનચંદ પોપટભાઇ થાનગઢવાળા — ૨૫૧

જામજોધપુર

૧ શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ — ૩૮૭
૨ શાહ ત્રીભોવનદાસ ભગવાનજી પાનેલીવાળા — ૨૫૧
૩ દોશી માણેકચંદ ભવાન (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) — ૨૫૧
૪ પટેલ લાલજી જુઠાભાઇ (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) — ૨૫૧
૫ શેઠ બાવનજી જેઠાભાઇ (આગળના રૂા. ૧૫૧ મળીને) — ૨૫૧

જામનગર

૧ શેઠ છોટાલાલ કેશવજી — ૨૫૧
૨ વોરા ચીમનલાલ દેવજીભાઇ — ૨૫૧

જામખંભાળીઆ

૧ શેઠ વસનજી નારણજી — ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈનસંઘ હા. મ્હેતા રણછોડદાસ પરમાનંદ — ૨૫૧
૩ સંઘવી પ્રાણલાલ લવજીભાઇ — ૨૫૧

જુનાગઢ

૧ શાહ મણીલાલ મીઠાભાઇ હા. હરીલાલભાઈ (હાટીના માળીઆવાળા) — ૨૫૧

જુનારદેવ (મધ્ય પ્રાંત)

૧ ઘેલાણી ત્રીકમજી લાધાભાઇ — ૨૫૧

જેતપુર

૧ શેઠ અમૃતલાલ હીરજીભાઈ હા. નરભેરામભાઈ (જસાપુરવાળા) ૨૫૧
૨ દોશી છોટાલાલ વનેચંદ ૨૫૧
૩ કોઠારી ડોલરકુમાર વેણીલાલ ૨૫૧
૪ અ. સૌ. બેન સુરજકુંવર વેણીલાલ કોઠારી ૨૫૧

જેતલસર

૧ શાહ લક્ષ્મીચંદ કપુરચંદ ૨૫૧
૨ કામદાર લીલાધર જીવરાજના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ જબકબેન તરફથી હા. શાન્તીલાલભાઈ ગોંડલવાળા ૨૫૧

ડભાસ

૧ સ્વ. તુરખીઆ લહેરચંદ માણેકચંદના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ જીવતીબાઈ તરફથી હા. જયંતીભાઈ ૨૫૧

ડોંડાઈચા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ ચંપાલાલજી મારવે ૨૫૦

થાનગઢ

૧ શાહ ઠાકરશીભાઈ કરશનજી ૨૫૧
૨ શેઠ જેઠાલાલ ત્રીભોવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ ધારશી પાશવીર હા. સુખલાલભાઈ ૨૫૧

દહાણુ રોડ (થાણા)

૧ શાહ હરજીવનદાસ ઓઘડ ખંધાર (કરાંચીવાળા) ૨૫૧

દિલ્હી

૧ લાલા પૂર્ણચંદજી જૈન (સેન્ટ્રલ બેંકવાળા) ૩૫૧
૨ શ્રીયુત મ્હેતાબચંદ જૈન ૨૫૧

ધાર (મધ્યપ્રાંત)

૧ શેઠ સાગરમલજી પનાલાલજી ૨૫૧

ધાંગધ્રા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન મોટા સંઘ હા: શેઠ મંગળજીભાઈ જીવરાજ ૨૫૧
૨ સંઘવી નરસીદાસ વખતચંદ ૩૦૧
૩ ઠક્કર નારણદાસ હરગોવીંદદાસ ૨૫૧
૪ કોઠારી કપૂરચંદ મંગળજી ૨૫૧

ધોરાજી

૧ મ્હેતા પ્રભુદાસ મૂળજીભાઇ ૩૫૧
૨ સ્વ. પિતાશ્રી ભગવાનજી કચરાભાઈના સ્મરણાર્થે
હા. પટેલ દલીચંદ ભગવાનજી ૨૫૧
૩ અ. સૌ. બચીબેન બાબુભાઇ ૨૫૧
૪ ધી નવસૌરાષ્ટ્ર ઓઇલ મીલ પ્રા. લીમીટેડ ૨૫૧
૫ સ્વ. રાયચંદ પાનાચંદ શાહના સ્મરણાર્થે હા. ચીમનલાલ રાયચંદ ૩૦૧
૬ ગાંધી પોપટલાલ જેચંદ ૨૫૦
૭ દેશાઇ છગનલાલ ડાહ્યાભાઇ લાઠવાળાનાં ધર્મપત્નિ દિવાળીબેન ૨૫૧
તરફથી હા. કુમારી હસુમતી

ધંધુકા

૧ ભાવસાર ખોડીદાસ ગણેશભાઈ ૨૫૧
૨ શેઠ પોપટલાલ ધારશી ૨૫૧
૩ સ્વ. ગુલાબચંદભાઇના સ્મરણાર્થે હા. વોરા પોપટલાલ નાનચંદ ૨૫૧
૪ વસાણી ચત્રભુજ વાઘજીભાઇ ૨૫૧

નંદુરબાર

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ ભગવાનલાલ ૨૫૦

પાણસણા

૧ શ્રી સ્થાનકવાસી જૈન સંઘ ૨૫૧

પાલણપુર

૧ લક્ષ્મીબેન હા. મ્હેતા હરીલાલ પીતામ્બરદાસ ૨૫૧
૨ શ્રી લોકાગચ્છ સ્થાનકવાસી જૈન પુસ્તકાલય ૨૫૧

પાલેજ

૧ સ્વ. મનસુખલાલ મોહનલાલ સંઘવીના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઇ ધીરજલાલ મનસુખલાલ ૩૦૧

બરવાળા (ઘેલાશા)

૧ સ્વ. મોહનલાલ નરસીદાસના સ્મરણાર્થે
હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ સુરજબેન મોરારજી ૨૫૧

બગસરા (ભાયાણી)

૧ શેઠ પોપટલાલ રાઘવજી રાયડીવાળા હા. શેઠ માનસંગ પ્રેમચંદ ૨૫૧

બેરાજા (કચ્છ)

૧ શેઠ ગાંગજી કેશવજી (જ્ઞાનભંડાર માટે) ૨૫૧

બેંગલોર

૧	બાટવીયા વનેચંદ અમીચંદ મહાવીર ટેક્ષટાઇલ સ્ટોર તરફથી ભાઇ ચંદ્રકાંતના લગ્નની ખુશાલીમાં	૨૫૨

બોટાદ

૧	સ્વ. વસાણી હરગોવીંદદાસ છગનલાલના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ છબલબેન	૨૫૧
૨	સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ (૨૫૦ બાકી)	૨૫૧

બોડેલી

૧	શાહ પ્રવીણચંદ્ર નરસીદાસ (સાણંદવાળા)	૨૫૧
૨	શાહ ગીરધરલાલ સાકરચંદ	૨૫૧

ભાણવડ

૧	શેઠ જેચંદભાઇ માણેકચંદ	૩૫૨
૨	સંઘવી માણેકચંદ માધવજી	૨૫૧
૩	શેઠ લાલજીભાઇ માણેકચંદ (લાલપુરવાળા)	૨૫૧
૪	શેઠ રામજી જીણાભાઇ	૨૫૧
૫	શેઠ પદમશી ભીમજી ફોફરીઆ	૨૫૧
૬	ફોફરીઆ ગાંડાલાલ કાનજીભાઇ હા. અ. સૌ. શાંતાબેન વસનજી	૨૫૧
૭	વકીલ મણીલાલ ખેંગારભાઇ પૂનાતર	૨૫૧

ભોજાય (કચ્છ)

૧	જ્ઞાન મંદિરના સેક્રેટરી શાહ કુંવરજી જીવરાજ	૨૫૧

મદ્રાસ

૧	શેઠ મેઘરાજજી દેવીચંદજી	૨૫૧

મનોર (થાણા)

૧	શાહ શેરમલજી દેનીચંદજી જસવંતગઢવાળા હા. પૂનમચંદજી શેરમલજી બોલ્યા	૨૫૧

માનકુવા (કચ્છ)

૧	સ્વ. મહેતા કુંવરજી નાથાલાલના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ કુંવરબાઇ હરખચંદ (માનકુવા સ્થાનકવાસી જૈનસંઘ માટે)	૨૫૧

મુંબઇ તથા પરાંઓ

૧	શેઠ છગનલાલ નાનજીભાઇ	૨૫૧
૨	શાહ હરજીવન કેશવજી	૨૫૧

૩	ઘેલાણી પ્રભુલાલ ત્રીકમજી (બોરીવલી)	૨૫૨
૪	શેઠ છોટુભાઇ હરગોવિંદદાસ કટોરીવાલા	૨૫૧
૫	શ્રી વર્ધમાન સ્થા. જૈન સંઘ	
	હા. કેશરીમલજી અનોપચંદજી ગુગળીયા (મલાડ)	૨૫૧
૬	શેઠ ડુંગરશી હંસરાજ વીસરીયા	૨૫૧
૭	શાહ રમણીકલાલ કાળીદાસ તથા અ. સૌ. કાન્તાબેન રમણીકલાલ	૨૫૧
૮	શાહ હિંમતલાલ હરજીવનદાસ	૨૫૧
૯	શાહ રતનશી મોણશીની કંપની	૨૫૧
૧૦	શાહ શીવજી માણેક (કચ્છ બેરાજાવાળા)	૨૫૧
૧૧	વોરા પાનાચંદ સંઘજીના સ્મરણાર્થે	
	હા. ત્રંબકલાલ પાનાચંદ એન્ડ બ્રધર્સ	૨૫૧
૧૨	સ્વ. પૂ. પિતાશ્રી વીરચંદ જેસીંગભાઇ લખતરવાળાના સ્મરણાર્થે	
	હા. કેશવલાલ વીરચંદ શેઠ	૨૫૧
૧૩	શા. કુંવરજી હંસરાજ	૨૫૧
૧૪	સ્વ. માતુશ્રી માણેકબેનના સ્મરણાર્થે	
	હા. શેઠ વલભદાસ નાનજી (પોરબંદરવાળા)	૩૦૧
૧૫	એક સદ્ગૃહસ્થ હા. શેઠ સુંદરલાલ માણેકચંદ	૨૫૧
૧૬	અ. સૌ. પાનબાઇ હા. શેઠ પદમશી નરસિંહભાઇ (મલાડ)	૨૫૧
૧૭	શ્રીયુત અમૃતલાલ વર્ધમાન બાપોદરાવાળા હા. દલીચંદ અમૃતલાલ	૨૫૧
૧૮	સ્વ. શાહ નાગશી સેજપાળ ગુંદાળાવાળાના સ્મરણાર્થે	
	હા. રામજી નાગશી (મલાડ)	૩૦૧
૧૯	શાહ રામજી કરશનજી થાનગઢવાળા	૨૫૧
૨૦	શાહ નગીનદાસ કલ્યાણજી વેરાવળવાળા	૨૫૧
૨૧	શીવલાલ ગુલાબચંદ શેઠ મેવાવાળા	૨૫૧
૨૨	સ્વ. જટાશંકર દેવજી દોશીના સ્મરણાર્થે	
	હા. રણછોડદાસ (બાબુલાલ) જટાશંકર દોશી	૩૦૧
૨૩	સ્વ. ગોડા વણારશી ત્રીભોવન સરસઇવાળાના સ્મરણાર્થે	
	હા. જગજીવન વણારશી ગોડા (મલાડ)	૨૫૧
૨૪	સ્વ. ત્રીભોવનદાસ વ્રજપાળ વીંછીયાવાળાના સ્મરણાર્થે	
	હા. હરગોવિંદદાસ ત્રીભોવનદાસ અજમેરા	૨૫૧
૨૫	સ્વ. કાનજી મૂળજીના સ્મરણાર્થે તથા માતુશ્રી દિવાળીબાઇના ૧૬	
	ઉપવાસના પારણા પ્રસંગે હા. જયંતીલાલ કાનજી કાળાવડવાળા(મલાડ)	૨૫૧
૨૬	શેઠ ખુશાલભાઇ ખેંગારભાઇ	૨૫૦
૨૭	શાહ પ્રેમજી માલશી ગંગર (મલાડ)	૨૫૧
૨૮	સ્વ. પિતાશ્રી પત્તુભાઇ મોનાભાઇના સ્મરણાર્થે	
	હા. શાહ કાનજી પતુભાઇ (મલાડ)	૨૫૧

૨૯	શાહ વેલજી જેશીંગભાઇ છાસરાવાળા તરફથી તેમનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. સ્વ. નાનબાઇના સ્મરણાર્થે	૩૦૧
૩૦	સ્વ. પિતાશ્રી રામશી વેલજીના સ્મરણાર્થે હા. શાહ દામજી રામશી (મલાડ)	૩૦૧
૩૧	શેઠ ત્ર્યંબકલાલ કસ્તુરચંદ લીંબડીવાળા તરફથી શ્રી અજરામર શાસ્ત્રભંડાર લીંમડી માટે (માટુંગા)	૨૫૧
૩૨	સ્વ. પિતાશ્રી ભીમજી કોરશી તથા માતુશ્રી પાલાબાઇના સ્મરણાર્થે હા. શાહ ઉમરશીભાઇ ભીમશી કચ્છપતરીવાળા (મલાડ)	૩૦૧
૩૩	શેઠ ચુનીલાલ નરભેરામ વેકરીવાળા	૨૫૧
૩૪	શાહ વૃજાંગભાઇ શીવજી (મલાડ)	૨૫૧
૩૫	રતીલાલ ભાઇચંદ મહેતા	૨૫૧
૩૬	શાહ ખીમજી મૂળજી પૂંજા (મલાડ)	૨૫૧
૩૭	મેસર્સ સવાણી ટ્રાન્સપોર્ટ કંપની હા. શેઠ માણેકલાલ વાડીલાલ	૨૫૧
૩૮	ઘેલાણી વલભજી નરભેરામ હા. નરસીભાઇ વલભજી	૨૫૧
૩૯	અ. સૌ. સમતાબેન શાન્તીલાલ C/o. શાન્તીલાલ ઉજમશી શાહ(મલાડ)	૨૫૧
૪૦	તેજાણી કુબેરદાસ પાનાચંદ	૨૫૧
૪૧	કપાસી મોહનલાલ શીવલાલ	૨૫૧
૪૨	સ્વ. કેશવલાલ વછરાજ કોઠારીના સ્મરણાર્થે સુરજબેન તરફથી હા. તનસુખલાલભાઇ (મલાડ)	૨૫૧
૪૩	દડીયા અમૃતલાલ મોતીચંદ (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૪૪	શેઠ સરદારમલજી દેવીચંદજી કાવેડીયા (સાદડીવાળા)	૨૫૧
૪૫	દોશી ચત્રભુજ સુંદરજી (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૪૬	દોશી જુગલકીશોર ચત્રભુજ (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૪૭	દોશી પ્રવીણચંદ્ર ચત્રભુજ (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૪૮	શાહ ત્રીભોવનદાસ માનસિંગ દોઢીવાળાના સ્મરણાર્થે હા. શાહ હરખચંદ ત્રીભોવનદાસ	૨૫૧
૪૯	શાહ જેઠાલાલ ડામરશી ધાંગધ્રાવાળા હા. શાહ વાડીલાલ જેઠાલાલ	૨૫૦
૫૦	શાહ ચંદુલાલ કેશવલાલ	૨૫૧
૫૧	સ્વ. પિતાશ્રી શામળજી કલ્યાણજી ગોંડલવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા. વૃજલાલ શામળજી આવીશી	૩૦૧
૫૨	શાહ પ્રેમજી હીરજી ગાલા	૨૫૧
૫૩	સ્વ પિતાશ્રી ભગવાનજી હીરાચંદ જસાણીના સ્મરણાર્થે હા. લક્ષ્મીચંદ તથા કેશવલાલભાઇ	૩૦૧

૫૪	સ્વ. પિતાશ્રી હંસરાજ હીરાના સ્મરણાર્થે હા. દેવશી હંસરાજ કચ્છ ખીડાલાવાળા (મલાડ)	૨૫૧
૫૫	સ્વ. માતુશ્રી ગોમતીબાઇના સ્મરણાર્થે હા. શાહ પોપટલાલ પાનાચંદ	૨૫૧
૫૬	શેઠ નેમચંદ સ્વરૂપચંદ ખંભાતવાળા હા. ભાઇ જેઠાલાલ નેમચંદ	૨૫૧
૫૭	સ્વ. પિતાશ્રી શાહ અંબાલાલ પરસોતમ પાણશણાવાળાના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા. બાપાલાલભાઇ	૨૫૧
૫૮	બેન કેશરબાઇ ચંદુલાલ જેસીંગલાલ શાહ	૨૫૧
૫૯	દડીયા જેસીંગલાલ ત્રીકમજી	૨૫૧
૬૦	શાહ કાન્તીલાલ મગનલાલ (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૬૧	કોઠારી સુખલાલજી પૂનમચંદજી (ખાર)	૨૫૧
૬૨	સ્વ. માતુશ્રી કડવીબાઇના સ્મરણાર્થે હા. તેમના પૌત્ર હુકમીચંદ તારાચંદ દોશી (કાંદીવલી)	૨૫૧
૬૩	શેઠ સારાભાઇ ચીમનલાલ	૨૫૧
૬૪	શાહ કોરશીભાઇ હીરજીભાઇ	૩૦૧
૬૫	પિતાશ્રી કુંદનમલજી મોતીલાલજીના સ્મરણાર્થે હા. મોતીલાલ જુગરમલ (અહમદનગરવાળા)	૨૫૧
૬૬	શ્રી વર્ધમાન શ્વેતામ્બર સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ રૂપચંદ શીવલાલ કામદાર (અંધેરી)	૨૫૧
૬૭	અ. સૌ. કમળાબેન કામદાર હા. રૂપચંદ શીવલાલ (અંધેરી)	૨૫૧
૬૮	ધી મરીના મોડર્ન હાઇસ્કુલ ટ્રસ્ટ ફંડ હા. શાહ મણીલાલ ઠાકરશી.	૨૫૧
૬૯	સ્વ. માતુશ્રી જીવીબાઇના સ્મરણાર્થે હા. શામજી શીવજી કચ્છ ગુંદાળાવાળા (ગોરેગાંવ)	૨૫૧
૭૦	શાહ રવજીભાઇ તથા ભાઇલાલભાઇની કંપની (કાંદીવલી)	૨૫૧
૭૧	અ. સૌ. લાછુબેન હા. રવજી શામજી (કાંદીવલી)	૨૫૧
૭૨	અ. સૌ. બેન કુંદનગૌરી મનહરલાલ સંઘવી (ખારરોડ)	૨૫૧
૭૩	શાહ કરશન લધુભાઇ (દાદર)	૩૦૧
૭૪	અ. સૌ. રંજનગૌરી ચંદુલાલ શાહ C/o. ચંદુલાલ લક્ષ્મીચંદ (માટુંગા)	૨૫૧
૭૫	મ્હેતા મોટર સ્ટોર્સ હા. અનોપચંદ ડી. મહેતા (મુંબઇ)	૨૫૧
૭૬	શેઠ મનુભાઇ માણેકચંદ હા. ઝાટકીયા નરભેરામ મોરારજી (ઘાટકોપર)	૨૫૧
૭૭	ખેતાણી મણીલાલ કેશવજી (વડીયાવાળા) ઘાટકોપર	૨૫૧
૭૮	સ્વ. કસ્તુરચંદ અમરશીના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ ઝવેરબેન મગનલાલની વતી–જયંતીલાલ કસ્તુરચંદ મસ્કારીયા (ચુડાવાળા)	૨૫૧

૭૯ સ્વ. પૂજ્ય માતુશ્રી જકલબાઈના સ્મરણાર્થે
હા. દેશાઈ વ્રજલાલ કાળીદાસ (મલાડ) ૨૫૧

૮૦ શાહ નટવરલાલ દીપચંદ તરફથી તેમનાં ધર્મપત્નિ
અ સૌ. સુશીલાબેનના વર્ષીતપની ખુશાલીમાં ૨૫૧

૮૧ શેઠ રસીકલાલ પ્રભાશંકર મોરબીવાળા તરફથી તેમનાં માતુશ્રી
મણીબેનના સ્મરણાર્થે ૩૦૧

૮૨ કોટીચા જયંતીલાલ રણછોડદાસ સૌભાગ્યચંદ જુનાગઢવાળા ૨૫૧

૮૩ મોદી અભેચંદ સુરચંદ રાજકોટવાળા હા. ડોસાલાલ અભેચંદ ૨૫૧

માંડવી (કચ્છ)

૧ શ્રી સ્થા. છ કોટી જૈન સંઘ હા. મહેતા ચુનીલાલ વેલજી ૨૭૭

મેસાણા

૧ શાહ પદમશી સુરચંદના સ્મરણાર્થે હા. શીવલાલ પદમસી વીરમગામવાળા ૨૫૧

મોમ્બાસા

૧ શાહ દેવરાજ પેથરાજ ૨૫૦

૨ શ્રીયુત નાથાલાલ ડી. મહેતા ૨૫૧

યાદગીરી

૧ શેઠ બાદરમલજી સૂરજમલજી બેન્કર્સ ૨૫૦

રાણપુર (ઝાલાવાડ)

૧ શ્રીમતિ માતુશ્રી અમૃતબાઈના સ્મરણાર્થે
હા. ડૉ. નરોત્તમદાસ ચુનીલાલ ૨૫૧

રાણાવાસ (મારવાડ)

૧ શેઠ જવાનમલજી નેમીચંદજી હા. બાબુ રીખબચંદજી ૩૦૧

રાજકોટ

૧ શ્રી વાડીલાલ ડાઈંગ એન્ડ પ્રિન્ટીંગ વર્કસ ૪૦૦

૨ શેઠ રતીલાલ ન્યાલચંદ ૨૫૧

૩ બાબુ પરશુરામ છગનલાલ શેઠ (ઉદેપુરવાળા) ૨૫૦

૪ શેઠ મનુભાઈ મુળચંદ (એન્જીનીઅર સાહેબ) ૨૫૧

૫ શેઠ શાન્તીલાલ પ્રેમચંદ તેમનાં ધર્મપત્નિના વરસીતપ પ્રસંગે ૨૫૧

૬ ઉદાણી ન્યાલચંદ હાકેમચંદ વકીલ ૨૫૧

૭ શેઠ પ્રજારામ વીઠ્ઠલજી ૨૫૧

૮ બહેન સર્યુબાળા નૌત્તમલાલ જસાણી (વરસીતપની ખુશાલી) ૨૫૧

૯ મોદી સૌભાગ્યચંદ મોતીચંદ ૨૫૧

૧૦ ખદાણી ભીમજી વેલજી તરફથી તેમનાં ધર્મપત્નિ
અ. સૌ. સમરતબેનના વરસીતપની ખુશાલી ૨૫૧
૧૧ દોશી મોતીચંદ ધારશીભાઈ (રીટાયર્ડ એન્જીનીઅર સાહેબ) ૨૫૧
૧૨ કામદાર ચંદુલાલ જીવરાજ ૨૫૦
૧૩ હેમાણી ઘેલુભાઈ સવચંદ ૨૫૧
૧૪ પ્રભુલાલ ન્યાલચંદ દફતરી ૨૫૧

રંગુન

૧ કામદાર ગોરધનદાસ મગનલાલનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. કમળાબેન ૨૫૧

લખતર

૧ શાહ રાયચંદ ઠાકરશીના સ્મરણાર્થે હા. શાહ શાન્તીલાલ રાયચંદ ૨૫૧
૨ ભાવસાર હરજીવનદાસ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઇ ત્રીભોવનદાસ હરજીવનદાસ ૨૫૧
૩ શાહ તલકશી હીરાચંદના સ્મરણાર્થે હા. ભાઈ અમૃતલાલ તલકશી ૨૫૧
૪ શાહ ચુનીલાલ માણેકચંદ ૨૫૧
૫ શાહ જાદવજી ઓઘડભાઈ સદાદવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. ભાઇ શાન્તીલાલ જાદવજી ૨૫૧
૬ દોશી ઠાકરશી ગુલાબચંદના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ સમરતબેન
વૃજલાલ તરફથી હા. જયંતીલાલ ઠાકરશી ૨૫૧

લાલપુર

૧ શેઠ નેમચંદ સવજીભાઈ મોદી હા. મગનલાલભાઇ ૨૫૧
૨ શેઠ મુળચંદ પોપટલાલ હા. મણીલાલભાઇ તથા જેસીંગલાલભાઈ ૨૫૧

લાખેરી (રાજસ્થાન)

૧ માસ્તર જેઠાલાલ મોનજીભાઇ હા. મહેતા અમૃતલાલ જેઠાલાલ
(સીવીલ એન્જીનીઅર સાહેબ) ૨૫૧

લીમડી (પંચમહાલ)

૧ શાહ કુંવરજી ગુલાબચંદ ૨૫૧
૨ છાજેડ ઘાસીરામ ગુલાબચંદ ૨૫૧।≈

લોનાવાલા

૧ શેઠ ધનરાજજી મૂળચંદજી મૂથા ૨૫૧

વઢવાણ શહેર

૧ શાહ દીલીપકુમાર સવાઈલાલ હા. સવાઈલાલ ત્રંબકલાલ શાહ ૨૫૧
૨ શાહ મગનલાલ ગોકળદાસ હા. રતીલાલ મગનલાલ કામદાર ૨૫૧
૩ સંઘવી મુળચંદ બેચરભાઈ હા. ભાઈ જીવણલાલ ગફલદાસ ૨૫૧
૪ શેઠ વૃજલાલ સુખલાલ ૨૫૧
૫ શેઠ કાન્તીલાલ નાગરદાસ ૨૫૧
૬ વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ ૨૫૧
૭ સંઘવી શીવલાલ હીમજીભાઈ ૨૫૧
૮ શાહ દેવશી દેવકરણ ૨૫૧
૯ વોરા ડોસાભાઈ લાલચંદ સ્થા. જૈન સંઘ હા. વોરા નાનચંદ શીવલાલ ૨૫૧
૧૦ વોરા ધનજીભાઈ લાલચંદ સ્થા. જૈન સંઘ હા. વોરા પાનાચંદ ગોબરદાસ ૨૫૧
૧૧ દોશી વીરચંદ સુરચંદ હા. દોશી નાનચંદ ઉજમશી ૨૫૧
૧૨ સ્વ. વોરા મણીલાલ મગનલાલ હા. વોરા ચત્રભુજ મગનલાલ ૨૫૧

વટામણ

૧ શ્રી વટામણ સ્થા. જૈન સંઘ હા. શ્રી ડાહ્યાભાઈ હલુભાઈ પટેલ ૨૫૧

વલસાડ

૧ શાહ ખીમચંદ મૂળજીભાઈ ૨૫૧

વણી

૧ મહેતા નાનાલાલ છગનલાલનાં ધર્મપત્નિ સ્વ. ચંચળબેન તથા પુરીબેનના સ્મરણાર્થે હા. ભાઈ મનહરલાલ નાનાલાલ ૨૫૧

વડોદરા

૧ કામદાર કેશવલાલ હિમતરામ પ્રોફેસર સાહેબ (ગોંડલવાળા) ૨૫૧
૨ વકીલ મણીલાલ કેશવલાલ શાહ ૨૫૧

વડીયા

૧ પંચમીયા ભવાનભાઈ કાળાભાઈ (જેતપુરવાળા) ૨૫૧

વાંકાનેર

૧ માસ્તર કાન્તીલાલ ત્રંબકલાલ ખંઢેરીયા ૨૫૧
૨ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ (રૂા. ૨૫૦ બાકી) ૨૫૧
૩ દફતરી ચુનીલાલ પોપટભાઈ મોરબીવાળા હા. ભાઈ પ્રાણલાલ ચુનીલાલ ૨૫૧

વીંછીયા

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. અજમેરા રાયચંદ વૃજપાળ — ૨૫૧

વીરમગામ

૧ શાહ વીઠ્ઠલભાઈ મોદી માસ્તર — ૨૫૧

૨ શાહ નાગરદાસ માણેકચંદ — ૨૫૧

૩ શાહ મણીલાલ જીવણલાલ (શાહપુરવાળા) — ૨૫૧

૪ શાહ અમુલખ (બચુભાઈ) નાગરદાસનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. બેન લીલાવંતીના વરસીતપનાં પારણાની ખુશાલીમાં હા. ભાઈ કાન્તીલાલ નાગરદાસ — ૩૦૦

૫ સ્વ. શેઠ ઉજમશી નાનચંદના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા. શેઠ ચુનીલાલ નાનચંદ — ૨૫૧

૬ સ્વ. શેઠ મણીલાલ લક્ષ્મીચંદના સ્મરણાર્થે તેમના પુત્રો તરફથી હા. ખીમચંદભાઈ (ખારાઘોડાવાળા) — ૨૫૧

૭ સ્વ. શેઠ હીરાલાલ પ્રભુદાસના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ અનુભાઈ હરીલાલ — ૨૫૧

૮ સંઘવી જેચંદભાઈ નારણદાસ — ૨૫૧

૯ સ્વ. શાહ વેલશીભાઈ સાકરચંદભાઈના સ્મરણાર્થે હા. ચીમનલાલ વેલશી (કત્રાસવાળા) — ૨૫૧

૧૦ પારેખ મણીલાલ ટોકરશી લાતીવાળા તરફથી (મોટીબેનના સ્મરણાર્થે) — ૨૫૧

૧૧ શાહ નારણદાસ નાનજીભાઈના સુપુત્ર વાડીલાલભાઈનાં ધર્મપત્નિ અ. સૌ. નારંગીબેનના વરસીતપ નિમીત્તે હા. શાન્તીભાઈ — ૨૫૧

૧૨ સ્વ. છબીલદાસ ગોકળદાસના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ કમળાબેન તરફથી હા. મંજુલાકુમારી — ૨૫૧

૧૩ શ્રી સ્થા. જૈન શ્રાવિકા સંઘ હા. પ્રમુખ અ. સૌ. રંભાબેન વાડીલાલ — ૨૫૧

૧૪ સ્વ. ત્રીભોવનદાસ દેવચંદ તથા સ્વ. અ. સૌ. ચંચળબેનના સ્મરણાર્થે હા. ડો. હિંમતલાલ સુખલાલ — ૨૫૧

૧૫ શાહ મૂળચંદ કાનજીભાઈ તરફથી હા. શાહ નાગરદાસ ઓઘડભાઈ — ૨૫૧

૧૬ શેઠ મોહનલાલ પીતાંબરદાસ હા. ભાઈ કેશવલાલ તથા મનસુખલાલભાઈ — ૨૫૧

૧૭ શ્રીમતી હીરાબેન નથુભાઈના વરસીતપ નિમિત્તે હા. નથુભાઈ નાનચંદ શાહ — ૩૦૧

૧૮ સ્વ. મણીયાર પરસોતમદાસ સુંદરજીના સ્મરણાર્થે હા. શેઠ સાકરચંદ પરસોતમદાસ — ૨૫૧

૧૯ શેઠ મણીલાલ શીવલાલ — ૨૫૧

વેરાવલ

૧ શાહ કેશવલાલ જેચંદભાઇ ૨૫૧
૨ શાહ ખીમચંદ સૌભાગ્યચંદ વસનજી ૨૫૧
૩ સ્વ. શેઠ મદનજી જેચંદભાઇ માંગરોળવાળાના સ્મરણાર્થે તેમનાં ધર્મપત્નિ લાડકુંવરબાઇ તરફથી હા. ધીરજલાલ મદનજી ૨૫૧

સરખેજ

૧ સ્વ. પિતાશ્રી શાહ ફકીરચંદ પુંજાભાઇના સ્મરણાર્થે
હા. શાહ રમણુલાલ ફકીરચંદ ૨૫૧

સતારા

૧ સ્વ. મદનલાલજી કુંદનમલજી કોઠારીના સ્મરણાર્થે હા. તેમનાં ધર્મપત્નિ રાજકુંવરબાઇ મદનલાલજી ૨૫૧

સાદડી

૧ શેઠ દેવરાજજી જીતમલજી પૂનમીયા ૨૫૧

સાલબની (બંગાળ)

૧ દોશી ચુનીલાલ ફુલચંદ મોરબીવાળા ૨૫૦

સાણુંદ

૧ શાહ હીરાચંદ છગનલાલ હા. શાહ ચીમનલાલ હીરાચંદ ૩૦૧
૨ અ. સૌ. ચંપાબેન હા. દોશી જીવરાજ લાલચંદ ૨૫૧
૩ પટેલ મહાસુખલાલ ડોસાભાઇ ૨૫૧
૪ શાહ સાકરચંદ કાનજીભાઇ ૨૫૧
૫ પુરીબેન ચીમનલાલ કલ્યાણજી સંઘવી લીંમડીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. વાડીલાલ મોહનલાલ કોઠારી ૨૫૧
૬ પારેખ નેમચંદ મોતીચંદ મુળીવાળાના સ્મરણાર્થે
હા. પારેખ ભીખાલાલ નેમચંદ ૨૫૧
૭ સંઘવી નારણદાસ ધરમશીના સ્મરણાર્થે હા. ભાઇ જયંતીલાલ નારણદાસ ૨૫૧

સુરત

૧ શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શાહ છોટુભાઈ અભેચંદ ૨૫૧
૨ શ્રીયુત કલ્યાણચંદ માણેકચંદ હડાલાવાળા ૨૫૧

સુવઇ (કચ્છ)

૧	સાવળા શામજી હીરજી તરફથી સદાનંદી જૈન મુનિશ્રી છોટાલાલ મહારાજના ઉપદેશથી સુવઇ સ્થા. જૈન સંઘ જ્ઞાનભંડારને ભેટ	૨૫૧

સુરેન્દ્રનગર

૧	શેઠ ચાંપશીભાઇ સુખલાલ	૨૫૧
૨	ભાવસાર ચુનીલાલ પ્રેમચંદ	૨૫૧
૩	સ્વ. કેશવલાલ મૂળજીભાઇનાં ધર્મપત્નિ અમૃતબાઇના સ્મરણાર્થે હા. શાહ ભાઇલાલ કેશવલાલ (થાનગઢવાળા)	૨૫૧
૪	શાહ ન્યાલચંદ હરખચંદ	૨૫૧
૫	શાહ વાડીલાલ હરખચંદ	૨૫૧

સંજેલી (પંચમહાલ)

૧	શાહ લુણાજી ગુલાબચંદ	૨૫૧
૨	શ્રી સ્થા. જૈન સંઘ હા. શેઠ પ્રેમચંદ દલીચંદ	૨૫૧

હાટીનામાળીયા

૧	શેઠ ગોપાલજી મીઠાભાઇ	૨૫૦

હારીજ

૧	શાહ અમુલખભાઇ મુળજી હા. પ્રકાશચંદ અમુલખ	૩૦૧
૨	સ્વ. બેન ચંદ્રકાન્તાના સ્મરણાર્થે હા. અમુલખ મુળજીભાઇ	૩૦૧

હુબલી

૧	હીરાચંદ વનેચંદજી કટારીઆ	૨૫૧

તા. ૧૫-૮-૫૮ સુધી મેમ્બરોની સંખ્યા

૫	આદ્ય મુરબ્બીશ્રીઓ	૪૧	સહાયક મેમ્બરો
૨૧	મુરબ્બીશ્રીઓ	૩૬૩	લાઈફ મેમ્બરો
		૭૫	બીજા કલાસના મેમ્બરો

કુલ મેમ્બરો ૫૦૫

સાકરચંદ ભાઈચંદ શેઠ
મંત્રી

રાજકોટ તા. ૧૫-૮-૫૮

શ્રી અખિલ ભારત શ્વેતામ્બર સ્થાનકવાસી જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિની

અગત્યની અપીલ

સ્થાનકવાસી જૈન ભાઇઓ અને બહેનોઃ—

સ્થાનકવાસી સમાજને બે અવલંબન છે. તેમાં પહેલું મુનિવર્ગ અને બીજું શાસ્ત્રશ્રવણ છે. જ્યાં જ્યાં મુનિમહારાજોની ગેરહાજરી હોય છે (અને ભવિષ્યમાં રહેવાની છે) તે સ્થળે આ શાસ્ત્રો સ્થાનકવાસી કોમને ટકાવી રાખવા મોટામાં મોટું સાધન છે.

ઓછામાં ઓછા રૂા. ૫૦૦૦) આપી આદ્ય મુરબ્બીપદ આપ દિપાવી શકો છો.

ઓછામાં ઓછા રૂા. ૧૦૦૦) આપી મુરબ્બીપદ મેળવી શકો છો.

ઓછામાં ઓછા રૂા. ૫૦૦) આપી સહાયક મેમ્બર બની શકો છો.

અને ઓછામાં ઓછા રૂા. ૨૫૦) આપી લાઇફ મેમ્બર તરીકે દરેક ભાઇ બેન દાખલ થઇ શકે છે.

ઉપરના દરેક મેમ્બરોને ૩૨ સૂત્રો તથા તેના તમામ ભાગો મળી લગભગ ૬૦ ગ્રંથો જેની કિંમત લગભગ ૬૦૦ ઉપર થાય છે તે ભેટ તરીકે મળી શકે છે. અને દરેક શાસ્ત્રમાં તેમનું નામ પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવે છે.

દરેક શાસ્ત્ર ૪ ભાષામાં તૈયાર થાય છે. એટલે દરેક પાનામાં ૪ ભાષા જોવામાં આવશે. ઉપરમાં અર્ધમાગધી, તેની નીચે સંસ્કૃત છાયા–ટીકા ત્યાર બાદ હીન્દી રાષ્ટ્રભાષા અને છેવટે ગુજરાતીમાં અનુવાદ જોવામાં આવશે.

શ્રમણ વર્ગ, શ્રાવક વર્ગને દરેક પ્રદેશમાં વસતા સમાજનાં દરેક અંગને એક સરખી રીતે ઉપયોગી થાય તેવી રીતે ખ્યાલ કરીને શાસ્ત્રની રચના કરવામાં આવે છે.

બહાર દેશાવરમાં વસતા આપણા ભાઇઓને તેમજ ગામડામાં વસતા શ્રાવકોને તેમજ ફુરસદે વાંચન કરનાર બેનો તેમજ વિદ્યાર્થીઓને એક સરખું ઉપયોગી થઇ શકે તેવું સાહિત્ય બીજી કોઇ જગ્યાએ મળી શકે તેમ નથી.